



# THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

[WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC](http://WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC)

---

## FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

**If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.**

**-The TFIC Team.**



**SRI JAIN SIDHANT BHAWAN GRANTHAWALI**  
**VOL.--2**

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली  
भाग-२





# जैन—सिद्धान्त—भवन—ग्रंथावली

(देव कुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार, जैन सिद्धान्त भवन, आरा की संस्कृत, प्राकृत,  
अपभ्रंश एवं हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की विस्तृत सूची)

भाग-२

प्रस्तवत

डा० गोकुलचन्द्र जैन

अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, सपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,  
वाराणसी

संपादन

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दर्शनाचार्य

शोधधिकारी, देवकुमार जैन प्राच्य जोध मस्थान, आरा  
(बिहार)

सकलन

शशीभूषण त्रिपाठी, M A (संस्कृत)

कविराज दिवाकर ठाकुर, G.A M S (आयुर्वेद)

गुप्तेश्वर तिवारी, आचार्य

माहतीय शृंगार-दर्शन केन्द्र  
जयपुर

श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रकाशन

भगवान महावीर मार्ग, आरा-८०२३०१

## श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

(भाग-२)

प्रथम संस्करण १९८७

मूल्य—१३५)

प्रकाशक

श्री देवकुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार

श्री जैन सिद्धान्त भवन

आरा (बिहार)—८०२३०१

मुद्रक

शाहाबाद प्रेस

महादेवा रोड, आरा

आवरण शिल्प

क्रिएटिव आर्ट ग्रुप

दिल्ली

---

SRI JAINA SIDHANTA BHAWAN GRANTHAWALI (Catalogue  
of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Hindi mss Published by Sri D K.  
Jain Oriental Library, Sri Jain Sidhanta Bhawan, Arrah (Bihar) India.  
First Edition - 1987

Price Rs. 135/-

# **Jaina Siddhant Bhawana Granthavali**

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts

of

Sri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah

## **Vol.-2**

Introduction .

Dr. Gokulchandra Jain

Head of the department of Prakrit & Jainagama.

Sampurnananda Sanskrit Vishvavidyalaya, Varanasi

Editor ;

Rishabhachandra Jain Fouzdar,

Research Officer

Devakumar Jain Oriental Research Institute, Arrah (Bihar)

Compilation ,

Shashi Bhushan Tripathi, M.A.(San.)

Kaviraj Diwakar Thakur, G. A. M. S. (Aurveda)

Gupteshwar Tiwari

**Sri Jaina Siddhant**

**PUBLICATION**

Bhagwan Mahavir Marg, Arrah-802301

1

2

## Foreword

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his message of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning.

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution. Some of the manuscripts contain rare Jain paintings. These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India.

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes. Each volume contains two parts. First part consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc. Part second which is named as Parisista (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catalogue and deserves congratulations for the commendable job. This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism.

February 29, 1988  
Vikas Bhavan, Patna

(Naseem Akhtar)  
Director, Museums  
Bihar, Patna

## प्रकाशकीय नमू निवेदन

‘जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली’ का दूसरा भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पञ्चवर्षीय योजना के रूप में इसके छ भाग प्रकाशित करने में सफलता भिन्नी भिन्नी पूरी आशा है।

‘जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली’ का यह दूसरा भाग जैन सिद्धान्त भवन, आरा के ग्रन्थागार में संग्रहीत मरुत, प्रावृत, अक्षर, कन्द, एवं हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची है। इसमें लगभग एक हजार ग्रन्थों का विवरण है। हर भाग में इसका विभाजन दो खण्डों में किया गया है। पहले खण्ड में अंग्रेजी (रोमन) में ग्यारह शीर्षकों द्वारा पाठ्यलिपियों के आकार, पृष्ठ संख्या आदि की जानकारी दी गई है। ‘भवन’ के ग्रन्थागार में लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एवं ताडपत्र के ग्रन्थों का संग्रह है। इनमें अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित हैं। अप्रकाशित ग्रन्थों को सम्पादित करके प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान में जैन सिद्धान्त भवन, आरा में उपलब्ध ‘राम गणेशसायन राम (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठकों के हाथ में होगा। इसमें २१३ दुर्लभ चित्र हैं।

‘जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली’ के कार्य को प्रारम्भ कराने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की अभीम कृपा से सभी संयोग जुड़ते गए जिससे मैं यह ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण कार्य आरम्भ कराने में सफल हुआ हूँ। भविष्य में भी अपने सभी सहयोगियों से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हमें उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एवं रामगणेशसायन राम के प्रकाशन के सबसे बड़े प्रेरणा-श्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एवं मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। अपने कार्यकर्त्ताओं की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय से निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य में लगे हैं।

बिहार सरकार एवं भारत सरकार के शिक्षा विभाग एवं संस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एवं आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एवं निदेशक संग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी संबंधित

अधिकारियों के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रंथों के प्रकाशन में उनका सहयोग देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य में भी हमें प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द्र जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आगल भाषा में लिखी है। बिहार म्यूजियम के विद्वान एवं कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निर्देशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसंस्थान, आरा ने आवश्यकता पड़ने पर हमें इस प्रकाशन के सम्बन्ध में बराबर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोंही जाने माने विद्वानों का आभार मानते हैं।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का संपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे संस्थान में मानद शोध-कारी के रूप में कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनों खण्डों के सकलन के संपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा में एक हजार ग्रंथों की ग्यारह कालमें में विस्तृत सूची तथा प्राकृत एवं संस्कृत आदि भाषाओं में परिशिष्ट के रूप में सभी ग्रंथों के आरम्भ की तथा अंत के पदों का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शक्रुध्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद वर्मा ने पुस्तक के अंत में 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारों एवं टीकाकारों की नामावली और उनके ग्रंथों की क्रम संख्या का सकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रंथों का रखरखाव होता है। प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक संभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगों से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से अभारी हूँ।

देवाश्रम,

आरा

अजय कुमार जैन

मंत्री

श्री देवकुमार जैन ओगिएंटल लाईब्रेरी

### ABBREVIATION

V S	—	Vikrama Samvata
D.	—	Devanāgarī
Stk	—	Sanskrit
Pkt	—	Prakrit
Apb,	—	Apabhramśa
C	—	Complete
Inc	—	Incomplete

Catg of Skt. Ms. - Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg by Lewis Rice M. R. A. S., Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg of Skt & Pkt Ms - Catalogue of Sanskrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar by. Rai Bahadur Hiralal B A Nagpur, 1926.

- (१) आ० सू० आमेर सूची—डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल ।
- (२) जि० र० को० जिनरत्नकोष—डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना ।
- (३) जौ० ग्र० प्र० स० जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह—प० जुगलकिशोर मुक्तार ।
- (४) दि० जि० ग्र० र० दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।
- (५) प्र० जौ० सा० प्रकाशित जैन साहित्य—वा० पन्नालाल अग्रवाल ।
- (६) प्र० स० प्रशस्ति संग्रह—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल ।
- (७) भ० स० भट्टारक सम्प्रदाय—विद्याधर जोहरापुरकर ।
- (८) रा० सू० राजस्थान के शास्त्र भंडारो की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर ( राजस्थान ) ।



## समर्पण

देवाश्रम परिवार मे  
पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,  
राजर्षि बाबू देवकुमार जी,  
ब्र० पं० चन्दा माँश्री,  
और

बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी  
यशस्वी तथा गुणीजन हुए हैं ।

उन सभी की पावन  
स्मृति को यह

श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली  
सादर समर्पित है ।

देवाश्रम आरा — सुखोदकुमार जैन

१४-३-५७



## INTRODUCTION ( VOL—I )

I have great pleasure in introducing *Śrī Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvalī*—a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Siddhānta Bhavan, Arrah. The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b*. Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library.

The Catalogue, divided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately. In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon. The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India. The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz. 1. Serial number, 2. Library accession or collection number, 3. Title of the work, 4. Name of the author, 5. Name of the commentator, 6. Material, 7. Script and language, 8. Size and number of folio, lines per page and letters per line, 9. Extent, 10. Condition and age, 11. Additional particulars. These details provide adequate informations about the MSS. For instance thirteen MSS of *Drvyasaṁgraha* have been recorded (S Nos 213 to 224). It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicaṇḍa Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit and other commentators. Each Ms preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number. Its justification could be observed in the details provided.

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text. All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry. Each Ms has different size and number of folios. Lines per page and letters per line are also different. All are complete and in good condition. Only one Ms (216) is a Hindi version in poetry by some unknown

writer and is incomplete Two MSS ( 218, 222 ) are with exposition in *Bhāṣā* ( Hindi ) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in *Bhāṣā* poetry by Bhagavatīdas Ms No 223 dated 1721 v s , is with Sanskrit commentary in Prose Ms No. 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda These details could be seen at a glance as they are presented scientifically

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads . --

1	Purāna, Carita, Kathā	1 to 155
2	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3	Nyāyasastra	454 to 480
4	Vyākaraṇa	481 to 492
5	Kośa	493 to 501
6	Rasa chanda, Alankāra & Kāvya	502 to 531
7	Jyotiṣa	532 to 550
8	Mantra Karmakānda	551 to 588
9	Āyurveda	589 to 600
10	Stotra	601 to 800
11	Pūjā, Pātha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories ( see MSS 295, 511, 512 )

The Second Part of the volume is entitled as *Parīkṣā* or Appendix This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgarī* script The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is corrupt. The cross references of more than ten other works deserve special mention Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour-

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as important informations. A few of them are noted below —

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparikṣā* (295) which deals with Gemology. The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna śāstra* by Buddhahatt. Similarly, *Ativākyāmrta* (511 512) is the famous work on Poetry by Somadeva Suri (10th cent.). *Trepanakṛiyākośa* (498, 499) is not a work on Lexicon. It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra*. These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṃsā* contain *Āptamīmāṃsā/nakṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṃsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṃsābhāṣya* of Akalanka (457) These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasī*, *Aṣṭasā* and *Devāgamavṛti*. Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions.

(3) In the colophon of some of the MSS the parental MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given. These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parental Ms is very important. If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same. It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts than that of the original one. Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts. When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on. It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms. The difference of alphabets in different languages is obvious. Thus the reference of parental Ms is of great importance (373)

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS. Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannada* scripts ( 7, 318, 373 ) whereas some in Northern India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi.

5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana Arrah itself MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars.

(6) The study of colophon reveals many more important references of *Saṃghas*, *Ganas*, *Gacchas*, *Bhaṭṭāraḥas*, and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics. copying the Ms for personal study—*svā hyāya*, and getting the work prepared for his son or relative etc Such references denote the continuity of religious practice of *śāstratāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvaka*s and disciples of *Bhaṭṭāraḥas* or other ascetics

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *śloka*s, or *gāthā*s have been given as *granthaparimāṇa* at the end of the MSS This reference is very important from the point of the extent of the Text Many times the author himself indicates the *grantha-parimāṇa*. Even the prose works are counted in the form of *śloka*s (32 alphabets each) The *Āptamīmāṃsā Bhāṣya* of Akalanka is more popularly known as *Aṣṭasatī* and *Āptanirṇāṇa* of Vidyānanda is famous as *Aṣṭasaḥsṛī*. Both works are the commentaries on the *Āptamīmāṃsā* ( in verse ) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyānanda himself says about his work:—

“Śrotavya—*aṣṭasaḥsṛī śrutaiḥ kimanyaiḥ sahasrasamkhyānath.*”

Counting in the form of *śloka*s seems a later development. When the teachings of Vardhamāna Mahāvira were reduced to writing counting was done in the form of *Padas* For instance the *Āyāramga* is said to contain eighteen thousand *Padas*.

“ āyāraṁgamatthāraha—pada - sahassehi ”

(Dhavalā p 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

- (9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio-cultural importance as well. The copying work was done by Brāhmīns, Vaiśyas, Āgarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others. There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS. The remuneration of writing was decided per hundred words. For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation. In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned. Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important.

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research.

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other. Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning. With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Century.

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India. However the copying work was done on the MS was not lent by the owner or otherwise was not transcribed. The earliest Śau-āsenī Prakṛit Siddhānta Śāstra Saṅkhaṇāgama

with its famous commentaries *Davalā*, *Jayadavalā*, and *Mahādaylā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannāḍa* scripts, preserved in the *Siddhānta Baṣadi* of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of *Śrī Syād-vāda Mahāvīdyālaya*. A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof. Heraman Jacobi of Germany, Prof. Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad. A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915. Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John Woodruff and Sarat Chandra Ghosal.

The other activity of the publication of *Bibliotheca Jainica—The Sacred Books of the Jains* began with the publication of *Dravya Saṃgraha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc. In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra*, *Goṃmatasāra*, *Ātmānusāsana* and *Purusārtha Siddhyupāya* were published. Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jain tenets by eminent scholars were also published *Jaina Siddhānta Bhāṣkara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objective to bring into light recent researches and findings in the field of Jainological learning.

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jains in particular. The palm leaf MSS in *Kannāḍa* scripts or rendered into *Devanāgarī* on paper are valuable assets of the collection. It is undoubtedly accepted that a manuscript is more valuable than an icon or Architectural set-up. An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost. It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve



the MSS which is included in their religious practice. A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, because the *Jina*, *Jinavānī* and *Jinaguru* were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras*. During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznaī ( 1025 A.D ) and Aurangzeb ( 1651-1669 A D ) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places were chosen for the purpose. A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsīs emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śāstra Bhandāras*. As a result, many MSS collections came up all over India. The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Rajasthan, Kolhapur in Maharashtra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known. A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras*. One can imagine how the copies of a work composed in South India could travel to North and West. And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India. A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf. It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāṇa* and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS. But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties. This resulted into two unwanted developments viz 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessibility. Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the *Siddhānta Śāstra Saṅgṛhaṇī* is now well known. It is only one example.

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries. This continued during the first quarter of 20th century- In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvatī Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top. More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world. Almost all the eminent Jainologists of the present century studying the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan. It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited.

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published. Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainology, *Jinaratnakosha* by Velankar deserves special mention. It is quite a different type of reference work relating to MSS. Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kannlaprāntīya Tāḍapatrīya Grantha Sūchī* in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS. The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr. Kastoor Chand Kasliwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji, Jaipur also deserve mention. L. D. Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes. Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dill Jina-Grantha-Ratnāvalī* published by Bharatiya Janapith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University.

In the above range of catalogues, the present volume of *Śri Jaina Siddhanta Bhavan Granthāvalī* is a valuable addition. As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah. It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS. I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Srīman Devakumarjī and his worthy successors. I sincerely thank Shrīman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight. His associates also deserve applause for their due assistance. I also thank my esteem friend Dr Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute.

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible

Dr Gokul Chandra Jain  
Head of Department of Prakṛit  
and Jaināgam, Sampurnanand  
Sanskrit Vishvavidyalay,  
VARANASI

2

3

4

## सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश में विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग ( जेल रोड ) पर स्थित है। वर्तमान में इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एवं विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बड़ा मगमरमर का हॉल है, जिसमें सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तनिखित कागज एवं ताडपत्र के ग्रन्थों का संग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान में श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घा' है। इस कला दीर्घा में शताधिक दुर्लभ हस्तनिर्मित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एवं अन्य पुरातत्त्व सामग्री प्रदर्शित है। यही ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा में श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्घाटन ( जन्म ) हुआ था।

सन् १९०३ में भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेलन शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होंने स्थानीय जैन पंचायत की एक सभा में बाबू देवकुमार जी द्वारा संगृहीत उनके पितामह प० प्रभुदास जी के ग्रन्थ संग्रह के दर्शन किये तथा उन्हें स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एवं सस्कृति के प्रेमी थे, उन्होंने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वहीं कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसंग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेंट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के संवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ में दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमें विभिन्न नगरों एवं गांवों में सभाओं का आयोजन करके जैन सस्कृति की सुरक्षा एवं समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गांवों और नगरों से हस्तलिखित कागज एवं ताडपत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानों पर शास्त्रभंडारों को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एवं निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाड़ियों पर हुआ करती थीं। किन्तु काल की गति को कौन जानता है? १९०८ ई० में ३१ वर्ष की अल्पायु में ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिससे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धांत भवन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोडीचन्द्र ने भवन का कार्य सभाला और उन्होंने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तों की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस में बड़े पैमाने पर जैन प्रदर्शनियों और सभाओं का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न संग्रह को देखकर डा० हर्मन जैन्सी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान् प्रभावित हुए तथा उन्होंने बाबू देवकुमार की स्मृति में प्रशस्तियाँ लिखी एवं भवन की सुरक्षा एवं समृद्धि की प्रेरणाएँ दी।

सन् १९१९ में स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मलकुमार जी भवन के मंत्री निर्वाचित हुए। मंत्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के 'कार्य-कलापो' में गति भर दी। १९२४ मई में जैन सिद्धांत भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष में भव्य एवं विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १९२६ में श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थागार को नये भवन में प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होंने अपने कार्यकाल में ग्रन्थागार में प्रचुर मात्रा में हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रन्थों का संग्रह किया।

जैन सिद्धांत भवन आरा में प्राचीन ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थों को बाहर के ग्रन्थागारों से मगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने संग्रह में रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थों की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने संग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थों की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थों में प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एवं इन्दौर भेजे गये हैं।

सन् १९४६ में बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मंत्री चुने गये। ग्यारह वर्षों तक उन्होंने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १९५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मंत्री पद का भार दिया गया, जिसे वे अभी तक पूरी लगन एवं जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। बाबू सुबोधकुमार जैन, भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढप्रतिज्ञ हैं। इनके कार्यकाल में भवन के क्रिया-कलापो में कई नये अध्याय जुड़ गये हैं, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों उभर-कर सामने आये हैं।

जैन सिद्धांत भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धांत भास्कर एवं जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन् १९१३ से हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषिक, हिन्दी-अंग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका में जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओं के लेख प्रकाशित होते हैं। शोध-पत्रिका अपनी उच्च कोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर में सुविख्यात है। इसके अंक जून अर दिसम्बर में प्रकट होते हैं।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान है। इसमें प्राकृत और जैनविद्या की विभिन्न विधाओं पर शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। संस्थान में शोध मामलों प्रचुर मात्रा में भरी पड़ी है। संस्थान सन् १९७२ ई० से मगध विश्वविद्यालय, बोध गया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में इसके मानद निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत-संस्कृत विभाग, हर-प्रसाद दाम जैन कॉलेज (मगध वि. वि.) आरा हैं। इस समय संस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं तथा अनेक पी एच, डी की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

इस संस्था द्वारा अबतक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस संस्था के हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचीकरण कार्य में यह दूसरा उपहार 'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली, का द्वितीय भाग है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस एवं हिन्दी भाषाओं के १०२३ ग्रन्थों की विवरणात्मक सूची प्रकाशित है। ग्रन्थ को प्रथम भाग की तरह दो खंडों में विभक्त किया गया है। प्रथम खंड में पाण्डुलिपियों का विवरण रोमन लिपि में दिया गया है। दूसरे खंड में परिशिष्ट शीर्षक में ग्रन्थों के प्रारम्भिक अंग, अन्तिम अंग तथा प्रशस्तियाँ दी गई हैं। सूची में आधुनिक पद्धति से ग्रन्थों का विवरण व्यवस्थित किया गया है। विवरण निम्न ग्यारह शीर्षकों में प्रस्तुत है—

(१) क्रम संख्या। (२) ग्रन्थ संख्या। (३) ग्रन्थ का नाम। (४) लेखक का नाम। (५) टीकाकार का नाम। (६) कागज या ताटपत्र। (७) लिपि और भाषा। (८) आकर में से -में, पत्रसंख्या, प्रत्येक पत्र की पंक्ति संख्या एवं प्रत्येक पंक्ति की अक्षर संख्या। (९) पूर्ण-अपूर्ण। (१०) स्थिति तथा समय (११) विशेष जानकारी यदि कोई है।

ग्रन्थावली को सामान्य रूप में विषय वार निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत विभक्त किया गया है—

- (१) पुराण-चरित-कथा।
- (२) धर्म दर्शन-आचार।
- (३) रस छन्द, अलंकार काव्य,।
- (४) मंत्र-कर्मकाण्ड,।
- (५) आयुर्वेद।
- (६) स्तोत्र, (७) पूजा-पाठ विधान।

अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं, जिनका विषय निर्धारण बिना आद्योपान्त अध्ययन के सम्भव नहीं हो सकता है, उन ग्रन्थों को भी इन्हीं शीर्षकों के अन्तर्गत व्यवस्थित किया गया है।

क्र० ६६८ में १०६८ के बीच लगभग पचास ऐसे ग्रन्थ हैं जो पूजा से-सम्बन्ध रखते हैं क्योंकि वास्तव में यह प्रायः व्रत-कथाएँ हैं। ऐसी कथाओं में पूजा-अर्चना की प्रधानता होती है। इसी के साथ कथा कही जाती है, जिससे जनसामान्य धर्म से प्रभावित होकर आत्मोन्नति की ओर प्रवृत्त होता है। क्योंकि बाल-बुद्धि लोगों के प्रतिबोध के लिए कहानी ही सबसे अधिक उपयोगी एवं सरल विधा है।

प्रस्तुत सूची में तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह, भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, विद्यापहार स्तोत्र, सिद्धपूजा आदि की प्रतियाँ बहुमूल्यक हैं। क्रम संख्या १३६१ से २०२० तक स्तोत्र एवं पूजा-विधान के ही ग्रन्थ हैं। एक विषय के इतने अधिक ग्रन्थों का एक साथ संग्रह होना, अपने आपमें महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद के शारदातिलक सटीक, वैद्यमरोत्पन्न, योगविन्नायोग, वैद्यभूषण प्रभृति ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ विशेष महत्व की तथा प्राचीन भी हैं।

अन्य ग्रन्थागारों में उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों के सन्दर्भ यथास्थान दिये गये हैं। इस नौ विद्वान् भवन ग्रन्थावली भाग—१ के भी सन्दर्भ दिये गये हैं। यह सन्दर्भ प्रतियों के खोजने में सहयोगी होंगे। इसमें यह भी ज्ञात होता है कि देशभर के अनेक शास्त्रभण्डारों, मंदिरों तथा मस्थानों में हस्तलिखित ग्रन्थों की भरमार है। जो भी तब अज्ञात पड़े हुए हैं। उन्हें प्रकाश में लाने की दिशा में जो प्रयत्न हो रहे हैं, वे पण्डित नहीं हैं। विद्वानों, अनुगन्धाताओं, तथा सम्बद्ध सम्प्रदायों को इसे एक आन्दोलन के रूप में भागे बढ़ाने का उपाय करना चाहिए।

ग्रन्थावली के इस भाग को तैयार करने में डा० गोकुलचन्द्र जीन, वाराणसी, श्री सुबोधकुमार जैन श्री अजयकुमार जैन आदि व्यक्तियों का महत्वपूर्ण निर्देशन रहा है। उक्त सभी का हृदय से आभारी हूँ। आशा है भविष्य में भी सबका निर्देशन एवं सहयोग आशीष पूर्वक प्राप्त होता रहेगा। ग्रन्थावली का सम्पादन, मयोजन में जो त्रुटियाँ हुई हैं, उनके लिए विद्वज्जन क्षमा करेंगे।

कृष्णभचन्द्र जैन फौजदार  
शोधधिकारी,  
देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान  
आरा ( बिहार )



## INTRODUCTION TO SECOND VOLUME

In continuation to my introduction to first volume of *Śrī Jaina Śāhīda Bhāṣya Gaṇthāvalī*, I have great pleasure in introducing the Second Volume of the same series. Like the First Volume the Second Volume contains descriptions of more than One Thousand Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśī and Hindi Manuscripts preserved in *Shri Jaina Samiti Oriental Library, Anand*. It has been prepared strictly according to the Scientific Methodology adopted in First Volume. In the introduction to First Volume, I have discussed in detail various points related to the Catalogue in general and *Śrī Jaina Śāhīda Bhāṣya Gaṇthāvalī* in particular.

The Second Volume is also divided into two parts. In the first part descriptions of manuscripts have been given, and in the second part the text of the opening and closing portions of MSS along with Colophons have been recorded in Devanāgarī scripts. The MSS have been classified under some general heads like Purāṇa-Carita-Kathā, Dharmā-Darśana Ācāra etc. This classification helps a common reader. Those who want to go into details, they should have a keen eye on the contents while looking on the titles. The MSS recorded under the head of *Kathā* ( nos 998 to 1026 ) are the part of *Ācāra* or *Dharmā-Darśana* and not related with the narrative literature in its strict sense.

The manuscripts recorded in the present volume have their own importance. By publication of this volume they have become accessible to scholars, and now could be best adjudged when utilized for study or critical editions. Here I would like to draw the attention on certain points which seems to me significant to this volume.

It has been generally observed by scholars and religious critics that due importance to *Bhakti* and *Karmakāṇḍa* ( rituals ) have not been given in Jaina religion. A large number of MSS recorded in the present volume are related to various type of rituals, devotional songs- *Īśōras-Stuti-Pūjā Pāṭha*, *Pratiśthā* etc. and other related matters. The number and variety of MSS clearly testify that *Bhakti* and *Karmakāṇḍa* occupy an important position in Jaina Tradition. It is true that according to Jainism *Bhakti* and *Kṛtyākāṇḍa* alone can not lead to liberation or *Mokṣa*.

In this volume seven more MSS of Dravyasamgraha have been recorded. It shows the popularity of the treatise. All the MSS related to it should be taken into consideration while undertaking a critical study of the Text.

Some important Prakrit and Apabhramśa MSS like Samaya sāra (1165–1168), Pravācanasāra (1158–1160), Satpāhāda (1172–1173), Kārtikeyānuprekṣā (1133), Paramātmāprakāśa (1154, 1155) have also been recorded in this volume.

Seventeen MSS relating to Indian medicine i.e. Āyurveda have been mentioned some of which like Aṣṭāṅgahrdaya of Vāgbhata (1344), Śārāṅgadhara-saṁhitā (1356) or Śārādātīlaka (1355), Madanavīnoda (1349) deserve special mention.

A good number of MSS is related to stotra literature. Some of them are close to *tantra*. It is true that Tantrism could not be developed in Jainism like some other schools of Indian religions, still some trends can be seen in the works like *Padmāvatīśālpa*, *Jyāṭmā-līnīkalpa*, *Sarasvatīkalpa* etc.

In the end I like to thank the editors and publishers for bringing the Second Volume within a short time after the publication of the first volume. I do hope that the same enthusiasm will continue in preparing and publication of other volumes of the Catalogue.

—Dr Gokul Chandra Jain

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली  
**SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY,  
JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH ( BIHAR )**

S. No.	Library accession or Collection No. If any	Title of Work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
998	Nga/48/15/4	Ananta-Caudaśa-Kathā	Jñānasāgara	—
999	Nga/47/4/43	„ „ „	—	—
1000	Ta/42/50	Ananta-Vrata-Kathā	—	—
1001	Nga/47/4/54	Anantanāth-Kathā	—	—
1002	Nga/411 Jha/	Aṣṭānḥikā Kathā	Jñānasāgara	—
1003	Nga/48/15/6	„ „	—	—
1004	Nga/47/4/64	Aṭhāi „	Bhairondāsa	—
1005	Nga/47/4/47	Ādityavāra „	—	—
1006	Nga/40/1	„ ,	—	—
1007	Nga/41/Ga	„ „	—	—
1008	Nga/47/4/48	„ ,	—	—

Catalogue of Sanskrit. Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 3  
( Purāna-Carita-Kathā )

Mat. or Subt.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per page & No. of letters Per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	17 5×13 5 7 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 3 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	20 0×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 11 16 18	C	Old	
P	D; H Poetry	14 2×9 0 22 9 22	C	Old	
✓ P	D, H. Poetry	14 5×11 0 3 13 16	C	Good	
P.	D, H, Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1009	Nga/48/25	Ādityavāra Kathā	—	—
1010	Ta/42/45	Ākāṣa-Pancami Kathā	Jnānasāgar	—
1011	Nga/41 Ta	„ „ „	—	—
1012	Ta/12/1	Bhaviṣyādatta Kathā	—	—
1013	Nga/40/7	Canda Kathā	Rajācanda	—
1014	Ng/41 (Gha)	Caturdaśī Kathā	Jnānasāgara	—
1015	Nga/40/2	Caturavacanoccārini Kathā	—	—
1016	Ta/26/1	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
1017	Nga/47/4/63	Daśa-Lākṣṇī Kathā	—	—
1018	Nga/47/4/68	„ „ „	Bhairondāsa	—
1019	Nga/41/ Cha	„ „ „	Jnānasāgara	—
1020	Nga/48/15/3	„ „ „	„	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 5  
( Purāna-Carita-Kathā )

6	7	8	9	10	11
P	D, H. poetry	23 0×16 7 8 12 29	C	Good	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 9 13 16	C	Old	
P.	D, H Poetry	24 2×16 0 68 10 30	C	Good 1948 V S	
P	D, H. Poetry	14 2×9 0 31 9 22	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 8 13 16	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 11 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	20 3×17 5 38.14.21	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 8 16.18	C	Old	
P	D, H. Poetry	14 5×11 0 8 13 16	C	Old	
P.	D, H, Poetry	17 5×13 5 7.14 18	C	Good	

1	2	3	4	5
1021	Ta/42/52	Daśa-lākṣaṇī-vrata-Kathā	Jnānasāgara	—
1022	Nga/44/16/1	„ „ „ „	—	—
1023	Ta/27/1	Daśana-Kathā	Bhārāmalla	—
1024	Nga/40/4	Dhama-pāpa-buddhi Kathā	—	—
1025	Ja/60	Dhūpa-daśamī Kathā	—	—
1026	Nga/47/4/79	Dudhārasa-vrata „	—	—
1027	Ja/53	Harī-vaṁsa Purāna	—	—
1028	Ja/27/1	„ „ „	—	—
1029	Jha/10/3	„ „ „	—	—
1030	Ja/59	Jambū-caritra	—	—
1031	Nga/46/8	Labdhi-vidhāna Kathā	—	—
1032	Ja/6/1	Mahāvira-Purāna	—	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 7  
( 'Purāna-Carita-Kathā )

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	13 0 × 10 3 5 9 10	Inc	Old	There are so many opening pages are not available
P	D, H Poetry	19 7 × 16 5 48 14 21	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2 × 9 0 14 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	24 5 × 10 5 5 8 28	Inc	Good	Its three to twelve pages aae lost
P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 4 16 18	C	Old	
P	D, Skt / H Poetry	27 9 × 17 3 149 14 40	C	Good	
P	D, Skt / H Prose/ Poetry	21 5 × 14 4 41 15 38	Inc	Old	The heading of this book his clouvayed
P	D, H Prose	26 8 × 10 5 8 12 37	Inc	Old	It has no opening and clysing.
P	D, H Poetry	29 4 × 14 1 22 13 38	C	Good 1933 V S	Rajyakumāra canda seems to be copiar
P.	D, H Poetry	19 0 × 17 0 5 15.22	C	Old	
P.	D, H Poetry	30 2 × 15 0 85.12 49	Inc		Opening pages are missing

1	2	3	4	5
1033	Nga/37/9	Nemi-nāthā-Vivāha	Vinaḍilāla	—
1034	Nga/47/4/62	Niskānkṣita-guna Kathā	—	—
1035	Ta/42/46	Niśśalyāṣṭamī     „	Jnānasamudra	—
1036	Nga/41/Jha	Nirḍoṣa-saptamī     „	Jnānasāgara	—
1037	Nga/48,15/8	Pancamī     „	Surendra-Bhūsana	—
1038	Ja/11	Parśva-purāna	Lālā Candulāla	—
1039	Ja/10	„     „	—	—
1040	Nga/41/Cha	Ratnatraya Kathā	—	—
1041	Ta/42/51	„     „	Jnānasāgara	—
1042	Nga/84/15/5	Ratnatraya-vrata Kathā	„	—
1043	Nga/44/16/2	„     „     „	—	—
1044	Ta/42/44	Ravivrata     „	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit Apabhramṣa & Hindi Manuscripts [ 9  
( Purāna-Carita-Kathā )

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	22 0×13 0 6 15 13	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	P, H Poetry	17 5×13 5 10 14 15	C	Good	
P.	D; H Poetry	28.0×13 0 144 13 27	C	Good	
P	D, H Poetry	29 0×14 0 11 12 28	Inc	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19.0 2 33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry	17.5×13 5 5 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	13.0×10 2 11 9 10	Inc	Old	
P	D; H Poetry	32.3×19 0 4 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1045	Nga/48/15/1	Ravi-vrata Kathā	—	—
1046	Ja/34/1	„ „ „	Bhanukīrti	—
1047	Ta/26/2	Rātri Bhojana-tyāga Kathā	Bhārāmalla	—
1048	Ta/42/54	Rohini Kathā	—	—
1049	Nga/48/15/7	„ „	—	—
1050	Nga/41/tha	Rohini-vrata Kathā	—	—
1051	Ja/62	Rota-tīja „	Dyānatarāya	—
1052	Ta/42/56	„ „	—	—
1053	Nga/46/9/1	„ „	—	—
1054	Nga/46/9/2	„ „	—	—
1055	Nga/41	Salūnā „	Vinodilāla	—
1056	Nga/46/3	Śīla-Kathā	Malla-sena ?	—

Catalogue of Sanskrit Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 11  
( Purāna-Carita-Kathā )

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P	D, H Prose/ Poetry	19 0×14 9 8 11 15	C	Old	
P	D, H Poetry	20 3×17 5 33 14 21	C	Good	
P	D, H / Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 9 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 9 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	22 3×13 0 9 8 23	C	Good	
P	D, H Prose	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Prose	18 8×17 6 2 17 23	C		
P	D, H Poetry	18 8×17 6 3 14 17	C		
P	D, H, Poetry	14 5×11 0 19 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	25 6×16 6 27 13 36	C	Old	

1	2	3	4	5
1057	Ta, 28/2	Śīla-vrata Kathā	Bhārāmalla	—
1058	Nga/40/3	Śīlavatī „	—	—
1059	Nga/41/Ja	Solahakārana Kathā	Jnānasāgara	—
1060	Nga/46/6	„ „	„	—
1061	Nga/48/15/2	Ṣoḍaśa-kārana „	„	—
1062	Ta/42/48	Ṣravana-dwādaśī „	„	—
1063	Nga/45/1	Saṁpāla-Caritra	Jivarāja	—
1064	Nga/45/12	„ „	—	—
1065	Ta/42/47	Sugandha-daśamī Kathā	Jnānasagara	—
1066	Nga/48/15/9	„ „ „	—	—
1067	Nga/47/4/78	„ „ „	—	—
1068	Nga/41	Sugāṇḍhadaśamī „	Jnānasāgara	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 13  
( Purāna-Carita-Kathā )

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	19 8×17 2 45 14 23	C	Good.	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 50 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 5 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	23 2×15.0 4 16 15	C	Old	
P.	D; H Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P	D; H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt. Prose	24 7×11 2 40 13 37	C	Good	
P,	D, H Poetry	24 5×11 3 38 15 35	C	Old	
P	D, H. Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P	D, H. Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C		
P	D, H. Poetry	5×11 0 5.13.16	C		

1	2	3	4	5
1069	Nga/40/5	Swarūpa-sena Kathā	—	—
1070	Ta/14/35	Vira Jinañda	—	—
1071	Ja/34/5	Viṣṇu Kumāra „	Vinodilāla	—
1072	Ta/11/1	Arihant -Kevaḷi	Rama-gopālā	—
1073	Ta/6,9	Ārāadhanāsāra	—	—
1074	Nga/38/10	Arāadhanā-pratibodha	—	—
1075	Ja/1	Artha Prakāṣikā	—	—
1076	Ta/9/1	Ātmānuśāsana	Guna-bhadra	—
1077	Ja/38	Banāraṣi-Vilāsa	Banarasidāsa	—
1078	Nga/47/4/67	Bāraha-bhāvanā	—	—
1079	Nga/47/15/6	„ „	—	—
1080	Ta/6/18	„ „	—	—



**Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 15**  
( Dharma-Darśana Acara)

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt prose	14 2×9 0 32 9 22	C	Old	
P	D; H Poetry	15 2×12 8 3 11 15	C	Old	
P	D; H Poetry	19 0×14 9 19 15 16	C	Old	
P	D; Skt Poetry	14 5×11 7 29 9 15	C	Good 1917 V S.	
P	D; Pkt. Poetry	22 2×14 7 8 18 15	C	Old	
P	D, H Poetry	15 7×9 0 7 9 22	C	Good	
P	D, H Prose	33 4×18 9 411 13 33	C	Good	The opening pages are damaged.
P.	D, Skt Prose	19 0×14 5 37 15 13	C	Old 1928 V S.	
P	D, H. Poetry	22 0×13 1 107.12.31	C	Old	
P.	D, H Poetry	20.6×18 0 2.16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	16 5×16 0 2 12 19	C	Old	
P	D, H, Poetry	22 2×14.7 1.20 17	C	Old	

1	2	3	4	5
1081	Nga/44/13/7	Bisa Tirthankaranāmāvali	—	—
1082	Ja/15	Brahma-Vilāsa	Bhagavatīdāsa	—
1083	Nga/45/7	, ,	, ,	—
1084	Ta/42/3	Caitya-Vandanā	—	—
1085	Ta/14/3	, ,	—	—
1086	Nga/45/10	Cāfurmasa Vyākhyā	—	—
1087	Ja/40	Caudaha-guna-sthāna	—	—
1088	Ja/45/3	, ,	—	—
1089	Ja/51/21	Catvāri-dandaka	—	—
1090	Ta/14/42	Caubisa , ,	Daulata-rāma	—
1091	Ja/65/ 1	, ,	, ,	—
1092	Ja/23/1	, ,	, ,	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 17  
( Dharma-Darśana Ācāra )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	32 5 × 8 5 3 6 13	C	Old	
P	D, H Poetry	25 0 × 12 0 170 11 34	C	Good	
P	D, H Poetry	26 8 × 13 9 168 11 33	C	Old 1967 V S.	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 30 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15 2 × 12 8 3 13 18	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	24 7 × 11 3 72 13 38	C	Old	
P	D, H Prose	22 0 × 13 5 63 12 27	C	Old	
P	D; H Prose	15 0 × 11 3 8 10 19	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	32 3 × 20 1 1 13 35	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 2 × 12 8 6 12 20	C	Good	Other subjects are also written in last pages.
P.	D; H. Poetry	11 5 × 10 0 10 10 14	C	Good	
P.	D, H Prose	22.4 × 14.2 18.17.18	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1093	Ja,45/2	Caubisa ṭhānā	—	—
1094	Ja/41	Carcā-Sangraha	—	—
1095	Ja/8	Carcā-Samādhāna	Bhūdharadāsa	—
1096	Ja/30	„ „	—	—
1097	Nga/45/11	Daśāskandha	—	—
1098	Ja/35/6	Dāna-Vāvanī	Dyānatarāya	—
1099	Ja/16/6	„ „	„	—
1100	Nga/37/4	Dāna-sīla-tapa-bhāvanā	—	—
1101	Nga/30/2/1	Devagaman	Samantabhadra	—
1102	Ja/41/1	Digambarā āmnāya	—	—
1103	Ja/12	Dharma-grantha	—	—
1104	Ja/25	„ „	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 19  
( Dharmā-Darśana Ācāra )

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	15 0 × 11 3 5 10 20	C	Old	
P	D; H. Poetry	21 2 × 13 6 148 11 33	C	Old	
P.	D, H Poetry	29 7 × 14 0 83 11 44	C	Good 1893 V S	
P.	D; H Poetry	20 8 × 14 2 157 16 17	C	Good	
P	D; Pkt. Prose/ Poetry	23 4 × 10 3 42 13 40	C	Old 1735 V S.	
P	D, H Poetry	18 3 × 11 5 10 16 15	C	Good	
P	D, H Poetry	23 3 × 19 0 10 15 18	C	Good	
P	D; H. Poetry	20 3 × 11 5 13 9 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 0 × 14 8 14 9 26	C	Old	
P.	D, H. Prose	21 2 × 13 6 2 11 30	C	Old	
P. {	D, H. Poetry	12 9 × 27 4 230 9 19	C	Old	
P.	D; H Prose/ Poetry	22 0 × 14.4 110 20 14	Inc	Old	Its opening 48 pages and last page are missing

1	2	3	4	5
1105	Nga/44/8	Dharmāmrtasāra	—	—
1106	Nga/44 '13, 4	Dharmāṣṭaka	—	—
1107	Ja/9	Dharma-paṭiṣṭhā	Manohara	—
1108	Ja/14	Dharmaratna	—	—
1109	Ja/13	„ „ granthā	—	—
1110	Ja/35/8	Dharma-rahasya	Dyānatarāya	—
1111	Nga/30/1	Dharmasāra Satasai	Śīromanidāsa	—
1112	Ta/61/14	Diavya-Sangraha	Nemicanda	—
1113	Nga/30/2/2	„ „	„	—
1114	Ta/37	„ „	—	—
1115	Ta/4/1	„ „	Nemicaṇḍa	—
1116	Ta/6/1	„ „	„	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	21.0×16 5 60 15.21	C	Good	
P	D; H. Poetry	13.5×8.5 4 6.13		Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×15.0 181.12.48	C	Good	
P.	D, H. Poetry	26.9×13.2 181.9.24	C	Good	
P.	P; H Poetry	26.6×14.0 206 9 24	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11 5 10 16 15	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×14.3 75.13 22	C	Good 1832 V 'S	
P	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 10.23 15	C	Old	
P	D; H. Poetry	19 0×14.8 5 9 26	C	Old	
P	D,H /Skt. Poetry	16 0×12 0 41.10 16	C	Old	Starting three pages are missing so it has opening
P	D,H /Pkt. Prose	23 2×19.5 20 13 32	C	Old 1871 V. S	
P.	D,Pkt./H. Poetry/ Prose	22 2×14.7 49 18-20	C	Old	

1	2	3	4	5
1117	Ja/23	Dravya-Saṃgraha	Nemicaṇḍra	—
1118	Nga/16/2	“ “	“	—
1119	Ta//14/33	Dvādasānuprekṣā	—	—
1120	Ja/51/19	Eryā-patha Sāmāyika	—	—
1121	Nga/38/13	Gatī-Lakṣaṇa	—	—
1122	Ja/49	Gommata-sāra	Nemicaṇḍra	—
1123	Ta/3/46	Gyāna kē ath aṅga	—	—
1124	Nga/28/1	Hanavanta anuprēkṣā	Pandita Bacharāja	—
1125	Nga/48/11/5	Jina-gāyatri trikāla-saṁdhyā	—	—
1126	Ta/24/3	Jina-guna-saṃpatti	—	—
1127	Ja/65/7	Jina-mahimā	—	—
1128	Nga/47/4/77	Jēva-rāsi-kṣamā-vanī	—	—



( Dharma-Darśana Ācāra )

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt / H Prose/ Poetry	22.4×14 2 19 17 15	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	13 0×15 0 6.11 21	C	Good	
P.	D; H Poetry	15.2×12 8 4 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 2 13.35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15.7×9.0 2 9 22	C	Good	
P	D; H Prose	36 5×18 7 454 11 38	C	Good	
P.	D, Pkt / H Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Good	
P.	D; Pkt Poetry	14 6×14 1 7 14 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	16 5×13 2 0 10 13	Inc	Old	
P	D, Skt. Poetry	30 2×20 0 3 37 33	C	Old	
P	D, H. Poetry	11.5×10 0 4 10 14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18 0 3.16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1129	Nga/40/6	Jnāna-pacisi	Banarasidāsa	—
1130	Ja/23/4	Jnānāmava-Vacanika	Subhacaṇḍra	—
1131	Nga/16/3	Karma-prakṛti-grāṇthā	Nemicaṇḍra	—
1132	Ta/17/1	Karma-battisi	—	—
1133	Nga/20,2	Kāratikeyānu preksā	Kārtikeya	—
1134	Ja/51	Laghu-tattvārtha sūtra	—	—
1135	Ta/3/12	Laghu-sāmāyika	—	—
1136	Ta/42/80	“ ”	—	—
1137	Nga/38/9	Leśyā-Swarūpa	—	—
1138	Ta/4/3	Lilāvati-prakṛnaka	Bhāskarācārya	—
1139	Ja/18	Mithyātva Khandana	Padmasāgara	—
1140	Ja/4	Mokṣamārga	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 25  
( Dharma-Darśana Ācāra )

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	14 2×9 0 3.9 22	C	Old	
P.	D,Skt./H Prose/ Poetry	22.4×14.2 40.18.15	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13 0×15 0 18.11 21	C	Good	
P	D; H Poetry	15 5×9.5 10 10 19	C	Old	
P	D, Pkt. Poetry	25 6×15 0 38 15 21	C	Good	
P	D, Skt Prose	32 3×20 1 2 13 34	C	Good	It is also named Arhat pravacana.
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 2 12 36	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt / Pkt. Poetry	15 7×9 0 2 9 22	C	Good	
P	D, Skt Prose / Poetry	19 3×13.0 167.17.16	C	Old	
P	D, H Poetry	23 9×10 8 113 9.32	C	Good	
P.	D,H /Pkt Prose/ Poetry	32 1×15.0 224.12 50	Inc	Good	

1	2	3	4	5
1141	Ja/65/5	Mokṣa-mārga paidi	Banārasidāsa	—
1142	Ta/14/36	” ” ”	”	—
1143	Ta/6/13	Mṛtyu-mahotsava	—	—
1144	Nga/16/1	Mukti Suktāvali	—	—
1145	Ta/18/11	Navakāra-māhātmya	—	—
1146	Ja/27/5	Naya-cakra	Devasena	—
1147	Nga/16/5	” ”	”	—
1148	Ja/41/2	” ” Vacanikā	Hemarāja	—
1149	Nga/28/6	” ” ,	Devasena	Hemarāja
1150	Nga/20/3	Nīrvāna-kāṇḍa	—	—
1151	Nga/20/4	” ”	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1152	Ta/6/22	Panca Vjñśatikā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	11 5×10 0 7.10 14	C	Good	
P.	D. H. Poetry	15.2×12 8 5.11 15	C	Old	
P	D; Pkt Skt / Poetry	22 2×14 7 3 20 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	13 0×15 0 23 11 21	C	Good	Opening two pages are missing.
P.	D, H. Poetry	11 0×11 0 6 12 17	C	Old	
P	D; Skt. Prose	21 5×14 4 12 19 13	C	Old	It is also called Ālāpapaddhati
P.	D, Skt. Prose	13 1×15 0 13 11 21	C	Good	
P.	D, H, poetry	21 2×13 6 17 11 34	C	Old	
P	D, H Poetry	13 4×17 6 26 11 19	C	Good 1962	
P.	D; Pkt Poetry	25 6×15 0 3 15 21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25 6×15 0 3 14 18	C	Good	
P.	D, Pkt. Poetry	22 2×14.7 2.20.20	C	Old	The charts of Mantra and Tantra are in its last pages

1	2	3	4	5
1153	Ja/45/1	Panca-purmṣṭhi	—	—
1154	Ta/6/8	Parmātma-prakāśa	Yogīndradeva	—
1155	Nga/16/6	„ „	„	—
1156	Ja/6/3	Parikṣā-mukha Vacanikā	—	—
1157	Nga/16/4	Praśna-mālā	—	—
1158	Jha/5/2	Pravacana-sāra	Candrakīrti- mahārāja ?	—
1159	Jha/10/1	Pravacanasāra	—	—
1160	Jha/10/2	„ „	Hemarāja	—
1161	Ta/11/2	Prāyaścitta-grantha	Akalaṅka-swāmi	—
1162	Nga/47/4/70	Pāpa-punya-māhātmya	—	—
1163	Nga/47/4/69	Punya-māhātmya	—	—
1164	Ta/12/2	Samyaktva Koumudī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	15.0×11 3 9.10 20	C	Good	It is also called paramappayāsu
P.	D, Apb Poetry	22 2×14 7 25 19 13	C	Old	
P	D, Apb. Poetry	13 0×15 0 29.11 21	C	Good	
P.	D; H. Prose	30.2×15 0 1.11.37	Inc	Good	
P.	D; H Prose	20.3×15 8 57 17 19	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	29 8×14 4 27 14 35	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	26.6×10.5 14 14 39	Inc	Old	
P	D, H Prose/ Poetry	26 8×10 5 28.12 47	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	145 ×11 7 6 11 18	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 9 16 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	20 6×18 0 1.16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	24 2×16 0 44.10 30	C	Good	

1	2	3	4	5
1165	Nga/39/2	Samayasāra-gāthā	—	—
1166	Ja/37	„ nāṭaka	—	—
1167	Nga/42/1	„ „	Banārasīdāsa	—
1168	Nga/42/2	„ „	„	—
1169	Nga/16/8	Samavaśarana	—	—
1170	Nga/16/7	Samud-ghāta	—	—
1171	Ta/11/8	Saṭdarśana	—	—
1172	Ta/6/1	Saṭpāhuda	Kundakunda	—
1173	Nga/16/4	„	„	—
1174	Nga/47/4/55	Saṭleśyābheda	—	—
1175	Ta/14/40	Sāmāyika	—	—
1176	Ta/14/15	„	—	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 31  
( Dharma, Dāśana, Ācāra )

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt./ Pkt. Poetry	15.7×9 0 3 9.22	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	21.0×14 5 81 13 31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.0×8.0 344 6.16	C	Old 1884 V. S.	
P.	D, H. Poetry	15.0×14.0 128.13.19	C	Good 1840 V. S.	
P.	D; H. Poetry	13 0×15 0 40 11.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13 0×15 0 3 11 21	C	Good	
P.	D, H. Poetry	14.5×11 7 2 11 20	C	Good	
P.	D; Pkt Poetry	22 2×14 7 35 19 15	C	Old	
P.	D, Pkt Poetry	13 0×15 0 36.11 21	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20.6×18 0 2.16 18	C	Old	
P.	D, Skt, Poetry	15.2×12 8 2 12.13	C	Old	
P.	D; Pkt/ Skt. Prose/ Poetry	15.2×12 8 25.11 16	C	Old	

1	2	3	4	5
1177	Ta/42/95	Sāmāyikā	—	—
1178	Ja/51/20	„	—	—
1179	Nga/19	„	—	—
1180	Ta/26/3	Sāṣācāra	—	—
1181	Ja/45/4	Sātataiva	—	—
1182	Ja/3	Siddhāntasāra	Nathamala	—
1183	Ja, 65/3	Sindūra-Prakarana ( Sūktimuktavali )	Somaprabhācārya	Harṣakīrti
1184	Ta/9/3	Sindūra-Prakarana	—	—
1185	Nga/31/2/6	„	Somaprabhācārya	Harṣakīrti
1186	Nga/47/4/76	Śīla-Vrata	—	—
1187	Jha/5/1	Śrāvākācāra	Gumāni-Lāla	—
1188	Ta/14/14	Śrāvaka-pratikramana	—	—

**Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 33**  
( Dharma, Darśana, Ācāra )

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Poetry/ Prose	32.3 × 19 0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32 3 × 20 1 3 13 35	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15 8 × 9 0 2 9 22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 3 × 17 5 3 14 21	C	Old	
P.	D; Skt Prose	15 0 × 11 3 7.10 20	C	Old	
P.	D; H Prose	32 1 × 16 0 26 11 47		Good	
P.	D; H. Poetry	11.5 × 10 0 51.10.14	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	19 0 × 14 5 19 15.13	C	Old	Pandita Paramānanda seems to be copier.
P	D; H. Poetry	12 3 × 16.0 21 15 16	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6 × 18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.8 × 14.4 151.12 48	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	15.2 × 12.8 19.11.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1189	Ta/42/94	Śrāvaka-Pratikramana	—	—
1190	Nga/48/6/1	Śrāvaka-Vrata-Sandhyā	—	—
1191	Nga/48/11/4	„ „ „	—	—
1192	Nga/47/4/60	„ „ Vidhāna	—	—
1193	Nga/25/11	Śri-pāla-darśana	—	—
1194	Nga/44/19/1	„ „ „	—	—
1195	Ja/6/2	Sudṛṣṭi Taranginī	—	—
1196	Ta/6/4	Tattwasāra	Devasena	—
1197	Nga/44/12/1	Tatvārtha-Sūtra	Umā Swāmi	—
1198	Nga/46/12/1	Tatvārthā-sūtra	—	—
1199	Nga/47/4/38	„ „	Umā Swāmi	—
1200	Nga/47/4/38	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Pkt Poetry	32.3 × 19 0 4 33 21	C	Good	
P.	D, Skt. Prose	15 7 × 9 2 8 7 18	Inc	Old	
P.	D, Skt. Poetry	16 5 × 13 2 6, 12 16	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 2 16 18	C	Old	
P	P, H Poetry	28 4 × 17 0 2 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	19 5 × 12 5 5 9 25	C	Old	
P	D; H Poetry	30 2 × 15 0 43 15 38	Inc	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 2 × 14 7 4 21 21	C	Good	
P	D; Skt Prose	32 3 × 20.2 10 23 17	Inc	Old	
P.	D, Skt Prose	22 5 × 13 0 24 18 13	C	Old	
P	D, Skt. Prose	20 6 × 18 0 13 16 18	C	Old	
P.	D; Skt Prose	13 5 × 8 5 38 6 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1201	Nga/48/7	Tatvārtha-sūtra	Umāswāmi	—
1202	Ta/14/24	” ”	”	—
1203	Ta/42/17	” ”	”	—
1204	Nga/38/6	” ”	”	—
1205	Ja/23,2	” ”	”	—
1206	Ta/6/6	” ”	”	—
1207	Ja/27/3	” ”	”	—
1208	Nga/25/6	” ”	”	—
1209	Nga/20/1	” ”	”	—
1210	Nga/17/2/1	” ”	”	—
1211	Nga/20/1/2	” ”	”	—
1212	Ja/33/2	” ”	”	—

Catalogue of Sanskrit, Parkrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 37  
( Dharma, Darśana, Ācāra )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	15.5 × 11.6 23 8 20	C	Old	
P	D, Skt. Prose	15.2 × 12.8 19 11.15	C	Old	
P.	D, Skt. Prose	32.3 × 19.0 4 33 39	C	Good	
P	D, Skt Prose	15.8 × 9.0 4 9 22	C	Good	
P	D, H Prose/ Poetry	22.4 × 14.2 57 19 15	C	Old	
P	D, Skt. Prose	22.2 × 14.7 9 20 20	C	Good	
P	D,H /Skt Prose	21.5 × 14.4 56 17 13	Inc	Old	
P	D, Skt. Prose	28.4 × 17.0 9 24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.6 × 15.0 13 15 21	C	Good	
P.	D,Skt /H Prose	25.0 × 17.0 45 20.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	29.0 × 17.8 11.21 17	C	Good	
P.	D, S. Prose	19.7 × 13.0 10.18.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1213	Ja/34/2	Tattvārtha Sūtra	Umāswāmī	—
1214	Ja/27	.. ..	..	—
1215	Nga/31/2/2	.. ..	..	—
1216	Nga/29/3	.. ..	..	—
1217	Ja/2	.. .. Vacanikā	Jayacandra	—
1218	Nga/32	Trepanakriyā	—	—
1219	Ta/5/12	..	—	—
1220	Nga/48/26/1	Ṭṛikāla-Caturviṃśati	—	—
1221	Ta/16/3	Trivarnācāra	Jinasenācārya	—
1222	Ja/5	Trilokasāra	—	—
1223	Ja/1 (Kha)	Vacanikā	—	—
1224	Ta/6/10/Ka	Vairāgya-pacisi	—	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 39  
( Dharma, Darśana, Ācāra )

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Prose	19 0×14 9 18 11.15	C	Old	
P.	D Skt. Prose	20.2×14 5 14.15 18	C	Good 1955 V S	
P	D, Skt Prose	12 3×16 6 3 17 16	C	Good	
P.	D,H /Skt. Prose	13 2×21 0 71.16 13	C	Good	
P.	D, H. Prose	32 2×15 3 272.12 56	Inc	Good	
P	D, H. Prose/ Poetry	25 3×15 0 175 16 18	C	Old	The language of this Mss. is not clear.
P.	D; Skt. Poetry	25 0×15 0 2 26 25	Inc	Old	
P.	D, H poetry	17 5×13 5 3 8 24	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15.5×9.5 28 9 16	C	Old	It has no heading or opening
P	D, H. Prose	31 0×16.2 295 11.59	C	Good	Two pages are damaged.
P	D, H Prose	33 4×18 9 18.13.33	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 2.18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1225	Ja/27/4	Yoga	Śubhacandra	—
1226	Nga/31/2/5	Yogi-rāsā	Jinadāsa	—
1227	Nga/44/19/9	Akṣara Battisi	Bhagavatīdāsa	—
1228	Nga/47/4/52	„ Vavani	—	—
1229	Nga/33/7	Anyamata Śloka	—	—
1230	Nga/47/4/44	Aṭhāi-Rāsā	Vinayakīrti	—
1231	Ta/14/32	„ „	—	—
1232	Ta/3/49	Bāraha-māsā	Vinodīlāla	—
1233	Nga/47/4/50	„ „	—	—
1234	Ja/40/2	Caṇdra-śataka	—	—
1235	Nga/46/2/1	Careṣ-śataka	Dyānatarāya	—
1236	Nga/46/2/2	Caubola-pacisi	„	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Prose	21 5×14.4 50 22 16	C	Old	
P	D, H Poetry	12 3×16 6 5 13 14	C	Good	
P	D, H Poetry	19 5×12.5 10 8 21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 4 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 8×18 2 10 18 21	Inc	Old	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	15 2×12 8 4 13 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 0×13 5 16 13 34	C	Old	
P	D, H Poetry	27 0×17 0 12 13 28	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17 0 4 23 28	C	Good	

1	2	3	4	5
1237	Ja/16/7	Dasa-bola-pacisi	Dyānatarāya	—
1238	Ja/35/7	„ „ „	—	—
1239	Nga/46/2/3	Daśa-thānaCaubīsi	Dyānatarāya	—
1240	Ja/35/1	Dhāla-gana	—	—
1241	Ja/16/3	„ „	—	—
1242	Ta/6/17	Dohā	Rūpa-canda	—
1243	Ja/26	Dohāvalī	—	—
1244	Ja/27/2	„	—	—
1245	Ja/28	„	—	—
1246	Nga/31/4/10	Dwīpancāśatikā	Banarsīdāsa	—
1247	Nga/44/11	Fuṣakara-Kāvya	—	—
1248	Ta/9/2	Jnāna-Sūryodaya Nāṣaka	Vādicandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	23.3×19 0 6 15.18	C	Good	
P.	D, H. Poetry	18.3×11 5 7 16 15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17 0 4 23.28	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18 2×11 5 10 16 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	23.3×19 0 9.15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14 7 7.18.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 0×15 0 4.18.15	C	Old	
P	D, H Poetry	21 5×14.4 16.18.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	21 0×14 7 4.18 15	C	Good	
P.	D, H. Poetry	15 3×12.4 13 25 20	C	Old	Opening pages are missing.
P.	D,Skt /H Prose/ Poetry	13 0×10.0 20.10.15	Inc	Old	
P.	D; Skt/ Poetry	19.0×14.5 25.15.17	C	Old 1928 V. S.	

1	2	3	4	5
1249	Ta/35/7	Jaina-rāso	—	—
1250	Ta/3/44	Jakari	Bhūdhataḍāsa	—
1251	Ta/11/34	Jogi-Rāso	—	—
1252	Ta/3/55	Kavitta	—	—
1253	Ta/3/54	„	—	—
1254	Ia/40/3	„	Trilokācanda	—
1255	Nga/41/Ka	Kipana-Pacisi	—	—
1256	Ta/42/55	Māla-Pacisi	—	—
1257	Nga/44/20	Nāmamālā	Nandaḍāsa	—
1258	Ja/65/4	Navaratna-Kavitta	—	—
1259	Nga/31/3/9	Nemi-Caṇḍrikā	—	—
1260	Nga/41/ba	„	—	—

Catalogue of Sanskrit Parkrit, Apabhram̐sa & Hindi Manuscripts [ 45  
( Rasa-Chand-Alankāra, Kāvya )

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt. Skt Poetry	15 5 × 12.0 22 10.19	Inc	Good	
P.	D, H. Poetry	22.5 × 15 0 2.12 31	C	Good	
P.	D, H. Poetry	15 2 × 12 8 4 14 21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5 × 15 0 2 12 31	C	Good	
P.	P; H Poetry	22 5 × 15 0 2.12 31	C	Good	
P	D; H. Poetry	22 0 × 13 5 2 12.31	C	Old	
P.	D, H. Poetry	14 5 × 11.0 7.13 16	C	Old	
P.	D, H. Poetry	32 3 × 19.0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 7 × 11.2 26.17 16	C	Old 1806 V. S.	It is also called Mānamanjari
P.	D, H Poetry	11.5 × 10 0 5 10.14	C	Good	
P	D, H. Poetry	18 2 × 13 5 168.14 16	C	Old	The mss. is damaged and very old.
P.	D; H. Poetry	14 5 × 11 0 6.13.16	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1261	Nga/44/10/5	Nemīcandrikā	—	—
1262	Nga/37/8	Nemināthā Bārahamāsā	Vinodilāla	—
1263	Ja, 16/4	„ Vivāha	„	—
1264	Ta/3/47	„ „	„	—
1265	Ja/35	„ „	„	—
1266	Nga/47/4/73	Pakhavārā	Tulasī	—
1267	Ta/3/39	Paramārtha Jakarī	Śrīrāma	—
1268	Nga/46/1	Piṅgala	Śrīdhara	—
1269	Nga/47/4, 51	Rājula Pacisi	—	—
1270	Nga/44/10/4	„ „	Vinodilāla	—
1271	Nga/44, 9/2	„ „	„	—
1272	Nga/44/Pa	„ „	„	—



6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	18 5×13 1 15 13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13 0×22 0 6 16 12	C	Old	
P.	D; H Poetry	23.8×19 0 5 15 18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Good	
P.	D, H. Poetry	18 2×11 5 6 16 14	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	22 5×15.0 2 12 31	C	Old	
P,	D, H Poetry	30 0×15 8 16 10 37	C	Old	
P	D; H. Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	18.5×13 0 6.13 22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11 0×10 5 11 12 12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14 5×11.0 9.13.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1273	Nga/44/19/5	Rājula Pacisi	—	—
1274	Nga/44/19/2	Ristā	—	—
1275	Nga/47/4/81	„ „	—	—
1276	Ja/65/8	„	—	—
1277	Ja/40/1	Rūpacanda-Śataka	Rūpacanda	—
1278	Ja/58	Satasaiyā	Vṛndāvana	—
1279	Nga/45/5	Samkīṭadhikāra	—	—
1280	Ta/3/2	Sammeda Śikhara Māhātmya	—	—
1281	Nga/45/8	„ „ „	—	—
1282	Nga/45/6	„ „ „	Lohācārya	—
1283	Ja/46	Śikhara Māhātmya	Lālacanda	—
1284	Nga/46/5/2	„ „	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apibhramṣa & Hindi Manuscripts [ 49  
( Rasa-Chanda-Alankāra, Kāvya )

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	19.5×12 5 13.10 19	C	Old	
P	D, H Poetry	19.5×12 5 2 9 5	C	Old	
P	D, H. Poetry	20.6×18 0 2 16 18	C	Old 1853 V S.	
P.	D; H Poetry	11 5×10 0 12 10 14	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 0×13 5 6 12 35	C	Old	
P.	D; H Poetry	21.3×16.4 131 14 16	C	Old 1953 V S.	
P	D, H Poetry	23 5×9 0 31.20 58	C	Old 1702 V S	
P.	D, H. Poetry	22 3×15.0 3.9.21	Inc	Old	
P	D; H Poetry	24 0×12 2 11 9 25	C	Good	
P	D, H Poetry	23 7×15 0 103 9 23	Inc	Old	
P	D; H. Poetry	19 3×10.6 72.10.28	C	Old 1892 V. S.	All the pages are Damaged.
P.	D; H. Prose	23 1×15.1 70 18 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1285	Nga/47/4/45	Solaha-kāṇana-śāśā	Sakalakīrti	—
1286	Ta/42/53	Śruta-pancamī-śāśā	—	—
1287	Nga/46/5/1	Sri-pāla-darśana	—	—
1288	Ta/10	Subhāṣitāvalī	—	—
1289	Nga/47/4/49	Bāhubalī	—	—
1290	Ta/6/15	Viveka Jakaṛī	Rūpa-canda	—
1291	Nga/46/2/4	Vyavahāra-pacisī	—	—
1292	Nga/26/11	Bhaktāmara-stotra- mañtra	Mānatuṅga	—
1293	Nga/26/3	„ „	„	—
1294	Nga//26/9	Caubisa tirthaṅkara mañtra	—	—
1295	Ja/51/15	Gāyatrī mañtra	—	—
1296	Nga/43/3/1	Ghaṇṭā-karna-mañtra	„	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	20.6 × 18 0 3 10.18	C	Old	
P	D, H. Poetry	32.3 × 19 0 3 33 37	C	Good	
P	D; H Poetry	23.1 × 15.1 2 14.14	Inc	Good	
P	D, Skt. Poetry	15 0 × 13 0 178 6 14	C	Old	
P	D; H Poetry	20.6 × 18 0 7.16.18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	22.2 × 14.7 14.19 16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27 0 × 17 0 4 23 28	C	Good	
P.	D, H./ skt. Prose/ Poetry	29 0 × 17 0 20.24.17	C	Good	Opening pages are missing.
P.	D, H./ Skt Prose/ Poetry	20.0 × 16 4 49.13 22	C	Good	It has fourty eight maṅṭra charts.
P	D,H /Skt Poetry	29.0 × 17.0 6 24 17	C	Good	
P	D; Skt. Prose	32.3 × 20.1 3 13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.0 × 13.0 1.9.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1297	Nga/43/6/7	Ghañṭā-karna-mantra	—	—
1298	Ta/5/6	Homa-Vidhi	—	—
1299	Nga/13,4	Jaina-gāyatri	—	—
1300	Nga/13/3	Jaina-Saṁkalpa	—	—
1301	Nga/26/7	Jinendra-stotra	—	—
1302	Nga/48/11/7	Kāmadā-Yāntṛa	—	—
1303	Nga/48/6/3	Kriyā-kānda-maṅtrā	—	—
1304	Nga/26/8	Mahālakṣmī-ārādhanā	—	—
1305	Ja/51/18	Maṅtra	—	—
1306	Ta/11/4	„	—	—
1307	Nga/43/2	„ Saṁgraha	—	—
1308	Nga/48/11/6	Maṅtra-Yāntṛa	Rāmacandra	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 53  
( Mantia, Karmakān la ) ,

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose	17 3 × 13 0 2 13 12	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	25 0 × 15 0 7 25 18	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 3 × 18 3 2 20 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 3 × 18 3 1 21 20	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	29 0 × 17 0 4 24 17	C	Good	
P	D; H Poetry	16 5 × 13 2 2 12 16	C̄	Old	
P	D, Skt poetry/ Prose	15 7 × 9 2 10 7 18	C	Old	It is so damage that it cannot read and write.
P	D, H Skt Poetry	29 0 × 17 0 2 24 17	C	Good	
P	D; Skt Prose	32 3 × 20 1 2 13 35	C	Good	It has mantra charts also
P	D, Skt. Prose	14 5 × 11 7 9 11 22	C	Good	
P.	D, Skt, Prose	16.4 × 13 4 10 13 16	Inc	Old	
P.	D, Skt. Prose	16 5 × 13 2 1.11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1309	Ta/3/51	Namokāra-maṅtrā	Vinodilāla	—
1310	Ta/42/84	Padmāvatī-daṇḍaka	—	—
1311	Nga/43/4/2	„ Kalpa	Mallīṣeṇa	—
1312	Nga/43/6/2	„ „	—	—
1313	Ta/42/85	„ Kavaca	—	—
1314	Ta/42/104	„ „	—	—
1315	Nga/48/11/2	„ „	—	—
1316	Nga/26/12	„ „	—	—
1317	Nga/48/6/2	„ „	Rāmacaṇḍra	—
1318	Ta/30/2	„ Maṅtra	—	—
1319	Nga/43/6/12	„ „	—	—
1320	Ta/42/83	„ Paṭala	—	—



6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	22 5 × 15 0 1 12 31	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	16 3 × 14 0 11 10 20	C	Old	
P.	D, Skt Prose	17 3 × 13 0 7 13 12	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry/ Prose	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	16 5 × 13 2 2 12 17	C	Old	
P,	D,H /Skt. Prose	29 0 × 17 0 4 24 17	C	Good	
P	D; Skt Poetry/ Prose	15 7 × 9.2 6 7 18	C	Old	
P	D;H /Skt Poetry	20 1 × 15 6 3 13 20	C	Old	
P.	D, Skt Prose/ Poetry	17 3 × 13 0 3 13 13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32 3 × 19 0 2 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1321	Ta/16/6	Pañdraha-yañtra-vidhi	—	—
1322	Nga/26/2	Pārśwanāthā-stotra- mantra	—	—
1323	Nga/43/6/4	” ”	—	—
1324	Nga/26/3	” ”	—	—
1325	Nga/48/20	Prāta-gāyatrī	Harayaśa-mīśra	—
1326	Nga/13/6	Sakali-karana vidhāna	—	—
1327	Nga/45/4	Sāmāyika-vidhi	—	—
1328	Nga/26/14	Śāntinātha-mantra	—	—
1329	Nga/43/6/6	Saraswatī-mantrā	—	—
1330	Nga/47/5/7	” ”	—	—
1331	Nga/38/14	” ”	—	—
1332	Nga/26/4	” stotra	—	—

Catalogue of Sanskrit, Parkrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 57  
( Mantra, Karmakānda )

6	7	8	9	10	11
P	D, H Prose	15 5 × 9 5 8 10 25	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	29 0 × 17 0 2 24 16	C	Good	
P.	D, Skt Prose	17 3 × 13 0 3 13 12	C	Old	
P.	D, skt. Poetry	29 0 × 17 0 3 14 16	C	Good	
P	P, Skt Prose	16 0 × 10 3 37 7 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 4 × 18 7 5 21.17	C	Good	
P	D, H. Prose	25 0 × 10 0 17 15 42	C	Old	
P	D,H /Skt Prose	29 0 × 17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, Skt Prose	17 3 × 13.0 3 13 12	C	Old	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	16 5 × 16 0 2 12 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 7 × 9 00 6 9 22	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry/ Prose	29 0 × 17 0 2 24 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1333	Nga/44/19/8	Solaha-kārana-maṅtra	--	—
1334	Ta/3/42	Sūtaka vidhi	—	--
1335	Ta/4/11	Tantra maṅt ā Saṁgarah	—	—
1336	Nga/20/15	Trivarnācāra-mantra	—	—
1337	Ta/39/18	Vaśikarana-adhikāra	—	—
1338	Ta/39/20	Vaśyādhikāra	--	—
1339	Nga/43/8	Vrata-mantra	—	—
1340	Nga/43/6/11	Visarjana „	—	—
1341	Nga/48/16	Vivāha-vidhi	—	—
1342	Ta/2/2	Yantra-maṅtra-saṁgraha	—	—
1343	Ta/2/3	„ „ „	—	—
1344	Ta/2/1	Aṣṭāṅga hrdaya	Vāgbhaṭṭa	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit Apabhraṃśi & Hindi Manuscripts | 59  
( Mantra, Karmakāṇḍa )

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	19 5×12 5 2 7 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Old	
P.	D; Skt Prose	11 5×15 5 161 21 16	Inc	Old	
P	D,H /Skt Prose	29 0×17 0 13 24 17	C'	Good	
P	D, Skt Prose	20 0×12 0 2 17 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 16 1	C	Old	
P	D, Skt Poetry Prose	15 5×11 6 2 10 21	C	Old	
P	D, Skt Prose	17 3×13 0 2 12 12	C	Old	
P	D, Skt Prose	13 3×10 2 21 8 14	Inc	Old	1 to 3 and 6 of 7 pages are missing
P	D, H Prose	20 5×17 1 139 25 22	C	Old	The mantras & tantras charts are available in the mss.
P	D; H Prose	16 5×21 0 52 17 23	C	Old	There are so many yantra & mantrā charts in the mss.
P	D; Skt Poetry/ Prose	28.6×18 5 183.22 24	C	Good	

1	2	3	4	5
1345	Ta/1/2	Cikitsā-śāstra	—	—
1346	Ta/1/1	„ sara	—	—
1347	Ta/4,2	Jwara-hara-yantṛa	—	—
1348	Ta/4/6	Kuṭṭaka-karana chāyā vyavahāra	Bhāskarācārya	—
1349	Ta/4/1	Madana-vinoda- nighaṇṭu	Madanapāla	—
1350	Ja/33	Nādi-Prakāśa	—	—
1351	Ta/2/1/1	Nidāna	Mādhavācārya	—
1352	Ta/4/9/2	Panca-daśa Vidhāna	—	—
1353	Ta/1/3	Rāma-vinoda	—	—
1354	Ta/4/9	Rūpa-mangala	—	—
1355	Ta/4/8	Śāradā-tilaka satika	—	—
1356	Ta/2/1/2	Sārangadhara Saṁhitā	Sārangadhara	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Prose/ Poetry	27 0 × 11 9 120 13 49	Inc	Old	Closing pages are missing.
P	D, H Prose/ Poetry	19 5 × 14 7 59 14 29	C	Good	
P	D, Skt Prose	19 3 × 13 0 2 14.17	C	Good	
P.	D,Skt /H Prose/ Poetry	19 3 × 13 0 18 19 19	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	19 3 × 13 0 183 14 17	C	Good 1912 V S	
P	D, H. Prose	19 7 × 13 0 16 15 11	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	28 6 × 18 5 64 22 16	C	Old	
P,	D,Skt /H Prose Poetry	13 5 × 11 5 25 15 15	C	Old	
P	D, H Poetry/ Prose	26 0 × 16 3 158 21 14	C	Good 1906 V S	
P	D,Skt /H Prose	15 8 × 13 3 74 13 18	C	Good	
P	D, Skt / H Poetry	15 8 × 13 3 163 13 18	C	Good 1676 V S	
P.	D; Skt Poetry	28 6 × 18 5 61 23.22	C	Old	

1	2	3	4	5
1357	Ta/1/4	Vaidya-bhūṣana	Nayanasukha	—
1358	Ta/4/10	„ manotsava	Baṁśidhara Mīśra	—
1359	Ta/1/4/1	Yoga-Cintāmani	Harṣakīrti	—
1360	Ta/2/4	Yūnānī-Cikitsā	—	—
1361	Ta/42/99	Ācārya-bhakti	—	—
1362	Ta/3/50	Ādinātha-stuti	Vinodīlāla	—
1363	Nga/47/4/28	„ ārtī	—	—
1364	Nga/30/2/5	„ stotrā	—	—
1365	Nga/47/4/53	Ādityanātha ārtī	—	—
1366	Ja/51/24	Ambikā-devī stotra	—	—
1367	Nga/26/5	Anka-garbha-ṣadāracakra	Devanandī	—
1368	Nga/47/4/72	Ārati	Nirmala	—



( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	24 0 × 16 0 11 34 20	C	Old 1794 V S	
P	D, Skt Poetry	15 8 × 13 3 81 13.18	C	Good	
P	D, Skt Prose	24 0 × 16 0 134 22 22	C	Old 1794 V S	
P	D, H Prose	20 5 × 17.5 98 23 22	C	Old	
P	P, Skt / Pkt Poetry	32 3 × 19 0 2.33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5 × 15 0 3 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	19 0 × 14 8 1 9 26	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 3 16 18	C	Old	
P.	D, Skt Prose	32 3 × 20 0 1 13 35	C	Good 1959 V. S.	
P	D, Skt Poetry	29 0 × 17 0 4 24 17	C	Good	
P	D; H. Poetry	20 6 × 18 0 2 16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1369	Ta/18/3	Āratī	—	—
1370	Ta/18/10	„	Dyānatarāya	—
1371	Ta/3/4	„	—	—
1372	Nga/44/17	„ Saṃgraha	—	—
1373	Ta/39/2	Aṣṭaka	—	—
1374	Ta/6/9	Bhajana	—	—
1375	Nga/12/1	Bhajanāvalī	Ajita-Dāsa	—
1376	Nga/12/2	„	„	—
1377	Nga/12/3	„	„	—
1378	Nga/16/9	„	—	—
1379	Ja/31	Bhajana-Saṃgraha	Ajita-Dāsa	—
1380	Nga/13/5	Bhaktāmara Stotra	Mānatunga	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 65  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P.	D H Poetry	11 0×4 0 2 13 19	C	Old	
P	D, H Poetry	11 0×11 0 2 12 17	C	Old	
P.	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 32	C	Good	
P.	D, H Poetry	20.0×16.0 4 13 21	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 19 20	C	Old	
P	D; H Poetry	22.2×17 7 2 20 17	C	Old	
P	D, H poetry	25 0×22 0 445 15 24	C	Old	
P.	D, H Poetry	21 0×26.0 25 14 26	C	Good	
P.	D, H. Poetry	27 4×22 0 42 22 26	C	Old	
P.	D, H Poetry	13 0×15 0 5 16.21	C	Good	
P.	D, H, Poetry	20 5×12 7 12 16 16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	24.2×18.6 5 21 18	C	Good	

1	2	3	4	5
1381	Nga/26/1/1	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅga	—
1382	Nga/28/2	” ”	”	—
1383	Nga/38/1	” ”	”	—
1384	Ta/3/10	” ”	”	—
1385	Ta/42/63	” ”	”	—
1386	Ta/4/2	” ”	”	—
1387	Nga/46/12/2	” ”	”	—
1388	Nga/45/2	” ”	”	Hemarāja
1389	Nga/47/4/8	” ”	”	—
1390	Nga/48/21/1	” ”	”	—
1391	Ta/9/5	” ”	”	Sivacandra
1392	Ta/14/26	” ”	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Poetry	29 0 × 17 0 5 21.16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 6 × 14 1 6 13 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 8 × 9 0 7 9 22	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	22.5 × 15 0 5 12 18	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	23 2 × 19 5 7 10 21	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 5 × 13 0 7 18 13	C	Old	
P	D, Skt /H Poetry	25 2 × 12 1 34 9 34	C	Good 1849 V S	
P	D, Skt Poetry	20 6 × 18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	16 5 × 12 5 10 12.12	C	Old	
P	D, Skt, Poetry/ Prose	19.0 × 14 5 15 19 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 2 × 12 8 8 11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1393	Nga/20,5	Bhaktāmāsa stotra	Mānatungā	
1394	Nga/47/4/15	„ „	—	—
1395	Ta/18,13	„ „	—	—
1396	Ta/31	„ bhāṣā	Hemrāja	—
1397	Nga/41/2/5	„ Stotra	„	—
1398	Ta/6,3	„ „	„	—
1399	Ja/35,4	„ „	„	—
1400	Nga/20/6	„ „	„	—
1401	Nga/25/1	„ „	„	—
1402	Ja/52	„ Vacanikā	Mānatunga	—
1403	Nga/47	„ Stotra Vacanikā	Mānatunga	—
1404	Nga/48/6/7	„ „	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 69  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	25 6×15.0 7 14.16	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18.0 6 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	11 0×11 0 9 12 17	C	Old	
P.	D, H Poetry	19 5×16 1 6 12.25	C	Old	
P.	D, H Poetry	14 5×11 0 12 8 15	C	Good	
P	D, H. Poetry	22 2×14 7 5 19 20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18 3×11.5 8 16 15	C	Good	
P;	D, H Poetry	25 6×15 0 7 16 16	C	Good	
P	D, H Poetry/	28 4×17.0 4 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	27 5×12 5 29 11 38	C	Good,	
† P	D; H Poetry	20 1×16 3 47.10 27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15 7×9 2 25.7.18	Inc	Very Old	

1	2	3	4	5
1405	Ta/30/4	Bhaktāmara ṣikā	Jinasāgara	—
1406	Nga/44/13/5	„ stotra	Mānatanga	—
1407	Ta/14/16	Bhakti samgraha	—	—
1408	Nga/13/7	Bhairavāṣṭaka	—	—
1409	Ta/42/78	„	—	—
1410	Ta/19/1	Bhairava stotrā	—	—
1411	Ta/9/9	Bhūpāla caturavimśati stotrā	Śivacandra	—
1412	Nga/47/4/11	Bhūpāla caubisi	—	—
1413	Ta/4/6	„ „	Bhūpalakavi	—
1414	Ta/42/67	„ „	„	—
1415	Nga/38/5	„ stotra	„	—
1416	Nga/26/1/6	„ caubisi stotra	„	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts | 71  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20 1 × 15.6 7 13.20	C	Good	
P	D, H /Skt. Poetry	13.5 × 8.5 18 6.13	C	Good	
P	D; Skt. Pkt Poetry	15 2 × 12 8 51 11 15	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	24 2 × 18 7 1.21 23	C	Good	
P.	P; Skt Poetry	32 3 × 19.0 1.33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	10 3 × 9 5 6 7.8	C	Good	
P	D, Skt Prose	19 0 × 14 5 11 20 19	C	Old 1927 V S.	
P	D, Skt Poetry	20 6 × 18 0 5 17.18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 2 × 19.5 6 11 20	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	32 3 × 19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15 7 × 9 0 6 9 22	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	29.0 × 17.8 3.21.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1417	Nga/25/5	Bhūpāla stotrā	—	—
1418	Nga/47/4/12	„ caul isi bhāṣā	—	—
1419	Nga/47/4/57	Bisa-viraha-māna-ārati	—	—
1420	Nga/44/10/8	Brahma-lakṣana	—	—
1421	Ta/42/87	Caityālaya stotrā	—	—
1422	Ta/42/10/7	Cakreśwari „	—	—
1423	Nga/43/1	„ „	—	—
1424	Nga/43/3/5	Candra-prabha „	—	—
1425	Nga/48/6/5	„ „	—	—
1426	Ta/42/98	Cāritra bhakti	—	—
1427	Nga/48/8/2	Caturvīṃśatī stotra	—	—
1428	Nga/43/6/8	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	28 4×17 0 2 24 17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18 0 3 17.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	18.5×13.1 2 13.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 1 33 37	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3×19 1 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	14 9×11 2 4 8 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	17 0×13.0 3 9 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15.7×9 2 4 7 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	
* P	D, Skt, Poetry	9 6×6 0 6 4.8	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	17.3×13.0 2 13.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1429	Nga/43/3/2	Caturvīṃśatī Stotra	—	
1430	Nga/44/10/2	„ Jina Stotra	—	
1431	Ta/18/9	Caubisa tirthankara pada	—	
1432	Ta/42/69	Cintāmani Stotra	—	
1433	Ja/61	„ Pārśwanātha Stotra	Dyānatarāya	
1434	Nga/44/10/25	„ „ „ „	—	
1435	Nga/47/4/66	Caubisa Jina Ārti	Bhairondāsa	
1436	Nga/47/4/74	„ „ „	—	
1437	Ja/23/3	„ Dañ laka Vinati	Daulatarāma	
1438	Nga/47/4/32	Darśana Ināna Caritra Ārti	Dyānatarāya	
1439	Ta/6/5	Darśana-Stuti	—	
1440	Ta/42/105	Darśanāṣṭaka	—	

6	7	8	9	10 <sup>c</sup>	11
P	D Skt Poetry	17 0 × 13 0 3 9 21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18 5 × 13 1 1 11 28	C	Good	
P	D, H Poetry	11 0 × 11 0 11 12 16	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt /H Poetry	22 0 × 13 0 2 13 11	C	Old	
P	D; Skt Poetry	18 5 × 13 1 4 12 22	C	Old	
P	D, H poetry	20 6 × 18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 4 × 14 2 6 18 15	C	Old	
P	D, H / Skt Poetry/ Prose	20 6 × 18 0 7 16 18	C	Old	
* P	D, H, Poetry	22 2 × 14 7 2 21 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1441	Ta/42/89	Deva-stavana	—	—
1442	Nga/38/4	Ekibhāva-stotra	Vādirāja	—
1443	Nga/26/1/4	„ „	„	—
1444	Ta/42/66	„ „	„	—
1445	Ta/4/5	„ „	„	—
1446	Nga/44,10/10	„ „	„	—
1447	Nga/47/4/10	„ „	„	—
1448	Nga/44/15	„ „	—	—
1449	Nga/48/21/3	„ „	„	—
1450	Ta/9/7	„ „	—	Sivacandra
1451	Nga/47/4/12	„ „	„	—
1452	Nga/25/2	„ „	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramṣa & Hindi Manuscripts [ 77  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 7 × 9 0 5 9 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0 × 17 8 3 21 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19.0 2 33 37	C	Good	
P	P, Skt. Poetry	23 2 × 19 5 6 11 20	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	18 5 × 13 1 4 13 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6 × 18 0 4 17 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 6 × 9 2 19 7 19	Inc	Old	It has no opening and closing.
P	D, Skt Poetry	16 5 × 12.5 7 12 12	C	Old	
P.	D, Skt Prose	19 0 × 14 5 12 19 19	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	28 4 × 17.0 4 24, 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1453	Nga/26/6	Ganadhara Stuti	—	—
1454	Nga/30/2/4	Gautama-Swāmi Stotrā	—	—
1455	Nga/48/8/1	Ghaṇṭā-Karna „	—	—
1456	Nga/44/10/6	Gurubhakti	Bhūdhara dāsa	—
1457	Ta/14/31	„	—	—
1458	Ta/3/9	Guruvinatī	Bhūdharadāsa	—
1459	Nga/45/3	Gunāvalī	—	—
1460	Ta/9/4	Gunāṣṭaka	Parmānanda	—
1461	Nga/39	Jaina-pada-Saṃgraha	—	—
1462	Nga/44/10/26	Jinacariya Namaskāra	—	—
1463	Ja/38/3	Jinadeva Stuti	—	—
1464	Ta/42/7	Jinapañjara Stotra	—	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 79  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	29 0×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 0×14 8 1 9 26	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	9 6×6 0 4 4 8	C	Old	
P	D, H Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 2×12 8 4 12 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	22 5×15 0 1 12 36	C	Good	
P	D; H Poetry	25 0×11 0 18 15 39	C	Old	
P,	D, H Poetry	19 0×14 5 5 14 17	C	Old	
P	D, H Poetry/	11 0×17 5 183 9 23	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, Skt Poetry	18 4×13 1 3 13 22	C	Old	
P	D, H Poetry	22 0×13 0 2.14 32	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19 0	C	Good	

1	2	3	4	5
1465	Ta/18/16	Jinapanjara Stotra	—	—
1466	Nga/48/18/1	„ „	—	—
1467	Ta/42/70	Jinaraj sâ Stavana	—	—
1468	Ja/50	Jinasahasranâma	Śikharacanda	—
1469	Ta/3/16	Jinendra darśana Stotra	—	—
1470	Ta/3/38	Jina-darśana	Nawala	—
1471	Ta/3/17	„ „	—	—
1472	Nga/26/13	Jwālāmālinī Stotra	Candraprabha	—
1473	Nga/43/3/6	„ „	—	—
1474	Nga/43/6/3	„ „	—	—
1475	Nga/48/2	„ „	—	—
1476	Nga/48/6/8	„ „	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 81  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	11.0×11 0 4 12 17	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	40 0×11 4 1.52 16	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	
P	D; H Poetry	32 2×20 2 90 13 37	C	Good 1957 V S	Copied by Bhagawānadatta.
P	D; Skt Poetry	22 5×15 0 1 12 36	C	Good	
P	D, H. Poetry	22 5×15 0 3.12 31	C	Old	
P.	D; H Poetry	22 5×15.0 2 12.36	C	Good	
P,	D,H Skt Poetry	29 0×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	17 0×13 0 4 9 21	Inc	Old	
P	D; Skt Prose	17.3×13 0 2 12 11	C	Old	
P	D; Skt. Prose	12.8×9.5 6 10.12	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15 7×9 2 4 7.18	C	Old	Damaged.

1	2	3	4	5
1477	Nga/48/5	Jwālā-mālīnī Stotra	—	—
1478	Ta/42/90	„ „	—	—
1479	Nga/26/1/3	Kalyāna-mandira Stotra	Kumudacandra	—
1480	Nga/47/4/7	„ „ „	„	—
1481	Nga/48/21/2	„ „ „	„	—
1482	Ta/4/3	„ „ „	„	—
1483	Ta/42/64	„ „ „	„	—
1484	Nga/38/2	„ „ „	„	—
1485	Ta/9/6	„ „ „	„	Pandit Śivacañdra
1486	Nga/44/10/1	Kalyānamandir Stotra	Banārasidāsa	—
1487	Ta/18/12	„ „ „	„	—
1488	Nga/25/3	„ „ „	„	—

Catalogue of Sanskrit. Paṛkrit Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 83 ]  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	14 3 × 11 2 8 7 18	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0 × 17 8 5 21 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6 × 18 0 6 16 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	16 5 × 12 5 10 12 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 2 × 19 5 7 11 20	C	Old	
P	D, Skt poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 7 × 9 0 8 9 22	C	Good	
P.	D, Skt Poetry/ Prose	19 0 × 14 5 16 20 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	18 5 × 13 0 5 11 28	C	Good	
P.	D, H, Poetry	11 0 × 11 0 8 12 17		Old	
P.	D, H Poetry	28 4 × 17 0 3 24 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1489	Nga/47/4/16	Kalyāṇa-mandira	—	—
1490	Nga/44/13/3	„ „	—	—
1491	Nga/43/6/7	Kṣetrapāla Stotra	—	—
1492	Ta/42/106	„ „	—	—
1493	Nga/48/4	„ „	—	—
1494	Ta/42/103	„ „	—	—
1495	Nga/26/1/8	Laghusahasranāma	—	—
1496	Nga/47/4/5	„ „ „	—	—
1497	Ta/18/8	„ „ „	—	—
1498	Nga/41/Na	„ „ „	—	—
1499	Nga/13/8	Lakṣmī Stotra	—	—
1500	Ta/42/76	„ „ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20.6×18 0 5 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	13.5×8 5 12.6 13	C	Old	
P.	D, Skt. Prose/ Poetry	17 3×13 0 5 13 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	P; Skt Poetry	16.4×10 0 3.7 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 5 21 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	11 0×11,0 5 12 13	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	14 5×11 0 3 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	24 3×18 0 2 21 20	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 1 33,37	C	Good	

1	2	3	4	5
1501	Nga/26/1	Lakṣmi-Stotra	—	—
1502	Nga/44/4	Mahāvira-Āratī	—	—
1503	Ta/30/8	Maṇdaloddhāra Stotra	—	—
1504	Ta/3/41	Mangala Āratī	Dyānatarāya	—
1505	Nga/43/6/5	Manibhadra Stotra	—	—
1506	Ta/42,77	Maṅgalāṣṭaka	—	—
1507	Ta/39/23	Mangala-jīna-darśana	Rūpacandra	—
1508	Ta/3/7	Muniśwara Vinatī	Bhūddharadāsa	—
1509	Nga/26/1/7	Namaskāra	Śrīpāla	—
1510	Nga/47/4/4	„	„	—
1511	Ta/42/102	Nandiśwara-Bhakti	—	—
1512	Nga/47/2	„ „	—	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhram̐sa & Hindi Manuscripts [ 87  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	29 0 × 17 7 1 24 16	C	Good	
P	D, H Poetry	21 0 × 16 0 3 13 14	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 1 × 15 0 2 13 20	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 5 × 15 0 2 12 31	C	Old	
P	D, Skt H Prose Poetry	17 0 × 13 0 5 13 11	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 0 × 12 0 1 24 18	Inc	Old	
P,	D, H Poetry	22 5 × 15 0 2 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	29 0 × 17 8 3 21 17	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 3 16 18	C	Old	
✱ P.	D, Skt. Poetry	32 3 × 19.0 3 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Pkt Poetry/ Prose	20 2 × 15 8 8.10 27	C	Old	

1	2	3	4	5
1513	Ta/6/12	Naraka Vinati	Gunasāgara	—
1514	Nga/48/14	Nārāyana-lakṣmi-stotra	—	—
1515	Ta/42/74	Nava-graha-stotra	—	—
1516	Ta/42/39	„ „	—	—
1517	Ta/18/14	Navakāra-dhāla	—	—
1518	Nga/42/6/9	„ Stotra	—	—
1519	Ta/42/79	Navakāra-mantrā-Stotra	—	—
1520	Nga/47/4/65	Neminātha Āratī	Bhairondāsa	—
1521	Nga/48/6/4	Neminātha Stotra	—	—
1522	Nga/38/11	Nijāmani	Brahma Jina-dāsa	—
1523	Ta/42/100	Nirvāna Bhakti	—	—
1524	Ta/6/11	„ Kānda	Bhagavatidāsa	—

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	22 2×14 7 4 18 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	13 8×12 0 29 10 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; H Poetry	11 0×11 0 4 12 17	C	Old	
P	D, Skt Prose	17 3×13 0 3 13 13	C	Old	
P	D, Skt poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 1 16 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	15 7×9 2 3 7 18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D, H Poetry	15 7×9 0 7 9 22	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2.33 37	C	Good	
P.)	D, H Poetry	22.2×14 7 3 18 15	C	Old	

1	2	3	4	5
1525	Nga/44/19/6	Nirvāna-Kānda	Bhagavatīdāsa	—
1526	Nga/47/4/35	” ”	”	—
1527	Nga/47/5/11	” ”	”	—
1528	Ja/35/3	” ”	”	—
1529	Nga/25/7	” ”	”	—
1530	Nga/26/1/11	” ”	”	—
1531	Ta/6/21	” ”	—	—
1532	Nga/48/26/6	” ”	—	—
1533	Nga/26/1/10	” ”	—	—
1534	Nga/33/5	” ”	—	—
1535	Nga/47/4/34	” ”	—	—
1536	Ta/47/5/10	” ”	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	19 5×12 5 5 10 27	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	16 5×16 0 4 12 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	18 2×11 5 3 16 15	C	Good	
P.	D, H. Poetry	28 4×17 0 2 24.17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 2 26 26	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 3 18 21	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	16 5×13 5 3 8 24	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	29 0×17 8 2 23 16	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 7×15.7 3 18 15	C	Good	
१- P	D, Pkt, Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	16 5×16 0 3 12 19	C	Old	

Shri Devakuma Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1537	Ta/44/20	Nirvāna Kānda	—	—
1538	Ta/3/35	„ „	Bhaiyā Bhagavatīdāsa	—
1539	Nga/44/13/1	„ „	—	—
1540	Nga/26/1/12	Omkārastuti	—	—
1541	Nga/47/4/61	Pada	—	—
1542	Nga/47/5/8	„	—	—
1543	Ta/18/15	„	Kusalsuri	—
1544	Ta/14/38	„	—	—
1545	Ta/30/3	„	—	—
1546	Ta/28/2	„	Amicanda	—
1547	Ta/27/2	„	Jinadāsa	—
1548	Nga/44/13/9	„	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 93  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	Starting three pages are missing.
P	D, H. Poetry	22 5 × 15 0 5 12 31	C	Old	
P	D, Skt Poetry	13 5 × 8 5 4.6 13	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	29 0 × 17 8 2 23 17	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6 × 18.0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	16 5 × 16 0 1 12 19	C	Old	
P	D; H Poetry	11 0 × 11 0 4 12 17	C	Old	
P,	D, H. Poetry	15 2 × 12 8 2 12 21	C	Old	
P	D, H Poetry	20 1 × 15 6 2 13 20	C	Old	
P	D; H Poetry	19 8 × 17 2 1 14 18	C	Good 1948 V S	
P	D, H Poetry	19.7 × 16 5 2 14 21	C	Good 1948 V S	Copied by Amicanda
P.	D; H. Poetry	13 5 × 8 5 3.6.13	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1549	Nga/48/23/6	Pada	—	—
1550	Nga/48/4	„	—	—
1551	Nga/44/19/7	„	—	—
1552	Nga/37/2	„	—	—
1553	Ta/3/84	„	—	—
1554	Ja/65/6	„	Jagarāma	—
1555	Nga/37/13	„	Ramcandra	—
1556	Ja/65	„	Jagarāma	—
1557	Ja/65/2	„	—	—
1558	Nga/37/12	„	Vrndaavana	—
1559	Ja/29	„	—	—
1560	Nga/31/1	Padasaṅgraha	—	—



**Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 95  
( Stotra )**

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	16 8×12 8 1 11 12	C	Old	
P	D, H Poetry	13 5×12 0 2 8 12	C	Good	
P.	D, H Poetry	19 5×12 5 3 9 23	Inc	Old	
P.	D; H Poetry	17 4×11 0 5 7 17	C	Good	
P	D; H. Poetry	22 5×15.0 6 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	11 5×10 0 53 10 14	C	Good	
P	D, H poetry	22 0×13 0 8 15 13	C	Old	
P.	D, H Poetry	11 5×10 0 59 10 14	C	Good	
P.	D; H Poetry	11 5×10 0 4 10 14	C	Good	
P.	D; H Poetry	22 0×13 0 4 14 13	C	Old	
P.	D; H Poetry	21.1×14 0 3 15 15	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; H. Poetry	14 8×14.8 82 13 15	C	Good	

1	2	3	4	5
1561	Ja/21/1	Pada saṃgraha	—	—
1562	Ja/21/2	Pada vinatī	—	—
1563	Nga/25/12	Pada-hajūrē	Dyānatarāya	—
1564	Nga/37/10	Pada holf	—	—
1565	Ja/51/14	Padmāvatī aṣ to ttara śatanāma	—	—
1566	Nga/43/6/1	Padmāvatī stotra	—	—
1567	Nga/48/11/3	„ „	—	—
1568	Ta/39/5	„ „	—	—
1569	Ta/42/82	„ „	—	—
1570	Ta/30/5	„ „	—	—
1571	Ja/51/17	„ „	—	—
1572	Nga/25/15	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20 0×15 3 12 11 14	Inc	Old	Closing is missing.
P	D, H Poetry	22 8×18 2 31 16 13	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D; H Poetry	28 4×17 0 0 24 17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13 0 4 15 13	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 3×13 0 10 13 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	16 5×13 2 8 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 5 19 20	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 1×15 6 2 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 1 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	28 4×17 0 22 24 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1573	Nga/25/9	Padmāvatī stotra	—	—
1574	Ja/51/12	„ sahastranāma	—	—
1575	Nga/48/11/1	„ „	—	—
1576	Nga/46/13	„ „	—	—
1577	Ta/42/36	„ „	—	—
1578	Ta/39/15	„ „	Sevārāma	—
1579	Nga/44/12/2	„ vinatī	—	—
1580	Nga/48/1/4	„ „	—	—
1581	Nga/44/17	Padmanandīpanca- vīṃśatikā	Padmanandī	—
1582	Nga/43/3/3	Pāṅco-namaskāra stotra	—	—
1583	Ta/16/4	„ „	—	—
1584	Nga/44/10/11	Parameṣṭhī stotra	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Āpabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 99  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	28 4×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×20 1 7 13 35	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	16 5×13 2 14.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13 0×11 6 1 7 10	Inc	Old	Only first page is available.
P	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	20 0×12 0 14 22 17	C	Old 1827 V. S	
P.	D, Skt / H Poetry	32 3×20 2 3 23 17	C	Old	
P	D; H Poetry	14 0×11 7 8 10 15	C	Old	
P.	D, H. Prose	11 0×10 2 12 11 9	Inc	Good	
P	D, Skt. Poetry	17 0×13 0 5 9 19	C	Old	
P.	D, Skt Prose	15 5×9 5 13 8 17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18 5×13 1 2.13.22	C	Good	

1	2	3	4	5
1585	Ta/6/2	Paramānanda stotra	—	—
1586	Nga/44/10/15	„ „	—	—
1587	Ta/42, 86	Pārśwanātha stotra	—	—
1888	Ta/42, 74	„ „	—	—
1589	Nga/48/6/6	„ „	—	—
1590	Nga/43/3/4	„ „	—	—
1591	Nga/30/2/3	„ „	—	—
1592	Nga/41/2/8	„ „	Dyānatarāya	—
1593	Ta/3/53	„ stotra	Vinodilāla	—
1594	Ta/42/92	„ stotra	—	—
1595	Ta/18/5	Pārśwanāthāṣṭaka	—	—
1596	Ta/30/1	„ „	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 101  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	22.2×14.7 2 18 20	C	Old	
P	D; Skt Poetry	18 5×13 1 3.13 72	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15 7×9 2 3 7 18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D, Skt Poetry	17 0×13 0 2 9 18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	19 0×14 8 3 9 20	C	Old	
P,	D,Skt /H Poetry	14 5×11 0 3 9 17	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D; Ski Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	11 0×11 0 3 13.19	C	Old	
P.	D,H /Skt. Poetry	20 1×15 6 3.13.20	C	Old	Starting one to eleven Pages are missing.

1	2	3	4	5
1597	Nga/47/4/56	Pāśwajina-ārati	Bhairadāsa	—
1598	Nga/48/20	Pratyagīrā-siddhi- mantra-stotra	—	—
1599	Ta/42/81	R̥ṣi-mandala Stotra	—	—
1600	Nga/31/1/7	” ”	—	—
1601	Nga/47/4/17	” ”	—	—
1602	Nga/26/10	” ”	—	—
1603	Nga/43/5	” ”	—	—
1604	Nga/31/2/3	Sādhū-Vandanā	Banārasidāsa	—
1605	Ta/42/16	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1606	Nga/26/1/13	” ” ”	”	—
1607	Ta/19/2	” ” ”	”	—
1608	Ta/14/25	” ” stavana	Āśidhara sūri	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 103  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	11
P	D, Skt Poetry/ Prose	17 9×18 5 24 7 22	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	12 3×16 6 7 16 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	15 4×12 3 26 13 15	Inc	Old	Opening first page is missing.
P	D, H Poetry	12 3×16 6 4 18 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 4 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 6 23 17	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	10 3×9 5 54 7 9	C	Good	Sixteen pages have no folio and paging
P.	D, Skt Poetry	15 2×12 8 14 11 15	C	Old	

1	2	3	4	5
1609	Ta/18/7	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1610	Nga/31/2/8	, , ,	—	—
1611	Ta/29	” ”	—	—
1612	Ta/42/68	Samantā-bhadra-stotra	—	—
1613	Ta/3/5	Sammeda-śikhara-stuti	—	—
1614	Ta/39/16	Sammedācala stotra	—	—
1615	Nga/48/13	Saṁdhyā	—	—
1616	Nga/47/4/58	Śantijine āratī	—	—
1617	Ja/29/1	Śanti-stuti	—	—
1618	Ta/42/73	Śāntināthāṣṭaka	—	—
1619	Ta/3/11	Śāradāṣṭaka	Banārsidāsa	—
1620	Nga/44/10/20	Śāradā stūti	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	11 0 × 11 0 26 10 10	Inc	Old 1842 V S	
P	D, H Poetry	12 3 × 16 6 9 16 16	Inc	Old	Last śataka is missing.
	D, H Prose	19 5 × 15 0 50 12 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 4 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5 × 15 0 1 5 35	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20 0 × 12 0 3 21 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	16 0 × 10 2 11 6 19	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	21 1 × 14 0 2 12 14	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5 × 15 0 2 12 35	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	18 5 × 13.1 5 13 22	C	Old	

1	2	3	4	5
1621	Ta/42/18	Saraswati stuti	Malaya Kirti	—
1622	Ta/42/75	„ stotra	—	—
1623	Nga/48/9	„ „	—	—
1624	Ta/40	Śāstra Vinati	—	—
1625	Ta/42/96	Siddha-bhakti	—	—
1626	Ta/18,17	Sitā-Vinati	—	—
1627	Nga/41/2/7	Śrīpāladarśana	—	—
1628	Nga/37/1	Śrīpāla Vinati	Srīpālarāja	—
1629	Ta/42/97	Śruta-bhakti	—	—
1630	Ja/16/1	Stotra	—	—
1631	Nga/47/4/31	Sthāpanā Ārati	—	—
1632	Ja/32	Stuti	Haridāsa	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 107  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 7 × 11 7 6 14 12	C	Old	
P	D, H Poetry	13 7 × 9 7 3 11 10	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	11 0 × 11 0 13 9 8	C	Good	
P	D, H poetry	14 5 × 11 0 5 9 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	9 8 × 15 7 5 13 11	C	Good	
P.	D, Skt / Pkt Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	23 3 × 19 0 4 15 18	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 6 × 18 0 2 16.18	C	Old	
P.)	D; H Poetry	19 5 × 15 0 5 15 20	C	Good 1965 V S	

1	2	3	4	5
1633	Ta/42/88	Suprabhâta stotra	—	
1634	Ja/51/16	Sûrya-sahasra-nâme	—	—
1635	Nga/47/4/26	Swayambhû stotra	—	—
1636	Ta/42/10	„ „	—	—
1637	Ta/3/30	„ „	—	—
1638	Ta/14/23	„ „	—	—
1639	Ja/29/4	Vinati	—	—
1640	Nga/25/8	„	—	—
1641	Nga/37/11	„	Vr̥ndavana	—
1642	Ja/45/5	„	Bhûdharadâsa	—
1643	Ta/3/40	„	—	—
1644	Ta/42/29	„	Jr̥ânasâgara	—

Catalogue of Sanskrit Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 109  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 20 1 3 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6 × 18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P	P, Skt Poetry	22 5 × 15 0 3 12 31	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 2 × 12 8 20 11 15	C	Old	
P.	D, H Poetry	21 1 × 14 0 16 13 13	C	Good	
P	D, H Poetry	28 4 × 17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	22 0 × 13 0 5 15 14	C	Old	
P	D, H Poetry	15 0 × 11 3 3 10 23	C	Old	
P.	D, H Poetry	22 5 × 15 0 1 12 31	C	Old	
P.	D, H Poetry	32 3 × 19 0 2.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1645	Nga/48/1/3	Vinatī	—	—
1646	Ta/30/6	„	Harṣakīrti	—
1647	Nga/48/23/5	„	—	—
1648	Nga/44/19/3	„	—	—
1649	Nga/44/12/3	„	—	—
1650	Nga/47/4/75	„	Bhūḍharadāsa	—
1651	Nga/44/10/7	,	—	—
1652	Ta/3/8	Vinatī-tribhuvana swāmī	—	—
1653	Nga/44/10/9	Viṣāpahāra stotra	Dhananjaya Kavi	—
1654	Nga/38/3	„ „	,	—
1655	Nga/26/1/5	„ „	„	—
1656	Nga, 48/21/4	„ „	„	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 111  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	11 7×14 0 5 10.15	C	Old	
P	D, H Poetry	20 1×15 6 2 13 20	C	Good	
P	D, H Poetry	16 8×12 8 3 11 12	C	Old	
P.	D, H Poetry	19 5×12 5 3 10 19	C	Old	
P	D; H Poetry	32 3×20 4 4 23 17	C	Old	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Good	
P,	D, H Poetry	22 5×15.0 2 12 31	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 5 13 22	C	Good	
P	D, Skl Poetry	15 8×9 0 6 9 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 4 21.17	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	16.5×12 5 8 12 12	C	Old	

1	2	3	4	5
1657	Ta/9/8	Viṣāpahāra stotra	Dhananjaya Kavi	—
1658	Ta/4/4	„ „	„	—
1659	Ta/42/65	„ „	„	—
1660	Nga/47/4/9	„ „	„	—
1661	Nga/44/10/3	„ „	—	—
1662	Nga/47/4/14	„ „	—	—
1663	Nga/44/12/4	„ „	—	—
1664	Nga/44/13/2	„ „	—	—
1665	Nga/25/4	„ „	—	—
1666	Ja/35/5	„ „	—	—
1667	Ja/16/4	„ „	—	—
1668	Nga/47/4/6	Vrhat-sahastra-nāma	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 113  
( Stotra )

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	19 0×14 5 13 19 20	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	23 2×19 5 6 11 20	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	20 6×18 0 5 16 17	C	Old	
P	D; H Poetry	12 5×13 1 4.12 23	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18.0 5 16.18	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×20 2 4 23 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	13 5×8 5 13 6 13	C	Old	
P	D, H Poetry	28 4×17 0 4 24 17	C	Good	
P.	D, H Poetry	18 3×11 5 5 16 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	23 3×19 0 4 15 18	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20.6×18 0 13 16.14	C	Old	

1	2	3	4	5
1669	Nga/47/8/3	Vrhat-svayambhū	Samaṇta-bhadra	—
1670	Nga/43/70	„ „ stotra	„	—
1671	Nga/26/1/9	„ „ „		—
1672	Ta/42/101	Yoga bhakti	—	—
1673	Nga/30/2/7	Abhiṣēka-vidhi	—	—
1674	Nga/47/5/1	Ādinātha-pūjā	—	—
1675	Nga/41/Ta	„ „	—	—
1676	Nga/41/dha	Ādityavāra-pūjā	—	—
1677	Nga/27/3	Ādityavāra-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1678	Ta/39/22	Ākrtrima-caityālaya-Ārati	—	—
1679	Ta/3/22	„ „ Arhya	—	—
1680	Nga/26/2/8	„ „ pūjā	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts | 115  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt / H. Poetry/ Prose	20.8 × 16.3 18 15 18	C	Old	
P.	D, Skt / H Poetry/ Prose	17 6 × 13 0 22 12 21	C	Good	
P	D; Skt Poetry	29 0 × 17 8 13 23 17	C	Good	
P.	D, Pkt / Skt Poetry	32.3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 0 × 14 8 1 9 26	Inc	Old	It has no clc
P	D, Skt Poetry	16.5 × 16 0 4 12 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	14 5 × 11 0 6 13 16	C	Old	
P	D, Skt /H Poetry	14 5 × 11 0 2 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	27 8 × 17 6 15 10 31	C	Good	
P	D; Pkt Poetry	20 0 × 12 0 1 24 18	C	Old	
P	D, Skt, Poetry	22 5 × 15 0 1 12 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30.3 × 17 5 2 16 16	C	Good	

1	2	3	4	5
1681	Ta/42/30	Ananta-jina-pūjā	—	
1682	Ta/42/49	Anantā-pūjā-vīdhī	—	--
1683	Ja/51/22	„ „ „	—	—
1684	Nga/44/10/12	Arī-hanta-dakṣiṇī	—	—
1685	Ta/39/6	Aṣṭabījakṣara-pūjā	—	—
1686	Ta/14/28	Aṣṭāṇhikā-pūjā	—	—
1687	Ta/35/6	„ „	—	—
1688	Ta/42/26	„ „	—	—
1689	Nga/47/8,15	„ „	—	—
1690	Ta/3/33	„ „	Dyānatarāya	—
1691	Nga/47/4/24	Athāī-pūjā	„	—
1692	Nga/27/5	Bāhubali-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 2.33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry/ Prose	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Prose	32 3 × 20 1 2 13 35	C	Good	
P.	D, H. Poetry	18 5 × 13 1 4 13 32	Inc	Good	
P	D; Skt. Prose/ Poetry	20 0 × 12 2 4.19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 2 × 12 8 12 12 18	C	Old	
P.	D, Skt / Pkt Poetry	15 5 × 12 6 11 10 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20 8 × 16 3 22 15 17	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	22 5 × 15 0 7 12 31	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 8 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	18 5 × 30.5 6 21.20	C	Good	

1	2	3	4	5
1693	Nga/47/8/7	Bāhubali-muni-pūjā	—	—
1694	Nga/47/4/53	Bhairo-rāga	—	—
1695	Ja/38/1	Bisā-Tirthankara arghya	—	—
1696	Ta/3/25	Bisa-Virahamāne-pūjā	—	—
1697	Nga/48/12/2	„ „ „	—	—
1698	Ta/14/5	„ „ „	—	—
1699	Nga/48/23/1	„ „ „	—	—
1700	Nga/47/4/21	„ „ „	—	—
1701	Nga/41/2/2	Bisa-Vidyamāna-pūjā	—	—
1702	Nga/26/2/11	Bisa-Tirthankara-jakari	—	—
1703	Nga/47/3/80	Bisa-Virahamāna ārati	—	—
1704	Nga/48/26/5	Bisa-Tirthankara-Jayamālā	—	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 119  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	20 8×16.3 4 16 21	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 1 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	22 0×13 1 9 12 27	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	22 5×15.0 4 12 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	13 5×12 0 4 8 12	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15 2×12.8 3 13 16	C	Old	
P	D, Skt poetry	16 8×12 8 4 11 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 4 9 17	C	Good	
P	D; H Poetry	30 3×17 5 2 16 16	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 1 16.18	C	Old	
P	D, H. Poetry	16.5×13 5 2 8 24	C	Old	

1	2	3	4	5
1705	Nga/47/5/4	Candra-prabha-pūjā	—	—
1706	Nga/17/1/1	, „ „	Ajīta-dāsa	—
1707	Ta/42/15	Cāretra-pūjā	—	—
1708	Ta/14/11	„ „	Narendrasena	—
1709	Nga/47/4/30	„ „	„	—
1710	Ta/39/7	Caturaviśati-yakṣini-pūjā	—	—
1711	Ta/39/8	„ mātṛkā pūjā	—	—
1712	Ta/39/9	Caturaviśati-tīrthāṅkara-pūjā	—	—
1713	Nga/33/1	„ „ „	—	—
1714	Nga/33/2	„ „ „	—	—
1715	Ja/34/4	„ „ „	—	—
1716	Nga/47/7	„ „ „	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts | 121  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	16 5 × 16 0 5.12 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	25 0 × 15 0 3 19 21	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32.3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15 2 × 12.8 9 12 16	C	Old	
P.	P; Skt Poetry	20.6 × 18 0 0 16.18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20.0 × 12 2 4.20 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0 × 12 2 4.20.20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0 × 12 2 4 20 20	C	Good	
P	D,H /Skt Poetry	23 4 × 15.0 21 19 14	C	Good	Its two opening pages are damaged. Copied by Rāmcandra
P	D, H Poetry	22 5 × 13 4 4 16 12	C	Good	
P	D, H Poetry	19 0 × 14 9 3 15 20	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	18.0 × 14 1 100 13 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1717	Ta/14/13	Caturaviṁśati-jina Jayamālā	—	—
1718	Nga/41/na	Caubisa-tirthankara-pūjā	—	—
1719	Nga/48/3	„ „ „	—	—
1720	Ja/55	„ „ „	—	—
1721	Ta/13	„ „ „	Caudhari Rāmacanda	—
1722	Nga/46/10	Caubisi pūjā	—	—
1723	Nga/38/8	Caturaviṁśati tirthankara pada	—	—
1724	Ta/5/4	Cintāmani-pūjā	Śambhūnātha	—
1725	Ta/24/6	„ pārśwanātha pūjā	Jnānasāgar	—
1726	Nga/47/8/16	„ „ „	—	—
1727	Ta/39/1	„ „ „	—	—
1728	Ta/42/38	„ „ „	—	—

**Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 123**  
**( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )**

6	7	8	9	10	11
P	D;H /Pkt Poetry	15.2×12 8 3 11 18	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 5 13 16	C	Old	
P.	D, H Poetry	40 9×15 8 2 40 15	C	-	
P.	D; H Poetry	35 0×18 0 71 11.30	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 0×13 3 113 10 22	C	Good	
P.	D, H Poetry	19 0×17.8 4 13.20	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 7×9 0 3 9 22	C	Good	
P,	D, Skt Poetry	25 0×15 0 10 24 16	C	Good 1793 V S.	
P	D, Skt Poetry	30 2×20 0 16 37 33	C	Old 1819 V, S	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 3 6 16 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 2 19 20	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1729	Ta/39/13	Cintāmanī Jayamāla	—	—
1730	Nga/48/26/2	Darśana-pāṭha	—	—
1731	Nga/44,13,8	„ „	—	—
1732	Ta/35/1	„ „	—	—
1733	Ta/42/61	„ pūjā	—	—
1734	Ta/42/13	„ „	—	—
1735	Nga/47/4/28	„ „	Narendrasena	—
1736	Ta/3/29	Daśalākṣaṇī „	Dyānatarāya	—
1737	Nga/47/4/25	„ „	„	—
1738	Nga/44/10/14	„ „	Brahma Jinadāsa	—
1739	Ta/14//8	„ „	—	—
1740	Ta/42/59	„ „	Dyānatarāya	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhram̐sa & Hindi Manuscripts [ 125  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D, Pkt / H./Skt. Prose	20 0 × 12.0 1 23.19	C	1825 V. S	
P.	D, Skt Poetry	16 5 × 13 5 2 8 24	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	13 5 × 8.5 4 6 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	15.5 × 12 6 2 10 16	C	Old	
P	D, H. Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32.3 × 00 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6 × 18 0 6 16 18	C	Old	
P.	D, Skt /H Poetry	22 5 × 15 0 7 12 31	C	Good	
P.	D, Skt /H Poetry	20 6 × 18 0 15 16 18	C	Old	
P	D, Skt / H. Poetry/ Prose	18 5 × 31 1 4 13 22	C	Good	
P.	D, Skt, Poetry	15 2 × 12 8 16 12 12	C	Old	
P.	D, H Poetry	32 3 × 19 0 2.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1741	Ta/42/9	Daśa-lākṣaṇī-pūjā	—	—
1742	Ta/35/5	„ „ „	—	—
1743	Ta/38/1	„ „ jayamālā	—	—
1744	Ta/24/2	„ „ Vratodyapana	—	—
1745	Ta/39/10	Digpālārcana	—	—
1746	Nga/26/2/2	Deva-Pūjā	Ājādhara Sūri	—
1747	Nga/25/14	„ „	—	—
1748	Nga/14/4	„ „	—	—
1749	Ja/45	„ „	—	—
1750	Nga/27/2	„ „	—	—
1751	Nga/26/2/13	„ „	—	—
1752	Nga/41/2/1	„ „	—	—



6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15 5 × 12 6 3 10 15	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	14 5 × 12 5 15 8 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	30 2 × 20 0 5 37 33	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	20 0 × 12 2 3 19 20	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	30 3 × 17 5 5 16 16	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	28 4 × 17 0 6 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8 × 26 0 13 14 25	C	Good	
P	D, H / Skt Poetry/ Prose	15 0 × 11 3 36 11 33	C	Old	
P	D, Skt Poetry	26 0 × 17 7 8 20 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30 3 × 17 5 2 19 13	Inc	Good	
P.	D, Pkt / Skt. Poetry	14.5 × 0.11 17.9.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1753	Ta/3,18	Devapūjā	—	—
1754	Nga/44/2	„	—	—
1755	Nga/47/4/18	„	Dyānatarāya	—
1756	Nga/44/3	„	—	—
1757	Ta/14/4	„	—	—
1758	Ta/16,1	„	—	—
1759	Ta/18/2	„	—	—
1760	Nga/48/19	„	—	—
1761	Nga/48/23/1	„	—	—
1762	Ta/35/2	„	—	—
1763	Nga/44/10/16	„	—	—
1764	Nga/48/12,1	„	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

131

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	22 5×15 0 5 12 36	C	Good	
P.	D, Pkt / Skt Poetry/ Prose	20 5×16 0 9 15 17	Inc	Old	
P	D, Skt /H Poetry	20 6×18 0 12 16 18	C	Old	
P.	D; H / Skt Poetry/ Prose	20 0×16 0 26 14 19	C	Old	
P.	D, Pkt / Skt. Poetry	15 2×12 8 10 12 16	Inc	Old	
P.	D, Skt Poetry/ Prose	15 5×9.5 11 6.18	Inc	Old	
P	D, Pkt / Skt Poetry	11 0×11 0 13 13 19	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	16 1×10 1 8 8 26	C	Old	
P.	D, Skt /H Poetry	16 7×1 9 12 10 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 5×12 6 7 10 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 5 13.22	C	Old	
P.	D, Pkt Poetry	13 5×12 0 17 8 13	C	Good	

1	2	3	4	5
1765	Ta/42,2	Deva-pūjā	—	—
1766	Ta/3/19	Deva-jayamālā	—	—
1767	Ta/5/10	Deva-pratiṣṭhā Vidyā	—	—
1768	Nga/48/1/2	Dharanendra-pūjā	—	—
1769	Ta/39/3	„ „	—	—
1770	Ja/51/11	„ „	—	—
1771	Ta/3/36	Garbha Kalyānaka	Rūpacanda	—
1772	Ja/57	Gīranāra-pūjā	—	—
1773	Nga/48/24	„ „	—	—
1774	Nga/47/8/11	„ „	—	—
1775	Ta/3/21	Gurū-jaya-mālā	—	—
1776	Nga/117	Guru--pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt / Skt Poetry	32 3 × 19 0 3 30 37	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 5 × 15 0 2 12 31	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 0 × 15 0 1 27 20	C	Good	
P	D, Skt Prose	13 7 × 12 0 89 10 13	C	Old	
P.	P, Skt Poetry	20 0 × 12 2 4 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 20 1 1 13.35	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5 × 15 0 2 12 31	C	Old	
P.	D, H Poetry	20 8 × 16 4 10 15 21	C	Good	
P	D, H Poetry	16 2 × 9,5 8 6 21	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8 × 16 3 6 15 17	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5 × 15 0 2 12 32	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	20 8 × 26 0 7 14 25	C	Good	

1	2	3	4	5
1777	Nga/41/2/4	Guru-pūjā	Vinodilāla	—
1778	Nga/47/9/42	„ „	—	—
1779	Ta/14/39	„ „	—	—
1780	Ta/42/8	„ „	Brahma Jinadāsa	—
1781	Nga/44/10/19	„ „	—	—
1782	Ta/18/6	„ „	—	—
1783	Nga/26/2/5	„ „	Brahma Jinadāsa	—
1784	Ta/3/27	„ „	Hemarāja	—
1785	Nga/48/1/5	Homa-Vidhi	—	—
1786	Ta/24/4	Jala-yātrā-Vidhi	—	—
1787	Ta/5/7	Jinayajna Vidhāna	—	—
1788	Nga/25/10	Jinavara Vinati	—	—

**Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ '133**  
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D;Pkt /H. Poetry	14 5×11 0 6.9 17	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20.6×18 0 4 16.18	C	Old	
P.	D; Skt / Pkt Poetry	15 2×12 8 3 14 19 —	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Old	
P	D, Skt Poetry	11 0×11 0 4 13 19 —	C	Old	
P	D; Skt Poetry	30 3×17 5 3 16 16	C	Good	
P,	D, H. Poetry	22 5×15 0 5 12 31	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	14 0×11 7 12 10 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	30 2×20 0 1 37 33	C	Old	
P.	D; Skt Poetry/ Prose	25 0×15.0 68 21 17	Inc	Good	
P.	D; H Poetry	28.4×17 0 2 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1789	Nga/47/5/2	Jina-guna-sampati-pūjā	—	
1790	Ta/3/26/1	Jina-vāni-pūjā	Brahma Jinadāsa	—
1791	Nga/47/8/13	Jambū-swami-pūjā	—	—
1792	Ja/63	„ „	—	—
1793	Nga/44/10/22	Jaya-mālikā-pūjā	—	—
1794	Nga/47/4/29	Jnāna-pūjā	—	—
1795	Ta/14/10	„ „	Narendrasena	—
1796	Ta/42/14	„ „	—	—
1797	Nga/17/1/3	Jwālā-mālīni-pūjā	—	—
1798	Nga/43/6/10	„ „	—	—
1799	Nga/47/8/17	„ „	—	—
1800	Ta/42/40	Jyeṣṭha-jinavara-pūjā	—	—



6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	16 5 × 16 0 6 12 19	C	Old	
P	D; Skt./H Poetry	22 5 × 15 0 6 12 31	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20 8 × 16 3 8 15.17	C	Old	
P.	D; Skt /H Poetry	16.7 × 12.8 11 8.22	C	Good	
P	D; Skt Poetry	18 5 × 13 1 2 13 22	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	20 6 × 18 0 5 16 18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15 2 × 12 8 7 12 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 2 33 17	C	Good	
P.	D; H Poetry	25.0 × 15 0 5 20 21	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	17 3 × 13 0 7 13 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	20 8 × 16 3 2 15 17	Inc	Old	
P	D; H / Skt Poetry	32 3 × 19 0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1801	Nga/48/26/4	Kalaśābhīṣeka	—	—
1802	Nga/41/Ka	Kalikundā-pūjā	—	—
1803	Nga/47/4/40	„ „	—	—
1804	Ta/42/22	„ „	—	—
1805	Nga/44/10/18	„ pārśwanātha--pūjā	—	—
1806	Ta/14/12	„ „ „	—	—
1807	Nga/26/2/6,7	„ “ „	—	—
1808	Ta/24/1	Kanjikā-vratodyāpana	Pāṇḍita Nāṇḍarāma	—
1809	Nga/14/3	Karma-dahan-pūjā	—	—
1810	Ta/42/24	Kṣmā-vanī „	—	—
1811	Ta/30/9	Kṣetrapāla „	Viśwasena	—
1812	Ta/41/28	„ „	Subhacandra	—

**Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 13 ]**  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	16 5 × 13 5 5 8 24	C	Good	Opening pages are missing .
P	D, Skt Poetry	14 5 × 11 0 2 13 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 6 × 18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32.3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	18 5 × 13 1 4 13 22	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15 2 × 12.8 4 12 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	30 3 × 17 5 5 16 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30 2 × 20 0 2 37 33	C	Old	
P	D, skt Poetry	20 8 × 0 0 23 14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 1 × 15 6 26 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 0 33 37	C	Good	



**Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 139**  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt Poetry	20 0 × 12 0 4 19 20	Inc	Old	
P	D, Skt. Poetry	20 1 × 15 6 3 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 6 33 37	C	Good	
P.	D, Skt /H, Poetry	17.3 × 13 0 3 13 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	14 5 × 11 0 15 13 16	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32 3 × 20 1 3 13 35	C	Good	
P.	D, Skt poetry	12 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 5 × 15 9 7 13 19	C	Good 1928 V S	
P	D, H Poetry	20 5 × 15 9 12 13 29	C	Good	
P	D, H Poetry	21 1 × 14 0 1 12 13	C	Old	
P	D; H Poetry	16 5 × 13.5 5 8 24	C	Good	
P.)	D, Skt Prose	32.3 × 19.0 1 33 37	C -	Good	

1	2	3	4	5
1825	Nga/31/2/7	Mokṣa-paḍi	Banarasidāsa	—
1826	Nga/29/2	Nandīśwara-pūjā	—	—
1827	Nga/28/5	„ „	—	—
1828	Nga/44/10/23	„ dvīpa-pūjā	—	—
1829	Nga/47/8/8	Navagraha-pūjā	—	—
1830	Nga/27/1	„ „	—	—
1831	Nga/36/1	„ „	—	—
1832	Ja/51/7	„ „	Jinasāgar	—
1833	Nga/46/7	„ „	—	—
1834	Ta/39/11	„ „	—	—
1835	Nga/47/4/41	Navakāra-panca-trīṣat-pūjā	—	—
1836	Ta/20/1	Nava-pada-kalaśa-pūjā	—	—

**Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 141**  
**( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )**

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	12 3 × 00 0 4 16 16	C	Good	
P.	D, H Poetry	13 2 × 21 0 34 17.11	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	14 6 × 14 1 23 12 15	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	18 5 × 13 1 4 13 22	C	Old	
P.	D; H Poetry	20 8 × 16 3 28 16 21	C	Old	
P.	D; Skt / H Poetry	26 0 × 16 7 20 19 16	C	Good 1913 V S.	
P	D, Skt / H Poetry	13 6 × 17 8 32 9 26	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	32 3 × 20 1 4 13 35	C	Good	It contains chart of nine grahas
P	D; Skt / H Poetry	23 2 × 15 0 24 16 15	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	20 0 × 12 0 3 19 20	C	Old	
P	D, Skt, Poetry	20 6 × 18 0 4 16 18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	10 9 × 9 6 25.7 13	Inc	Old	Page no. one to thirty seven are missing.

1	2	3	4	5
1837	Nga/44/19/4	Neminātha Jayamālā	—	—
1838	Ta/14/37	Nhavana-pūjā	—	—
1839	Ta/42/11	„ „	—	—
1840	Nga/47/4/37	„ kavya	—	—
1841	Nga/47/5/13	Nirvāna pūjā jayamālā	—	—
1842	Nga/44/9/1	„ „	—	—
1843	Nga/47/4/33	„ „	—	—
1844	Nga/33/4	„ „	—	—
1845	Ta/42/21	„ „	—	—
1846	Nga/44/10/27	„ „	Bhagavatīdāsa	—
1847	Ta/14/30	„ „	—	—
1848	Nga/47/5/5	„ „	—	—



6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	19 5×12 5 2 10 19	C	Old	
P	D; Skt Poetry	15 2×12 8 9 12 18	Inc	Old	Closing is missing.✓
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	P, Pkt. Poetry	16.5×16 0 3 12 19	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	11 0×10 5 8 11 12	C	Good	Sixteeng opening pages are missing
P	D, Pkt / Skt Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	22 7×15 7 2 18 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19.0 1 33 37	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Old	
P	D, Skt / Pkt. Poetry	15 2×12 8 5 12 17	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	16 5×16 0 3 12 19	C	Old	

1	2	3	4	5
1849	Ta/42/42	Nirvāna-pūjā	—	—
1850	Nga/47/8/5	Nirvāna-kṣetra-pūjā	—	—
1851	Nga/47/8/1	„ „ „	—	—
1852	Ta/3/34	„ kalyānaka „	—	—
1853	Ta/3/37	„ „	Rūpacanda	—
1854	Nga/36/2	Nitya-niyama-pūjā	—	—
1855	Nga/37/5	Pada-Lāvani	—	—
1856	Ta/39/4	Padmāvatī-pūja-vidhāna	—	—
1857	Ja/51/13	„ „	Cārūkirtī	—
1858	Ta/42/35	„ „	—	—
1859	Ta/42/37	„ „	—	—
1860	Ta/39/14	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	32.3 × 19 0 2 33 33	C	Good	
P	D, H Poetry	20 8 × 16 3 7 15 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8 × 16 3 2 15 18	C	Old	
P	D, H /Skt Poetry	22 5 × 15 0 4 12 31	C	Old	
P.	D; H Poetry	22 5 × 15 0 1 12 31	C	Old	
P	D, Skt /H. Poetry	17 8 × 13 7 24 14 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 8 × 13 0 4 14 12	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	20 0 × 12 2 2 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 20 1 4 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	32.3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 0 × 12 0 8 20 16	C	Old	

1	2	3	4	5
1861	Nga/43/6/15	Padmâvati-pūjā	—	
1862	Nga/41/4	„ „	—	—
1863	Ja/51/9	„ vratodyāpana	—	—
1864	Nga/41/1	Pancabālayati-pūjā	—	—
1865	Ta/33	Panca kalyāṅka-pūjā Pātha	Bhagawāna Prasād	—
1866	Nga/47/4/2	Pañca-kalyāṅaka-pātha	Rūpacāṇḍa	—
1867	Ta/42/1	„ „ „	„	—
1868	Nga/14/2	„ „ Pūjā	—	—
1869	Nga/47/4/82	„ „ „	—	—
1870	Nga/26/2/1	„ „ dohā	—	—
1871	Ta/5/1	„ „ pūjā	—	—
1872	Nga/47/8/6	Panca-kumāra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
A	P.	D; Skt Poetry	17.3 × 13 0 5 13 13	C	Old
	P.	D, Skt Poetry	14 5 × 11.0 4 13 16	C	Old
	P	D, Skt. Poetry	32 3 × 20 1 5 13 35	C	Good
	P	D; H. Poetry	16 0 × 9 5 6.7 25	C	Good
	P	D, H Poetry	19 7 × 15 8 44 17 16	C	Good
Y	P	D, H Poetry	20 6 × 18 0 8 18 21	C	Old
	P	D, H Poetry	32 3 × 19 0 3 30 37	C	Good
	P	D, Skt. Poetry	20 8 × 26 0 24 14 25	C	Good
	P	D, Skt. Poetry	20 6 × 18 0 28 16 21	C	Old
	P	D, H Poetry	30 3 × 17 5 21 16 16	C	Good
Y	P.	D, Skt. Poetry	25 0 × 15 0 17.28 21	C	Old
	P.	D; H Poetry	20.8 × 16 3 4.16 21	C	Old

1	2	3	4	5
1873	Ja/57/3	Panca-kumāra-vidhāna	—	—
1874	Ta/18	Panca-mangala-pātha	—	—
1875	Nga/25/13	„ „ „	Rūpacanda	—
1876	Nga/41/2	„ „	„	—
1877	Ja/26/1	„ meru pūjā	—	—
1878	Ta/3/32	Panca „ „	Dyānatarāya	—
1879	Nga/47/4/23	„ „	„	—
1880	Nga/44/10/21	„ „	—	—
1881	Ta/42/25	„ „	Bhūdhārāya	—
1882	Nga/47/8/14	„ „	—	—
1883	Ta/42/57	„ „	Dyānatarāya	—
1884	Ja/57/4	Pañca-parmeṣṭi-Arghya	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 149  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry/ Prose	32 3 × 20 1 2 13 35	C	Good	
P	D, Skt /H Poetry	11 0 × 11 0 9 13 19	C	Old	
P	D, H Poetry	28 4 × 17 0 4 24 17	C	Good	
P	D, H, Poetry	14 5 × 11 0 14 8 19	C	Good	
P	D, H Poetry	22 0 × 15 0 22 18 14	C	Old	
P	D, Skt /H Poetry	22 5 × 15 0 4 12 31	C	Good	
P	D, H poetry	20 6 × 18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5 × 13 1 2 13 22	C	Old	
P	D, Skt /H Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8 × 16 3 13 15.17	C	Old	
P	D; H Poetry	32 3 × 19 0 0.33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32 3 × 20 1 1 13 35	C	Good	

1	2	3	4	5
1885	Ta/3,23	Panca-parmeṣṭhi Jayamālā	—	—
1886	Ta/33/2	„ „ Pāṭha	—	—
1887	Ta/5/8	„ „ Pūjā	Dharmabhūṣana	—
1888	Nga/47/9/2	„ „ „	—	—
1889	Nga/33/3	„ „ „	—	—
1890	Nga/14/1	„ „ „	Yaśonandī	—
1891	Nga/37/7	Pārśwanātha Kavitta	—	—
1892	Nga/48/1/1	„ Pūjā	—	—
1893	Nga/47/5/9	„ „	—	—
1894	Ja/51/10	„ „	—	—
1895	Ja/51/5	„ „	—	—
1896	Nga/47/4/3	Prabhāti-Maṅgala	Rūpacanda	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 151  
( Pūjā-Pāṭha-Vīdhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt Poetry	22 5×15 0 2 12 33	C	Good	1 to 11 pages are missing.
P	D, H Poetry	19 7×15 8 4 17 16	Inc	Good	
P	D; Skt. Poetry	25 0×15 0 15 23 15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 5×15 9 8 13 19	C	Good	
P	D, Skt /H Poetry	23 5×14 5 18 16 11	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20 8×26 0 39 14 25	C	Good	
P	D, H Poetry	12 0×18 3 4 17 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	13 7×12 0 14 10 14	C	Old	
P	D, H Poetry	16 5×16 0 5 12 19	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×20 1 4 13 35	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1897	Ta/42/34	Pratiṣṭhā-tīlaka	Narendra Sena	—
1898	Ta/3/52	Pūjā-māhātmya	Vinodilala	—
1899	Nga/44/2	„ Saṃgraha	—	—
1900	Ja/19	„ „	—	—
1901	Ja/29/5	„ Vīdhāna	—	—
1902	Nga/46/4	Punyāha-Vācana	—	—
1903	Ja/51/2	„ „	—	—
1904	Nga/48/19	„ „	—	—
1905	Nga/43/6/14	„ „	—	—
1906	Ta/3/1	„ „	—	—
1907	Nga/46/11/1	„ „	—	—
1908	Nga/44/5	Puṣpāñjali Pūjā	Lalitakīrti	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	32 3 × 19 0 15 33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 5 × 15 0 2 12 31	C	Good	
P.	D, H Poetry	18 5 × 13 5 102 13 26	Inc	Old	The Mss. is not in order.
P.	D, H Poetry	23 7 × 15 0 27 20 17	C	Good	
P	D; H. Poetry	21 1 × 14 0 119 13 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	36 0 × 19 0 5 12 44	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3 × 20 1 4 13 34	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 8 × 14.0 16 10 15	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	17 3 × 13 0 5 13 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	21 0 × 10 9 16 8 18	C	Good 1866 V S.	
P	D, Skt Prose	36 4 × 19 0 1 12 39	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5 × 15 5 3 12 26	C	Good	

1	2	3	4	5
1909	Ja/34	Ratnatraya-Pūjā	Dyānatarāya	—
1910	Ta/42/62	„ „	„	—
1911	Ta/42/12	„ „	—	—
1912	Ta/3/31	„ „	Dyānatarāya	—
1913	Nga/41/Kha	„ „	—	—
1914	Nga/47/4/27	„ „	Dyānatarāya	—
1915	Ta/14/9	„ „	Narendra Sena	—
1916	Ta/38/2	„ Jayamālā	—	—
1917	Ja/34/3	Ravivrata-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1918	Nga/47/4/1	„ Pūjā	—	—
1919	Ta/42/33	„ „	—	—
1920	Nga/48/10	Ṛ̥ṣi-maṇḍala Pūjā	—	—



1	2	3	4	5
1921	Nga/47/3	Rṣi-mandala Pūjā	—	—
1922	Ta/5/5	„ „	—	—
1923	Nga/13/1/2	„ „	—	—
1924	Nga/22	Sahasranāma „	Sikhara-Canda	—
1925	Ja/51/1	Sakali-Karana	—	—
1926	Ta/16/2	„ „ Vidhi	—	—
1927	Ta/16/5	„ „ „	—	—
1928	Nga/44/6	„ „ „	—	—
1929	Nga/38/15	Samādhi-marana	Dyānatarāya	—
1930	Ja/17	Sāmāyika Pāthā	Jayacanda	—
1931	Nga/36/3	„ Vacaṇikā	„	—
1932	Ta/6/20	Samavaśarna	—	—



1	2	3	4	5
1933	Nga/31/2/4	Samavasāna	—	
1934	Ta/39/21	Sammedācala Pūjā	—	—
1935	Ta/42/41	Sammeda-Śikhara Pūjā	Rāmcandra	—
1936	Nga/33/6	„ „ „	—	—
1937	Ja/33/6	„ „ „	—	—
1938	Ta/3/14	„ „ „ Vidhāna	Gangādāsa	—
1939	Nga/47/8/10	„ „ Pūjā	—	—
1940	Nga/47/8/4	„ „ „	—	—
1941	Nga/44/10/24	„ „ „	—	—
1942	Nga/47/8/2	Samuccāya-Caubis-Pūjā	—	—
1943	Ja/56	Śāntinātha-Pūjā	—	—
1944	Nga/46/12/3	„ „	—	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 159  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D, H. Poetry	12 3 × 16 3 14 13 14	C	Good 1974 V S	
P.	D, Skt Poetry	20 0 × 12 0 2 24 18	C	Old 1819 V S.	
P	D, H. Poetry	32 3 × 19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	23 9 × 13 3 9 18 12	C	Good	
P	D, H Poetry	19 0 × 14 9 24 12 17	C	Old 1920 V S	
P	D, Skt Poetry	22 5 × 15 0 8 12 36	C	Good	
P	D, H Poetry	20 8 × 16 3 16 15 17	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8 × 16 3 21 15 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5 × 13 1 5 13 22	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8 × 16 3 4 15 18	C	Old	
P	D, H Poetry	28 8 × 15 0 9 22 20	C	Good	
P.	D, H. Poetry	22 5 × 13 0 5.18 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1945	Nga/47/4/39	Śānti-pāthā	—	—
1946	Ta/3/24	„ „	—	—
1947	Nga/48/23/4	„ „	—	—
1948	Ta/42/4	„ „	—	—
1949	Nga/43/6/18	Śānti Cakra-pūjā	—	—
1950	Nga/43/4/1	Śāntidhārā	—	—
1951	Ta/42/88	„	—	—
1952	Nga/46/11/2	„	—	—
1953	Ta/42/27	Sapta-si-pūjā	—	—
1954	Ta/14/41	„ „	—	—
1955	Ta/41	„ „	—	—
1956	Nga/26/2/34	Saraswati-pūjā	Brahma Jinadāsa	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts ( 161  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D. Skt Poetry	20 6 × 18 0 3 16 18	C	Old	
P	D. Skt. Poetry	22 5 × 15 0 1 12 00	C	—	
P	D. Skt Poetry	16 8 × 12 8 3 11 12	C	Old	
P.	D. Skt, Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P	D. Skt Poetry	17.3 × 13 0 7 13 13	C	Old	
P	D. Skt Poetry/ Prose	16 3 × 14 0 3 11 20	Inc	Old	Last page is missing
P	D. Skt poetry/ Prose	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D. Skt Prose	36 4 × 19 0 2 12 39	C	Good	
P	D. Skt. Poetry	32 3 × 19.0 3 32 37	C	Good	
P.	D. Skt Poetry	15 2 × 12.8 3 12 18	C	Old	
P.	D. Skt. Poetry	12 5 × 8.6 5 9 19	Inc	Old	
P.	D. Skt H Poetry	20 3 × 17.5 4 16 16	C	Good	

1	2	3	4	5
1957	Ta/42/19	Śāstra-pūjā	Dyānatarāya	—
1958	Ta/39/19	„ „	Malayukīrti	—
1959	Nga/41/2/6	„ „	—	—
1960	Nga/47/4/36	„ „	—	—
1961	Ta/14/29	„ „	—	—
1962	Nga/14/8	„ „	—	—
1963	Ta/3/20	„ Jayamālā	—	—
1964	Nga/47/8/12	Satrunjayagiri-pūjā	Viśvabhūṣana	—
1965	Nga/14/6	Siddha-pūjā	—	—
1966	Nga/44/10/17	„ „	—	—
1967	Ta/35/3	„ „	—	—
1968	Ta/14/6	„ „	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 163  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	20 0 × 12 0 2 24 17	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	14 5 × 11 0 7 9 17	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	20 6 × 18 0 5 16 18	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	15 2 × 12 8 5 12 13	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	20 8 × 26 0 4 14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 5 × 15 0 2 12 33	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 8 × 16 3 16 16.15	C	Old	
P	D; Skt Poetry	20 8 × 26 0 6.14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	18 5 × 13 1 7 13 22	C	Old	
P	D; Skt Poetry	15.5 × 12.6 5.10 16	C	—	
P.	D, Skt. Poetry	15 2 × 12 8 6 12.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1969	Ta/18/4	Siddha-pūjā	—	—
1970	Nga/47/4/19	„ „	Khuśālacanda	—
1971	Nga/41/2/3	„ „	—	—
1972	Ta/3/26	„ „	Khuśālacanda	—
1973	Nga/48/23/3	„ „	—	—
1974	Nga/48, 18/2	„ „	—	—
1975	Nga/48/12/3	„ „	—	—
1976	Ta/42/6	„ „	—	—
1977	Nga/26/2/9	„ „	—	—
1978	Ja/29/3	„ „	—	—
1979	Ja/51/6	„ „	—	—
1980	Ta/3/13	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 16 ]  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	11 0 × 11 0 4 13 19	C	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	20 6 × 18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5 × 11 0 7 9.17	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 5 × 15 0 7 12 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 8 × 12 8 6 11 12	C	Old	
P	D; Skt Poetry	16 0 × 10 1 5 9 21	C	Old	
P	D; Skt Poetry	13.5 × 12 0 6 8.12	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	30 3 × 17 5 3 16 16	C	Good	
P	D, H. Poetry	21.1 × 14 0 3 12 10	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3 × 20 1 1.13 35	C	Good	
P.	D, H. Poetry	22 5 × 15 5 2 12 31	C	Good	

1	2	3	4	5
1981	Ja/54	Siddha-cakra-pūjā	—	—
1982	Ta/20/2	„ „	—	—
1983	Nga/27/4	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—
1984	Ta/42/43	„ „ „	—	—
1985	Nga/44/14	Śikhara-vilāsa-pūjā	—	—
1986	Nga/28/3	Sila-vattisi	—	—
1987	Nga/47/6	Sinhasana-pratiṣṭhā	—	—
1988	Nga/41/14	Śitalanātha-pūjā	—	—
1989	Ta/20/3	Snāna-pūjā-vidhi	—	—
1990	Nga/14/9	Solaha-kārana-pūjā	—	—
1991	Ta/35/4	„ „ „	—	—
1992	Ta/38/3	„ „ „	—	—



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 167  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	18 6 × 11 4 113 22.22	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; H Poetry	10.9 × 9 6 40.8 11	Inc	Good	Last pages are missing.
P	D; Skt. H	18 5 × 30 6 6 21 22	C	Good	
P.	D, H Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry/ Prose	15 5 × 9 5 9 8 26	Inc	Old 1942 V. S	Opening twenty pages are missing.
P	D, App. Poetry	14 6 × 14 1 7 12 18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18 7 × 14 5 20 14 16	C	Old 1955 V S.	
P.	D, H Poetry	14 5 × 11 0 6 13.16	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	10.0 × 00 0 26.8 12	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	20 8 × 26.0 5 14 5	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	15.5 × 12 6 4.10.15	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	15 5 × 12 5 15 11 18	Inc	Old	Chang & ...

1	2	3	4	5
1993	Ta/14/7	Solaha-kārana-pūjā	—	—
1994	Nga/44/10/13	, , ,	—	—
1995	Nga/47,4/22	, , ,	Dyānatarāya	—
1996	Ta/3/28	, , ,	—	—
1997	Ta/42/7	Ṣoḍaśa-kāraṇa ,	—	—
1998	Ta/39/17	Solaha-kāraṇa ,	—	—
1999	Ta/42/58	, , ,	Dyānatarāya	—
2000	Nga/29/1	, , ,	—	—
2001	Ja/44	, , ,	Dyānatarāya	—
2002	Nga/47/5/3	Sonāgiri-pūjā	—	—
2003	Ta/3/3	Stavana Jayamālā	—	—
2004	Ta/42/93	Swādhyāya-pāṭha	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts [ 169  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	15 2 × 12 8 4 12.16	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	18 5 × 13 1 6 13 22	C	Good	
P	D, H Poetry	20.6 × 18 0 5.16 18	C	Old	
P.	D, Skt /H. Poetry	22 5 × 15 0 5 12 31	C	—	
P.	D; Skt Poetry	32.3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 0 × 12 0 3 21 18	Inc	Old	
P.	D, H Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	12 0 19 7 33 15 15	C	Good	
P	D, H. Poetry	18 0 × 11 5 4 7 18	C	Good 1965 V S	
P	D, H. Poetry	16 5 × 16 0 6 12 19	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	22 0 × 15 0 2 12 30	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 3 × 15 0 1 12 37	C	Good	

1	2	3	4	5
2005	Nga/17/1/2	Śyāmala-yakṣa-pūjā	Ajita Dāsa	—
2006	Ta/42/32	Tattvārtha-sutrāṣṭaka-jayamālā	—	—
2007	Ja/9/7	Terahadwipa-pūjā	—	—
2008	Nga/47/8/9	Tina-loka-saṁvandhi-pūjā	—	—
2009	Ta/5/11	Tisa-caubisi „	—	—
2010	Ta/5/3	„ „ „	Bhāvaśarmā	—
2011	Ta/5/2	Udyāpana	—	—
2012	Nga/47/5/10	Vardhamāna-pūjā	Vrndāvana	—
2013	Ja/20	Vartamāna caubisi-pāthā	„	—
2014	Ta/39	„ „ pūjā	—	—
2015	Ta/24/5	„ jinanāma	—	—
2016	Nga/14/5	Vidyamāna-bisa-tīrthankara pūjā	—	—

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts [ 171  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P	D. H Poetry	25 0 × 15 0 4 19 21	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3 × 19.0 1 33.37	C	Good	
P	D, H Poetry	29 8 × 15 5 111 14 31	Inc	Old	Closing para is missing.
P	D, H Poetry	20 8 × 16.3 7 15 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	25 0 × 15 0 5 28 25	C	Good	
P	D; Skt Poetry	25 0 × 15 0 20 25 16	C	Good	
P.	D, Skt. poetry	25 0 × 15 0 5 28.20	C	Good	The chart of tirthankara is on its last page
P.	D, Skt Poetry	16 5 × 16 0 6 12.19	C	Old	
P.	D.H /Skt Poetry	23 3 × 10 0 61 18 23	C	Good 1952 V. S.	Published.
P	D, H. Poetry	22 6 × 13 8 100 12 26	C	Good 1890 V. S.	Copied by Rājendra Prasad Sharma.
P.	D, Skt. Poetry	30 2 × 20 0 16 37.33	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	20 5 × 26 4 2 14 7	C	Good	

1	2	3	4	5
2017	Nga/26,2/10	Vidyamāna bīsa- Tīrthankara-pūjā	—	—
2018	Nga/24	„ „ pūjā vidhāna	Śikharacanda	—
2019	Ta/42,5	„ „ „	—	—
2020	Ta/11/5	Vrata-Vidhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt / Pkt Poetry	30 3 × 17,5 5,16 16	C	Good	
P.	D: H Poetry	29.0 × 17.0 49 21 16	C	Good 1929 V. S	
P.	D, Skt Poetry	32.3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D: H. Poetry	14 5 × 11,7 12 11 22	C	Good	











### १००२. अष्टान्हिका कथा

- Opening :** श्री जिन सारद गणधरपाय, .... - ।  
व्रत अष्टान्हिका कथा विचार, भाषुं आगमनें अनुसार ॥१॥
- Closing :** ए व्रत जै नरनारी करै, ते भवसागर से तरे ।  
श्री भूषण गुरुपद आधार, ब्रह्म ज्ञानसागर कहै इह सार ॥५३॥
- Colophon :** इति श्री अठाई व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

### १००३. अष्टान्हिका कथा

- Opening .** यादव वसि नेमकुमार, भाव धरि वंदो भवतार ।  
कहो अष्टान्हिका सार ॥१॥
- Closing :** तस दिक्षित बोले ब्रह्मचारी हरषनिधि शिखामण सारी ।  
भणो सुणो नरनारी ॥१६॥
- Co'ophon :** इति नदीश्वर व्रत कथा सपूर्णम् ।

### १००४. अठाईकथा

- Opening .** पचपरमेष्ठी चरन कूँ धारी निस दिन ध्यान ।  
सो भेरी रक्षा करौ जातै होय कल्याण ॥
- Closing :** श्रावण धर्म सुजान, वतन लालपुर जानियो  
भैरी कही वखान, भव्य जन सुनियै चित्त दे ॥७६॥
- Co ophon :** इति श्री भैरी जी कृत अठाई रासा समाप्तम् ।

### १००५. आदित्यवार-कथा

- Opening :** रिसहणाह प्रणमों जिनंद जा प्रसाद मन होय आनंद,  
प्रणमों अजित प्रणमै पाप दुख दानिद भव हरै मताप ॥
- Closing :** कम्मं पिप्पौ कारण मत भई तव यह धर्मकथा मन ठई ।  
मनघर भाव मुनै जो कोय सो नर म्वर्क देवता होय ॥

३

Catalogue of Sankrit, Prakrit, Apaphramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

Colophon : इति श्री आदित्यवार कथा जी समाप्तम् ।

१००६. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, १००५ ।

Closing : कमक्षय कारण इह मन्त्रि मई तत्र या धर्म कथा अरनई ।  
मूर्ति धरि भाव सुर्ण जो कोइ सो नर स्वर्ग देवता होई ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ गुण-महिमा युक्त रविवार व्रत कथा  
सपूर्णम् ।

१००७. आदित्यवार-कथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेस । प्रणमौ भव्यपयीज दिनेस ॥

Closing : यह व्रत जो नरनारी करै, सो बहु नहि दुरगति परै ।  
भाव सहित सुरनरसुख लहै, बार बार जिन जी यो कहै ॥२५

Colophon : इति श्री रविव्रत कथा समाप्ता ।

१००८. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, क्र० १००७ ।

Closing : देखें, क्र० १००७ ।

Colophon : इति श्री रवि कथा जी लघु समाप्तम् ।

१००९. आदित्यवार-कथा

Opening : प्रथम सुमिरि जिन चौबीस, बीदह सै त्रैपन जु मुनीस ।  
सुमिरी सारद भक्ति अनत, गुरु देवेन्द्र जु कीर्ति महत ॥१॥

Closing : रविव्रत तेज प्रताप भई लछिमी फिरी आई  
रूपा करि घरनेंद्र और पद्मावती माई ।

जहाँ... तहाँ रिद्धि सब छौर जू पाई  
मिले कुटुम परिवार भले सज्जन मन भाई ।  
पढे सुने जे प्रात उठि नरनारी जु सुबुद्धि,  
तिनको धरनेद्र पन्नावति देहि सर्वथा सिद्धि ॥

Colophon :

इति श्री रविवार कथा सम्पूर्णम् ।

### १०१०. आकाश-पंचमी-कथा

Opening :

पडिवा प्रथम कला घट जागी, परम प्रतीत रीत रस-पाणी।  
प्रतिपदा परम प्रीत उपजावै, वह प्रतिपदा नाम कहावै ॥

Closing :

काष्ठासध सरोज प्रकाश, श्री भूषण गुरु धर्म निवास ।  
ताम शिष्य बोले चंग, ब्रह्म ज्ञानसागर मन रंग ॥

Colophon :

इति आकाश पंचमी-कथा

### १०११. आकाश-पंचमी-कथा

Opening

श्री जिनसासन पय अनुसरुं गणधर निज वदिन  
करु ।

साध सत प्रणमू पाय, जे हथी कथा अनोपम थाय ॥१॥

Closing :

देखें—क्र० १०१० ।

Colophon

इति श्री आकाश पंचमी व्रतकथा समाप्तम् ।

### १०१२. भविष्यदत्त-कथा

Opening :

म्वामी चंद्रप्रभु जिननाथ, तमोचरण र रि मस्तक हाथ ।  
नाटन दग्गी चद्रमा जामु पाया जाल अटिक दगामु ॥१॥

Closing :

यह रजा मंगूरन मई, सकल मध्य को मगन भई ।  
परो सुने जो करे वद्यान, सो पावे शिवपुत्रि पद भाण ॥

॥१११६॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna Carita, Kathā )

**Colophon :** इति श्री श्रुतपंचमी कथा भवसुदत्त चरित्र संपूर्णम् । सवत्  
१८४८ वर्षे मिति पीस वैदि ६ श्री पार्श्वचंद्र सूरि गछी श्री गुरुजी  
श्री १०८ श्री चंद्रभाण जी तत् शिष्य लिख्यतु ज्ञासिरदारमत्नेन  
श्री मफातपुरनगरमध्ये चतुरमासकृतम् ।

१०१३. चंदकथा

**Opening :** सिद्धि सुबुद्धि दातार तुव गौरीनदकुमार ।

चंदकथा औरम्भ कीयो सुमति दियो अपार ॥

**Closing :** उबुधरेषा अचपला जोग, तीजो और परमला भोग ।

... आपणो राज ॥

**Colophon :** इति चंदकथा संपूर्णम् ।

१०१४. चतुर्दशीकथा

**Opening :** देखे क्र० ६६८ ।

**Closing :** देखे— क्र० ६६८ । ।

**Colophon :** श्री चतुर्दशी व्रत कथा समाप्तम् ।

१०१५. चतुर्वचनोच्चारिणी कथा

**Opening :** चिक्रमादित्योरूप परदेशिद्विजाच्चतुर्वचनानि ।

वादयति यस्तस्मात् हारयित्वा तमेव परिणमति ॥

**Closing :** चतुर्वचना महोत्सवेन परिणीय स्वनगरे समानीय भोगा-  
नुभवन कुर्वन् शम्भुणाकाल महाश्रेयो युवतो अभूत् ।

**Colophon :** इति चउबोली कथा संपूर्णम् ।

१०१६. दानकथा

**Opening :** देव नमो अरहत सदा अरु सिद्ध समूह न कौ चितलाई,  
सूरि अचारज कौ प्रमौ, प्रणामौ जु उपाध्याय के नित पाई ।

साधुनमों निरग्रन्थ मुनी - गुरु, परम दयाल महा सुखदाई,  
नि पच गुरु एत मै सुनमू इनकै सुमरै भवताप नसाई

॥१॥

**Closing :** दान कथा पूरण भई, पढै सुने सब कोय ।  
दु ख दरिद्र नासै सबै, तुरत महासुख होय ॥७६॥

**Colophon :** इति श्रीदानकथा भारामल्लकृत सपूर्णम् ।  
देखे—(१) जौ० सि० भ० ग्र० I, क्र० २६ ।

### १०१७. दशलाक्षणी कथा

**Opening :** धर्म जु दश लाछन कहै तिनको करुं बखान ।  
जो जिय निहचै चित्त धरै ताको होय कल्याण ॥१॥

**Closing :** इह विष व्रत नर जो करै, पावै शिव पद थान ।  
बूढै दुख ससार के, भैरौ कहै बखान ।

**Colophon :** इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम् ।

### १०१८. दशलाक्षणी कथा

**Opening :** ऋषभनाथ प्रणमू सदा गुरु गनधर के पाय ।  
तीन भवन विख्यात है सब प्राणी सुखदाय ॥१॥

**Closing :** सत्रह सै इक्यावनवा भादव मास सुखमार ।  
शुक्ल तिथ त्रयोदशी सुभ रविवार विचार ॥६१॥  
भूला चूका होय जो लीजौ सुकवि सुधार ।  
मोह दोस दीजौ नही करी जु भव हितकार ॥६२॥

**Colophon :** इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम् ।  
देखे—(१) जौ० सि० भ० ग्र० I, पृ० २८ ।

### १०१९. दशलाक्षणी-कथा

**Opening :** प्रथम नमन जिनवरनै करुं, सादर गणधर पद अनुसरुं ।  
दशलाक्षिण व्रतकथा विचार, भावू-जिन आगम अनुसार ॥१॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Cṛita, Kathā )

- Closing : भट्टारक श्री भूषणघीर, सकलशास्त्र पूर्ण गम्भीर ।  
तस पद प्रणमी बोलैसार, ब्रह्म सानसागर सुविचार ॥५५॥
- Colophon : इति श्री दशलाक्षणी कथा सम्पूर्णम् ।

१०२०. दशलाक्षणी कथा

- Opening : देखें—क्र० १०१६ ।
- Closing : देखें—क्र० १०१६ ।
- Colophon : इति श्रीदशलाक्षणी व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

१०२१. दशलाक्षणीव्रत कथा

- Opening : देखें—क्र० १०१६ ।
- Closing : देखें—क्र० १०१६ ।
- Colophon : इति दशलाक्षणी व्रत कथा ।

१०२२. दशलाक्षणीव्रत कथा

- Opening : — ....
- पचामृत अभिषेक उदार ।  
जिन चौविस सतरमो भडार,  
अष्ट विध पूजा करो परकार ॥१७॥
- Closing : देखें—क्र० १०१६ ।
- Colophon : इति श्री दशलाक्षणी व्रत-कथा समाप्तम् ।

१०२३. दर्शनकथा

- Opening : नमो देव अग्रहत पद, नमो सारदामाय ।  
नमो गुरु निरग्रन्थ जे, अघहर मंगल दाय ॥
- Closing : दरमन कर पूरन भयो मनोवति की सुखदाय ।  
तास कथा फल पायकै शुभ गति लई सिबदाय ॥५७॥

Colophon . इति श्री दरसन कथा सम्पूर्णम् ।  
विशेष— २०१६ पर उल्लिखित पद के Author भारामल्ल है । लगता है कि पद इसी से सयुक्त है अतः इसका भी लेखक भारामल्ल को ही होना चाहिए है ।

### १०२४. धर्म-पापबुद्धि कथा

Opening : अयोध्यानगरे राजासिद्धसेनो राज्य करोति ।  
तन्मन्त्रीबुद्धसेनो धर्मन्पाय मन्त्र करोति ।  
राजा दुराचारासत्यपरवनदारहरणलक्षणान्याय विदधाति ।  
Closing : ... तपो विधाय यथा स्व स्वर्गेषु जग्मु ।  
सदैव धर्मबुद्धि करणीया । सर्वलोकस्वायमुपदेशः ।  
Colophon . इति धर्मपाययुक्तयोः कथा सम्पूर्णम् ।

### १०२५. धूपदशमी कथा

Opening : पच परम गुरु वदन करू , ताकरि मम अब सब हरू ।  
Closing : श्रुतसागर ब्रह्मचार को ले पूरव अनुसार ।  
भाषासार बनायके सुखत खुशियाल अपार ॥१४३॥  
Colophon . इति सम्पूर्णम् । सवत् १९४८ भादवा सुदी २ लिखाइत  
बेमराज जी लिखित मदनगोपाल ने कलकत्ता जैन मंदिर मध्ये ।

### १०२६. दुधारसव्रत-कथा

Opening : प्रथम नमो श्रीवीरजिनद वदो सदगुरु पद अरविद ।  
जासु प्रसाद कहू सुभकथा, गोतम गणधर भाषी यथा ॥ १ ॥  
Closing : श्रेणक आगल गोतम स्वामि-एह कथा भाषी अभिराम ।  
ए दुधारस व्रतनी कथा चद भनै मै भाषी तथा ॥४३॥  
Colophon : इति दुधारस जी की कथा समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

१०२७. हरिवंशपुराण

- Opening : सिद्ध सपूर्ण तत्त्वार्थं सिद्धे कारणमुत्तमम् ॥  
प्रशस्त दर्शनज्ञान चरित्रप्रतिपादनम् ॥
- Closing : सकोडी कर चरणे उग्रग्रीवा अहो मुहादि ॥  
द्वीज सुहृपावै लहो त सुह पावेहि तुह्य हु जनए ॥
- Colophon : इति श्री हरीवस पुराण की भाषा चौपाई वध सपूर्णम् ।  
देखें, जे० सि० भ० प्र० I, क्र० ४६ ।

१०२८. हरिवंशपुराण

- Opening : देखें, क्र० १०२७ ।
- Closing : ..... और अरिष्ठा पाचवाँ नरक उस विषे इद्रन की  
भूमि की मुटाई कोस ३ । और श्रेणीवद्धो की कोस ४ ।  
और प्रकीर्णको की कोस सात ७॥ २१॥
- Colophon अनुपलब्ध

१०२९. हरिवंशपुराण

- Opening महाधीर बहुश्रुत विराजै श्रुतकेवली जिनश्रुतका व्याख्यान करै  
और वा मंडप के समाप चार मंडप " " ।
- Closing : देवते मनुष्य होय निरजन पद पार्वंगी सातवी  
पटरानी गौरी " " ।
- Colophon : अनुपलब्ध

१०३०. जम्बूचरित्र

- Opening श्री अरिहंत नमो सदा, अरी न आवै पास ।  
अष्टकर्म दूरे टले आठो गुन परकास ॥

- Closing :** उपर रवा मुखराज ते, श्री नीमधर देव ।  
भाव भगति चित लायके सत्र जन करते सेव ॥५२३॥
- Colophon .** इति जवूचारित्र जी सम्पूर्णम् । लिखित राज्य कुमारचद  
आरामपुर नगरे स्वगृह सवत् १९३३ मिति वैशाख शुक्ल  
सप्तम्या ७ तिथौ रविवासरे निजगठनार्थ पुन. भव्यजीव  
पठनार्थम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

## १०३१. लब्धिविधानकथा

- Opening** प्रथम नमो श्री जिनवर पाय दूर्ज प्रणमो सारदमाय ।  
लब्धि विधान तणी सुभ कथा भाषू जिन आराम छै  
यथा ॥१॥
- Closing** श्री भूषण गगनाय नमो श्रीर . . . होमी सीध ॥५६
- Colophon :** इति श्री लब्धि विधान कथा समाप्तम् ।

## १०३२. महावीर-पुराण

- Opening .** इण विधि कटिनी जवु कुमार सुनि सो कहसी निरवार ।  
मागी के षिजतू इकनारी मरनू चाहिलयो ततकार ॥२१॥
- Closing :** यातै श्री जिनराज के चरण कमल सिरनाय,  
राखौ भवि उरके विरै सुरग मुक्ति पदपाय ॥६३॥
- Colophon :** इत्यार्षे त्रिषष्टिअणमहापुराणसंग्रहे भगवद्गुणमहाकायप्रणीतानु-  
सारेण श्रीउत्तरपुराणस्य भाषाया श्रीवर्द्धमानपुराण परिममोत्तम् ।  
इति श्री उत्तरपुराण समाप्तम् । शुभ सम्बत् १८६९ शाके १७३४  
भासोत्तमेमासे शुक्लेपक्षे त्रयोदश्या बुधवासरे पुस्तकमिदं  
पूर्णम् । रघुनाथ सर्वगे लेखि पट्टनपुरगायवाट मध्ये निवसति ।  
लेखक पाठकयो भगवन्मस्तु ।

## १०३३. नेमिनाथ विवाह

- Opening :** एक समे जो समुद्र विजै छारि कामधनेम को व्याह रचो है,  
गावत मगलाचार बधु कुल मे सबके जो उछाह मचो है,

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts  
( Purāna Carita, Kathā)

तेल चढावन को जुबती अपने-अपने कर थाल सचो है,  
मेग करै सब ब्याहने को घर मडप चित्र विचित्र खिचो  
है ।१॥

Closing .

मेम कुमार ने जो गली घो दिन छपन लो छदमस्त रहो है,  
केवल ज्ञान भएव प्रभु को तब आठवी भूत महानुमहो है,  
सात सै वर्ष विहोर बोदो उपदेश, ते धर्म महानुमहो है,  
निर्वाण भये भुनि पाव सै छपन लाल विनोदिने संग  
गही है ।

Colophon :

इति श्री नेमनाथ जो काव्याहुला सपूर्णम् ।

१०३४. नि.काक्षित-गुण कथा

Opening .

प्रनमू आदि जिनै कौ फुन गुरु गौतमराय ।  
सारदभाय प्रसादतै करू कथा मन लाय ॥१॥

Closing .

नि काक्षित गुन की कथा भौ रै कही बखान ।  
भो निहचै कर पाल है, पावै शिव पद थान ॥

Colophon .

इति नि काक्षितगुन कथा समाप्तम् ॥७६॥

१०३५. निशल्याष्टमी कथा

Opening .

देखे, कै० १०३६ ।

Closing .

काष्टोमघ कलावरचद, श्री भूषण गुरु परमानन्द ।  
तस पद पकन भधु करतार, ज्ञानसमुद्र कथा कहै  
विचर ॥६३॥

Colophon .

इति निशल्याष्टमी कथा ।

विशेष—

इसमे निर्दु ख सप्तमी कथा भौ है ।

१०३६ निर्दोषसप्तमी कथा

Copening

श्री जैनचरण किमल अनुसर, सारद निज गुरु मनमेधर ।  
निर्दोष सप्तमीकी कथा, बोलो जिनक मन छे यथा ॥१॥

**Closing :** ए व्रत जे नरनारी करै, ते नर भवसागर उत्तरै ।  
अजर अमर पद अविचल लहै, ब्रह्मज्ञानमांगर इम कहै ॥४१॥

**Colophon :** इति श्री निरदोष सप्तमी कथा समाप्तम् ।  
देखै, जौ० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८ ।

### १०३७. पंचमी कथा

**Opening :** अंदो श्री जिनराज के, चरण कमल गुणहीर ।  
भव सागर नारण तरण, शरण हरण पर पीर ॥१॥

**Closing :** हस्तिकंतिपुर में यह सची, श्री सुरेन्द्रभूषण रची ।  
यह विधि व्रतपाले जो कोई, सो नरनारी अमर  
पदु होई ॥६०॥

**Colophon :** इति पंचमी कथा समाप्ता ।

### १०३८ पार्श्वपुराण

**Opening :** मोह महातम दलन दिन तप लक्ष्मी भरतारि,  
ते पारस परमेम हौउ सुमति दातार ॥१॥

**Closing :** सबत् सत्रह सै समै और नवामी लीय ।  
सुदि अषाढ तिथि पंचमी ग्रन्थ समाप्त कीय ॥

**Colophon** इति श्री पार्श्वनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् ।  
श्री पार्श्वपुराण जी बाबू महावीर प्रसाद मनोहरदास के  
वास्ते लेखक लाला चदुलाल लिखा सन् १२६३ साल सलोमो  
के रोज पूरा हुआ ।

देखै जौ० सि० भ० ग्र० क्र० ६१ ।

### १०३९ पार्श्वपुराण

**Opening** बीज सरिव फलभोगवै जो किसान जगमाहि ।  
त्यो चत्री नृप सुख करै धर्म विमारी नहि ॥

Catalogue of Sankrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

Closing : सोलह कारण भावना परमपुन्य को खेत ।  
भिन्न असो लही तीर्थ झर पद हेत ॥

Colophon . अनुपलब्ध ।

१०४०. रत्नत्रयकथा

Opening : श्री जिन चरण कमल नमू , सारद प्रणमी अथ निगमू ,  
गौतम केरा प्रणम पाय, जेहथी बहुविधि मंगल थाय ॥१॥

Closing . यामै मणि माणिक्य भंडार पद-पद मंगल जयजयकार ।  
श्री भूषणगुरु पद आधार, ब्रह्मजान बोलै सुविचार ॥४५॥

Colophon . इति श्री रत्नत्रयकथा सम्पूर्णम् ।  
देखे, जै० सि० भ० ग्र० ई क्र० १०३।२

१०४१. रत्नत्रयकथा

Opening : देखे, क्र० १०४० ।

Closing . देखे, क्र० १०४० ।

Colophon . इति रत्नत्रय कथा ।

१०४२. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखे, क्र० १०४० ।

Closing . देखे, क्र० १०४० ।

Colophon . इति श्री रत्नत्रयकथा सम्पूर्णम् ।

१०४३. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening . देखे, क्र० १०४० ।

**Closing :** कुजवरनि से - - - होए ।  
 व्रत दुनीया ले नर सोए ।  
 पुण्या तणो नच भडार  
 पर भव पाव मोक्षि उवार ॥२७॥

**Colophon :** नही है ।

### १०४४. रविव्रतकथा

**Opening :** श्री सुखदायक पास जिनेण, प्रणमौ भव्य पयोज दिनेश ।  
 सुमरो सारद पद अरविद, दिनकर वत प्रगटी सानद ॥१॥

**Closing :** करम रेख कारणे मति भड, तंव इहु धर्म कथा अरु ठइ ।  
 मनि घरि भाव सुणै जो कोइ, सो नर स्वर्ग देवता  
 होइ ॥१४८॥

**Colophon :** इति रविव्रत कथा ।  
 देखे, जै० सि० भ० ग्र० I. क्र० १०५ ।

### १०४५. रविव्रतकथा

**Opening :** देखे, क्र० १०४४ ।

**Closing :** यह व्रत जो नरनारी भानु कीरति मुनिवर यों  
 कहै ॥२४॥

**Colophon** इति रजिव्रत कथा सपूर्णम् ।

### १०४६. रविव्रतकथा

**Opening :** चौबीसतीर्थकर जी क नमस्कार कर मै रोटीज कथा  
 व्रत कहिए है । इह जगदीप है तामे भस्त क्षेत्र है तामे आर्य खण्ड  
 है, धन्यापुरी नामी नगरी बसै है ।

**Closing** देखे, क्र० १०४५ ।



### १०८६. रोहिणी-कथा

Opening .	वासुपूज्य जिनराज भयदधि तरण जिहाज गम । अध्व नहे मृग माज नाम नेत पातक हरे ॥
Closing .	रोहिनि प्रभु पान नो कोटि, नो नर ना ते अमर पद होटि । मन वच काय मुघ जो घरै कमने मुक्ति वधु मुख भरै ॥
Colophon .	इति रोहिनी कथा समाप्तम् ।

### १०५०. रोहिणी-व्रत-कथा

Opening .	वासुपूज्य जिनराज कौ वदो मन वच काय । ता प्रमाद भाषा करी सुनी शवित चित लाइ ॥
-----------	---

Closing : जो यह व्रत निहचै धरै, करै रोहिणी सोय ।  
निहचै थिर मन जो धरै, तो जीव मुक्ति होय ॥७९॥

Colophon : इति श्री रोहिणीव्रतकथा समाप्तम् ।  
देखे, जै ० सि० भ० ग्र० I, क्र० ११०

## १०५१. रोटतीज-कथा

Opening : चौबीसो जिन को नमौ श्री गुरु चरण प्रभाव ॥  
रोटतीज व्रत की कथा कहौ सहित चित चाव ॥

Closing : गणधर इद्र न करि सके तुम विनती भगवान ।  
द्यानत प्रीति निहारिके कीजै आपसमान ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

## १०५२. रोटतीज-कथा

Opening : - इह जवू द्वीप हैं तामै भरत क्षेत्र है, तामै आर्य खड है,  
धन्यपुरी नाम नगरी वसै है ।

Closing : और जो कोइ भव्य स्त्री या पुरुष रोटतीज व्रत करै  
भलि गति पावै ।

Colophon : इति रोटतीज व्रत कथा ।

## १०५३. रोटतीज-कथा

Opening : देखे, क्र० १०५२ ।

Closing : खेदे, क्र० १०५२ ।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्ता ।

## १०५४. रोटतीज-कथा

Closing : देखे, क्र० १०५२ ।  
देखें, क्र० १०५२ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

Colophon : इति रोहनीज कथा समाप्तम् ।

१०५५. सनूनाकथा

Opening : प्रथमहि प्रथम जिनेश्वर चरण चित लाइए,  
प्रथम महाजन धर्म मुनाहि मनाईए ।  
प्रथम महामुनि लेव मुघर्म मुरधरी,  
प्रथमधर्म प्रकाशन प्रथम तीर करी ॥

Closing : मुनि उतसंग निहारनी क ग मुनै जो कोय ।  
फाग्या उपजै चित्त में दिन मगन होय ॥१८॥

Colophon : इति श्री त्रिनोदीनचरित श्री मलूना कथा समाप्तम् ।

१०५६. सीलकथा

Opening : पार्श्वनाथ परमात्मन् यदी जिनपद राइ ।  
मोही धर्मवाज न करी कही कथा मनलाई ॥१॥

Closing : सील कथा पूरी भई पढ़ै सुनै नित मोई ।  
दुष्ट दरिद्र नार्न सबै तुरत महा सुख होई ॥५६॥

Colophon : इति श्री सील कथा मत्तसेनाचार्यकृत संपूर्णम् ।

१०५७. शीलव्रतकथा

Opening : प्रथमही प्रणमों श्री जिनदेव ॐ जिनराज अनूप ॥१॥

Closing : जो दखी सोई लिखी सुद्ध असुद्ध न जान ।  
पवित अरथ विचारिक पढियी सुद्ध सुजान ॥५३॥

Colophon : इति शील कथा संपूर्णम् ।

विशेष—यद् मी जो २०१८ पर उल्लिखित है इसी से सम्बन्धित है । अतः

इसका भी लेखक भारोभट्टन है होना चाहिए । दोनों ग्रंथों को

पढ़ने से ऐसा लगता है कि पहले कथा बगैरह लिखने के बाद पद लिखने की परिपाटी हो ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १२८ ।

### १०५८. शीलवतीकथा

Opening : जीविताद्व्यधिकत्वेन पालिनो नियमोऽनुर्भवाय भवेत् ।

Closing : ततोऽनर्थमूल त विप्र शीलवती सत्कृत्य बहुमानास्तद-  
कृतवान् ।

Colophon : इति शीलवती कथा संपूर्णम् ।

### १०५९. सोलहकारणकथा

Opening : श्री जिन चैविसौ नमूँ, सारद प्रगमि अवनिगमू ।  
निज गुरु केरा प्रणमू पाय, सकल सत प्रणमी मुखयाय ।१।

Closing : यामे सकल भोग सयोग, टनै आपदा रोग विरोग ।  
श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञानपागर कहै सार ।३६।

Colophon : इति श्री सोलहकारण कथा समाप्तम् ।

### १०६०. सोलहकारणकथा

Opening : देखे, क्र० १०५९ ।

Closing : देखे, क्र० १०५९ ।

Colophon : इति सोलहकारण कथा संपूर्णम् ।

### १०६०. सोलहकारणकथा

Opening : देखें, क्र० १०५९ ।

Closing : देखें, क्र० १०५९ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

Colophon : इति षोडशकारण कथा संपूर्णम् ।

१०६२. श्रावणद्वादशीकथा

Opening : प्रथमं नमूँ श्री जिनवर पाय, प्रणमू गणधर सारद माय ।  
सद् गुरु पदे पकज मन धरुँ, सार कथा वारसनी करू ॥१॥

Closing : रोग सोण सतापह टलै, मनवाछित फल पूरण मिलै ।  
श्री भ्रूण सुत दाए लहै, ब्रह्मज्ञानपागर हम कहै ॥

Colophon : इति श्रावणद्वादशी कथा ।

१०६३. श्रीपालचरित्र

Opening : प्रणम्य सिद्धचक्र च सद्गुरु निजमानसे ।  
श्रीपालचरित वक्ष्ये सुगम शिष्यहेतवे ॥

Closing : जीवराजेन रचित श्रीपालचरित शुभम् ।  
प्रीतसुन्दरेनाशुलिखित श्री सद्गुरुप्रसादत ॥

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे गद्यवद्ये चतुर्थं प्रस्तावः । शुभं भूयात् ।  
स० १६०५ रा० मि० आसोज शुक्ल त्रयोदशी दिवसे मंगलवारे लिपी  
वृत्तेय इति श्री विष्णुपुर मध्ये चण्डिकास्थिता ।

१०६४ श्रीपालचरित्र

Opening : श्री अरिहते अनंतगुण, घरीयै हिय मे ध्यान ।  
केवल ध्यान प्रकाश कर दूर हरण अश्यान ॥१॥

Closing : कहै जिने हरष भविक नर सुण ज्यो नवपद महिमा शुणिज्यो रे ।  
गुण पंचासे ढाले गुणिज्यो निज पति कठिण लुणिज्यो रे ॥

Colophon : इति श्रीपाल महा राजा चरैपई समाप्तम् ।

## १०६५. सुगंधदशमी-कथा

Opening :	श्री जिन शरिद मन मैं घरु सद गुरु नै नितै वंदम करु । साधु सत पद बंदो सदा, कथा कहू दशमीनी मुदा ॥१॥
Closing :	ए द्रत जे नर नारी करै, ते भवसागर केगै तारे । छाडै पाप सकल सुख भरै, बह्मज्ञानसागर उच्चरै ॥
Colophon :	इति सुगंध दशमी कथा । देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १४५ ।

## १०६६. सुगंधदशमी कथा

Opening :	सुगंध दशमी व्रत सुनि कथा, वद्धमान प्रकाशी यथा । पूरव देश राजेग्रह नाम, श्रैणिक राज करे अभिराम ॥१॥
Closing :	हेमराज वीयन यो कही विश्व भूषण प्रकाशी सही । मेनवचकाय सुनै जो कोई, सो नर स्वर्ग अपर पति होई ॥३॥
Colophon :	इति सुगंधदशमी कथा समाप्ता ।

## १०६७. सुगंधदशमी-कथा

Opening :	देखै, क्र० १०६५ ।
Closing :	देखै, क्र० १०६५ ।
Colophon :	इति श्री सुगंधदशमी कथा जी समाप्तिम् ।

## १०६८. सुगंधदशमी-कथा

Opening :	देखै, क्र० १०६५ ।
Closing :	देखे, क्र० १०६५ ।
Colophon :	इति श्री सुगंध दशमी कथा समाप्तिम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

१०६६. स्वरूपसेनकथा

Opening : कौसावीवास्तव्यो राजाजयसेनो जयावती प्रियस्तस्यपुत्र-

द्वयमभूत् । ज्येष्ठो रूपसेनो लघुर्देवसेनः ।

Closing :

सूरसेनोपितया सहससारिक सुखमनुभूय  
प्राति स्वरूपेण स्वपत्न्या सहितो दीक्षाम् ॥

आद्यालोचितदु खकर्म्म - ... आससाद् ॥

Colophon :

इति मित्रे स्वरूपसूरसेन कथा संपूर्णम् ।

१०७०. वीरजिणंद

Opening :

वीर जिणंद ममोम राजी वद मेघकुमार,  
सुण देसण वडरागोउ जो इह ससार असार रि माई उन  
भति देह भुज्ज आज ॥१॥

Closing :

तप तन सो सीतहागइ जो  
पहुतो अनुत्र विमाण वीर चरण नित सेवसइ जी  
ते पाप्मसि भवे पार हु स्वामी अम्ह० ॥

Colophon :

इति वीर जिणंद समाप्तः ।

१०७१ विष्णुकुमारकथा

Opening :

देखे— क्र० १०५५ ।

Closing :

विष्णु कुमार मुनिद्र की करनी कथा रसाल सुनो ।  
भव्य जैन आव सो कही विनोदीलोल मुनि उपसर्ग निवा-  
रनी कथा सुनो ।  
जो कोई करुना उपजै चित मै दिन दिन मगल होय ।

Colophon :

इति श्री विष्णु कुमार की कथा सम्पूर्ण ।

देखे, ज० मि भ० प्र० I, क्र० १५१ ।

### ૧૦૭૨. અરિહંતકેવલી

Opening : શ્રીમદ્વીરજિનં નત્વા વદ્ધમાન મહોત્સવશ્ચ ॥૧॥

Closing : વૈરિણા વૈરમુક્તશ્ચ મિત્રબાર્ધવહેતવૈ ।  
ધર્મવૃદ્ધિર્ભવેસ્તુભ્ય સર્વથાનાત્રસશય ॥૩॥

Colophon : ઇતિ તકારાદિ ચતુર્થપ્રકરણમ્ ।  
ઇતિ અરહંત કેવલી સપૂર્ણમ્ । સવત્ ૧૯૧૭ મિતિ ચૈત્રકૃત્ણી  
૧૦ । વૃધવાસરે લિપ્પીકૃતે બ્રાહ્મણ રામગોપાલ વાસી મોજપુર  
કાલકલેપુર મધ્યે લિખી । શુભ ભૂયાત્ ।

### ૧૦૭૩. આરાધનાસાર

Opening : વિમલયંરગુણસમદૃ સિદ્ધ સુરસેણ વદિર્યં ।  
સિરંસા ણમિઝ્ઞ મહાવીર વોચ્છ આરાધનાસાર

Closing : અમુણિયતચ્ચેણર્મ ભણિય જ પિ દેવસેણેણ ।  
સોહ ત ચમુત્તિદા અચિઝ્ઞે જહ પવયણ વિરૂદ્ધં ॥

Colophon : ઇતિ આરાધનાસારસમાપ્તઃ ।  
દેહ્ણે—જૈં સિં ભં ગ્રં, I, ક્રં ૧૬૫ ।

### ૧૦૭૪. આરાધના પ્રતિવોધ

Opening : શ્રી જિનવર વાગી નમેવિ ગુરુનિર્ગ થ પાય પ્રણમેવિ ।  
કહું આરાધના સુવિચાર સક્ષેપિસારો ઉદ્ધાર ॥૧॥

Closing : જે સુળે નરનાગી જે જાહ ભવનેપાર ।  
શ્રી દિગમ્બર ઇતિ વહ્યો વિચાર આરાધના પ્રતિવોધમાર ॥

Colophon : ઇતિ આરાધનાપ્રતિવોધ સપૂર્ણઃ ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāṇa, Carita, Kathā )

१०७५. अर्थप्रकाशिका

- Opening :** बहुरि ज्ञानकू अल्पाक्षर करि प्रधान  
कह्या तोहू, अल्पाक्षर तै पूज्यपणा प्रधान है । अर दर्शन पूज्य है ।
- Closing :** चरतो भव्यनि उर विषै स्यादद्वाद उज्जास ।  
यातै निज परतत्त्व सरिव होय जु अर्थ प्रकाश ॥
- Colophon :** इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र की अर्थप्रकाशिका नाम वचनिका समाप्त ।  
शुभ भवतु । कल्याणमस्तु ।

१०७६ आत्मानुशासन

- Opening :** वीर प्रगम्य भववारिनिधिप्रपोतमुद्योतितः खिलपदार्थमनल्पपुण्यम्,  
निर्वाणमार्गमऽनवद्यगुणप्रवर्ध आत्मानुशासनमह प्रवर प्रवक्ष्ये ॥
- Closing :** श्री नाभेयोजिनोभूयाद् भूयसे श्रेय सेसवः ।  
जगद्ज्ञान जलेयस्यद द्याति कमलाकृति ॥
- Colophon :** इति श्री गुणभद्राचार्य कृत आत्मानुशासन काव्य प्रवध सपूर्णम् ।  
लिखित पङ्क्ति परमानेदेन टकैत नामनगरे, सवत् १९२८  
का मार्गसिरमासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्या गुरुवासरे उपाध्याय  
विद्ध वरिष्ठ श्री १०८ भट्टारक राजेन्द्रकीर्तिजित् पठनार्थं  
परमानन्द शुभभूषात् । श्रीरस्तु ।  
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १७२ ।

१०७७ बनारसी विलास

- Opening :** प्रथम सहस्रनाम सिन्दूर प्रकरधाम वावनी सवैया वेद निरनै  
पचासिका ।  
चेसठि सिला का मारग नो करम की प्रकृति कल्याण मंदिर  
पञ्चदश नुवाचिनी ।

पैडीकम्म छतीसी पिब्बइ ध्यान वतीसी आध्यात्म वतीसी  
 पचीसीग्यान रासिका ।  
 सित्र की पचीसी भवसिन्धु की चतुरदसी अध्यात्म कागति  
 षोडस निवासिका । १॥

Closing ,

सत्रह मं एकोतरे ममै व्रत मितपाख ।

दुतिया सो पूरन भई यह बनारसी भाप ॥

Colophon :

इति बनारसी विलास सङ्गम् । शुभंभूयात् सवत् १८९०  
 माभीसमे मात्तभाद्रमासे शुक्लेपक्षे एकादश्या सोमवासरे ।  
 पुस्तकमिदं रघुनाथ शर्मणे लेखि । पट्टनपुर मध्ये आलमगज  
 निवास । पुस्तक सख्या श्लोक अनुष्टुप तीनहजार छसं  
 ( ३६०० ) लिखि आरे मे बाबू परमेष्ठी महाय का ।

१०७८० वारह भावना

Opening :

पच परम पद वद हूँ, मन वच सीसनिवाय ।

भावै वारह भावना, निज आत्म लव लाय ॥

Closing

भूला चूका होय जो, भव्य जन लेह सुधार ।

मोह दोस दीजै नही, भैरौ कहें बिचार ॥

श्री जिन धरम न विसारियै ॥

Colophon .

इति श्री वारह भावना जी ममाप्तम् ।

१०७९ वारह भावना

Opening :

राजा राणा क्षत्रपति हाथिन के असवार ।

मरना सबको एकदिन अपनी अपनी वार ॥१॥

Closing

जांचे मुरतरु देय सुब्र चितन चिन्ता रैन ।

विन जाचे विन चितये धर्म सकल सुख देन ॥

Colophon

इति वारह भावना सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna Carita, Kathā )

१०८०. बारह भावना

- Opening : आदिदेव जिनपें नमो, वदो गुरु के पय ।  
बरनौ बारह भावना सुनऊ चतुर चित लाय ॥१॥
- Closing : जहाँ सवर तहाँ निर्जरा, जहाँ आश्रव तहाँ वध ।  
इतनी कला विवेक की और बात सबध ॥१५॥
- Colophon : इति ।

१०८१. बीस तीर्थंकर नामावली

- अक्षरमात्र पदस्वरहोन व्यजनसधिविजितरेफम् ।  
साधुभिरश्रमम क्षन्तव्य को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥
- Closing : नियमप्रमं जी, वीरसेन जी, महाभद्र जी, जयदेव जी, अजीत-  
वीर्य जी ॥२०॥
- Colophon : इति श्री बीसतीर्थंकर के नाम संपूरण ।  
विशेष— इसी में भविष्यत चौबीसी भी अन्तर्भूत है ।

१०८२. ब्रह्म विलास

- Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत बहुरि श्री सिद्ध नमिज्जं ।  
आचारिज उवज्झाय तासु पदवदन किज्जं ।  
साधु सकल गुणवंत सतमुद्रा लखि ददौ ।  
श्रावक प्रतिभा घरनं चरनं नमि पाप निकदौ ।  
सम्यक्कदत्तं स्वसुभावघरे जीव जगत महिहो ।  
जित तित नित त्रिकाल वदत भविक भाव सहित सिर नाईनित  
॥१॥
- Closing : बहुत बात कहियै कहायनी यहै जीव त्रिभुवन को धनी ।  
प्रगट होइ जेव केवल ध्यान शुद्ध संख्य वहै भगवान ॥
- Colophon : इति श्री भैयाभगौतीदास कृत ब्रह्मविलास सम्पूर्णम् । मासा-

मासे उत्तमफाल्गुनमासे तिथी ६ गुरुवारक दिन पुस्तकसमाप्तम् । लिख्यत काशीमध्ये राजमदिरमीतला घाट देवि कदरवाजा । लिख्यत गौड ब्राह्मण शिवलालक हस्त लिखत जोसीवर वर जीवण । पुस्तक लाला शकरलाल जी लिखाईत पठनार्थ उपकारार्थ श्री भगवान समर्पणमस्तु । ग्रथ सख्या ४८०० ।

मगल लेखकाना च पाठकाना च मगलम् ।

मगल सर्वलोकाना भूमिपतिर्मगलम् ॥

देखें—(१) जौ० सि० भ० ग्र० I, क्र० १८६ ।

### १०८३. ब्रह्म विलास

Opening : देखें, क्र० १०८२ ।

Closing : देखें, क्र० १०८२ ।

### Colophon

इति श्री भैयाभगीती दासकृत ब्रह्मविलास संपूर्णम् । श्री संवत् १८९७ । शाके १७३२ मामीना मासे उत्तम माघ मासे शुक्लपक्षे तिथी १५ । भृगुवासरे पुस्तक समाप्त भई । लिख्यत गौड ब्राह्मण शिवलाल काशीमध्ये राजमदिर सीतला-घाट । पुस्तक लाला मनुलाल जी की पठनार्थ'परोपकारार्थम् । यादृण पुस्तक न दीयते ॥१॥

लेखिनी पुस्तिका " " मंदता ॥२॥

जले रक्ष थले " " पुस्तक ॥४॥

ग्रथ सख्या ४८०० चारहजारमाठ सौ

पत्र संख्या-१६८ ॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ।

मगल लेखकाना च पाठकाना च मगलम् ।

मगल सर्वलोकाना भूमिपतिर्मगलम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

१०८४. चैत्यवन्दना

- Opening : वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नदीश्वरे यानि च भदिरेषु ।  
यावन्ति चैत्यायतनामि लोके, सर्वाणि वदे जिनपुंगवानाम् ॥१॥
- Closing : णवकोटि --- ... अकिट्टिमा वदे ॥
- Colophon : इति चैत्य वन्दना ।  
देखें—(१) दि० जि० ग्र० २०, पृ० १२७ ।  
(३) रा० सू० IV, पृ० ३८४, ३८७, ४३२ ।

१०८५. चैत्यवन्दना

- Opening : सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यतराणां निकाये,  
नक्षत्राणां च निवासे ग्रहगणपटले ताराकाणां विमाने ।  
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणध्वस्त सान्द्राधकारे,  
श्रीमत्तीर्थ'कराणां प्रतिदिवसमह तत् चैत्यानि वंदे ॥
- Closing : जन्म-जन्म-कृतं पाप जन्मकोटिमुपाजितम् ।  
जन्ममृत्युञ्जराभूतिं हन्यते जिनवदनात् ॥१२॥
- Colophon : इति मपूर्णेम् ।  
देखें, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १३२ ।

१०८६. चातुर्मासव्याख्या

- Opening : स्मारे स्मारे स्फुरद्ज्ञानधामजैन-जगतम् ।  
कार कार क्रमाभोजे गौरव प्रणितिं पुनः ॥१॥
- Closing : अक्षयादितृतीयाया व्याख्यान बोध्यप्राक्तनम् ।  
अलेखि सुगम कृत्वा क्षमाकल्याणपाठकैः ॥१॥
- Colophon : इत्यक्षयातृतीया व्याख्यानम् । अथाग्रमनुमानतः श्लोका सप्तैति ।

विशेष—इसमें चतुर्विंश के साथ ही अष्टाह्निका व्याख्या, दीवाली-  
व्याख्या, सोभाग्र्य पंचमी व्याख्या, ज्ञानपंचमी व्याख्या, मौन-  
एकादशी, पौष—दशमी व्याख्या, भैरु तेरस व्याख्या, होलिका  
व्याख्या अक्षयतृतीयादि व्याख्या का समावेश किया गया है।

### १०८७. चौदहगुण स्थान

**Opening :** गुण आत्मीक परिनाम गुणी जीव नाम पदार्थ ते आत्मीक परि-  
नाम तीन जात के। शुभ, अशुभ, शुद्ध तिन ही परिनाम  
३ मापक चौदह स्थानक जीवम जाननाम्।

**Closing :** जँथा पाषाणतँ सर्वथा भिन्न भया सुवर्ण' निः कलक शोभै त्यो  
अपनी अनंत शक्ति करि विराजमान केवलग्यान ॥२॥ केवल  
दर्शन ॥२॥ अनंत वीर्य ॥३॥ छाइक सम्यक्त ॥४॥  
चैतन्य भानु ॥५॥ . . . . . परमात्मा कहिये ।

**Colophon :** यह चौदह गुण स्थान का स्वल्प संक्षेप मात्र वर्णन जिनवान्त  
अनुसार कथन कर पूरन किया।  
देखे, जौ. सि. म. ग्र. , क्र. २०४।

### १०८८ चौदह गुणस्थान

**Opening :** तिसे मुक्त के स्थान जाने को इह चौदह सीढी है सो प्रथम  
मिथ्याते गुण स्थान ही मे यह जीव अनादिकाल से पडा आया  
है तहाँ कछु भी इसको अपनाभला बुरा होने का ग्यान नहीं  
हुआ सो मिथ्यात का पाँच प्रकार का भेद है—

**Closing :** जन्म मर्न इत्यादिक ससार का अनेक दुखकर रहित हुआ, अजर  
अमर को प्राप्त हुआ।

**Colophon :** इति श्री चौदहगुणस्थान की चरका सम्पूर्णम्। समाप्तम्।  
शुभमस्तु।

### १०८६. नन्वारिदेवक

Opening :	वर्णमर्ममयं अस्मिन्मयं विद्यमयम् । नानुमयं वेदयोपलम्बोऽप्युपलम्बम् ॥१॥
Closing :	इति-विद्वन्मया प्रवेष्टं इति प्रमाणम् । तस्मै नमः प्रीतिं मिदमिदं मया दियम् ॥२॥
Colophon	इति नन्वारिदेवकं सम्पूर्णम् ।

### १०८७. चौबीस दण्डक

Opening :	तयो यौगं दृष्टो यो मृतायोरुभोर । वदं धाम सुमति मृताये देव भविषीर ॥
Closing :	इत्युक्तं नृपं नृपं दायं विद्वन्मया विनिर्णयम् । भाषा कारणं प्रमाणं कौ, भाषा दीनतया ॥२॥
Colophon :	इति सम्पूर्णम् ।

### १०८८. चौबीस दण्डक

Opening	देवो - ७० १०६० ।
Closing :	देवो - ७० १०६० ।
Colophon .	इति श्री चौबीस दण्डक चौपाई सम्पूर्णम् ।

### १०८९. चौबीस दण्डक

Opening	प्रथम दण्डक के नाम तहो नोरक १, भवनवासी देव १०, न्योतिषी १, व्यतर १, धनानिक १, पृथ्वी १, अप १, तेज १, धायु १, .... ।
---------	---

**Closing :** ... — ... तेजकाय वायुकाय विप्रेभी उपजे है ऐसे चौवीस  
दंडकनि का कथन लिख्या सो त्रिलोकसार " आदि  
ग्रन्थनि ते सौधि करि लेवे ।

**Colophon .** अनुपलब्ध ।

### १०६३. चौबीसठाणा

**Opening :** गइइदिय च काए जोए वेए कपायणागेय ।  
सयमदसणलेस्सा भव्विया समत्तसणिणाआहारे ॥१॥

**Closing .** अपकाय । वायकाय । तेजकाय । पृथ्वीकाय ।  
वनस्पती । वेइन्द्री । तेइन्द्री । चौइन्द्री । जलचर ।  
पक्षी । चौपदा । उरपद । देव । नारकी । मनुष्य ।

**Colophon .** इति श्री चौबीस ठाना की चरचा सम्पूर्णम् । मिति पूर्ण  
कृष्ण बुधवार । सम्वत् १८७४ ।

दीहा—  
करि कटि ग्रीवा नयनदुख तनदुख बहुत सुजान ।  
लिख्यौ जाति अति कवित तैं सब जानत आसनि ॥  
शुभभवतु ।

### १०६४ चर्चा-संग्रह

**Opening** धर्माधुरंधर आदि जिन, आदि धर्म करतार ।  
जमु देवमघरण तैं सर्व विधि मंगलसार ॥१॥

**Closing :** एक-एकपाखंडी के उपरि एक एक अंछरा नृत्य करें ऐसे सब  
मिलि सताईस कौड होय छैं ऐसा जानना ।

**Colophon :** इति चर्चासंग्रह समाप्तम् । शुभं भवतु ।  
वेखें, जी० सि० भ० ग्र० I, क्र० १६१ ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

१०६५. चर्चासमाधान

- Opening : जयोवीरजिन चद्रमा उदैअपूरव जासु ।  
कलिजुग काने पाव भे कीनो तिमिर विनास ॥१॥
- Closing : देवराजपूजतचरण असरण सरण उदार ।  
चहु सच्च मंगलकरण प्रियकारणि कुमारि ॥१६॥
- Colophon : इति चरचा समाधान ग्रथ भूधरदास कृत समाप्त ॥ संवत्  
१८६३ । माघ शुक्ल ११ ।  
देखें, जै० ति० भ० प्र० ७० १६६ ।

१०६६. चरचानमाधान

- Opening : देखें, क्र० १०६५ ।
- Closing : देखें, क्र० १०६५ ।
- Colophon : इति श्री चरचा समाधाननाम ग्रथ सम्पूर्णम् । संवत् १८४१  
समये अषाढमासे शुक्लपक्षे शुभदिने इद पुस्तक लेखनीयम् ।

१०६७. देशास्कंध

- Opening : नमः सर्वज्ञया तेण कालेर्ण तेण समएण समणे भगवान महावीरे ।  
... . - - ... ।
- Closing : वम्सावा सम्पादया सवियाण कप्पई निगन्थाण  
वा ... .. तथ्येववायणवेत्तय ॥
- Colophon : इच्चैय संगच्छरिय घेरकप्प अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च  
सम्म काएणव फासित्ता पालित्ता सोभित्ता वीरित्ता किहित्ता  
आराहित्ता आणा अणुपालित्ता आच्छगइया समणा निग्गथा  
तेणैव भवग्गहेणेणं सअत्थ सडभय सवागरण ... ..  
इत्ति वेमि पज्जो सवणाकप्पो सम्मत्ते दसासु असकधस्स अट्ठम-

जज्ञयण ग्रथाग्रं श्लोक १२१६ सवत् १७३५ प्रथम ज्येष्ठमासे  
 कृष्णपक्षे मौम्यवारे सप्तमीकर्मवाह्या श्रीमत् बृहत् खरतरगच्छा  
 तुच्छ युगप्रवरपदधर भट्टारक १०४ श्रीजिनचन्द्रसूरिणादाना  
 शिष्येण विनयवता क्षमासमुद्रेण कल्पसूत्रप्रतिलिखति स्म श्रीराज  
 द्रगे श्री ।

### १०६८. दोनवावनी

Opening : वंदो अरि जिनद व्रत तीरथ परगारयी ।  
 णमो श्रेयस नरिद दान तीरथ अभ्यास्यी ॥

Closing : रत्ननर्त्र आभरन विरार्ज वीरनद गुरु गुन समुदाय ।  
 तिनके चरन कमल जुग सुमिरत भयो प्रभावज्ञान अधिकाय ।  
 तव श्री पद्मनंदने कीर्त दान प्रकाश काव्य सुखदाय ।  
 पद्मनंद वनाड दानवावनी दानित राय ॥

Colophon : इति श्री दानवावनी सम्पूर्णम् ।

### १०६९. दोनवावनी

Opening : देखै, क्र० १०६८ ।

Closing : देखे, क्र० १०६८ ।

Colophon : इति श्री दानवावनी सम्पूर्णम् ।

### ११००. दौ-शील-भावना

Opening : प्रथम जीनेसर पाय नमी यामी सुगुरु पसाय ।  
 दान शील तप भावना बोली सुबहु संवाद ॥१॥

Closing : दान शील तप भावना रचौ संवाद भणता गुणता भावसुरे ।  
 गीद्वि समृद्धि सुप्रमादोरे धर्म हीर्यधरो ॥२॥

Colophon : इति श्री दान जीनेतप भावना सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna Carita, Kathā )

११०१. देवागम

- Opening • देवागमभोयान चामरादिविभूतय ।  
मायाविष्वपि दृश्यते नातस्त्वमसि नो महान् ॥१॥
- Closing : जयति जगति • • • • • समुपासते ॥
- Colophon : इति श्री समतमद्रपरमार्हताचार्यविरचिन देवागमसूत्र संपूर्णम् ।  
दोहा : श्री देवागम ग्रन्थ को पौष कृष्ण नव जान ।  
• • • • • एक परमान् ॥१॥  
लिपिपूरन पुस्तक कियो शुभमुहुर्त शनिवार,  
हरिदाम सुत अजित को आरा देम मझार ॥२॥  
सो जयवतो नित रहो जत्र लग सूरजचद,  
यह जिन सासन त्रिजग हित पूरन सिव सुखकद ॥३॥  
शुभ भूयात् । शुभम् ।  
देखें, जं० सि० भ० ग्र० १, क्र० ४५४ ।

११०२. दिगम्बरआम्नाय

- Opening श्री भद्रबाहु स्वामी पीछे दिगम्बर संप्रदाय में केतेक वर्ष  
अगनि के पाठी रहे ।
- Closing संप्रदाय में जथावत आचार को ती अभाव ही है जो कही होय  
तो दूर क्षेत्र में होयगा, परन्तु भीक्षमार्ग की प्ररूपणा तो भयनी  
के महात्म हैं वतें है ।
- Colophon : इति दिगम्बर आम्नाय ।

११०३. धर्मग्रन्थ

- Opening • भगल लोकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महेंत ।  
साधु केवली कथित वर धरम सरण जयवत ॥

**Closing :** स्याद्गाइ आम निर्दोष अन्य सर्व ही है जु सन्तोष ।  
त्याग दोष गुण धरे विचार हेतु विषय ध्यान निर्धार ॥  
**Colophon :** इति श्री धर्मरत्न संपूर्णम् ।

## ११०४. धर्मग्रन्थ

**Opening :** ..... दोऊनिका न्यारान्यारा माननी ।

**Closing :** ... .. एकेन्द्रिय तो सर्वत्र है ही, अर कर्मभूम ।

**Colophon :** अनुपलब्ध ।

## ११०५. धर्ममृतसार

**Opening :** अनन्तर अविनासी भगवान् ऋषभपुराण पुरुषोत्तम तिलिक्  
प्रणाम करि महापुराण की पीठिका प्रगट करिए है ।

**Closing :** अर नाभिराज कमल मंडित तलाव की उपमाकूँ धरे उदय  
हौणहार भगवान् रूप सूर्य ताकि अभिलाषा करता निरतद  
निरषता सत्तापरमउदयरूप अतुलैर्धर्य की धारताभिया ।

**Colophon :** श्री श्री श्री ।

## ११०६. धर्मचाष्टक

**Opening :** मैं देव निति अरिहत् चाहैं सिद्ध को सुमरण करौं ।  
मैं सुर गुरु मुनीं तीन पदमय साध पद हिरवै धरौ ॥१॥

**Closing :** यह भावना उत्तम सदा भानु तुम सुतो जिनराज जी,  
तुम कृपापाथ अनाथ दानत दया करनी ग्याव जी ।  
दुष्ट कर्म विनास ज्ञान प्रकास मोकूँ कीजिए,  
करि भुगति गमन ममाधि मरण सुभगति चर्ण की दीजिये ॥८॥

**Colophon :** इति धर्मचाष्टक भाषा सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāṇa, Carita, Kathā )

११०७. धर्मपरोक्षा

Opening • पणमूँ अरहत देवगुरु निरगय दयाधरम ।  
भवदधितारन अवर सकल मिथ्यात मणि ॥

Closing : भनत गुनत यन्न भाधरि अहनिमि होइ आरु न्द ।  
धरममुण्यातै उपजै यामै परमाणन्द ॥७५॥

Colophon • इति श्री धर्मपरोक्षा भाषा मनोहरकृत सम्पूर्णम् । शुभ सवत्  
१८७१ । शाके १७२६ पीप शुक्ल नवमी भृगुवासरे । पुस्तक-  
मिदं सम्पूर्णमेति । लेखकाक्षर रघुनाथ पाण्डेय पट्टनपुर मध्ये  
गायघाट स्थाने ।

११०८. धर्मरत्न

Opening मगल लोकोत्तम नमो श्री जिन सिद्ध महत ।  
साधु केवली कथितवर धरम शरण जयवत ॥१॥

Closing : श्रुतकेवलि गुरु के अवगाढ केवलि प्रभु के परम अवगाढ ।  
आत्मानुशासन के माहि, इति दस भेद सुकथन कराही ॥

Co'ophon • नहीं है ।

११०९. धर्मरत्न ग्रन्थ

Opening • देखे—क्र० ११०८ ।

Closing • धर्मरत्न की ज्योति फैलो चहुँ दिस  
जग तम शिव मारण उद्योत जयवतरो धर्तों सदा ॥

Colophon : नहीं है ।

## १११०. धर्मरहस्य

Opening : पचनि मे कहिये परमेश्वर पचहुँ अक्षर नामदिये ते ।  
उ नमकार सर्व सिद्ध ऊपर पचनि ते-उत्तपत किये ते ।  
लोक अलोक त्रिकाल मे नाहि कोई तीन की समदेष हिये ते ।१।

Closing : धर्म पचास कवित्तउ भैज्जत भगत विराग स्वज्ञान कथा है ।  
आपनि औरनि को हितकार पढो वरनार सुभाव तथा है ।  
अक्षर अर्थ की भूलि परि जहाँ सोध तहाँ उपकार जथा है ।  
द्यानत सज्जन आप विषैरत होय वारधि शब्द मधा है ।

Colophon : इति धर्मरहस्य कवित्त वावन सम्पूर्णम् ।

## ११११. धर्मसार सतसई

Opening : वीर जिनेश्वर प्रणमु देव, ...  
... सुमिरत जाके पाप नसाय ॥१०॥

Closing : गुन थोर ... बल वीर ॥१०१॥

Colophon : इति श्री धर्मसार भट्टारक श्री सकलवीरत उपदेशक पंडित  
सीरोमण दास विरचिते श्री पञ्चकल्याणक महिमा संपूरन लिखत  
धरमसनेही नै । इति श्री धरमसार ग्रन्थ संपूर्णः । सवत्  
१८३२ । शाके १६६७ मीति वैशाख शुदि सोमवासरे  
संपूर्णः ।

## १११२. द्रव्यसंग्रह

Opening : जीवमजीव दव्व जिणवरवसहेण जेण णिदिट्ठ ।  
देविदविदवद वदे तं सव्वदा सिरसा ॥

Closing : दव्वसगहमिण मुणिणाहा दोससंखयचुदासुदपुणा ।  
सोधयतु तणु सुत्तघरेण जेमिच्चदमुणिणा भणिय ज ॥६०॥

Catalogue of Sanskrit, Prākṛit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Puṣṭāna Carita, Kathā )

Colophon : इति श्री नेमिचन्द्रविरचित द्रव्यसंग्रह समाप्तम् ।  
देखें, जी० ति०, भ० ग्र० I, क्र० २१३ ।

१११३. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें—क्र० १११२ ।

Closing : देखें—क्र० १११२ ।

Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोऽध्याय इति श्री द्रव्यसंग्रह जी  
समाप्तम् ।

१११४. द्रव्यसंग्रह

Opening : पर प्राणपरिणामो न पर मानखडनम् ।  
प्राणक्षये क्षणं दुःखं मानखडने दिने दिने ॥६॥

Closing : देखें—क्र० १११२ ।

Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोऽध्यायः । इति द्रव्यसंग्रह समाप्तः

१११५. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० १११२ ।

Closing : सवत् सर्वह सो इकतीस । माघ शुदी दसमी शुभ दीन ॥  
भगलकरण परम सुखदाय । द्रव्यसंग्रह प्रति करु प्रणाम ॥

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह कवित्तवध सपूर्णम् । सवत् १८७१ पौष  
शुक्ल एकादस शनिवार को लिखा ।

१११६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० १११२ ।

**Closing :** ..... विरुद्ध भावटाली करी साचो सूत्र भाव कस्यो  
छइ जिणइ ॥

**Colophon :** इति धर्माधर्मा पञ्चतनु वालाबोधे द्रव्यसंग्रह सूत्र समाप्तम् ।  
१११७. द्रव्यसंग्रह

**Opening :** तहाँ प्रथम या ग्रथ की पीठिका अँमे जो या ग्रथ मे तीन  
अधिकार है तहाँ पहिला ती पट्द्रव्यपचास्तिकाय की प्ररूपणा  
का अधिकार है तहाँ आदिगाथा तो मगल अर्थ है नहाँ एक  
गाथा उक्त च सब इद्र के सख्या का है ।

**Closing :** मगल श्री अरहत वर, मगल सिधि सुसुरि ॥  
उपाध्याय साधु सदा, करो पाप सब दूरि ॥१॥

**Colophon :** इति श्री द्रव्यसंग्रह ग्रथ समाप्ता ।

१११८. द्रव्यसंग्रह

**Opening :** देखे, क्र० १११२ ।

**Closing :** देखे, क्र० १११२ ।

**Colophon :** इति द्रव्यसंग्रहसूत्र समाप्तम् ।

१११९. द्वादशानुप्रेक्षा

**Opening :** जिणवर भासि .. सुणऊ जीव सुलक्षणा ॥१॥

**Closing :** ..... रयणत्तय गुणु ॥

**Colophon :** इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्ता ।

११२०. ईर्यापथ सामयिक

**Opening :** ॐ नि सगौह जिनाना सदनमनुपम श्रीपरीर्ततिभक्त्या,  
स्थित्वागत्वानिषिद्य चरणपरिणतोत्त सनैर्हन्तयुग्मम् ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

- भाले संस्थाप्पवध्या मम दुरितहर कीर्तिय. शक्रवद्यम्,  
निदादूर सदाप्त क्षयरहितममुज्ञानभानु जिनेन्द्रम् ॥
- Closing : पापिण्ठेन दुरात्मना जडद्विया मायाभिनालोभिना,  
रागद्वेषमलीमशेषमनसादु खकर्मय निभितम् ।  
शैलोभ्याधिपते जिनेन्द्रभगवत् श्रीपाशूर्लेधुना,  
निदादूरमह जजामि सतत निवृत्तये कर्मणाम् ॥
- Colophon : इति ईयपिथ सम्पूर्णम् ।

११२१. गतिलक्षण

- Opening : स्वर्गच्युत्तानामीहजीवलोके चत्वारिनिस्त्वमुदय वमति ।  
दानप्रसंगो मधुरा च वागी देवाच्चर्चन सद्गुरु सेवन च ॥
- Closing : बह्वांगी नैव सतुष्टो, मायालुप्तप्रपचकः ।  
मूढस्थ पलालश्चैव तिर्यग्योम्या गतो नरः ॥
- Colophon : इति गतिलक्षण समाप्तम् ।

११२२. गोम्मटसार

- Opening : वंदौ ज्ञानानंदकर नेमिचंद्र गुनकंद ।  
साधव वंदित विमलपद पुण्य पतोदिश्रिनंद ॥१॥
- Closing : अपर्याप्त मै मिश्रगुणस्थान नाही तासै कृष्ण । लश्या का मिश्र  
गुणस्थान विई देव विना तीन एति है । त्यादिक यथा सभव  
अर्थ जानियत्रनिकरि कहिए है, अर्थ सो जानना . . . ।
- Colophon : इति आचार्य गोम्मटसार द्वितीयतान पंचमग्रह ग्रन्थ की जीव-  
तत्त्व प्रदीप का नाम संस्कृत टीका के अनुसारि सम्बन्धान  
चंद्रिका नामा भाषा टीका . . . ।  
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० २४४ ।
- ११२३ ग्यान के आठ अंग

- Opening : विजय अथसमग्रह । . . वसुअंग ॥

**Closing :** जैसे ज्ञान के आठ अंग हैं सो धर्मात्मा जीवन करि धारवे  
योग्य है ।

**Colophon :** इति ग्यान के अष्टांग सम्पूर्णम् ।

### ११२४. हणवन्त अणुप्रेक्षा

**Opening :** सिद्धाणिजोय जीव वणस्सई कालू पुगभाच्चेव ।  
सव्वमलोगागास छच्चेव अणतया भणिया ॥

**Closing :** इयचारियाइ सुणेवि — ... — ...  
... — राह्वेण सइत्तुअडेलेहि ॥

**Colophon :** इति हणवत अणुप्रेक्षा. समाप्तम् । पंडित बछराजू लिखितम् ।

### ११२५. जिन गायत्री त्रिकाल संध्या

**Opening :** अथोच्यते त्रिवर्णानां शौचाचारविधिक्रमः ।  
प्रातरेव समुत्थाय स्मृत्वास्तुत्वा जिनैश्वरम् ॥१॥

**Closing :** — संघोपासनं ॥६॥ चैति सप्तकर्मणि क्रमेण कुर्वीदं  
नितंदाह नमो ह्येते भगवते समार मागरनिगानानाय अहं  
जलनिर्गमामि स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ।

### ११२६ जिनगुणसम्पत्ति

**Opening :** सस्तुवे सर्वदा देवं गोपेशां गोपति परम् ।  
दर्शनादर्पण पश्यन् ब्रूलोक्य द्विगुणायते ॥१॥

**Closing :** इति व्रतमहिमान विदितपुराण भक्तिविष्य भो विवृधर्जना ।  
कुरुत सलीलं व्रतमतिरम्य शिवसीत्य यदि प्रप्नुमनाः ॥७॥

**Colophon :** इति जिनगुणसम्पत्ति विधान समाप्तः । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।  
शुभमस्तु ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

११२७. जिनमहिमा

- Opening : श्री जिनवर नाम की महिमा अगम अपार ।  
घरि प्रतीति जे जपत, ते सफल करत अवतार ॥
- Closing : अद्भुत अतिसै तुम घरे वीतराग निज लीन ।  
पूजक सहजै उच्चह्वै निदक सहजै हीन ॥७॥
- Colophon . इति जिनमहिमा सपूर्ण ।

११२८. जीवराशि क्षमावाणी

- Opening . हिवराणी पद्मावती जीवराश क्षिमावै ... ।  
... .. जे मैं नीक विराधिया ॥
- Closing : रामवयराडी जे सुनै " " " तत्काल ॥३२॥
- Colophon : इति जीवराशि सिक्षावाणी समाप्तम् ।

११२९. णनपचीसी

- Opening : सुरनरतिर्यग्योनि में निरहै निगोदिभवत ।  
महामोह की नीद मैं सोए काल अनत ॥१॥
- Closing : कहे उपदेश वाणारसी चेतन अब कछु चेति ।  
आप समझावै आप कू जपै कर्म के हेति ॥२५॥
- Colophon : इति श्री ज्ञान पचीसीसपूर्णम् ।

११३०. ज्ञानार्णव-वचनिका

- Opening : पिउस्थ पदस्थ च रूपस्थ रूपवर्जितम् ।  
चतुर्द्धाध्यानमाप्नात भव्यराजीवभास्करै. ॥१॥
- Closing : अक्षर पदकूँ अर्थ रूप ले ध्यान मैं,  
जें ध्यावै उम मत्र रूप एकता नमैं,

ध्यान पदस्थ जु नाम कह्यो मुनीराज नै ।

जे या मै हू लीन लहै निज काज मै ॥१॥

**Colophon :** इति श्री शुभचन्द्राचार्य विरचित योगप्रदीपाधिकार ज्ञानार्णव-  
नाम सस्कृत ग्रन्थ की देश भाषामय वचनिका द्विषै पदस्यध्यान  
का प्रकरण समाप्त भया । श्रीरस्तु ।

### ११३१. कर्मप्रकृति ग्रथ

**Opening :** पणमिय सिरसा णेमि गुणरयणविहूमण महावीरं  
सम्मत्तरय गणिलय पयडिसमुकित्तण वोच्छे ८६ ॥१॥

**Closing :** पाणवधादीसु रदो जिण पूयामुम्बमग्गविग्घयरो ।  
अज्जेइ अतराय ण लहइ ज इच्छिय जेण ॥

**Colophon :** इति श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तदेव विरचितायां कर्मप्रकृतिग्रन्थः  
समाप्तः ।  
देखे, जि० २० को०, पृ० ७२ ।

### ११३२. कर्म-वतीसी

**Opening :** परमं निरजन परम गुरु परम पुरुष परधान ।  
वन्दौ परम समधिमय भयभंजन भगवान् ॥१॥

**Closing :** यह परभारथ पथ गुन, अगम अनत वषण ।  
कहन बनारसी दास हम जथा सकत परवान् ॥२॥

**Colophon :** इति ध्यान वतीसो संपूर्णम् ।

### ११३३. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

**Opening :** तिहुवर्णतिलय देव वेदिता तिहुअणिदपरिपुञ्जम् ।  
वोच्छे अणुवेहाओ भविय जणाणंदजणणीओ ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna, Carita, Kathā )

**Closing** • मुनि श्रावक के भेदतै, धरमदोष परकार ।  
ताको सुनि चिन्तो सतत, गहि पावो भवपार ॥

**Colophon** : इति स्वामि कार्तिकेय अनुप्रेक्षा समाप्तम् मिति चैत सुदि ७  
शवत् १६३८ वार मगल ।  
इति श्री

११३४. लघुतत्त्वार्थसूत्र

**Opening** • दृष्टं येन चराचर केवलज्ञान चक्षुषा ।  
प्रणमामि महावीरे वदे कातां प्रवक्षते ॥१॥

**Closing** : त्रिविधो मोक्षमार्गहेतवाः ॥१३॥ पञ्चविधनिर्ग्रन्थाः ॥१४॥ त्रिविधा  
सिद्धा ॥१५॥ द्वादशसिद्धस्यानुयोगनामानि ॥१६॥ अष्टीरेसिद्ध-  
श्रुणाः ॥१७॥ द्विविधा सिद्धाः ॥१८॥ वैराग्य चेति ॥१९॥

**Colophon** इति लघुतत्त्वार्थं सम्पूर्णम् ।  
**विशेष** — इसके पहले हेतु मे ही लिखा है कि भव 'अर्हत्प्रवचन'  
कहेगे । अतः इसका नाम भी वही होना चाहिए ।  
देखें—जै० सि० भ० प्र०, I, क्र० २८० ।

११३५. लघुसामायिक

**Opening** • शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकानोकैकभावे ।  
नमः श्रीबद्धमानाय बद्धमानजिनेसिने ॥१॥

**Closing** : एष सामायिक सम्यक् सामायिक वदित ॥  
वर्तनमुक्तिमानस्य कस्य पूर्णयसैर्मनः ॥१४॥

**Colophon** • इति श्री लघु सामायिक सम्पूर्णम् ।

## ११३६. लघु सामायिक

- Opening : सिद्धवस्तुवचो भवतया सिद्धान्प्रणमत, सदा ।  
सिद्धकार्यं शिष्यं प्राप्तः सिद्धिं ददतु नोव्ययम् ॥१॥
- Closing : देखें, क्र० ११३५ ।
- Colophon : इति लघु सामयिकम् ।  
देखें, जै० सि० भ० ग्र० १, क्र० ३६६ ।

## ११३७. लक्ष्या स्वरूप

- Opening : आतंरीद्रसदाक्रोधी मत्सरीधर्मवर्जितः ।  
निर्दयोर्वैरसयुक्तः ॥ कृष्णलेश्याधिकोभर ॥१॥
- Closing : किन्हाए जाई नरयं नीलाए थावरो होई कानुहुए तिगिय गई ।  
पीताए मानुसो होई, पो माए देव गइ सुवकाए पावई सासयं  
ठाण
- Colophon : इति लेश्यास्वरूपं सम्पूर्णम् ।

## ११३८. लीलावती प्रकीर्णक

- Opening : प्रीतिं भक्तजनस्य यो जनयते विघ्नं निविघ्नस्मृतस्तं धृदारकवृद्धं  
वदितपर्वं नखामतंगाननम् ।  
पाटीं मदणितस्य वच्मिचतुरप्रीतिपदोः स्फुटा संक्षिप्ताक्षरकोमला-  
मलपदैर्लालित्थलीलावती । १॥
- Closing : ... एक का बोलबाला रहा रहन दे और सोलह रहन  
दे असा अंक राखी और मिटाय डाले । अब एकका भाग सोलह  
मे देइ पाये सोलह दश अंक के सोलह दाडिय पाये ।
- Colophon : इति भास्कराचार्य विरचिताया गणित - - लीलावत्या  
प्रकीर्णकानि समाप्ताः ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts  
( Purāṇa, Carita, Kathā )

११३६. मिथ्यात्व खण्डन

- Opening :** प्रथम सुमरि अरहंत की सिद्धन की धरिध्यान ।  
सरस्वता सीस नमाइक, वंदी गुरु जु ग्यान ॥
- Closing :** अथ अक्षयम रम्यो यह द्वै प्रथिनि की मारिथ ।  
धृतिग जायि लदेहु भवि अधिक जतन मो राखि ॥
- Colophon :** एनि मिथ्यात्व खण्डन सम्पूर्णम् । शुभ सवत् १८७६ मीति  
चैत्र सुदि १८ । रचियासरे उपदेश ब्रह्मपदमसागर जी लिखित  
अनन्नायक आग नगर ।  
धोरन्तु ।
- निर्णय—** इसके बाद एक छप्पय भी दिया हुआ है ।  
देखें, जे० नि० भ० प्र० १, पृ० २८५ ।

११४०. मोक्ष मार्ग

- Opening :** भगनमय भगनकरण वीतराग विज्ञान ।  
समो ताहि जाते नए धरहतादि महान् ॥
- Closing :** जैसे वादरे कै भी हस्त पदादि अग होई । परन्तु जैसे मनु क्षेते  
भे न होई । तैसे मिथ्या दृष्टिनि कै भी व्यवहार रूप निसकि-  
सादि अग हो है, परन्तु जैसे निश्चय की सापेक्षा लिए सम्पन्नकै  
होइ तैसे न हो है ।
- Colophon :** नहीं है ।

११४१. मोक्षमार्ग पैडी

- ३ **Opening :** हयक ममे रुचिर्वत जो गुरु अछुई है सुनमल्ल ।  
जो तुम अदर चेतना बहै तु साटी अल्ल ॥१॥

Closing : भव थिति जिनकी घटि गई तिनकी यह उपदेश ।

कहत बनारसीदासयो भूढ न समुझैलेस ॥२२॥

Colophon : इति मोक्षमार्ग पैडी समाप्ता ।

### ११४२. मोक्षमार्ग पैडी

Opening : देखें, क्र० ११४१ ।

Closing : देखें, क्र० ११४१ ।

Colophon : इति मोक्षपैडी संपूर्णः ।

### ११४३. मृत्यु महौत्सव

Opening : मृत्युमार्गप्रवृत्त्यस्य वीतरागो ददातु मे ।

समाधिवोधिपार्थय यावन्मुक्तिपुरीपुरम् ॥

Closing : स्वर्गादिव्यविचित्रनिर्मलकुले संस्मर्यमानाजनैः,

भूत्वा मुक्तिविधायिनां बहुविधिं बाक्षानुरूप फलम् ।

भुक्त्वा भोगमहर्षिणः परकृत स्थित्वा क्षणमडले,

पात्रावेशविवर्जनामिवमृत सतो लभतिस्ततः ॥

Colophon : इति मृत्युमहौत्सव सम्पूर्णम् समाप्ता ।

देखें, जै० सि० अ० ग्र० I, क्र० २७० ।

### ११४४. मुक्तिसूकावली

Opening : देवलोक तार्का घर आंगन राजा ऋद्धि सेवैतसुपाय ।

ताके तन सौभाग्यादि गुन केलि विलास करि नित आय ॥

सौ नर उतरन भवसागर निरमल होइ भोक्ष पद पाय ।

करव भाव विधि सहित बनारसि जो जिनवर हरजिमन लाई



Catalogue of Sankrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāṇa, Carita, Kathā )

Closing . मोनहर्नैरममानये रितुग्रीण वेलाय ।  
मोनवार एकादशी कर नक्षत्र मितपाय ॥१०४॥

Colophon : इति मुक्तिमूवतायली भाषा ममाप्ता ।  
श्रीः मयत् १६६८ पर्वेतात्रिकादिप्रतिपदाया अनिवानरे श्री  
मगदामले विमिश्रित लेखनेन केनचित् । लेखक पाठकयो  
मुनमवतु । इति ध्यो ।

विशेष— इस ग्रन्थ की अन्तिम पंक्ति के अनुसार मयत् १६६९ है लेकिन  
Colophon में १६६८ लिखा है ।

११४५. नवकार महात्म्य

Opening . प्राप्ती ॥१॥ पदनयानिका ॥२॥ भगवती राजीमति ॥३॥  
श्रुतशी ॥४॥ कीलन्या ॥५॥ मृगायति ॥६॥ .. .. . ।

Closing . अरि हरि हरिगारुण हाटण भूत वेतान्,  
मयि पाप प्रणामं चान्ये नगनमान ।  
एण सुमरण मफट हूरि टनइ ततकाल,  
जपे जिनगुण प्रभू सूरिवर नीम रनाल ॥७॥

Colophon : इति श्री नवकार माहात्म्यनिकाय ममाप्तम् ।

विशेष -- इसमें मोनह नक्तियों के नाम भी दिये गये हैं ।

११४६. नयचक्र

Opening . गुणानां विस्तर वक्ष्ये ..... - ।  
मत्वाधीरजिनेश्वरम् .. - - - ।

Closing : तत्र सप्रेक्षग्रहित वस्तुसवधविषय नयचरितामङ्गुलव्यवहार  
यथा देवदत्तस्य धनमिति प्लेषसहितवस्तुसवध .. यथा  
जीवस्थशरीरमिति ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

**Colophon :** इति सुखबोधार्थमालापद्धतिः । श्री देवसेनपण्डितविरचिता  
नयचक्रपरिसमाप्ताः ।

### ११४७. नयचक्र

**Opening :** देखें, क्र० ११४६ ।

**Closing :** देखें, क्र० ११४६ ।

**Colophon :** इति सुखबोधार्थमालापद्धति श्री देवसेनपण्डित विरचिता ।  
इति श्री नयचक्र समाप्तम् ३०६ श्लोक अनुष्टुप निश्चयेन ।  
इति श्री ।

### ११४८ नयचक्र वचनिका

**Opening :** वदो श्री जिन के वचन स्यादवाद नयमूल ।  
ताहि सुनत अनुभव तहाँ है मिथ्या निरमूल ॥१॥

**Closing :** सत्रम् मैं छःवीं कौ सवत् फाल्गुन मास ।  
उजनी तिथि दशमी जहाँ कीनो वचन विलाम ॥

**Colophon :** इति श्री नातयगदास हेमराज कृत नयचक्र वचनिका समाप्तम् ।  
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २९६ ।

### ११४९. नयचक्र वचनिका

**Opening :** देखें, क्र० ११४८ ।

**Closing :** देखें, क्र० ११४८ ।

**Colophon :** इति श्री नयचक्र पण्डित नारायणदास उपदेशशिष्य हेमराज कृत  
सामान्य वचनिका संपूर्णम् । इति श्री नयचक्र जी की वचन  
का सम्पूर्णम् । मिति ज्येष्ठ वदि ६ । बुधवार । संवत् १९६२  
शु । चंदेरी ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāna Carita, Kathā )

११५०. निर्वाणिकाण्ड

Opening	अठ्ठावयम्मि उनहो चपामवास्मपुज्जजिणणाहो । उज्जत णेमिजिणो पावामणि व्वुतो महवीरो ॥१॥
Closing	ओइपठपतियाल णिव्वुई ककपीभावसुद्धोए । भुजिनरसुरसुक्क पठइ सो लहइ णिव्वाण ॥
Colophon	इति सम्पूर्णम् । शुभ ।

११५१. निर्वाण काण्ड

Opening	वीनराग वदो गदा, भाव सहित सिरनाय । कहुं काण्ड निर्वाण की, भाषा विविध बनाय ॥१॥
Closing	नवत् मग्रह मै एक ताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशाल । भैया वदन करे त्रिकाल, जै निर्वाणिकाण्ड गुणमाल ॥२॥
Colophon	इति निर्वाणिकाण्ड भाषा सम्पूर्णम् । श्री शुभ इति ।

११५२ पचर्विसतिका

Opening	सव्वमलमार्यंउ मिद्ध सिद्धगति हरगिददपुज्ज । णेमि सत्तिगुरवीर पणमिय तिय सुद्धिभवमहण ।
Closing	मोहाकुमुडणि चद भवदुहसायरण जाण पत्तमिण । धम्म विलाससुहद भणिद जिणदासवम्हेण ॥२६॥
Colophon	इति धर्मव्यसतिका लिख्य सम्पूर्ण करी ।

११५३. पच परमेष्ठी

Opening	इस जीव के मयार मे पाँच ही परमइष्ट है । तातै इनको पच परमेष्ठि कए । तिनका स्वरूप सामान्ययनै लिखिए ।
---------	--

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

**Closing :** वस्त्र का त्याग । दतवन का त्याग । खड़े होय अहार ले ।  
लघु भोजन एक वेर ले । एव सप्त ए अठाईस गुन साधु  
महाराज जी का कहूया ।

**Colophon :** इति श्री समुच्चय पंचपरमैष्टी की चर्चा स्वप्न सपूर्णम् ।

### ११५४. परमात्मप्रकाश

**Opening :** चिदानन्दकहाय जिनाय परमात्मने ।  
परमात्मप्रकाशाय नित्य सिद्धात्मने नमः ।

**Closing :** परमभयग्राण भामर्षोदिव्वकाउ,  
भणति मुनिवराण मुक्खदो दिव्व जोउ ।  
विसयसुहरयाण दुल्लहो जोहु लोए ।  
जयउ सिवसरूवो केवलो कोटिबोहो ॥३४६॥

**Colophon :** इति श्री योगीन्द्रदेवविरचित परमात्मप्रकाश, समाप्त ।

### ११५५. परमात्मप्रकाश

**Opening :** देखे, क्र० ११५४ ।

**Closing** देखे, क्र० ११५४ ।

**Colophon :** इति परमात्मप्रकाश समाप्त । ग्रन्थार्थ ४५१ श्लोक अनुष्टुप  
श्री । श्रीरस्तु । लेखकगठकयो. शुभ भूयात् ।

### ११५६. परीक्षामुख वचनिका

**Opening :** श्रीमत् वीर जिनेस रवि, तम अज्ञान नसाय ।

शिवपथ वरतायो जगति, वदो मै तसु पाय ॥१॥

**Closing :** कोटि जीव तुल्य कीन गणना मे गणिये तीउ हमे इस ग्रंथ  
की टीका करे हैं सो जैसे नदी का जल नवीन घट बिषेकिछुधा

## ११५८. प्रवचननार

Opening ।

मर्त्यगार्थैकचिद्रूपस्वभावाय परान्तर्गते  
स्त्रोपलब्धिप्रतिज्ञाय ज्ञानानदात्मने नमः ॥१॥

Closing ।

व्याख्येयं किन्तु विश्वमात्मसहितं — एकं परं चित् ॥

Colophon .

इति तत्त्वप्रदीपिका नाम प्रवचनमार्गवृत्ति समाप्तम् । शुभ  
अस्तु । शक्य १६८२ वर्षे का-गुनमासे कृष्णपक्षे ५ मनीषासरे  
काष्ठान्तर्गते नदीतटे भट्टारक श्री रामसेन्यान्वये तदनुक्रमेण  
भट्टारक श्री चंद्रवीरि भट्टाराजकीर्ति तस्य शिष्य ब्रह्मघन जी  
स्वहस्तेनातिथितम् । शुभ भुवात् ।

देखे, जै० मि० भ० प्र० । क्र० ३१२ ।

## ११५६. प्रवचनसार

Opening : देखें—क्र० ११५६ ।

Closing : देखें—क्र० ११५६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

## ११६०. प्रवचनसार

Opening : स्वयं सिद्ध करतार करै निज करम सरम ...  
... एक विघ्न अजरअमर

Closing : ... भूतिक पदार्थ को जानै है अति चंचल है अनतज्ञान की  
महिमा ते गिरा है अत्यन्त विकल है महामोह ... ।

Colophon : नहीं है ।

## ११६१. प्रायश्चित्त ग्रन्थ

Opening : जिनचन्द्रं प्रणम्याहमकलकः समन्ततः ।  
प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि श्रावकाणां विशुद्धये ॥

Closing : प्रायश्चित्तं यः करोत्येव देव जाते दोषे तत्प्रशात्यर्थमार्यः  
रास्ट्रस्यासौ भूमिः यस्यात्यनोपि स्वस्ताचास्यावस्थित  
श तनोति ॥६०॥

Colophon : इति अकलकस्वामिनिरूपित प्रायश्चित्तग्रन्थं संपूर्णम् ।  
देखें—जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३२१ ।

## ११६२. पाप-पुण्य माहात्म्य

Opening : वर्द्धमानं जिनवरं नमूँ, मन वच सीस नवाय ।  
फुन गुरु गातम को नमूँ, जातै पातक जाय ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāṇa, Carita, Kathā)

**Closing** : सत्रै सै इवयानवै, पोष शुदी तिथ दूज ।  
सुभ नक्षत्र पूरन करी, जिन घानी कू पूज ॥  
जे नर सुर घर गावही, तथा सुनै मन लाय ।  
जिनवानी सरधा करै अत सिद्धगत जाय ॥६॥

**Colophon** : इति अष्टद्वय सेती जिन पूजा करी समाप्तम् ।

११६३. पुण्य माहात्म्य

**Opening** : पूरव पुत्र कियो जिन मोय, नेरा वस्तु जु प्राप्त होय ।  
मानुष जनम जु पावै थाय, उत्तम कुल मै उपजै आय ॥१॥

**Closing** : शक्र ममान तपस्या करै, दुष्ट शादमीसै तप करै,  
इतने गुन निरमल जिस जोय, तासी नमस्कार मम सोय ॥८॥

**Colophon** : इति श्री पुण्य महात्म समाप्तम् ।

११६४. सम्यक्त्व कौमुदी

**Opening** : परम पुरुष आनन्दमय चेतनरूप सुजान ।  
नमी सिद्ध परत्मा जग परकासक भान ।

**Closing** : चद सुर पानी ... तव लग जैन प्रकाश ॥४६॥

**Colophon** : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा सादा जोधराज गोदीका विरचिते  
उदितोदय भूप अर्हदास सवादिकसंगं गमनचरनतनाम एकादश  
परिच्छेद । इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी सम्पूर्णम् । सवत् १८४६  
वर्षे मिति ज्येष्ठ सुदि ३ वार मंगल श्रीपाश्वैचद्र सूरि गच्छे  
श्री १०८ श्री चद्रभाण जी तत् शिष्य लिखत् ज्ञासिरदारमल्लेन  
श्री सफातपुर नगरमध्ये ।

देखे, जौ० सि० भ० ग्र० J, क्र० ११४ ।

## ११६५. समयसार गाथा

- Opening : वीतराग जिन नत्वा ज्ञानानन्दकसपद ।  
वक्ष्ये समयसारस्य वृत्ति तात्पर्यशक्तिकाम् ॥१॥
- Closing . सुप्तोसुप्तादेसो णायव्यो परमभावदरिमीहि ।  
ववहारदेसिदो पुणजेहुअपग्मे ठिदा भावे ॥१५॥
- Colophon : इति समयसार गाथा सम्पूर्णम् ।

## ११६६. समयसार नाटक

- Opening : करम भरम जग तिमिर हरन खग उरग लपन पगसिव मग  
दरसी ।  
निरखत नयन भविक जल वरखत हरषन अमित भाविक  
जन दरसी ॥  
मदन कदन जिते परम धरम हित सुमिरत भगति भगत  
सवदरसी ।  
सजल जलद तन मुकुट पपत फन करम दलन जिन नमन  
वनारसी ॥१॥

- Closing : समैसार आत्मदरव नाटक भाव अनत ।  
सोहै आगम नाम मै परमारथ विरतत ॥७२७॥

- Colophon . इति श्री परभागमसमैसारनाटकनाम सिद्धान्त सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।  
कल्याणमस्तु । शुभभवतु ।  
देखे, जै० सि० भ० ग्रे० I, क्र० ३४२ ।

## ११६७. समयसार नाटक

- Opening . देखे, क्र० ११६६ ।

- Closing . देखे, क्र० ११६६ ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Purāṇa, Cārita, Kathā )

Colophon : इति श्री परमाणम नर्मभार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम् ।  
संवत् १८८४ भादो शुक्ल तेरस सोमवासरे जवाहरमल्ल  
स्वाध्याय हेतवे ।

११६८. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ११६६ ।

Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्णम् ।  
रघुचन्द्र वनु सति अवधि नादत्र निन ममिवार ।  
द्वितिया तिथि पोथी उभय पूरन मई सवार ॥१॥  
समयसार नाटक अगम ब्रह्मग्यात विश्राम ।  
पढत सुनत सुषग उपजी भावित आमाराम ॥२॥  
संवत् १८४० कातिग शुक्ल १ रवि दिने लिखित महुकमरामेण  
पठनार्थमात्मागमः । शुभभवतु ।

११६९. समवेसरण

Opening : समोसरण मडिन नमो परमाणम जिनरूप ।  
चुरनरपति वदित चरण, महिमा अगम अनूपे ॥१॥

Closing : इह विधि श्री जिनराज जगनायक सासुत मुक्त ।  
अहिनिमि मगलकाजे पढत सुनत सब कट्टकरौ ॥३०॥

Colophon : इति श्री समोसरणभेद ।

११७०. समुद्घात

Opening : सोतसमुद्घाते कहै वेदना समुद्घाते ॥१॥ कषाय समुद्घाते ॥२॥  
भारणातिके समुद्घाते ॥३॥ वैक्रिय समुद्घाते ॥४॥ तैजस  
समुद्घाते ॥५॥ आहारक समुद्घाते ॥६॥ केवलि समुद्घाते ॥७॥

**Closing :** अट्ठानीस योगन एकमोअट्ठानीम धनुष सण्ठ्योत्तर अगुल  
इतनी जवूद्वीपकी परिधि ।

**Colophon :** नही है ।

### ११७१. षट्दर्शन

**Opening :** शिवमत बोध सुवेदमत नैयायिक मत पक्ष ।  
भीमासकमत जैनमत षट् दरसन पर लक्ष ॥१॥

**Closing :** रायपवानी ६ पुनीनचावन १० लोचन वडवा ११ धरधरमी  
१२ कवित १३ राग्रा १४ वृषभनचावन १५ पेजनेवाई १६ ।

**Colophon :** अनुपलब्ध ।

### ११७२. षट्पाहुड

**Opening :** कच्चण णमोयार जिणवरवस्सहस्सवदुमाणएस ।  
दसणमगवा वोच्छामि जहा कम्म समाशेण ॥

**Closing :** अरहन्तो सुहभन्ता .... पुणा केरिय अण ॥४८॥

**Colophon** इति श्री कुन्दकुदाचार्य विरचित जीनप्रामुर्त समाप्रम् । मत्रन्  
१७६५ चर्मे बैशाखमासे शुक्लपक्षे ति ती द्वादसी १२ मानसर  
श्रीराम ।

### ११७३ षट्पाहुड

**Opening :** देखै, क्र० ११७२ ।

**Closing :** एव जिण पणत्त मोक्खस्स य पाहुड सुभर्त्तीए ।

जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ सासय सुख ॥

**Colophon :** इति श्री कुन्दकुदाचार्यविरचित मोक्ष-पाहुड षष्ठ समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Dharma-Darśana-Ācāra )

११७४. पट्लेश्याभेद

Opening :	कृष्ण नील काशोत्तरे पीत पदम सुक जान । मुन अमुभ ज् कम के ए पट् भद वखान ॥
Closing	यह पट् विध लेश्या कही मुनी भविक दे कान । अमुभ जान निर वारिय भैरो कही वषान ॥
Colophon .	इति श्री पट् लेश्या आरत्नी ।

११७५. सामायिक

Opening .	देखे क्र० ११३६ ।
Closing .	देखे, क्र० ११३६ ।
Colophon	.नि नपूर्णम् ।

११७६. सामायिक

Opening :	पडिक्कमामि भते इरिया वहियाण निराहगाएअगागुत्ते अज्जमणे ।
Closing :	गुरुव पातु वो नित्य . मोक्षमार्गोपदेशका ।
Colophon :	इति सामायिक समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग० 1, क्र० ३६५ ।

११७७. सामायिक

Opening ।	देखे—क्र० ११७६ ।
Closing ।	देखे—क्र० ११७६ ।
Colophon .	इति सामायिकम् ।

## ११७८. सामायिक

- Opening : देखे, क्र० ११३६ ।  
 Closing : देखे—क्र० ११३६ ।  
 Colophon : इति लघु सामायिक संपूर्ण । आप्य १०८ दीजे ।

## ११७९. सामायिक

- Opening : नमः श्रीवर्द्धमानाय निर्द्धूतकलिलात्मने ।  
 सालोकाना त्रिलोकाना यद्विद्यादर्पणार्थे ॥१॥  
 Closing : अथय पौर्वान्हेकदेववदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण,  
 सकलकर्मक्षयार्थं भावपूर्णावदनास्तत्रसमेतम् ।  
 Colophon : इति लघुसामायिकसंपूर्णम् ।

## ११८०. साक्षाचार

- Opening : तदी देव युगादि जिन, गुरु गणेश्वर के पाथ ।  
 मुमरु देवी सारदा, रिद्ध सिद्ध वरदान ॥१॥  
 Closing : मंगल भगवान वीरो मंगल गीतमो मणी ।  
 मंगल कु दकु दाद्यो, जैनधर्मस्तु मंगलम् ॥  
 Colophon : इति साक्षाचार जिनमत की संपूर्णम् ।

## ११८१. साततत्त्व

- Opening : जीव १। अजीव २। अजीव ३। वय ४। मंवर ५।  
 निज्जरा ६। मोक्ष ७। एहि सात तत्त्व है इनमे पुन्य और  
 प्राप मिलिके नौ पदार्थ कहिए हैं ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Dharma-Darśana-Ācāra )

**Closing :** इस पाप की सरूप विचार कर कै त्यागना जोग है । एही नौ  
बदारथ समान रूप कहा । विशेष .... निर्वर्त होय है ॥१॥

**Colophon :** इति श्री साततत्त्व नव पदार्थ की चरचा सक्षेप मात्र जनाया  
है सो मपूर्णम् । शुभ भवतु ।

११८२. सिद्धान्तसार

**Opening :** सीन जगन्पति जिनको धर्मराज के नायक शिवसुखदायक है ।  
इस पंचगुरु की प्रणाम करि कै आवै भवन उदधिकी कथन  
सुनी भाषु अवै ॥१॥

**Closing :** जे इह मध्य सुलोक विषै जिनराज के मंदिर है अखण्डन ।  
श्री निर्वाण सुभूमि जहाँ न समोक्ष गये करिकर्म विखण्डन ।  
जेइ सत्रन्त्रकी असजाणये सबकी करि भूषित आनन ।  
ते इय सायक देहु मुझ करि जोरि करौ सबकी नित वदन ॥२५॥

**Colophon :** इति श्री सिद्धान्तसार दीपक महाग्रन्थे भट्टारक श्री सकलकीर्ति  
प्रणीतानुसारेण नथमलकृत भाषाया मध्यलोक वर्णनोनाम  
दसमोऽध्यायाधिकार ॥१०॥

११८३. सिद्धर-प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

**Opening :** सोभित तप गजराज सीस सिद्धर पूरव विवोध ।  
.... बनारसि जोरि कर ॥

**Closing :** सोरह मै इवयनिवै रितु ग्रीष्म वैशाख ।  
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र मितपाप ॥३॥  
नामसूक्तिमुक्तावली द्वाविंशति अधिकार ।  
शतसि लोक परवान सब इति ग्रन्थ विस्तर ॥४॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

**Colophon :** इति श्री सिद्धरप्रकरण सूक्तिमुक्तावलीनाम ग्रन्थ समाप्तम् ।  
संवत् १८०३ वैशाख सुदी १४ बृहस्पतिवासरे लिखितं यति  
लालचन्द पठनार्थं लाला गोवरधमदासजी ।

**विशेष —** दि० जि० ग्र० २०, के अनुसार इसके लेखक सोमप्रभाचार्य  
हैं तथा टीकाकार हर्षकीर्ति है ।

### ११८४. सिद्धर-प्रकरण

**Opening :** सिद्धप्रकरस्तपकरि ... ' पार्श्वप्रभो पातु वः ।

**Closing :** किं जातं बहुभिः करोति हरिणी .... यानिर्भर्या ॥

**Colophon :** इति सिद्धरप्रकरणम् सम्पूर्णम् । लिखितं पडित परमानन्देन  
मिति चैत्र कृष्णे पक्षम्या शुक्रवासरे रात्री श्री जिनचैत्यालये  
संवत्सर १९२८ का । शुभं भूयात् ।

देखें, जे० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५२६ ।

### ११८५. सिद्धर प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

**Opening** देखें, क्र० ११८३ ।

**Closing** देखें, क्र० ११८३ ।

**Colophon :** इति सिद्धरप्रकरण सूक्तिमुक्तावलीनाम ग्रन्थ सम्पूर्णम् ।

### ११८६. शीलव्रत

**Opening :** समजुणीय चतुर ... परनारिसी ॥१॥

**Closing :** सीयल गुण कहणकी ... वषानी ॥

**Colophon .** इति श्री शील कडवा समाप्तम् ।

### ११८७. श्रावकाचार

**Opening** राजत कैवल्यदान - - - सिंह सुभाय ॥१॥

Catalogue of Sankrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Dharmā-Darśana-Ācāra )

**Closing :** ... एक सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताते तू अगीकार ।  
कर और ताके अनुसार देवगुरुधर्म का सरूप अगीकार कर  
श्रद्धा न कर ।

**Colophon :** इति कुदेवादि का वरमन संपूर्ण । इति श्रावकाचार ग्रंथ  
संपूर्णम् ।

देखे, जौ० सि० भ० प्र० I, क्र० ३८३ ।

११८८ श्रावक प्रतित्रमण

**Opening :** जीवप्रमादजनिताः प्रचुराप्तदोषा ,  
यस्मात्प्रतित्रमणतः प्रलय प्रयाति ।  
तस्मास्तदर्थममर्ल मुनिबोधनार्थम्,  
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥

**Closing :** अकंखरपयेत्यहीने मत्ताहीन च जे मए भणिय ।  
त खमैउ ... दुनेखकंखये दितु ॥

**Colophon :** श्रावकप्रतित्रमण समाप्तम् ।

देखे, जौ० सि० भ० प्र० I, क्र० ३७९ ।

११८९. श्रावक प्रतिष्ठाक्रमोपण

**Opening :** देखे, क्र० ११८८ ।

**Closing :** देखे क्र० ११८८ ।

**Colophon :** इति श्रावकप्रतित्रमण समाप्तम् ।

११९०. श्रावक व्रतसध्या

**Opening :** अपवित्रः पवित्रो ..... .. समुच्यते ॥

Closing : श्रीमत्सिद्धजिन प्रणमामि सततं ज्ञानामृतं भूषणम् ।

वदे श्री जिनसेवक प्रतिदिन संध्या त्रिकाल कुरु ॥

Colophon . इति श्री मध्या सपूर्णम् ।

### ११६१. श्रावकव्रतसंध्या

Opening : देखे, क्र० ११६० ।

Closing : देखे, क्र० ११६० ।

Colophon इति जैनमध्या सपूर्णम् ।

### ११६२. श्रावकव्रतविधान

Opening . वारा व्रत श्रावण तने, तिनको करु बखान ।

जो जिय निहचै चित्त धरै ताकी होय कल्याण ॥१॥

Closing : वरत जु बारै इम कहै, सुनी भविक दे कान ।

मो निहचै धर पालीयो भैरो कहै बखान ॥

Colophon : इति श्रावक व्रत समाप्तम् ।

### ११६३. श्रीपालदर्शन

Opening . ॐ नमः सिद्धे मन धरसत, उदघाटे जुगपाट तुरंत ।

धर वार भरम भजिगयो, पुन्यहि फलतै दरसनभयो ।

Closing : तीर्थङ्कर वदौ जिनदेव सीसनवाय करौषद सेव ।

शुद्धभाव जाके मन भयो सम्यक्दृष्टि मुकतहि गर्यौ ॥

Colophon . इति श्रीपालदर्शन सम्पूर्णम् ।

### ११६४. श्रीपालदर्शन

Opening . : देखे, क्र० ११६३ ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhram̐śa & Hindi Manuscripts  
( Dharma-Darśana-Ācāra )

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।  
Colophon : इति श्रीपाल दरसन सम्पूर्णम् ।

११६५. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : तैसे जे मुनि सम्यक सहीत चारित्र के धारक थे सो कोई कर्म  
की जोरो बरो तै मोह की प्रवतता करि सम्भक राजपद छूटि  
गया हो - - ।

Closing : आगे अक्षर ज्ञान कहीए है सो उह प्रजाय समास के अन्तभेद मे  
एक भेद और भिलाइए तब अक्षर ज्ञान है सो अह अर्थाक्षर नाम  
ज्ञान है सो ए सर्व श्रुतिज्ञान के संक्षेप मैं भाग यह अक्षर  
ज्ञान है ।

Colophon : वहीं है ।

११६६. तत्त्वसार

Opening : ज्ञानगिदठकम्मे निम्मितमुविसुद्धलद्धसम्भावे ।  
अमिऊण परमसिद्धे सुतच्चमार पबोच्छामि ॥

Closing : सोऊण तच्चसार रडय मुणिणाहदेवसेण्ण ।  
ओ सहिट्ठी ओवइ सो पावइ सरसस सोवख ॥

Colophon : इति तत्त्वसार समाप्त ।

देखें, जे० सि० भ० ग्र० १. क्र० ३६३ ।

११६७. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्य द्रव्यपेटक — — सर्वं शुद्धदृष्टिः ॥

Closing : तवयण वयघरण - ... निवारेइ ॥

Colophon : इति दशाध्याय सूत्र उमास्वामी कृत सपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४०४ ।

### ११९८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening देखे — क्र० ११९७ ।

Closing : देखें, क्र० ११९७ ।

Colophon : इति तत्त्वार्थसूत्र सपूर्णम् ।

### ११९९. तत्त्वार्थसूत्र

Opening देखे, क्र० ११९७ ।

Closing : तत्त्वार्थसूत्रकर्त्तार ... उमास्वामीमुनीश्वरम् ॥

Colophon : इति उमास्वामिकृत तत्त्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

### १२००. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Closing ... धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्रकागतिलिङ्गतीर्थचारित्र-  
प्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनातरसंख्या ।

Colophon : इति तत्त्वार्थाधिगमो मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय ।

### १२०१. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Dharma-Darśana-Ācāra )

Closing : देखे, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री तत्त्वार्थ उमास्वामीकृत सूत्र जी समाप्तम् । सवत्  
१६२७ मीति भाद्रपद कृष्ण पक्ष १४। चद्रवामरे लिखित नीलकंठ  
दासशर्माऽह । श्रीकृष्णाय नम ।

१२०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतार भेत्तारकर्मभूताम् ।  
ज्ञातार विश्वतत्त्वाना वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

Closing : देखे क्र० ११६७ ।

Colophon इति तत्त्वार्थसूत्र समाप्त ।

१२०३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७ ।

Closing : देखे, क्र० ११६६ ।

Colophon . इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सूत्र समाप्तम् ।

१२०४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७ ।

Closing . देखे, क्र० १२०६ ।

Colophon : इति तत्त्वार्थसूत्र सम्पूर्ण ।

१२०५ तत्त्वार्थसूत्र

Opening . देखे क्र० ११ ७ ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

**Closing :** तपश्चरण करिबो, व्रत धरिबो, समय जरणको करिबो .... ..  
.... ... चतुरगति के दुख ते छूटे ।

**Colophon :** इति समाप्ता ।

### १२०६. तत्त्वार्थसूत्र

**Opening :** देखे, क्र० ११६७ ।

**Closing :** देखे, क्र० ११६७ ।

**Colophon :** इति ।

### १२०७. तत्त्वार्थसूत्र

**Opening :** देखे क्र० ११६७ ।

**Closing :** देखें, क्र० १२०५ ।

**Colophon :** तही है ।

### १२०८. तत्त्वार्थसूत्र

**Opening :** देखे, क्र०, ११६७ ।

**Closing :** अरिहतभासियत्थ गणहरदेवेहि गथिय मम्म ।  
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणायमहोवह सिरस्य ।

**Colophon :** इति सम्पूर्णम् ।

### १२०९. तत्त्वार्थसूत्र

**Opening :** देखे, क्र० ११६७ ।

**Closing :** णवमे सवरनिज्जर दममे मोवखं वियःणेहि ।  
इय सत्ततच्चमणिय, दहमुर्ने मुण्डिदेहि ॥६॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Dharma-Darśana-Ācāra )

Colophon : इति श्री उमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्र समाप्तम् ।  
संवत्सर १९३७ । मिति माघ वदी १२ वार बृहस्पति । इति ।  
१२१० तत्त्वार्थसूत्र

Opening देखे, क्र० ११९७ ।

Closing : देखे, क्र० १२०५ ।

Colophon . नहीं है ।

१२११. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७ ।

Closing देखे, क्र० ११९९ ।

Colophon : इति श्री दशमोऽध्यायसूत्र उमास्वामीकृत सम्पूर्णम् ।

१२१२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० १२०२ ।

Closing : देखे, क्र० १२०० ।

Colophon : इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः समाप्तः ॥

१२१३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११-७ ।

Closing : देखे, क्र० १२०० ।

Colophon . इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः समाप्तः ।

१२१४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७ ।

- Closing . देखे, क्र० ११६७ ।  
 Co'ophon . इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम् । श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ८  
 भोमवासरे, सवत् १६५५ श्रीरस्तु ।

## १२१५. तत्त्वार्थसूत्र

- Cpening : देखे, क्र० १२०२ ।  
 Closing . पढमे पढम णियमा विदिए विदिय च मव्वकालम्मि ।  
 जपुणु खाईयमम्म जम्म जिणा तम्मि कालम्मि ।  
 Colophon . इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्यायः समाप्त । श्री पटणा-  
 मधे साहब बिलदाश तस्य पुत्र साहभगवतिदास तस्य पुत्र आलम-  
 चन्द पठनाय मव्वत् १७७२ वर्ष कार्तिक कृष्ण नवमी तिथौ  
 सोम दिने सम्पूर्णम् ।

## १२१६ तत्त्वार्थसूत्र

- Opening . देखें क्र० ११६७ ।  
 Closing . देखे, क्र० १२०५ ।  
 Colophon . इति श्री समाप्त ।

## १२१७ तत्त्वार्थसूत्र वचनिका

- Opening . श्री वृषभादि जिनेश्वर अत नाम शुभवीर ।  
 मनवचकाय विशुद्ध करि वदौ परम शरीर ।  
 Closing . समयमार अध्यात्मसार प्रवचनसार रहसि मनघार ।  
 पचासतिकाया ए जीम, नाटकत्रयी कहावै पीन ।  
 तत्त्वार्थ सूत्र की टीका, सर्वार्थान्विद्धि नाम सुठीक  
 दूजीन तत्त्वार्थ वार्तिक श्लोकरूप वार्तिक तार्तिक ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Dharma-Darśana Ācāra )

Colophon : नही है ।

१२१८. त्रेपनक्रिया

Opening : अस्पष्ट ।

Closing : अस्पष्ट ।

विशेष— यह ग्रंथ एक गुटका है जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के पत्र भी अपठनीय हैं ।

१२१९. त्रेपनक्रिया

Opening : जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।

• • • सच्चसाहूण ।

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : अस्पष्ट ।

१२२०. त्रिकाल चतुर्विंशति

Opening : निव्वर्ण जी ११। सागरजी १२। महामाधु जी १३। विमल प्रभु जी १४। सुद्धाय जी १५। श्रीधर जी १६। श्रीदत्त जी १७। अमलप्रभ जी १८।

Closing : कदर्प जी १२०। जयनाथ जी १२१। श्री विमल जी १२२। दिव्य-वाह जी १२३। अनंतवीर्यजी १२४।

Colophon : इति त्रिकाल चतुर्विंशति का नाम सङ्गणम् ।

१२२१. त्रिवर्णचिार

Opening : त्रैलोक्ययात्रा चरितुं प्रवीणा धर्मार्थकामा प्रभवति यस्याः ।  
प्रसादतो वर्तन्त एव लोके मारस्वति सा दस तत्तमनोद्वे ॥१॥

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah,

**Closing :** सारस्वत्या प्रसादेन काव्य कुर्वन्ति पडिता ।  
ततस्सैषा समाराध्या भक्त्या शास्त्रे सरस्वति ॥

**Colophon :** इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविदविनिर्गते श्रीगीतमपिपादपद्मारा-  
धकेन श्री जिनसेनाचार्येण विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्यय-  
नसारोद्वारे ग्रह्णिधर्मदेवपूजा निरूपणीयोनाम पञ्चम पर्वः ।

### १२२२. त्रिलोकसार

**Opening :** त्रिमृवननार अपार गुण गायक " " ।  
श्री अरहत महत ॥१॥

**Closing :** सुखनाम निराकुलता का है । निराकुलता वीतराग भावनिर्त  
हो है । तर्त परम वीतराग भावरूप शुद्धात्म रूप जनित परम  
आनन्द की प्राप्ति करहु ।

**Colophon :** इति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४२७ ।

### १२२३ वचनिका

**Opening :** वदो श्री वृषभादि जिनधर्मतीर्थकरतार ।  
नमो जामपद इन्द्रसत शिवमारग संचिधार ॥१॥

**Closing :** हे करुणानिधान मेरी रक्षा करहु । तव भगवान कहते भये ।  
हे राम शोक न करि, तूचल देव हैकै एक दिन वासुदेव सहित  
इन्द्र की नाई पृथ्वी का राज करि । जिनेश्वर का व्रत धरि ।

**Colophon :** नही है ।

### १२२४. वैराग पचीसी

**Opening :** रागादिक दोषन तजै, वैरागी जो देव ।  
मन वचसीसनवाय के, कीजै तिनकी सेव ॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Rasa-Chanda-Alankāra )

- Closing : एक सात पचास मैं सब वर सुखकार ।  
पोष सुकल तिथि धर्म , जै जै निसपतिवार ॥
- Colophon : इति श्री वैराग्य पचीनी सम्पूर्ण ।

१२२५. योग

- Opening : यह आत्मा ममार अवस्था मे जीवात्मा कहाँ है और जब यह  
ही अपनी अतरंग बाह्य स्वरूप द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप  
मकल नामग्री के पावै है ।
- Closing : माल आदि दश ध्यान मैं ध्येय थापि मन लाए ।  
प्रत्याहार जु धारणा यह ध्यान विधिसार ॥१॥
- Colophon : इति श्री शुभचन्द्र आचार्य विरचित योगम् ।

१२२६. योगीरासा

- Opening : आदि पुरुष युग आदि ' ... आदि जती आदि नाथी  
आदि जगत गुरु जोग पयासित । जय जय जय जगनाथी
- Closing : योगीरासा सीखो रे श्रावक दोस न कोई लीजै ।  
जिणदास त्रिविध करि जपई मिद्वह सुमिरण कीजई ।
- Colophon : इति योगी रासा सम्पूर्णम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० ४२ ।

१२२७. अक्षर बत्तीसी

- Opening : कहे करम बस कीजै, कनक कामिनी दृष्टि न दीजै ॥
- Closing : यह अक्षर बत्तीसिका रची भगवती दाम ।  
बाल ख्याल कीनी कछु लही आत्म परगास-न-

Colophon : इति अक्षर वत्तीमी सम्पूर्णम् ।

### १२२८. अक्षर बावनी

Opening : ॐ सु अलष परब्रह्म की धरौ सदाचित ध्यान ।  
जा प्रमाद निहचै मनुज होत सुकृत को थान ॥१॥

Closing हरष होत प्रभू दरस तँ लहत अनेक अनद ।  
लक्ष्मी चद्र समान जस सुविध सीस सुखचद ॥४५॥

Colophon : इति श्री अक्षर बावणी जी समाप्तम् ।

### १२२९. अन्यमत श्लोक

Op ning : अहिमा सत्यमस्तेय त्यागो मैतुनवज्जनम्  
पञ्चस्वेतेषु धर्मेषु सर्वे धर्मा प्रतिष्ठिता ॥१॥

Closing अनुदिते नभमा देवस्य महर्षयो माहर्षिभि जुहेया जनकस्य  
जतस्य सायणा रक्षा भवतु शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु वृद्धिर्भवतु  
स्वस्तिर्भवतु श्रद्धाभवतु ..... ॥

Colophon नही है ।

### १२३०. अठाईरासा

Opening : वरत अढाई जे करै ते पावै भवपार प्राणी ।  
जवूद्वीप सुहावणो लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥

Closing : मन वच काया जे पढै ते पावै भवपार ।  
निनयकीरत सुबसू सनै जनम मज्जन नमरा प्राणी ॥

Colophon इति श्री अढाई २ साजी सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṣaṁ & Hindī Manuscripts  
( Rasa-Chanda-Alaṅkāra-etc )

१२३१ अढाईरासा

Opening :	देखें, क्र० १२३० ।
Closing :	देखें, क्र० १२३० ।
Colophon :	इति अढाई-पूजा रासौ सतूर्णम् । शुभ भवतु ।

१२३२. बारहमासा

Opening	विनवे उग्रसेन की लाडिली	समुझावहु मोहि ये हे सगरी ॥१॥
Closing	बारह मास पूरे भये	प्रति उत्तर लाल विनोदि गाई ।
Colophon	इति बारहमासा समाप्तम् ।	

१२३३. बारहमासा

Opening	देखे—क्र० १२३२ ।
Closing :	देखे—क्र० १२३२ ।
Colophon :	इति श्री बारहमासा जी समाप्तम् ।

१२३४. चंद्रशतक

Opening :	अनुभौ अभ्यास में निवास शुद्ध चेतन की, अनुभौ सरूप शुद्धबोध की प्रकाश है । अनुभौ अनूप रूप रहत अनत ग्यान, अनुभौ अतीत त्याग ग्यान सुख रास है । अनुभौ अपार सार आपही की आप जानें आपही में व्यापदीसैं जामें जड़ नास है ।
-----------	--

अनुभौ अरूप है सरूप चिदानन्द चद,  
अनुभौ अतीत आठ कर्म सौ अफास है ॥१॥

**Closing :** गुण ठाणी मिथ्यात अवृत तन छुटै च्यारगत  
सासादन गुण थान नरक तजि होई तीन रत ।  
मिश्र षीन सजोग तहाँ जीव मरहि न कोई  
सुनि अजोग गुन थान छुटै प्रगटै सिव सोई  
सपत'सेव गुण थे छुटे एक गत देव की  
कह्यो अरथ गुरु ग्रथ मै सति वचन जिन सेवकी ॥  
**Colophon :** इति श्री चदशतक समाप्तम् ।

### १२३५. चर्चशितक

**Opening :** जै सरवग्य अलोक लोक इक अडवत देव ।  
हसतामल ज्यो हाथ लीक ज्यो सरव विशेष ।  
छदो हव गुणपरज काल त्रय वर्तमान सम ।  
दर्पण जेम प्रकाश नाश मल कर्म महातम ।  
परमेष्ठी पार्चो विघनहर मंगलकारी लोक मै ।  
मन वच काय सिरनायभुव आणद सौ द्यो द्योक मै ॥१॥

**Closing :** चरचा मुख सौ भनै सुनै प्रानी जहि कानन ।  
केई सुने घरि जाहि नाहि भाषै फिरि आनन ।  
तिनि को लखि उपगार सार यह सतक बनाई ।  
पढत सुनत ह्वै बुद्ध सुद्ध जिनवानी गाई ।  
इसमे अनेक सिद्धान्तकी मथन कथन धानत कहा ।  
सब माहि जीवकौ नाम है जीव भाव हम सरदहा ॥१०४॥

**Colophon :** इति चरचा शतक समाप्तम् ।

### १२३६. चौबोल पचीसी

**Opening :** दरव षेत अरुकाल भाव दरव षेट तत्त्व नव ।  
ग्यायिक दीनदयाल सो अरिहत नमो सदा ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Rasa-Chanda-Alaṅkāra etc )

**Closing** कवित्त बनाए सावनि सुनाए मन आए गाए गुन ग्यान ।  
चरचा कूप अनूपम बानी हसभूप चिदरूप निसान ।  
गोमटसार धार दानत नै कारन जीव तत्व सरधान ।  
अक्षर अरथ अमिल जो देखी लेखो सुद्ध छिमा उर आन ॥२५॥

**Colophon** इति दरव चौबोल पचीसी सपूर्णम् ।

१२३७. दसबोल पचीसी

**Opening** : छप्पय—एक सरूप अमेद दोय ..... ।  
... . जिह तिह विघ भवजल तरी ॥१॥

**Closing** . वृषभसेन गुणसेन .. — — यह पुङ्गलमरजायहे ॥२५॥

**Colophon** . इति दसबोल पचीसी सपूर्णम् ।

१२३८. दसबोल पचीसी

**Opening** : देखे, क्र० १२३७ ।

**Closing** देखे, क्र० १२३७ ।

**Colophon** इति दसबोल पचीसी सम्पूर्णम् ।

१२३९. दशथान चौबीसी

**Opening** : रिषभदेव रिषभदेव छीर गभीर धीर धुनि ।  
चार बीस जगदीश ईश ते ईस दुगुन गुन ।  
सुरग ढाम निज नाम मातपुरतात वरन तन ।  
आय काय सुभचिन्त मुकुत आसेन दस वरनन ।

जसगाय पुन उपजाय बुद्ध पाय करो मगल अमर ।  
 सिरनाय नमो जुग जोर कर भो जिनद भो तापहर ॥१॥

**Closing :** जै जै मल्ल ब्रह्मचरिज अटल बल सकल बनाए ।  
 एक एक जिन स्वाम नाम दस दस गुन गाए ।  
 सुनत सुनत चित चुनत धुनत दुख सतत प्राणी ।  
 दानतराय उपाय गाय जिन पाय कहानी ।  
 गद जन्म जरामृत नहि मग एक उषदविगर ।  
 सिरनाय नमो जुग जोरि कर भो जिनद भो तापहर ॥३०॥

**Colophon** इति श्री दसथान चौबीसी सपूर्णम् ।

१२४० ढालगण

**Opening** देव धरम गुरु वदिके कहूँ ढाल गण सार ।  
 जा अवलोके बुद्धि उर उपजे सुभ करतार ॥१॥

**Closing .** अव जनमे नाही या भवमाही सबके साई सबजानी ।  
 तुमको जो ध्यावै तुमपद पावे कवी कहावै अधिकानी ॥६२॥

**Colophon :** इति श्री ढालगण सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१२४१. ढालगण

**Opening :** देखै, क्र० १२४० ।

**Closing :** देखै, क्र० १२४० ।

**Colophon .** इति श्री ढालगण सम्पूर्णम् ।

१२४२. दोहा

**Opening :** अपनी पव न विचार जै अहो जगत के राइ ।  
 भववन छाय कहा रहे सिवपुर सुधि विसराइ ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Rasa-Chanda-Alaṅkāra etc )

- Closing . रूपचद सदगुरुनिकी, जनु बलिहारी जाइ ।  
आपुन वै सिवपुर गए, भग्यनु पथ दिखाई ॥१०१॥
- Colophon : इति श्री पंडित रूपचद विरचिते दोहरा परमारथी समाप्ता ।  
शुभ भवतु ।

१२४३. दोहावली

- Opening : जिनके वचन विनोदते प्रगटे शिवपुर राह ।  
से जिनेंद्र मगल करो नितप्रति नयो उछाह ॥१॥
- Closing . जो मम्यवत सहित ... सोना और सुगन्ध ॥
- Co.ophon : नहीं है ।  
देखें, जे सि० भ० ग्र० I क्र० ५०८ ।

१२४४. दोहावली

- Opening . देखे, क्र० १२४३ ।
- Closing . देखे, क्र० १२४३ ।
- Colophon : नहीं है ।
- विशेष— चार जगह दोहावली शीर्षक देकर दोहे लिखे गये हैं । चारों में  
चार-चार पत्र हैं जिनमें एक समान दोहे दिये गये हैं ।

१२४५. दोहावली

- Opening . देखे, क्र० १२४३ ।
- Closing : देखे, क्र० १२४३ ।
- Colophon : नहीं है ।

## १२४६. द्विपञ्चाशतिका

- Opening : अतिसूक्ष्म करि ... .... लेपये छानियै ॥२२॥  
 Closing : बावन कवित एती मेरी मतिमान लए ।  
 हस के सुभाइ ग्याता गुण गहि लीजियो ॥४५२॥  
 Colophon : इति श्री बनारसीदास नामांकित द्विपञ्चाशतिका समाप्ता ।

## १२४७. फुटकर-काव्य

- Opening : अब हम देव का सरूप जिन सिद्धान्त के अनुसार वर्णन करते हैं  
 सो सर्व सभासद सज्जन महासयो कू श्रद्धान करण योग्य है ॥१॥  
 Closing : देहे निर्ममता गुरी विनयता नित्य श्रुताश्यासता ।  
 चारित्रोज्ज्वलतामहोपशमता ससारनिर्वेदता ... .. ॥  
 Colophon : अनुपलब्ध ।

## १२४८. ज्ञानसूर्योदयनाटक

- Opening : अनाद्यनतरूपाय पंचवर्णात्ममूर्त्तये ।  
 अनंतमहिमाप्राप्त सदाकारः नमोस्तु ते ॥१॥  
 Closing : अस्पष्ट ।  
 Colophon : इति श्रीवादिचंद्र आचार्यकृत श्री ज्ञानसूर्योदयनाटक संपूर्णम्  
 श्री पाठकाना शुभ भूयात् । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु निखित  
 पंडित परमानंदेन मिति माघ कृष्ण तिथौ तृतीयाया रविवासरे  
 सवत् १९२८ का लक्ष्मणपुरसमीपे पैतुरनगरे जिन चैत्यालये ।  
 देखे, रा० सू० III, न० ८६ ।

## १२४९ जैन-रासौ

- Opening : अहंता छियाला सिद्धा अट्टे सूर छीसा ।  
 उज्झाया पणत्रीसा अट्टाईसा हवेई साहूण ॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Rasa-Chanda-Alaṅkāra-etc )

Closing : जे नर आप घात कर मरौ होइ तिरजच चिहू गति फिरी ।  
संमारा दुख भोगवौ दिख आपु घनुरी पाई . . . ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

रा० सू० III, पृ० १४१,

१२५०. जकड़ी

Opening : अब मन मेरे वे सुनि सुनि सिख सयानी ।  
जिनवर चरनो वे करि करि प्रीत सज्यानी ॥

Closing : धन्य धन्य सतगुर के नायक सब सुखदायक तिहुपन मे ।  
जिन सो समझ परी सब भूदर सदा सरेन इस भाव वन मे ॥

Colophon : इति सिस्थ जकड़ी सपूर्णम् ।

१२५१. जोगीरासो

Opening : आदि पुरुष जो आदिज गोतमु, आदि जति आदिनाथो ।  
आदि जगत गुरु जोग पयासिउ जय जय जय जगनाथो ॥

Closing : योगीय रसौ सिखहु रे श्रावग दोसुण को लीजै ।  
जो जीनदास हनि विधि हिए सिद्धह सुमिरणु कीजै ॥४२॥

Colophon : इति जोगीगसु समाप्ता ।

रा० सू० III, पृ० १६५ ।

१२५२ कवित्त

श्री जिनगज गरीबनेवाज सुधारन काज सब सुखदाई ।  
दीनदयाल वडे प्रतिपाल दया गुनमाल मदा सिरनाई ॥  
दुरगति टारन पाप निवारन ही भवतारन की भवताई ।  
बारवार पुकार करौ जन की बिनती सुनिए जिनराई ॥

**Colsing .** हो दीनवन्धु श्री पति करुना निधान जी ।  
ये मेरि विथा वयो न हरो वार वयो लगी ॥

**Colophon :** इति ।

### १२५३. कवित्त

**Opening :** श्री जिनवर के नाम की महिमा अगम अपार ।  
घरि प्रतीति जे जपत-हैं सफल करत अवतार ॥१॥

**Closing :** अद्भुत अतिसै तुम घरै दीतराग निज-लीन ।  
पूज्यक सहिजै उव्वन्है निदक सहिजै लीन ॥६॥

**Colophon :** इति सम्पूर्णम् ।

### १२५४. कवित्त

**Opening .** भौ जल माहि भरयो चिरजीव सदीव अतीत भव स्थिति गाठी ।  
राग-विरोध विमोह उदैव सुकर्म प्रकृति लगी अति गाठी ॥  
पेच पर्यो दिढे पुग्गल सो इह भाँति-सही बडी आपद गाठी ।  
सम्यक् ध्यान भज्यो जबहीं तबही सवकर्मनि की जडकाठी ॥

**Closing .** कहै वेदवके कहँ आप सुनि वेके कहँ आप जो जायकै  
कहँ इष्ट कह मित्र है ।  
कहँ जोग विधि जोगी, कहँ राज रस भोगी कहँ वैद कहँ रोगी  
कह कटक कहे मिष्ट है ।  
कह लता के छाया कह फूल के फूल्यो कह भीर कै भल्यो कह  
रूपके दिखाए है ।

- सकल निवासी अविनासी-सर्वभूत वासी गुपत प्रगासी आप  
-सिख आप सिष्ट है ।

**Colophon .** इति कवित्त ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Rasa-Chanda-Alaṅkāra-kāvya )

१२५५ कृष्णपचीसी

Opening : एक समदेहरा मैं पचनव जुरे हुते भय इनवात जिहां जातकी  
चलाई है ।  
चालो भले गिरिनारि नेमनाथ परिस्येवेको जनम सफल तिहा  
कोति बढाई है ॥  
तहां एक बैठी हुनी किरपण पुरिपनार उने सुनी बात आनि घर मे  
चलाई है ।  
मुनि हो पियारे पिउ जोयारे आवै जिनु हम नुमे दोउ बोलो  
बली बन आई है ॥१॥

Closing : कहे लालचिनोदी भव सुनो धन पाय जस लीजिये ।  
करिजाज प्रतिष्ठा जग्य जिनसुदान मुपात्रा दीजिये ॥

Colophon : इति श्री कृष्णपचीसी समाप्तम् ।

१२५६ मालपचीसी

Opening : सुरलोकासमुतीर्थ्या सौधर्मण निमिता ।  
माघे चैत्रे बृहद्द्वारे भव्यमाला प्रतिष्ठिते ॥१॥  
C.osing : माला श्री जिनराज की पावै पुन्य मजोग ।  
जम प्रगटै कीरति बढै धन्य कहै सब लोग ॥३६॥  
Colophon : इति मालपचीसी ।

१२५७. नाममाला

Opening : त नमामि पर परमगुरु कृष्ण कवल दल नैन ।  
जग कारन करुना निघे गोकुल जाकी अन ॥१॥  
Closing : जमल जुगल जुग द्व द्व है, उमय मिथुन विविधीय ।  
जुगल किसोर सदा वनी, नददास के हीय ॥२५६॥

**Colophon :** इति श्री नददासेन कृता मानमजरी नाममाला सपूर्णम् । शुभम्  
अस्त । पाठकस्य शुभ भूयात् । सवत् १८०६ । शाके १६७१ ॥  
पौष वदि अष्टमी गुरुवासरे पुरैनिआ नगरे फतेहपुर ग्रामे श्री  
खेदु पाण्डेय पुस्तकमिद लेखि ।

१२५८. नवरत्न-कवित्त

**Opening :** धन्वतरि छिपनकअमरघटकर्पवेताल ।  
वररुचि-सकु-वराहमिहरकालिदासनवलाल ॥१॥  
**Closing :** कुलवत पुरुष कुलविधि तजै वधु न मानै बन्धु हित ।  
सन्यास करिधन सग्रहै ए जग मे मूरख विदित ॥

**Co'ophon :** इति नवरत्न कवित्त समाप्त ।

१२५९. नेमिचन्द्रिका

**Opening** अस्पष्ट ।

**Closing :** अस्पष्ट ।

**विशेष—** यह ग्रंथ एक गुटका है, जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के  
कुछ पत्र पढ़े जा सकते हैं ।

१२६०. नेमिचन्द्रिका

**Opening :** आदिचरण हिरदै धरौ, अजित चरणचित लाइ ।

सभव सुरत लगाइकै अभिनदन मनु लाइ ॥१॥

**Closing :** ती होई ब्याह को साज काज बहुविधि सो कीन्हो ।

देस देस प्रति नृपति सबनि को " " ॥

**Colophon :** अनुपलब्ध ।

१२६१. नेमिचन्द्रिका

**Opening :** देखें, क्र० १२६० ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Rasa-Chanda-Alaṅkāra-kāvya )

- Closing : नेम चद्रिका जे पढै जाको पुन्य प्रकाश ।  
आसकरन लघु वीनवै जिनवानी की दास ॥२१६॥
- Colophon : इति नेमचद्रिका संपूरन ।

१२६२. नेमिनाथ वारहमासा

- Opening : देखें, क्र० १२३२ ।
- Closing : देखें, क्र० १२३२ ।
- Colophon : इति श्री नेमनाथ राजनमती का वारहमास प्रतीकुनर संपूर्णम् ।  
देखें, रा० सू० II, पृ०

१२६३ नेमिनाथ विवाह

- Opening : एक समै जो समुद्र विजै द्वारका मह नेम को व्याह रचो है ।  
गावत मगलचार बधू कुल मे सपके जो उछाह मचो है ।  
तेल चढावन को युवति अपने अपने कर थाल सच्यो है ।  
नेग करे सब व्याहन को घर मडप चित्र विचित्र खिको है ।
- Closing : नेम कुमार ने जोग लियो दिन छप्पन लो छदमस्त रह्यो है ।  
केवलज्ञान भयो प्रभु की तब आठविभु तम दान मही है ।  
आत सै वर्ष विहार कियो उपदेशते धर्म महा मही है ।  
निर्वाण गये गुनि पाँच सै छप्पन लाल विनोदिक ने सग गही है ।
- Colophon : इति श्री नेमिनाथ का व्याहृता समाप्तम् ।  
देखें रा सू० III, पृ० ८४ ।

१२६४. नेमिनाथ विवाह

- Opening : देखें, क्र० १२६३ ।
- Closing : देखें, क्र० १२६३ ।
- Colophon : इति श्री नेमनाथ का व्याहृता सम्पूर्णम् ।

## १२६५. नेमिनाथ विवाह

- Opening : देखे, क्र० १२६३ ।  
 Closing : देखें, क्र० १२६३ ।  
 Colophon : इति श्री नेमनाथ का व्याहृता समाप्त ।

## १२६६. पखवारा

- Opening : पडिवा पथम कला घटि जागी परम प्रतीत रोग रस पागी ।  
 प्रति प्रतिपदा प्रीत उपजावै बहै प्रतिपदा नाम कहावै ॥१॥  
 Closing : पून्यौ पूरण ब्रह्म विलासी पूरण गुण पूरण परगासी ।  
 पूरण प्रभुता पूरण वासी कहै जती तुलसी वनवासी ॥  
 Colophon : इति पखवाराजी समाप्तम् ।

## १२६७. परमार्थजकडी

- Opening : अरहत चरन चित त्यावो, फुनि सिद्ध सिव कर ध्यावो ।  
 बंदौ जिन मुद्राधारी निर्ग्रंथ जती अविकारी ॥१॥  
 Closing : न अघाय यौ हीरमै निस दिन ए कछि नहूँ ना चुके ।  
 नहि रहै वरज्यो वरजदेख्यो बार बार तहाँ धुके ।  
 श्री जिन सिद्धान्त सरोज सु दर ताहिं मध्य लगाईए ।  
 रामकृष्ण इलाज याकी कीए एही सुख पाईए ॥८॥  
 Colophon : इति श्री रामकृत जषरी सपूर्णम् ।

देखे, रा० सू III, पृ० १३७ ।

## १२६८. पिगल

- Opening : मुरलीधर श्रीधर सुकवि मानि महामन मोद ।  
 कवि विनोद मो यह कियो उत्तम छंद विनोद ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Rasa-Chanda-Alaṅkāra kāvya )

**Closing :** रूपक घनाक्षरी मे गुर लघु नियमन वतिस वरन वर रचिये चरन  
चारि ।  
कीजै विसरामतित आठ आठ अक्षर पै अत एक लघु नौ नियम  
करि करि धारि ।  
या विधि सरस भाग गुण गुरु सेसनाग कीनो कविराजनि के  
काज बुद्धि कै विचारी ॥  
भापा सिधु तरिवेको आधे छद करिवेको पिंगल वनायो पढियै  
से सुद्व कै सुनि ।

**Colophon :** इति श्री कवि विनोद मुरलीधर श्रीधर कृतौ वर्णवृत्त परिच्छेदो-  
नाम षोडसमो विनोद ।

**दोहा—** वीरगा पत्या पत्य रस रस वसु ससिवामक ।  
सुभ भद्रा सित पक्ष दिण अगारक मतिवक ॥१॥  
**अपर च —** तिथितनिदुभ पुनर्वसुवेला लाभ विराजु ।  
राम सहाय लिखितमिद पिंगलग्रथ सुभाजु ॥२॥  
इति श्री पिंगल समाप्तम् । शुभम् अस्तु ।

### १२६६. राजुल-पचीसी

**Openning :** प्रथम सुमरी अरिहत देव ... सौ विनती करी ॥

**Closing :** यह लाल विनोदी गावै सुनत सब जन गहवरे  
राजुलपति श्री नेमि जिन सब सघ की मंगल करे ॥२६॥

**Colophon :** इति श्री राजुल पचीसी जी समाप्तम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० ८५, १३१, १४६ ।

### १२७० राजुल-पचीसी

**Opening :** देखें, क्र० १२६६ ।

**Closing** देखे, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति राजुल पचीसी संपूरन ।

### १२७१. राजुल-पचीसी

Opening : सुनु भविजन हो प्रथम ही प्रथम जिनेन्द्र चरन चित ल्याइए ।  
सुनु भविजन हो सारद गुरु हि मनाइ जादो राय गाईए ॥१॥

Closing : गावै विनोदीलाल हरषित भविक जनन सुनावई ।  
और गावै नर नारी सोड अमर पद पावई ॥२५॥

Colophon इति राजुल पचीसी संपूर्णम् ।

### १२७२. राजुलपचीसी

Opening देखें, क्र० १२६६ ।

Closing देखें, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति श्री राजुल पचीसी समाप्तम् ।

### १२७३ राजुलपचीसी

Opening : वशी वे प्रथमही --- राजमति जस गाई सो जीवै ॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : इति संपूर्णम् ।

### १२७४. रिस्ता

Opening : कीऐ श्रीनायक तीनी हिए व्यापत है ।

तिहारे दर्शन ..... पाप नासत है ॥

Closing : गहे जिननाथ को --- जागे है ॥

Colophon इति रेषता समाप्त ।





**Colophon :** इति श्री पाण्डे रूपचन्द्र शतक समाप्तम् ।

१२७८. सतसइया

**Opening** श्री गुरनाथ प्रसादत होय मनोरथ सिद्ध ॥

— — ज्यों तरु वेलि दल फूल फलन की वृद्धि ॥

**Closing :** आई अवधि विवेक की देखी कोन अनपाय ॥

वाग कनक कै पीतरै हम अनादर भाय ॥

**Colophon** इति श्री वृन्दावन जी कृत सतसइया चैत्र शुक्ल १५ सवत् १९५३  
गुरुवार आठ वजे रात्रि को आरामपुर मे वावू अजित दास के  
पुत्र हरीदास ने लिखकर पूर्ण किया ।

**विशेष--** डा० नेमिचन्द्र शास्त्री वृत्त तीर्थङ्कर महावीर और उनकी  
आचार्य परम्परा नामक पुस्तक मे वृन्दावन की प्रवचनसार,  
तीस चौबीसी पाठ, चौबीसी पाठ, छन्दशतक, अहंत्पाशाकेवली  
वृन्दावनविलास आदी ग्रन्थो का उल्लेख है लेकिन सतसइया का  
कोई उल्लेख नहीं है ।

१२७९. समकिताधिकार

**Opening :** श्री ॐकार हियइ धरी लहि सरसति सुपसाय ।

समकित गुण फल वर्णउ इह पर भवि सुखदाय ॥१॥

**Closing :** विजय दशमी श्री झूठापुर वर सध सुकल सुखदाई जी ।

वाचक मानव दइ सुखदायक सुणता लील वधाई जी ॥

**Colophon :** इति समकिताधिकार श्री अरहदास सबन्ध. । सवत् १७०२ वर्ष  
भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे दशम्या दिन गुरुवार लिखित श्री काला  
कुन्है ग्रामे । शुभ भवतु न सदा श्री । श्री ।

१२८०. सम्मेदशिखर माहात्म्य

**Opening :** श्री जिनवर के पूजोपद सरस्वति सीस नवाय ।

गनधर मुनि के चरन नमि भाषा कहो बनाय ॥६॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Risa-Chanda-Alaṅkāra Kāvya )

- Closing : व्यालीन मुनी अनागार । मुक्त गये जग के आधार ॥  
पाहि कूट को हरम न करे । कोट उपवास तनो फनभरे ॥
- Colophon . अनूपलब्ध ।

१२८१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

- Opening . देखे क्र० १२८२ ।
- Closing . गमोमग्ण मैं जायकं वदे वीर जिनेन्द्र ।  
अहो नात्र तुम दरसन नें कटै गरम के फद ॥८४
- Colophon : नहीं है ।

१२८२. सम्मेदशिखर माहात्म्य

- Opening : श्री नमोवित चरण कमल जुग सब सुख लाइक ।  
श्री निवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनाइक ।  
अनमित सुख उद्योत कर्म वैरी धनधाइक ।  
ज्ञान भान परगाम पद सब सुखदाइक ।  
ऐसै महत अरिहत जिनन्द निमि दिन भावसौ ।  
पात्री प्रमाण अविचल सदन वीतराग गुन चावसौ ॥१॥
- Closing : बीस हजार वरप वीतत मानसीक तह असन करत ।  
दम दुनि पखवारे गए परिमल सहि - ... ॥
- Colophon : Missing.

१२८३. शिखरमाहात्म्य

- Opening : पचगुरु को नमो दोकर सीसनवाय ।  
श्री जिन भाषित भारती ताको लागो पाय ॥१॥

**Closing**

रेवा महर मनोग वमै श्रावग भव्य सव ।

आदित्य ऐश्वर्ययोग तृतीय पहर पूरण भयो ॥३७॥

**Colophon**

इति श्री सम्मेद शिखरमाहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक  
श्री जगत्कीर्ति तच्छिष्य लालचद विरचिते सुवखरकूटवर्णनो  
नाम एकविंशतिम सर्गः समाप्त । सम्पूर्णमिति ।

दोहे —

सम्बत् अष्टादश शतक वानवे अधिक सुजान ।

फाल्गुन कृष्ण अष्टमी बुधे पूरण भये गुणखान ॥ ॥

रघुनाथ दूज के लिखे भव्यन के धर्म काम ।

वाचै सुनै मदर्दहै पावै सर्व सुब्रधाम ॥

## १२८४ शिखरमाहात्म्य

**Opening :**

अजिननाथ सिद्धवर कूट । अस्सी कोडि एक अरब चौवन लाख  
मुनि सिद्ध भयै बत्तीस कोटि उपास का फल इम कूट के दर्शन  
का फल है ।

**Closing**

पार्श्वनाथ सुवर्णमद्रकूट । सम्मेदशिखर सुवर्ण कूट ते पार्श्वनाथ  
जिनेन्द्रादि मुनि एक करोड चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ  
ब्यालीस मुनि सिद्ध भये इस कूट के दर्शन ते सोरा करोड  
उपास का फल है ।

**Colophon :**

अनुपलब्ध ।

## १२८५ सोलहकारणरासा

**Opening :**

वीर जिनेस्वर नमसकरो ... .. जहाँ हेमप्रभ धन यसा ॥१॥

**Closing :**

सकलकिरत ए रासा कीयी ए सोलह कारण ।

पढै गुणै जे सभलै तिण शिव सुहकारण ॥७॥

**Colophon :**

इति सोलहकारण रासा जी समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Rasa-Chanda-Alaṅkāra-Kāvya )

१२८६ श्रुतपचमीरासा

- Opening : वरत अठाई जे करै ते पावै भवपार प्राणी ।  
जबूद्वीप सुहामणो लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥
- Closing : नरनारी जे रास सुनै, मन वच रुचि गावहि ।  
सुख मपति आणद लहै, वल्लित फल पावहि ॥१०१॥
- Colophon : इति श्रुतपचमी रासा ।

विशेष—इमके साथ अठाई रासा भी है ।

देखे, जौ० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५१६ ।

१२८७. श्रीपालदर्शन

- Opening : ॐ नम सिद्धे मनघर सत उदघाटे जुग पाट तुरन्त ।  
उघटवार भरम भजि गयो पुण्य फलै दरसन तुम भयो ॥१॥
- Closing : विनुथुलै सोहै प्रतिबिंब भवि जन प्रीति वाढै अनद ।  
अजघना . . . . . ।
- Colophon : अनुपलब्ध ।

देखे, रा० सू० III, पृ० १४३ ।

१२८८. सुभाषितावली

- Opening : पारात्सार प्रवक्ष्यामि कथित ग्रन्थकोटिभि ।  
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥१॥
- Closing : मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोण्ठवत् ।  
आत्मवत् सर्वभूतेषु पडित तद्विदो विदुः ॥
- Colophon : नही है ।

## १२८६. बाहुवलि

Opening : दोऊ सूर महासुभट भरतबाहुवल वीर ।  
अति साज चले रण लखिकौ अतिधीर ॥

Closing : सत्रे सै चलहोत्तरै भादौ सुदि सुमवार ।  
सुकल पक्ष तेरस भनी गावै मगल च्यार ।

Colophon : इति श्री भरत बाहुवलि भाषा समाप्तम् ।

## १२९० विवेक-जकड़ी

Opening : चेतन तेरो वानौ चेतन दानौ चेतन तेरी जाति वेवेही  
हातै मति खोई जाति विगोई रह्यो प्रमादनि भाति वेवेहा ॥

Closing : कु दकु द आचारज गुरुवयणहि मूरख पिनन सभालै ।  
आपन औगुण सहज सुनिर्मल जो जिनदास सुपालै ॥

Colophon : इति विवेक जकरी ।

## १२९१. व्यवहारपचीसी

Opening : सम्यग् पदधारी तीनलोक अधिकारी क्रोध लोभ परिहारि असौ  
महाराज है ।  
सबकौ समान गिना राग दोष भाव बिना नाही पास तिना सक-  
सौ को सिरताज है ।  
ताही को वपान्यौ धर्म सोई साच सोई परम और को कह्यो  
अधर्म झूठ को समाज है ।  
सिवपुर वाट के बटाउनि को सबल है सुख को दिवैयो महाकाज  
माहि नाज है ॥१॥

Closing : चाहत धन सतान आनताहि बहे है ॥२६॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Mantra, Karmakānda )

Colophon : इति श्री व्यवहार पचीसी समाप्तम् ।

१२६२. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : इत्थं यथा तव विभूतिरभुजिनेद्र घर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।  
यादृक् प्रभादिनकृत. प्रहतान्धकार तादृक्कुतोग्रहणस्य विकाश-  
नोपि ॥ ॥

Closing : श्री भक्तामरजी की महिमा बहुत भारी है भारी जानना यामे  
जेति सिद्धि अरु मंत्र है सो सपूर्ण सिद्धि मंत्र उपकार के वास्ते  
एक एक काव्य के एक-एक मंत्र का थोड़ा-थोड़ा फल विध सुधा  
लिखा ऐसा जानना ।

Colophon : इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मान-  
तु गाचार्य विरचित समाप्त ।

१२६३. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रमाणामुद्योतक दलितपापतमोवितानम् ।  
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुग युगादा वालवन भवजले पतिता  
जनानाम् ।

Closing : ऋद्धि मंत्र जपिवा यत्र पूजनात् अष्टोत्तरशत जाप्य नित्य कीजै  
दिन ४६ सर्व वस होवे जिसकी नामचितै सो वस होवै व्रत  
कीजै ॥४८॥

Colophon : कुछ नहीं है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५५५ ।

१२६४ चौबीस-तीर्थकर-मंत्र

Opening : ॐ ह्री श्री चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे फुट विचक्राउरुभेईमवा सर्व-  
शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

**Closing :** अमोघ लक्ष्मी मिले ताज संग्राम व्यापार सर्वत्र जय होय  
तथा वार ७ नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्धि होय ॥

**Colophon :** इति मन्त्र सम्पूर्णम् ।

### १२६५. गायत्रीमन्त्र

**Opening :** ॐ भूर्भुवः स्व तत् सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमही धियो यो नः  
प्रचोदयात् ।

**Closing :** भूतप्राणानाम प्रवर्तकेन तीर्थङ्करदेवेन वृषभसेनादिगौतमाते  
गणेशमहर्षिणा गायत्रीछन्दसा गायत्रीसमाख्यनाम्नेन दिव्यमन्त्रेण  
त आदि ब्रह्माण तुष्टु दुरितिसंक्षेपेण ननु निरूपित

**Colophon :** इति गायत्रीव्याख्या सम्पूर्णम् ।

### १२६६ घटाकर्णमन्त्र

**Opening :** ॐ घटाकर्णो महावीर सर्वव्याधिविनाशका ।

विस्फोटकभयं प्राप्ति रक्ष रक्ष महाबलः ॥१॥

**Closing :** न काले मरणं तस्य न च सर्पेण डस्यते ।

अग्नि चौरभयं नास्ति ॐ ह्रीं श्रीं घटाकर्णो नमोऽस्तुते ॥४॥

**Colophon :** इति घटाकर्ण मन्त्र ।

देखें, जे० सि० भ० प्र० १, क्र० ५६५ ।

### १२६७. घंकाकर्णमन्त्र

**Opening** देखें, क्र० १२६६ ।

**Closing :** देखें क्र० १२६६ ।

**Colophon** इति घंकाकर्ण मन्त्र ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Mantra, Karmakānda )

१२६८. होमविधि

Opening	श्री शातिनाथममरामुरमर्त्यनाथ भाम्बति किरीटमणिदीधिति पादपद्मम् । त्रैलोक्यशातिकरण प्रणवं प्रणम्य होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुक्षपामि ॥
Closing :	शातिनाथ नमस्कृत्य सर्वविघ्नोपशान्तये । सर्वभव्योपशान्त्यर्थं होमायमुच्यते ॥
Colophon :	इति होमविधान सम्पूर्णम् ।

१२६९. जैनगायत्री

Opening :	अनादिनिघ्न मत्र पचत्रिंशत् तदक्षरम् । पचाक्षरमिति ब्रूयात् चतुर्दशमथापि च ॥३॥
Closing :	अनादिनिघ्नो मत्रो गायत्रीमंत्रसयुता । नित्यं च जाप्यते योऽयं महामगलदायकम् ॥१०॥
Colophon :	इति श्री जैनगायत्री सम्पूर्णम् ।

१३००. जैनसकल्प

Opening :	ॐ यजमानाचार्यप्रभृतिभ्योजनानां न धर्मश्रावणाया- रोग्येश्चामग्निः वृद्धिरस्तु ०० — ०० ।
Closing :	०० ०० देवोह् अमुकमग्नस्य सत्यष्टोत्तरं ०० ०० ०० साभाय जपं करिष्ये ।
Colophon :	नही है ।

## १३०१. जिनेन्द्र-स्तोत्र

- Opening : ततो गघकुटीमध्ये जिनेन्द्राय हररःमयीम् ।  
पूजयामास गघाद्यैरभिषेकपुर सरम् ॥
- Closing . लक्ष्मीवानभिषेकपूर्वकमसो श्रीवज्रजघो विभुः  
द्वात्रिंशमुकुटप्रबध्महितक्षमाभृत् सह ...
- Colophon . इति स्तोत्र समाप्तम् ।

## १३०२. कामदा-यत्र

- Opening : दिवाती के रात को लिखना भोजपत्र पर अष्टगन्ध सौ  
भुजा मे बाध राखै ।
- Closing : अगर मिश्री घी इन सबकी धूप देय ।
- Colophon : लिखत मुन्नीलाल दिल्ली वाले ।

## १३०३. क्रियाकाण्डमंत्र

- Opening . ॐ भूर्भुव स्व अहं असि आउसा सम्यक्दर्शनज्ञानचारिधारिकेभ्यो  
नम । वार १०८ नित्य जपिये ।
- Closing मध्यम तर्जनीनामिका अगरीनिजीवन स्वाम ।  
अगुष्ठासो जपमाल रुचि गुणै एक बहुतास ॥
- Colophon : नहीं है ।
- विशेष — यह ग्रंथ इतना पुराना एव सडा हुआ है कि पढा नहीं जा सकता ।

## १३०४. महालक्ष्मी

- Opening : मंत्र— ॐ ऐं श्री ह्रीं श्री महालक्ष्मी सर्वमिदं कुरु कुरु  
स्वाहा ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Mantra, Karmakānda )

- Closing .** दिन २१ तक जप करना, धूप पेवना गुगुल, अगर, तगर, नाग-  
रमोथा, छरुछडीला, कचूर, गिरीदाष, वदाम छोहारा, मिश्री  
घी, का होम करना लक्ष ॥१२५०००॥ सर्वसिद्धि होय शत्रुभय  
मि टे लक्ष्मी मिले ।
- Colophon .** कुछ नहीं है ।

१३०५. मन्त्र

- Opening .** ॐ नमो वृषभनाथ मृत्युजयाय सर्वजीवशरणाय परममन्त्राय  
पुरुषाय चतुर्वेदायतताय ...  
मम सर्वं कुरु-कुरु स्वाहा ॥१॥
- Closing .** ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हसमहाहस परमहस. कोहस  
अर्हहस पक्षिमहाविपक्षि ह्रू फट् स्वाहा ।
- Colophon** इति मन्त्र सम्पूर्णम् ।

१३०६. मन्त्र

- Opening :** ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीपार्श्वनाथाय घरणेंद्रपद्मावतीसहिताय  
ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल महाग्निस्थभय-२. ॐ क्रो प्रो  
प्री प्र. ठ ठ स्वाहा ।
- Closing :** अभिपेक सुद्धि तिहका नाला तलै न्हावै-उपवास १०० एक भक्त  
करै जु पाली पाषी देय वें का हाथ को अहार लेणू  
नही ।
- Colophon :** इति सम्पूर्णम् ।

१३०७. मन्त्रसंग्रह

- Opening :** ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अमिआउमाय नम अपराजित  
मन्त्रोय विघ्न नासय नासय कुरु कुरु स्वाहा ।

**Closing :** ॐ छो छो छो छ. अस्मिन्पात्रे अवतर अवतर स्वाहाः ।  
विधि ॥ पंढा ३ ॥ वार १०८ ॥ मंत्रसो पठकी आनाही-  
बोनेता ' ' ।

**Colophon :** नहीं है ।

### १३०८ मंत्रयत्र

**Opening :** ॐ क्रो क्री क्री क्री क्री सही अमुकी नामान्याः पतत्याः सर्वत्र-  
जयसौभाग्य प्रियवल्लभत्व पतिपूजादिसौख्य ... .... ।

**Closing :** ... नीवू को चूहा के विलमे गाडिये उपर जूती तीन  
नाम लेके मारिये दिन तीन ताई जूती मारिये नाम लेता जाईये ।

**Colophon** इति मंत्र यत्र समाप्तम् ।

### १३०९. नमोकारमंत्र

**Opening :** कहा सुर तरु कहा चित्रावलि कामधेनु कहा रसकुप कहा पारस  
के पाए ते ।

कहा रसपायँ औ रसायन कमाये कहा कौन काज होते तेरो  
लक्ष्मी कै आये ते ॥

**Closing** कान्हवल धाईवेको कान्ह के कमाईवे को कान्हवल लगाइवे को  
काहु के उधार के ।

कहत विनोदीलाल जपतहो तिहुकाल मेरे है अतुलबल मंत्र नव-  
कार को ॥

**Colophon :** इति नमोकार मंत्र माहात्म्य समाप्तम् ।

### १३१० पद्मावतीदंडक

**Opening :** ॐ नमो भगवते त्रिभुवन सकरी ।  
मर्वाभरणभूषिने पद्मासने पद्मनयने ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Mantra, Karmakāṇḍa )

Closing : जूँभे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि . . . मा रक्ष पश्ये ॥८॥  
Colophon : इति पद्मावती दंडक मपूर्णम् ।

१३११. पद्मावतीकल्प

Opening . कमठोपनगंदलन त्रिभुवननाथ प्रणम्य पार्श्वजिनम् ।  
सक्येभीष्टफलवद्भैरवपद्मावतीकल्पम् ॥१॥  
Closing : अथराजिनेक या प्रभृती मोहय-मोहय स्तमिनी ... ..  
मम वश्यं कुरु-२ स्थापना ।  
Colophon : महो है ।

१३१२. पद्मावतीकल्प

Opening . ॐ अम्य श्री पद्मावती मन्त्रस्य गुरामुरविद्याघर-नागन्द्र-महाकृपि-  
पतिर्वृद्धगायत्री छंद श्री पद्मावती देवता कमलबीज वाग्भव  
शक्तिप्रणवकीलक मम धर्मार्थकाममोक्षार्थं जपे चित्तियोग ।  
Closing : जूँभे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि रमणे मर्दं मर्दं प्रमर्दं दुष्टे  
निराधिकारे नृद दह दहने हेन ... .. ह्रीं ह्रीं  
ह्रीं ह्रीं प्रमन्ने-प्रहमित वदने रक्ष मां देवि पद्मे ।  
Colophon : इति श्री पद्मावतीपटल पद्मावतीकल्प समाप्तम् ।

१३१३. पद्मावतीकवच

Opening : देखें प्र० १३१२ ।  
Closing : इदं कवचं ज्ञात्वा पद्माया रतोति यो नरः ।  
कल्पकोटि शतं नापि न भवेत्सिद्धिदायिनी ॥१८॥  
Colophon : इति पद्मावती कवचम् ।

## १३१४. पद्मावतीकवच

**Opening :** ॐ अस्य श्री पद्ममुखी पद्मावतीकवचस्तोत्रस्य श्रीरामचन्द्रकृषिकृत  
अनुष्टुप्छन्दः पद्ममुखीपद्मावती देवता ॐ अ मुनिसुव्रति इति  
बीज ॐ चिन्तामणिपार्वनाय इति शक्ति ॐ धरणेन्द्र इति  
कीलक श्री रामचन्द्र तव प्रसादसिद्धयर्थे मकललोकोपकारार्थे  
पद्ममुखीपद्मावती स्तोत्र जपे विनियोगः ।

**Closing :** नववार पठेन्नित्य राजभोग समाचरेत् दसवार पठेन्नित्य त्रैलोक्य  
ज्ञानदर्शनम् ।  
एकादश पठेन्नित्य सर्वसिद्धिर्भवेन्मर कवचास्मरणेनैव महाबल-  
ः शक्तिम् ॥

**Colophon :** इति पद्ममुखीपद्मावतीकवच संपूर्णम् ।

## १३१५. पद्मावतीकवच

**Opening :** ॐ अस्य श्री मन्त्रराजस्य परमदेवता पद्मावतीचरणवुजेश्वर्या नमः ।

**Closing** ॐ ह्री श्री पद्मावत्यै महाभैरवी नमः ।

**Colophon :** इति पद्मावतीकवच संपूर्णम् ।

## १३१६. पद्मावतीकवच

**Opening** देखें—अ० १३१४ ।

**Closing :** साक्षात् शिव पद का दाता ये इष्ट मंत्र है, निरर्थक अपने से सर्व  
मंगल होय है ।

**Colophon :** नहीं हैं ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Mantra, Karmakāṇḍa )

१३१७. पद्मावतीकवच

- Opening : देखे, क्र० १३१४ ।  
Closing : देखें, क्र० १३१४ ।  
Colophon : इति श्रीराजचन्द्रकृषिकृत पञ्चमुखीपद्मावती कवच समाप्तेम् ।

१३१८. पद्मावतीमंत्र

- Opening : ॐ नमो जिणाण ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ।  
Closing : अथवा मृ गा के जाप दे लाल वस्त्र पहेर लीजें ।  
Colophon : इति श्री पद्मावतीदेवी मन्त्र संपूर्णम् ।

१३१९. पद्मावतीमन्त्र

- Opening : ॐ आ क्रो ह्रीं क्लीं पद्मावती देवी ह्रीं क्लीं ह्रीं नमः । जाप्य  
३००००० कीजें ।  
Closing : अत्रसाहजनुजनाभवृषभ ॐ कालछया नित्यश ॥  
Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र संपूर्णम् ।

१३२०. पद्मावतीपटल

- Opening : ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथधरणेन्द्रमहिताय ॐ त्रैलोक्य  
सहारिणा वामुंडा ।  
Closing : हा ह्रीं प्लीं प्लू हा ह्रीं पद्मावती धरणी धरणीन्द्र  
भाज्ञापयति स्वाहा ।  
Colophon : इति पद्मावती पटल संपूर्णम् ।

## १३२१. पन्द्रहयत्र-विधि

**Opening :** आदितरु की चाल है भणो की घोड़े की चाल पहली सु नवको  
 द्वे में भरियै एक अकसु माड कै नव अक सु माड कै नव  
 अक लिखियै नव को द्वे मे इसकी विशेष विधि कहियै दस बार  
 लिखै तो लोक सर्वमोहित हुवै बीस वेर लिपै तो आर्पण हुवै  
 तीस बार लिखै तो पृथ्वी में जय पावै ।

**Closing :** दग्धामाषनील चैव शर्कराधृतसयुतम् ।  
 कृष्णपक्षे तु चाष्टम्या वलिं दत्त्वा मखिरकं ? ॥४३॥

## १३२२. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

**Opening :** श्रीमद्बेन्द्रवदामलमुकुटमणिज्योतिषा चक्र ।

..... पार्श्वनाथोत्र नित्यम् ॥

**Closing .** इत्थ मन्त्राक्षरोत्थं वचनमनुपम पार्श्वनाथस्य नित्यम् ।  
 " - स्तौति तस्येष्टसिद्धि ॥

**Colophon .** इति पार्श्वनाथ स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

## १३२३. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

**Opening :** ॐ नमो चण्डोग्र पार्श्वनाथ-तीर्थकराय धरणेन्द्रपदावती सहि-  
 ताय ।

**Closing .** " - धीरोपसर्गविनाशनाय हूँ फट् स्वाहा ।

**Colophon** इति चण्डोग्रपार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Mantra, Karmakāṇḍa )

१३२४. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : पार्श्वं व पातुवो नित्यं जिनः परमशकरः ।

नाथ परमशक्तिश्च शरणं सर्वं ॥

Closing त्रिसृष्वयं पठेन्नित्यं नित्यमाप्नोति सश्रियः ।

श्रीपार्श्वपरमात्मे ससेवध्वं भोबुधासुकृत् ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

१३२५. प्रातर्गायत्री

Opening पार्श्वत्युवाच देवेधिदेव देवाधिदेवदेवश परमेश्वर पुरातन  
वदुरवपरयाप्रोत्याविप्राणो मधि वदनं मदभक्तानां हितार्थाय  
वराण परमेश्वर सन्यामध्यानयुक्तं च सूर्यार्घ्यादि सुमाधन ।

Closing : इति महावाक्यं ॐ गायत्री चैकपदी द्विपदी चतुस्पद्यपदसिंह  
पद्यसं नमस्तेतुरीयाय पदाय तृतीय पददर्शिताय नमो नम एव  
चतुर्थश्रमेन गृहस्थानां प्रसंगेन प्रदर्शित ॥

Colophon : अथ प्रातर्गायत्री श्रवणे तूर्णं समाप्तम् । सवत् १८२५ कार्तिक  
मासे कृष्ण पक्षे ६ शनिवासरे पुस्तकं लिख्यते हरयस मिश्र ।  
कासि जी मे लिखी ।

१३२६. सकलीकरणविधानम्

Opening : स्नानानुस्नानशुद्धोद्धृतशितसुद्धोऽन्तरीयोत्तरीय,  
सकल्पाचम्य प्राणामिति तममृतं परिसेचनं तर्पणं च ।  
आचम्या तस्य गुद्धिं पुनरपि सततं शान्तमत्र षडांगम्,  
दिवसं जपपात्रिव रं परमजपयुक्तं स्तात्रदिक्षुरयम् ॥

Closing . ॐ णमो अरिहताण णमोसिद्धाण णमो आयरियाण ।

णमोउज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूग ।  
इति पचपद जपेत् ।

Colophon . जिनवरदासस्य पठननिमित्ते लिखित टीकारामेन आरानगर  
मध्ये शुभम्भूयान् लेखक-पाठकयो आपुरारोग्यमस्तु ।

### १३२७ सामयिकविधि

Opening . विधिपूर्वक पडिलेहुय उपगरण प्रमाजित स्थानकइ स्थापनाचार्य  
धापितई ।

Closing : ज्ञानपचमी तपग्रहण कुजमालाविधिः ॥२७॥ पोसहपडिकमणा  
वावण विधि ॥२८॥ इत्यादि ।

Colophon नही है ।

### १३२८ शान्तिनाथ-मंत्र

Opening ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्त्तये,  
ॐ नमो शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वपापप्रणाशाय - - ।

Closing : सपूर्ण जप सख्या अडतालीस लक्ष प्रमाण निष्ठा मना जपे पश्चाद्  
सपूर्ण सिद्धि स्वयमेव पावै ।

Colophon : नही है ।

### १३२९. सरस्वती-मंत्र

Opening : ॐ अर्हन्मुखकमननिवासिनी पापार्हमक्षयकरी  
... . मम विद्यासिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing ॐ ह्री श्री क्ली महालक्ष्मी नमः धारकस्य भाण्डागार ऋद्धि  
वृद्धिअनघनपूर्ण पूरय पूरय प्रताप विजयी कुरु कुरु स्वाहा ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Mantra, Karṇakāṇḍa )

जाप सवालक्ष १२५००० दशान होम पचामृत को करे तो  
प्रभाव वृद्धि होय ।

Colophon इति विजयप्रतापमत्र सम्पूर्णम् ।

१३३०. सरस्वतीमत्र

Opening ॐ ह्री श्री वाग्वादनी सरस्वती मारदा बुद्धिवर्द्धनी देवी  
कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : इति । मत्र अष्टोत्तर शत नित्य जपेत् विद्या प्रकास होइ ।

Colophon नहीं है ।

वशेष— इसमे मात्र एक ही मत्र है ।

१३३१. सरस्वतीमत्र

Opening : ॐ ह्री श्री क्ली व्ली वद वद वाग्वादिनी भगवति सरस्वति  
परमब्रह्म मुखीकृते श्रुतागिदेवि द्वादशागेयो नम । मम विद्या-  
प्रमाद कुरु तुभ्य नम ॥१॥

Closing : ॐ ह्री अर्ह णमोपादानुसारिण ॥८॥  
ॐ ह्री अर्ह णमो सभिन्न सोदराणम् ॥९॥

Colophon नहीं है ।

१३३२. सरस्वतीस्तोत्र

Opening : ॐ ऐ ह्री श्री मत्ररूपे विबुधगननुनेदेवदेवेन्द्रवद्ये ।  
.... — मनसि सदा मारदे तिष्ठदेवी ॥१॥

Closing : ॐ ह्री क्ली कू श्री ह्री रो नम लक्ष जापते सिद्धि होय ।

Colophon : इति सारदा स्तुति ।

**Colophon :** सपूर्णम् ।

### १३३४. सूतक-विधि

**Colophon :** इति श्री मृतक विधि समुच्चय सूतक विधि सपूर्णम् ।

१३३५. तत्रमत्रसंग्रह

**Closing**      ॐ ह्रीं एकमुखी रुद्राक्षस्य शिवभाङ्गागारे स्थिताय मम ईप्सित  
 पूरय पूरय श्री आकर्षय दुष्टारिष्ट निवारय निवारय ॐ ह्रीं  
 नमः पीतपुष्पैर्जपि १०००० पश्चाद् नैवेद्य दसास होम एकमु-  
 मुखी रुद्राक्षस्य ... ।

### १३३६. त्रिवर्णचिह्न मंत्र

**Opening :** ॐ हा हि ही हू हू हे हं हँ हो हू असिआउसा  
सम्यग्दर्शनज्ञानिचारित्रेभ्यो ह्री नमः ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts  
( Mantra, Karman & Jada )

Closing : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्री गुरुभ्यो नमः ।  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Colophon : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१३३७. वसुदेवादि-अभिज्ञान

Opening : नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Closing : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Colophon : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१३३८. वसुदेवादि-अभिज्ञान

Opening : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Closing : नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Colophon : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१३३९. व्रत-मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं जमिआदना दगपूषीण मिद्धि कुग कुग स्वाहा ।

Closing : यत्र नैव करीय दारुणतये दोषो यमतरय किम्,  
विदु नैव पतन्ति पातक मुगे मेघस्य किं दूषणम् ।  
नामोकाय दिपस्यते यदि दिधा सूर्यस्य किं दूषणम् ।  
यत्पत्र विधुना ललाटमिष्यते तन्मार्गंतकक्षयः ॥१॥

Colophon : श्रीरत्नमिदं शुभं भवतु ।

## १३४०. विसर्जन-मात्र

Opening : सुभ्राक्षतप्रसवमकुलरत्नदीपै मानिकप्ररत्नमयकाचनभाजनस्थै ।  
श्री ज्वालिनीचरणतामरसद्रव्याग्ने सम्भगलात्तिकमह त्ववतार-  
यामि ॥१॥

Closing : जयजय जगदवे ज्वालिनिस्त्रष्टदिवे गजगमनत्रिलंवे नागयुगेत्र-  
नितवे ।  
हतघनुजगदवे भालखण्डेन्दुदिवे नतजनुविकरवे याहिभक्तावलवे ॥

Colophon : इति विसर्जन संपूर्णम् ।

## १३४१. विवाह-विधि

Opening : या सदन गच्छेत् मङ्गले तोरणान्विते ।  
कन्याया जननी वेगादागत्य पूजयेद्दम् ॥ १॥

Closing : कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे ।  
अपाया वसुपूज्यसज्जिनपते सम्भेद ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

## १३४२. यत्रमात्रसंग्रह

Opening : गह्यहिमानम्बिपुरे मदीयनेत्रद्वे निवान कुरुत्रिष्वनेत्रे  
गृह्यस्व वलि च पूजा ।

Closing : चौदश अदीतवार के दिन मंद भांडाने मेल जैतो नदपाणी  
भवति ।

Co'ophon : इति संपूर्णम् ।

## १३४३. यत्रमात्रसंग्रह

Opening : ॐ मं म ख ख षि षि र र कां का ग्री श्रीं अमुकस्यो च्यारय-२  
मारय-मारय चूरय-चूरय बुद्धिं भृशं कुरु-२ स्वाहा । ”

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramṣa & Hindi Manuscripts  
( Ayurveda )

**Closing :** पद्मपुत्री विसहरी एक सहस्र • वार सात पठनै तमाचो  
मारी जै सर्प विष उतरै ।

**Colophon :** नही है ।

१३४४. अष्टांगहृदय

**Opening :** इति छम्माद्गुराश्रेयादयो महर्षयः  
जातमात्र यिशाध्यो त्वास्वालसंघसंपिदा ।  
प्रमृतिश्लोशित चानुबला तैलेन सेचयेत्  
अश्मनोर्वादिन चास्य कर्णमूले समाचरेत् ॥

**Closing :** चिकित्सिनं हिन पथ्य प्रायश्चित्तं भिषज्जितम् ।  
भेषजं शमनं शस्तं पर्यायं स्मृतमौषधम् ॥

**Colophon :** इति चिकित्सि-नते द्वाविंशोऽध्यायः । इति वाग्भट्टविरचितायां  
अष्टांगहृदयमहिताया चिकित्साम्थानं चतुर्थं समाप्तम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० २४६ ।

जि० २० को०, पृ० १६ ।

१३४५ चिकित्सांगोस्त्र

**Opening :** रज्ज्वा होनी पुड्गार्कइ लीजइ । दूधमू पीजइ सर्वगोग जाइ ॥१॥

**Closing :** बिन्दु आठ कड द्रोण प्रमाण, दुई द्रौणे इक सूर्य की मान ।  
दोई सूर्य की द्रोणी इक लाखी, बिन्दु द्रोणी इक खारी दाखी ॥

**Colophon** महीं है ।

**विशेष—** इसकी लिपि भिन्न २ लोगो द्वारा लिखी गई है जिससे यह संग्रह  
अथ मालूम पड़ता है ।

## १३४६ चिकित्सासार

- Opening :** च्यारिटाकनि लोफर ल्याइ । तीनि पाव जल मै औटाइ ॥  
 अरध रहे जल से छिनवाइ । खाड टाक चालीस मिलाइ ॥  
 ताको नरम विमाम बनाइ । घोट डडसो सीसे पाइ ॥  
 दसरती ली लोफर नित । हर सिर पीर कास ज्वरपित ॥
- Closing ,** सास की दवा—धतूरा पचाग कूट के चिलम मै पीवै हुकै की  
 तरह सै सास जाय हुचकी जाय, पेट दरद जाय ।
- Co'ophon :** नहीं है ।

## १३४७ ज्वरहर-यंत्र

- Opening** ज्वरेत्यादिना केवल ज्वरकृतदाहमेव नोपशामयति कित्वपरा । १।
- Closing .** इदं ज्वरहर यत्र मया प्रोक्ता तवानघे ।  
 उपकाराय लोकानां साधूनां च हिताय वै ।  
 गोप्यं त्वया सदा भद्रे साधुभ्या नैव गोपयेत् ॥२२४॥
- Co'ophon :** इति ।

## १३४८ कुट्टककरण छाया व्यवहार

- Opening :** भाज्यो '... दुष्टमुच्छिष्टमेव ॥१॥
- Closing :** शुद्धिजीजाती गुणएवराशित्वेनांगीकृतः ॥१४॥  
 पचगुणी ॥७०॥ हर ॥६३॥ हृत्तशेष ॥१४॥ दशगुणे  
 ॥१४०॥ हर ॥६३॥ हृत्तशेष ॥१४॥ एव बहुत्वे गुणनामैक्य  
 भाज्य अजाणामैक्यमग्नं प्रकल्प्यसाध्यम् ॥
- Colophon :** इति भास्कराचार्यं विरचितोलीलावायां कुट्टकाध्याय समाप्ता ॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Ayurveda )

१३४६. मदनविनोद निघट्ट

- Opening :** बीज श्रुतीना सुधन मुनीना बीज जडाना महदादिकानाम् ।  
आग्नेयमस्त्र भवपातकाना किञ्चिन्महश्यामलमाश्रयामि ॥१॥
- Glosing :** .... यो राजा मुखतिलक कट्टारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण  
निमित्ते च ग्रथेन्मदनविनोदनाम्नि सपूर्णो ~ प० गुणग-  
णमिश्रकोऽय ॥
- Colophon** इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघट्टी मिश्रपवर्गस्त्र-  
योदश ॥१३॥ इति मदनविनोदे निघट्टी समाप्तम् ।  
संवत् १६१२ का० सु० लिखापिन श्री मानसिध जी ---  
पठनार्थं लिख्योस्यो लालखाजादन ॥

१३५० नाडीप्रकाश

- Opening .** नाडी तीन प्रकार के है । इगला चद्रमा है सो बाया है । गिगला  
सूर्य है सो दाहिना है । दोनो चले सो सुख मन है । कृष्ण  
पक्ष सूर्य का है । शुक्ल पक्ष चद्रमा का है ।
- Closing :** दो नव भृकुटी श्वेत श्रवन पांच तारका जान ।  
तीन नाक जीह्वा एके का सभेद पहचान ॥
- Colophon :** अनुपलब्ध ।

१३५१. निदान

- Opening** प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारकम् ।  
स्वर्गापवर्गायोद्धारे त्रैलोक्ये शरण शिवम् ॥१॥
- Closing** ग्रहणा समघातु सनग्निश्च समदोरमलक्रिय.  
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मना स्वस्थामित्यभिधीयते ॥

**Colophon :** इति निदान ग्रं समाप्त । शुभमस्तु । सन् २७५६ ।  
**विशेष—** यह ग्रंथ माधव निदान मालूम होता है, जिसके लेखक माधवा-  
 चार्य हैं ।

देखे, दि० जि० ग्र० २०, पृ० ११८ ।

### १३५२ पंचदशविधान

**Opening :** अथात सप्रवक्षामि सुन्दरीयत्रमुत्तमम् ।  
 तदक तु प्रवक्षामि शृणु यत्नेन साम्प्रतम् ॥१॥  
**Closing :** इतरीयुगन करके मो राजा-प्रजा सर्वसकारी सिद्ध होय ।  
**Colophon :** नहीं है ।

### १३५३. रामविनोद

**Opening :** सिद्धि वृद्धि दायक सकल गवरि पुत्र गणेश ।  
 विघ्न विनाशन सुखकरन हरखाधारि प्रणमेश ॥  
**Closing :** द्रोनि मनक को चार - - राम विनोदी विनोद सौ ॥  
**Colophon** इति श्री रामविनोद भाषा समाप्तम् । सन् १६०६ माघोनमे  
 मासे वैशाखमासे शुक्लपक्षे द्वितीयाया वार भीमवारे का लिखि के  
 सपूर्ण भई मितन्त गोती सघई लाला छेदीलाल तस्य पुत्र उजागर  
 लाल तस्य पुत्र जेठे रतनलाल लघुपुत्र बदलीदास ने पोथी लिखी  
 पठनार्थ अपने हित हेतवे वस अग्रवाल का है ।  
 यादृश पुस्तक - - दीयते ॥१॥  
 जल रक्षेत् - - पुस्तकम् ॥२॥

### १३५४. रूपमगल

**Opening :** जमालगोटा अर मिरच वरावरी आदी का रस में गोली करे  
 मिरच प्रमाण सध्या प्रातः खाय ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Ayurveda )

Closing नित्यज्वरवालानै दीजै पाडी का मूत्रसू ने जरावा नाने दीजै निब-  
कार ससू चोयावालाने दीजै इति सर्वज्वर जाय ।

Colophon : इति मगलरूप सपूर्णम् । शुभ भूयात् ।

१३५५ शारदा-तिलक सटीक

Opening : श्री तीर्थेश जिनाधीश केवलज्ञानभास्करम् ।  
प्रणम्याभ्युदये ध्यात्वा वक्षे मूत्रपरीक्षणम् ॥१॥

Closing : पानट २ सुपेदकथट २ अफीमट १ इकत्र कर गोली करनी मासे  
१ प्रमाण तदलोदकेन समाप अतिसार जाहि ।

Colophon इति श्री शारदातिलक ग्रन्थ समाप्तम् । लिखितमिद नित्या-  
नन्द्रेन नारनौल मध्ये लिखायत् पंडितजी श्री चेतनदास जी-  
कस्मिन्सम्बत्सरे सवत् १६७६ का० वर्षे कार्तिक शुक्ल २ गुरुवा-  
सरे अलिखदिद पुस्तक यथा स्यात् तथा । श्रीरस्तु

१३५६ शारंगधर सहिता

Opening : श्रिय सदद्याद्भवता पुरारिर्यदंगतेज प्रसरे भवानी ।  
विराजते निर्मलचन्द्रिकाया महौषधीव ज्वलिता हिमाद्री ॥१॥

Closing : विविभगदार्ति दरिद्रया ? नाशन याहग्निमपि चकार वियोगरत्नैः ।  
विलसतु शारंगधरस्य सहिता सा कविहृदयेषु सरोजनिर्मलेषु ॥

Colophon : इति श्री दामोदरसूनुना शारङ्गधरेण विरचिताया सहिताया  
चिकित्सास्थाने नेत्रप्रसादनकर्मविधिरध्याय समाप्तोयमुत्तर खड्ग

१३५७ वैद्यभूषण

Opening : सिव सुत पद प्रणमित सदा रिद्ध सिद्ध नित देइ ।  
कुमनि जिनासन मुमनक मसन नुदन कण्डे ॥

**Closing :** वैद्य ग्रथ प्रमाग सब ढूढ लिया तस लोक ।  
छह से सही सब जरा का आधार ॥

**Colophon :** इति श्री केशवदासपुत्रेण नयनसुखेन विरचिते वैद्यमहोत्सवे स्त्री  
पुरुष रोग चिकित्सा सप्तम समुद्देश समाप्ता । सवत् १७६६  
वर्षे मिती आषाढ सुदि १५ मंगलवार लिखित पूज्य स्थविर जी  
ऋषि श्री गणेश जी तत्पुत्रिणी लिखित आर्यापुम्यालो शुभ  
भवति ।

### १३५८. वैद्यमनोत्सव

**Open'ng :** प्रणम्य नित्य शिवसूनुमृद्धिद सिद्धि ददातिवितथानि धिय ।  
कुबुद्धिनाश सुमति करोति मुद तथा मंगलमेव कुर्यात् ॥१॥

**Closing :** चतुर्भिराटकै द्रोण कलसोप्यत्वणोमतः ।  
उन्मनश्च घटोराशि द्रोणपर्यायवाचक ॥६॥

**Colophon :** इति परिभाषा । इति श्री वैद्यमनोत्सव मन्मिभ्रविरचित वैद्य-  
मनोत्सव सपूर्णम् । सवत् १६७६ मिति पौष कृष्ण सप्तम्या  
गुरुवासरे नारनौलमध्ये कायस्थपुरे लिखितमिद पुस्तक नित्यानद  
ब्राह्मणेन लिखायत पडित श्री चेतनदास जी । श्रीरस्तु ।

### १३५९ योगचिन्तामणि

**Opening :** यत्र विनासमायाति तेजासि च तमासि च ।  
महीयस्तदय वदे चित्तानदभयमहम् ॥

**Closing :** यथा योगप्रदीपोस्ति पूर्वं योगशत यथा ।  
तथैवाय विजयता योगचिन्तामणिश्चिरम् ॥

**Colophon :** इति श्रीमन्नागपूरीयतपोगणनाथक श्रीहर्षकीर्तिसूरि सकलिते  
वैद्यकसारो श्रीयोगचिन्तामणी मार मग्रहे मित्रिकाध्याया मानमा

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

समाप्ता । इति श्री योगचिन्तामणि शास्त्र समाप्ता ।

सूत्रार्थ मिलिनेन ग्रथमान ६५०० सवत् रामगणोदघित् प्रमिते  
सवत् १७६४ वर्षे मार्गशीर्षमासे कृष्णपक्षे तिथी एकादश्या  
सोमवारे लिखितम् । पूज्य श्री ऋशि स्थिवीरजी श्रीगणेश  
जी पूज्य आर्या जी श्री राजो जी लिखितम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५६६ ।

### १३६० यूनानी चिकित्सा

Opennig विघ्न विघ्न) विनासन देवकू, प्रथम कर परनाम ॥१॥

C'osing हस्ताल ३ अरद ८ दिरम मुर्ष ८ दिरम, करुस्वाई ८ दिरम माजू  
२० दिरम, जगार ४ दिरम, कुट ३ दिरम, फटकडी ४ दिरम,  
अकाकिया २॥ दिरम, गुलनार ३ दिरम कूट छान कै बीच  
भिरके कै गलावै २ हप्ते बीच धूप के रखै बाद कर्श करै ।

Colophon . नही है ।

### १३६१. आचार्य-भक्ति

Opening मिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धू तरुषाग्निजालबहुलविशेषान् ।  
गुप्तिभिरभिसपूर्णान् मुक्तियुत सत्यवचनलक्षितभावान् ॥

Closing : इच्छामि भक्ते आयरियभक्तिकाउस्सगोकउ तस्सालोचेउ सम्म-  
णाण सम्मदमणसम्मचरित्त जुताण, पच्चविहाचाण्ण आयरियाण  
आयाराविसुदणाणो वदेसियाण उवझायाण तिरयणगुण पालण-  
रयाण सव्वसाहूण णिच्चकाल अच्चेमि, पूज्जेमि वदामि ।  
सुगइगमण समाहिमण जिणगुणसम्पनि होउ मज्झ ॥

Colophon : इति आचार्य भक्तिः ।

देखे, जि० २० को०, पु० २५ ।

जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०१ ।

### १३६२. आदिनाथ स्तुति

Opening • जाके चरनारविंद पूजत सुरिंद इन्द्र देवन के वृंदचंद  
सोभाअतिभारी हैं ।  
कहत विनोदीलाल मन वच तिहूँ काल ऐसे नाभिनदन को  
बदना हमारी हैं ॥१॥

Closing • तुम तो जिनददेव जगते .....  
..... त्रिभुवननाथ गति मेरि यो बनाई है ॥

Colophon • इति श्री आदिनाथ स्तुति समाप्तम् ।

### १३६३ आदिनाथ आरती

Opening • आदिनाथ तुम जगताधार, भवमागर उतारन पार ।  
मैं तुम चरन कमल को दाम, आदि नाथ मेरी पूरी आस ॥१॥

Closing • तुम अनंत गुन है प्रभु कर्म पाऊ पार ।  
थोड़ी कर मानौ घरी भैंगे कहैं बखान ॥७॥

Colophon : इति श्री आदिजिन आरती समाप्तम् ।

### १३६४ आदिनाथस्तोत्र

Opening • आदिनाथ जगताथ पाश्वर्क वंदे गुणाकरम् ॥१॥

Closing • तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीविलसति लालया ।  
क्षुद्रोपद्रवभ्रतादि नश्यते व्याधिबेदना ॥७॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तोत्र सम्पूर्णम् ।  
देखे, जै० मि० भ० ग्र० I, क्र० ६४६ ।

१३६५. आदित्यनाथ-आरती

Opening : आदि जिनेश्वर महि परमेश्वर त्रिभुवनपति जिन आदिभयी ।  
नाभिराम मरुदेवी नदन नगर अयोध्या जनम लीयी ॥  
Closing : जो जिनवर ध्यावै भावना भावै मन वच काया भाव धरे ।  
पाप निकदने भवय भजन मुक्तिवरागगा मो वरण ॥२२॥  
Colophon : इति श्री आदिनाथ जी की आरती समाप्तम् ।

१३६६. अम्बिकादेवीस्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं जय जय परमेश्वरी अविके अभ्रह्मस्तेमहामिह्यानस्थिते  
सर्वलक्षणलक्षितागे जिनेन्द्रस्य भक्ते कले निस्कन्ते  
निर्मले नि प्रपचे ।  
Closing : अवेदतावलवत्ना मादृशा भवतीत्यश  
श्रीधर्मकल्पलतिके प्रसिद्धवरदेविके ॥४॥  
Colophon : इति अविकादेवी स्तोत्र सम्पूर्णम् शुभमस्तु पौषमासे शुक्लपक्षे  
तिथी ४ श्री सवत् १९५५ ।

१३६७. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धप्रियं प्रतिदिन प्रतिभासमानै ,  
जन्मप्रवधमथनै.प्रतिभासमानै ।  
श्रीनाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,  
प्रापेजनैः तनुपदवीक्षणेन ॥

Closing : तुष्टि देशनया जनस्य मनसे ..... सतामीशिता ॥

Colophon : इति श्रीदेवनद्याचार्य कृत चौबीस महाराज ..... काव्य महा-  
स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखे, जि० २० को०, पृ० १ ।

जौ० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२ ।

### १३६८. आरती

Opening : जै जै जै श्री आदिजिनेश्वर जुगला धरम निवारण जू ।  
नाभिराय मरुदेवी नन्दन ससार सागर तारण जू । जै जै ॥१॥

Closing : जे पढै पढावै मन सुद्ध ध्यावै इह आरत सू सफल भया ॥५२॥

Colophon : इति श्री निर्मल कृत आरती समाप्तम् ॥

### १३६९. आरती

Opening : अष्टदरबकरसत्र एकठा जीमना आकडी मनाहो ।  
जिन जी के चरण चढाइ श्री जिन पूजो जी भाव सौ ॥१॥

Closing : इयणर देवे णिय सूयसत्तिय जिणचउवीस विथा भत्तिया  
ए जिणवर जो अणुदिणुत्तापइ सो समारिनपछइ आवइ ॥१॥

Colophon : इति आरती सपूर्णम् ।

### १३७०. आरती

Opening : आरती श्री जिनराज तुम्हारी  
करम दलन सतन हितकारी ॥ आर० ॥  
सुर नर असुर करत तुम सेवा  
तुम हो सब देवनि के देवा ॥ ॥१॥ आर० ॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

**Closing :** छवी इग्यारह प्रतिमाधारी  
श्रावक वदित आणदकारी । ६० ।  
सातमी आरती श्री जिनवाणी  
द्यानत स्वर्ग सुगति सुखदाणी ॥४॥ ६० ॥

**Colophon** इति आरती सपूर्णम् ।

१३७१. आरती

**Opening :** आरती श्री जिनवीर की सुनि पीय श्रेणिकराई ।  
जनम जनम सुख पाइये दुरित सकल मिटि जाई ॥१॥

**Closing** जिन आरती कीजै . . गति सहित निकलक ॥

**Colophon :** इति आरती समाप्तम् ।

१३७२. आरती संग्रह

**Opening :** आरती कीजै स्वामी नेम जिनद की ।  
सब सुखदायक आनद कद की ॥ टेक ॥

**Closing :** जय-जय आरती शान तुम्हारी ।  
तोरे चरन कमल की मै जाव बलिहारी ॥

**Colophon ;** इति आरती श्री शान्तिनाथ की सम्पूर्णम् ।

१३७३. अष्टक

**Opening :** पद्मतीर्थनिम्नगादि दिव्यमोदजीवनै  
कु कुमादि गघसार चंदनादिमिश्रितै ।  
कामधेनुकल्पवृक्षचित्तरत्नयंत्रकम्  
स्वर्गमोद सत्त्वान् तै ररण तै ॥१॥

Closing : इत्थ श्रीजिनराजमार्गविदित \*\* \*\* वासर प्रत्यहम् ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३७४. भजन

Opening : सुर तरनी परिदोहि सउरे लाघेउ नरभवसा ।

आलइ जनम महारजो काई करजोरे मनमाहि विचार कि ॥१॥

Closing : आरम छाडी आतम रे, पीय सजम रस पूरि ।

सिद्ध बधू सउजिम रमउ इम दौलइ रे श्री विजई देवसूर वि ॥

॥ चेतो रे चित प्राणी ॥१५॥

Colophon : इति सज्ञाय समाप्ता ।

बडे न हुजउ गुन बिना, विरद बडाई पाई

कहत धतूरै सू कनक, गहनौ गढ्यो न जाई ॥१॥

कनक कनक तै सौगुनौ, मादकता अधिकाई

इति पाइयै बोराइ जगु उहि खाइ बोराई ॥२॥

१३७५. भजनावली

Opening : अवश्यावश्यानी त्रिजगजननी शान्तिरूपे,

तुही आधारा रासुजस तव जगमे अनूपे

नहि पारावारा गुन सुजस अरु च स्वरूपे ।

तुही कर्ता धर्ता नृपहि पहर काहि भूपे ॥१॥

Closing : पनकारनि सुखहारनि दुखदुर्गति ग्रहवरने वरना ॥

जसु की माय अजितहू कि तुहि काहि उपजन वरना ॥७३॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१३७६. भजनावली

Opening : ध्यान मे जिनके सभी आराम होना चाहिए ॥

हवस सब अब की दफा सब काम होना चाहिय ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Closing : मनमानता वरदान की दातार तु ही है :।  
तजिरी सदैव कसीस अजित को नूर ये ही है ॥  
Colophon : नहीं है ।

१३७७. भजनावली

Opening जै जै जै जिन चद वद दुख दहने वारा,  
भीर भयकर हार सार सुब सपति सारा ।  
दीनानाथ अनाथ नाथ सब जिय हितकारी.  
असरन सरन सहाय होत जन सुनन पुकारी ॥१॥  
Closing : भुजचारि उदार भडार अपार ।  
सभी सुषमार समस्त भरो वो ।  
दरसे परसे पद पक जई ।  
सुखधाम सुदाम ललाम सहो वो ॥  
Colophon : नहीं है ।

१३७८ भजनावली

Opening : करो जी मेहर जिनराज . . . ।  
Closing : अज्ञानवत अनत चेतन शुद्ध अप्पा जोवही ।  
असरान परी क्या कहूँ जी ... ॥  
Colophon : नहीं है ।

१३७९ भजन

Opening : छल सुज सम हि भाव ही कीरत को नहि अत ।  
भागी भारी भीर हरी जहाँ जहाँ सुमिरन्त ॥  
Closing : जिनराजदेव कीजिये मुझ दीन पै कहना ।  
भवि वृ द को अब दीजिये यह शील का शरणा ।

Colophon इति श्री शीलमहात्म जी भापा वृन्दावन कृत सम्पूर्ण ।  
विशेष— इममे भजन के अलावा 'सील महात्म' वृन्दावन कृत भी सकलित है ।

## १३८० भक्तामरस्तोत्र

Opening भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रमाणा-  
मुद्योतक दलितपापतमोवितानम् ।  
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगयुगादा-  
व लवन भवजले पतिता जनानाम् ॥१॥

Closing : रतोत्रश्रज तत्र जिनेन्द्रगुणैर्निबद्धा,  
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।  
घत्ते जनो य इह कठगतामजस्त्रम् ।  
त मानतु ग मवमा समुपैतिलक्ष्मी ॥४८॥

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०७ ।

## १३८१ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति भक्तामर सम्पूर्णम् ।

## १३८२. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्रीमानतु गाचार्य विरचित भक्तामरस्तवन समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१३८३ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing . देखे क्र० १३८० ।

Colophon इति श्री मानतु गाचार्य विरचित भक्तामरस्तोत्रमनाप्तम् ।

१३८४. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing देखे, क्र० १३८० ।

Colophon इति भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३८५. भक्तामरस्तोत्र

Opening . देखे, क्र० १३८० ।

Closing . देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रम् ।

१३८६ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखे, क्र० १३८० ।

Colophon इति भक्तामरस्तोत्रम् सपूर्णम् ।

१३८७ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखे—क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री भक्तामर संस्कृत जी ममाप्तम् ।

## १३८८. भक्तामरस्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १३८० ।  
 Closing : भक्तामर टीका सदा पढ़ै सुनै जो कोई ।  
 हेमराज मित्र सुख लहै तस मनवाछित होई ॥१॥  
 Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पठित श्री रगविमल लिपि-  
 कृता सम्पूर्णम् । भादौ सुदि ७ शनिवासरे । सवत् १८४६ ।

## १३८९. भक्तामरस्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १३८० ।  
 Closing : देखे, क्र० १३८० ।  
 Colophon : इति श्री भक्तामर सस्कृत जी समाप्तम् ।

## १३९०. भक्तामरस्तोत्र

- Cpening : देखे, क्र० १३८० ।  
 Closing : देखे, क्र० १३८० ।  
 Colophon : इति श्री मानतु गाचार्य विरचिते भक्तामर स्तोत्रसम्पूर्णम् ।

## १३९१. भक्तामरस्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १३८० ।  
 Closing : अस्मिन् लोके य पुरुष तां मालां कठगता अजस्र निरतरं घत्ते  
 धारयति त पुरुषं, मानतु ग इव सा लक्ष्मी समुपैति या लक्ष्मी  
 मानतु तेन प्राप्ता सा लभते ।  
 Cloophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य पठित शिवचन्द्ररचित बालावबोध  
 टीका समाप्ता ।  
 मिति फाल्गुन-शुक्लादारभ्य चैत्रकृष्ण द्वितीयाया पठित शिव-  
 चद्रेण कृता इय सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१३६२. भवतामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६० ।  
Closing : देखें, क्र० १३६० ।  
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रं समाप्तम् ।

१३६३. भवतामरस्तोत्र

O. ening : देखें, क्र० १३६० ।  
Closing : देखें, क्र० १३६० ।  
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रं संहृतं श्रीमान्तु गाचार्यं कृतं सम्पूर्णम् ।

१३६४ भवतामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६५ ।  
Closing : देखें, क्र० १३६५ ।  
Colophon : इति श्री भाषा भवतामर जी समाप्तम् ।

१३६५. भवतामरस्तोत्र

Opening : आदि पुरुष आदीम जिन, आदि सुविधि करतार  
घरमधुरघर परम गुरु नमो आदि अवतार ॥१॥  
Closing : भाषा भवतामर कियो हेमराज हित हेत  
जे नर पढै सुभाव सो ते पार्व शिव खेत ॥४६॥  
Colophon : इति श्री भक्तामर स्तोत्रभाषा बघ सम्पूर्णम् ।

१३६६. भवतामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६७ ।

Closing : देखे, क्र० १३६५ ।  
 Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्र सपूर्णम् ।

## १३६७. भक्तामरस्तोत्र

Opening देखे, क्र० १३६५ ।  
 Closing देखे, क्र० १३६५ ।  
 Colophon : इति भाषा भक्तामर जी सम्पूर्णम् ।

## १३६८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।  
 Closing : देखे, क्र० १३६५ ।  
 Colophon इति श्री भक्तामर की भाषा समाप्ता ।

## १३६९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।  
 Closing . देखे, क्र० १३६५ ।  
 Colophon . इति भक्तामर स्तोत्र भाषा समाप्तम् ।

## १४००. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।  
 Closing . देखे, क्र० १३६५ ।  
 Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्रभाषा समाप्तम् । मिति वैशाख  
 वदि १४ सवत् १९३६, नार आदित्यवार । शुभम् श्री ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१४०१ भक्तामरस्तोत्र

Opening . देखे, क्र० १३६५ ।

Closing . देखे, क्र० १३६५ ।

Colophon इति श्री भाषा भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४०२ भक्तामर वचनिका

Opening . देव जिनेश्वर वदिकरि वाणी गुर उर लाय ॥

स्तोत्र भक्तामरतणी कहँ वचनिका भाय ॥

मानुग वरसूारनै रच्यो भवित उर धारि ॥

श्री जिनेन्द्र अनुभावतै वधन धरै उतारि ॥

Closing सवत्सर शत अष्टदश सत्तरि विक्रमराय ॥

कातिक वदि बुद्ध द्वादसी पूरण भई सुभाय ॥

Colophon . इति श्री मानुग आचार्यकृत भक्तामर नाम देशभाषामय वच-  
निका समाप्त ॥

१४०३ भक्तामर वचनिका

Opening : देखे क्र० १४०२ ।

Closing . देखे, क्र० १४०२ ।

Colophon . इति श्री मानुग आचार्यकृत भक्तामरनाम देशभाषामय वचनिका  
समाप्तम् ।

१४०४. भक्तामरस्तोत्र

विशेष—यह पूर्णत जीर्ण-शीर्ण है ।

## १४०५. भक्तामर-टीका

- Opening :** जो देवनमृमुगुटि सुभरत्नकाति तीर्तौवकास करि ते जिनपाद  
दीप्ति ।  
जो पाप रूप तम घोर समूल छेदी नेदी बुडी भव जली जनहो  
जुगादि ॥१॥
- Closing** माङ्ग्य मनात भरला मुनि शक्र मुति तो स्तोत्र पाठवदल गुरु  
पुन्यकीर्ति ।  
भीबोलहा चिनमिले जिनसागराला करी क्षमाऽनवितो दुध  
पडि गाला ॥५०॥
- Colophon :** इति श्री देवेन्द्रकीर्ति प्रियशिष्य जिनसागर कृत भक्तामर स्तोत्र  
महाराष्ट्रभाषा सपूर्णम् ।

## १४०६ भक्तामरस्तोत्र

- Opening :** धरामू निकल ता मंदिर जाणो ।  
जदि रसता माहि उच्चार करणो ॥
- Closing :** देखे, क्र० १३८० ।
- Colophon :** इति श्री मानतुंग नामा आचार्य विरचित आदिनाथ देवा-  
धिदेव भक्तामरस्तोत्र सपूर्णम् ।

## १४०७ भक्तिसंग्रह

- Opening :** सिद्धान् उद्भूतकर्मप्रकृतिसमुदयान भावोपलब्धिः ॥
- Closing :** सुगइ गमण ममाहिमरण जिणगुणसपत्ति होऊ मज्झ ।
- Colophon :** इति सप्तभक्तय समाप्ताः ।
- विशेष —** इसमे सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्र्यभक्ति, आचार्यभक्ति,  
निर्वाणभक्ति, योगभक्ति, नदीश्वर भक्तिया सकलित हैं ।  
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४० ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhram̐śa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१४०८. भैरवाष्टक

- Opening . अतितोक्षणमहाकाय कल्पातपवनोपम् ।  
भैरवाय नमस्तुभ्य मानभद्रतमोहर ॥
- Closing : अपुत्रो लभते पुत्र वद्धो मुचति वधनात् ।  
राज्यचोरमय नैव भैरवाष्टककीर्तनात् ॥११॥
- Colophon . इति श्री भैरवाष्टकस्तोत्र संपूर्णम् ।

देखे — जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ६३५ ।

१४०९ भैरवाष्टक

- Opening . देखें, क्र० १४०८ ।
- Closing . चाहै तो १ लाख जाप करै दिन ३ उपवाम के  
पारने चूर, मावा, हलवा, लाल वस्त्र, लाल माला, कनेर का फूल  
करणा तेज प्रताप आपि करे ।
- Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

१४१०. भैरवस्तोत्र

- Opening : य य य यक्षरूप दसदिसचरित भूमिक पायमानम्,  
स स स सहारमूर्तिशिरमुकुटजटाशेषर चद्रविम्बम् ।  
द द द दीर्घकाय विकृतनखमुख उर्ध्वरोम करालम्,  
प प प पापनाश प्रणमतशतत भैरव क्षेत्रपालम् ॥
- Closing : भैरवाष्टकमिद पुण्य छ मास पठते नर ।  
स याति परमस्थान यत्र देवो महेश्वर ।६॥
- Colophon : इति क्षेत्रपाल स्तोत्र संपूर्णम् ।

## १४११. भूपाल-चतुर्विंशति-स्तोत्र

Opening : श्रीलीलायतन महीकुलगृह ..... जिनाग्निद्वयम् ॥

Closing : हे देव अद्य मया गम्यते पुन पुन वार वार दर्शन  
भूयात् ।

Colophon : इति श्री पंडित शिवचंद्रनिर्मपित भूपालचतुर्विंशतिकाया  
वालावबोध टीका संपूर्णम् । मिति फाल्गुन शुक्लादारभ्य चैत्र  
कृष्ण द्वितीयाया पंडित शिवचंद्रेण कृता इय पचस्तोत्र टीका  
सम्पूर्णम् समाप्तम् । श्री । मिति चैत्रकृष्ण सप्तम्या सोम  
वासरे सवत्सर १९२७ का सम्पूर्णम् लिखित पंडित परमानंद  
पठनार्थम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र I, क्र० ६४२ ।

## १४१२ भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : दृष्टस्त्व जिनराज ..... भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी समाप्तम् ।

## १४१३. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखे, क्र० १४१२ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

## १४१४. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखे, क्र० १४१२ ।

atalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Colophon : इति भूपाल चतुर्विंशतिका ।

१४१५. भूपालस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : उपसम इव मूर्तिललित - - - चरिण्टमोयम्यधि-  
न्वति वाच ॥२७॥

Colophon : इति श्री भूपालस्तोत्र समाप्त ।

१४१६ भूपाल-चौबीसी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखे, क्र० १४१२ ।

Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी सम्पूर्णम् ।

१४१७. भूपालस्तोत्र

Opening : परमात्म सम्यक वरन परमभावना सार ।

श्रीभूपाल वरेस कवि करत सुपर हितकार ॥१॥

Closing : यह विधि श्री जिन विमल करि भूपाल थुति नरिंद ।

जग जीवन जीवन लभ्यौ हीर अवाध अनिंद ॥२७॥

Colophon : इति भूपाल चौबीसी सम्पूर्णम्

१४१८ भूपाल-चौबीसी-भाषा

Opening : देखे, क्र० १४१७ ।

Closing : देखे, क्र० १४१७ ।

Colophon : इति भूपाल चौबीसी भाषा जी समाप्तम् ।

### १८१९. बीस विरहमान-आरती

Opening : आरती कीजै बीस जिनद की, विदेह क्षेत्र थानक सुखकद की ।

श्रीमदर जुगमदर स्वामी, बाहु सुबाहु प्रभू शिवगामी ॥आरती॥

Closing अजितरीयं प्रभु है सिरनामी, भैरो सरन चरन तुम स्वामी ॥आरती

Colophon : इति श्री बीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

### १४२०. ब्रह्मलक्षण

Opening : ब्रह्मचर्यां भवेमूल सर्वेषां ब्रह्मचारिणाम् ।

ब्रह्मचर्यस्य भोगन व्रत सवनिरर्थकम् ॥

Closing : दृष्टिपूत . - . नवम ब्रह्मलक्षणम् ॥

Colophon : नहीं है ।

### १४२१. चैत्रालय-स्तोत्र

Opening : द्रष्टुं जनेन्द्रभवनं भवतापहारीं ..... प्रकरराजविराजमानम् ॥१॥

Closing : द्रष्टुमपाद्य मणिकाचनचित्रतुङ्गं सकलचन्द्रमुनिद्रवद्यम् ॥१०॥

Colophon : इति चैत्रालय स्तोत्रम् ।

### १४२२. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : श्रीचक्रैचक्रभीमे ललितवरभुजे लीलयां दोलयन्ति,

चक्रं विद्युत्प्रकाशं ज्वलिनसतमुखं खखगेद्राद्यरुद्धं ।

तत्त्वैरुद्भूतभावे सकलगुणनिधे त्वं महामन्त्रमूर्ति

क्रोधोदित्यप्रतापे त्रिभुवनमहिमायाति मा देविचक्रे ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Closing . यं स्तोत्र मन्त्ररूपं पठित्व निजमनो भक्तिपूर्वकं शृणोति,  
त्रैलोक्य तस्य वस्य भवति बुद्धजने वाक्पटुत्वं च दिव्यम् ।  
सौभाग्य स्त्रीषु मध्ये खगपतिगमने गौरितत्वप्रसादात्,  
डाकिन्यो गुह्यगावाद् इह दधति भयं चक्रदेव्यास्तवेन ॥८॥

Colophon इति चक्रेश्वरी स्तोत्रम् ।

देखें, रा० सू० IV, ३८४, ३८७ ।

दि० जि० ग्र० २०, पृ० १२७ ।

### १४२३. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२२ ।

Closing . देखें, क्र० १४२२ ।

Colophon : इति चक्रेश्वरी स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

### १४२४. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

Opening . प्रभुभव्यराजीवराजीदिनेश शुभ शकर सुन्दर श्रीनिवेशम् ।

सुरैर्दानवैर्मर्निवैः लिप्तसेव जिन नीमि चन्द्रप्रभ देवदेवम् ॥

Closing चन्द्रप्रभ नीमि यदगकान्ति जोत्सेति मत्वा द्रवेतेदुकातान्  
चकोरयुथपवति ? स्फुटति कुण्डोपि पक्षे किलकैरवनानि ॥

Colophon . इति श्री चन्द्रप्रभुस्वामी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

### १४२५. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

विशेष—

यह पूर्णतः जीर्ण-पूर्ण है ।

## १८२६, चारित्र-भक्ति

Opening : येनेद्रान् भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारागदान्,  
 भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तु गोत्तमागान्तान् ।  
 स्वेषा पादपयोरुद्देशु मुनयश्चक्रु प्रकाम सदा,  
 वदे पचतपतमद्यनिगदन्न चाश्मभ्याचितम् ॥ १॥

Closing : इच्छामि भते चरित्तभक्तिकाउस्सग्गो काउ तस्सा लाचेउ  
 . — — जिणगुणसपत्ति होउ मज्झ ॥

Colophon . इति आचोना चरित्र भक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५१ ।

## १४२७. चतुर्विंशति-स्तोत्र

Opening : आदौ नेमिजिन नौमि सभव सुविधि तथा ।  
 धर्मनाथ महादेव शांति शांतिकर सदा ॥ १॥

Closing : सकलगुणनिधान यत्रमेत विशुद्ध,  
 हृदयकमलकोपे धीमता ध्येयरूपम् ।  
 जगति विदिततत्त्वो य स्मरेत् शुद्धचित्तो,  
 भवति सुखनिधान मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ॥

Colophon : इति चतुर्विंशति-स्तोत्रम् ।

## १४२८. चतुर्विंशति स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२७ ।

Closing : देखें, क्र० १४२७ ।

Colophon : इति चतुर्विंशतिस्तोत्रम् ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१४२९ चतुर्विंशतिसतोत्र

Opening	देखे, क्र० १४२७ ।
Closing	देखे, क्र० १४२७ ।
Colophon	इति चतुर्विंशति स्तोत्रम् ।

१४३०. चतुर्विंशति-जिन-स्तोत्र

Opening	आदिनाथ जगन्नाथ अरुनाथ नयानमि । अजित जितमोहारि पार्श्वं वद गुणागरम् ॥१॥
Closing	भवमिसुखमनेक तस्य यो मानवश्च विमलमतिमनिय स्तोत्रमेतद्विद्वत् । पठति परमभक्त्या प्राप्नुय्यात् शश्वत्, मुनिरमिषुतभक्तिर्मेघराजो वभाण ॥८॥
Colophon	इति श्री चतुर्विंशति जिनान स्तोत्र समाप्तम् ।

१४३१. चौबीस-तीर्थ कर-पद

Opening	अव मोहि तारी दीनदयाल सब ही मत देखें । मैं जित तित तुमही नाम रसाल ॥१॥ अव ॥
Closing	पाठक श्री मिद्धिवर धन सदगुरु विलास, पाठक तिहि विघ मी श्री जिनराज मल्हाए । ५। इहि० ॥
Colophon	इति श्री चौबीस तीर्थकराणा पदानि मपूर्णम् ।

१४३२. चिन्तामणिसतोत्र

Opening	किं कर्पूरमय सुधारमय किं चद्ररेचिर्मयम्,
---------	--

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

किं लावण्यमय महामणिमय कारुण्यकेलिमयम् ।  
विश्वानन्दमय महोदयमय शोभामय चिन्मयम्,  
शुक्लाध्यानमय वपुर्जिनपते भूयाद्भवालवनम् ॥११॥

Closing : इति जिनपति पार्श्वपार्श्वख्य यक्षम् ।  
प्रदलित-दुरीतोघ-प्रीणीत प्राणसध्यम् ।  
त्रिभुवनजिनवाध्य दानचिन्तामणीस,  
शिवपदतस्वीज व्याधिवीज ददानुम् ॥१२॥

Colophon : इति चिन्तामणि स्तोत्रम् ।

१४३३. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening नरेन्द्र फणेन्द्र सुरेन्द्र अधीश सतेन्द्र सुप्रज्य नमो नायसीस  
मुनिन्द्र गणेन्द्र नमो जोरिहाथ नमो देवि चिन्तामणि पार्श्व-  
नाथम् ॥

Closing : गणधर इन्द्र न करि सके तुम चिनती भगवान् ॥  
द्यानत प्रीति निहारके कीजे आप समान ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१४३४. चिन्तामणिपार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४३२ ।

Closing : मदनमदहर श्री वीरसेनस्य शिष्यै.  
सुभगवचनपूरै राजसेनप्रणुतै ।  
जपति पठति नित्य पार्श्वनाथाष्टक य,  
स भवति शिवभूम्यां मुक्तिसीमतिनीश ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथाष्टक समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१४३५. चौबीस-जिन-आरती

- Opening : रिषम आदि चौबीस जिन लक्षण लेहु विचार ।  
जो कछु सुने सु कहत हैं, भव्य जन लेहु मुधार ।
- Closing : लक्षण जिनवर के कहे भव्यजन लेहु मुधार ।  
भूना चूका फिर धरी भैरौ कहै विचार ॥
- Colophon : इति श्री चौबीस जिन लक्षण आरती ।

१४३६. चौबीस-जिन-आरती

- Opening अतिपरमपवित्र जनितमुचित्र वरविचित्रमगनकरणम् ।  
प्रणमामि जिनेन्द्र प्रणतशतेन्द्र भवसमुद्रतारणतरणम् ॥१॥
- Closing परमजिनेश्वरा भुविपरमेश्वरा कालत्रयकल्याणकरा ।  
मघप्रभवत चरणभजत विरतगन्तु मगलमधिरा ॥
- Colophon : इति चौबीस जिन चिह्न आरती समाप्तम् ।

१४३७. चौबीस-दडक-विनती

- Opening : वदो वीर सुधीर को महावीर गभीर ।  
वर्द्धमान सनमत नमो, महादेव अतिधीर ॥१॥
- Closing : अताकरन जो सुद्ध होय जिन धरमी अभिराम ।  
भाषा कारन करन को, भाषो दौलतराम ॥५६॥
- Colophon : इति श्री चौबीस दडक विनती सपूर्णम् ।

१४३८. दर्शन-ज्ञान-चारित्र-आरती

- Opening : सम्यक दरसन ग्यान व्रत, इन विन मुक्त ना होय ।  
वध्रपग अरु शालमी जुड़े जलै दत्रलेख ॥

Closing : इय अग्घु विधारवि भवभय हारवि,  
करि विचित्त सुयसस्स मणु ।  
भवि भवियण धण्णउ सुह सपण्णउ  
लहइ सग्गु मोक्खविसयलु ॥

Colophon : इति रत्नत्रयतूजा क्षिमावाणी समाप्तम् ।

१४३९ दर्शन-स्तुति

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Closing : देखे, क्र० ११६३ ।  
शुद्ध भाव ताके मन भायी सम्यक दृष्टी मुक्ति हि गयी ॥

Colophon : इति दर्शन स्तुतिसमाप्तम्

१४४० दर्शनाष्टक

Opening : आद्याभवत्प्रफुल्लता नयनद्वयस्य, देव त्वदीय चरणानुजनीक्षणम् ॥  
अद्यस्त्रिलोकतिलक प्रतिभासनो मे, ससारवारिधिरिय चुलक-  
प्रमाणम् ॥

Closing : अद्याष्टक पठेद्यस्तु गुणैर्निर्दिष्टमाधवः ।  
तस्य सर्वार्थसंसिद्धि जिने० ॥११॥

Colophon : इति दर्शनाष्टकम् ।

१४४१ देवस्तवन

Opening : श्रीमद्देवपतिप्रसन्नमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा,  
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती ।  
ममारागमदोषविस्तरगतः सेवासमीपस्थित ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Closing : इन्द्रमपि भगवति नृन पुष्पान्काम्लजनम् ।  
स्तोत्र कठ करोति पश्य दिव्यश्रीन्त नमाधयति ॥३६॥

Colophon : इति देवस्नवनम् ।

देवे, जै० मि० भ० प्र० I, पृ० ६५७ ।

१४४२ एकीभाव-स्तोत्र

Opening : एकीभाव गत इम मया यं न्वय कर्मवधो,  
घोर दुष्ट नयमवगतोदुनिवार करोति ।  
मन्याप्यस्य स्वयि जिनस्ये अनिरुन्मुत्तचेत्,  
जेतु पात्रो नवति न तया कोपस्तपहेतु ॥

Closing : वादिगजमनुगान्दिकलोके, वादिगजमनु किकिह ।  
वादिगजमनु पाद्वकृतस्ते, वादिगजमनुगमहाय ॥२६॥

Colophon : इति श्री वादिगज विरचिते श्री एकीभावस्तोत्रममाप्त ।

देवे, जै० सि० भ० प्र० I, पृ० ६५८ ।

१४४३ एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : देखें क्र० १४४२ ।

Colophon : इति श्री एकीभावस्तोत्र सपूर्णम् ।

१४४४ एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : देखें, क्र० १४४२ ।

Colophon : इति एकीभावस्तोत्रम् ।

## १४४५. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।

Closing : देखे, क्र० १४४२ ।

Colophon : इति श्री वादिराजमुनि त्रिरचिते एकीभावस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

## १४४६. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।

Closing : देखे, क्र० १४४२ ।

Colophon : इति एकीभावस्तोत्र समाप्तम् ।

## १४४७. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।

Closing : देखे, क्र० १४४२ ।

Colophon : इति श्री एकीभाव स्तोत्र समाप्तम् ।

## १४४८. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।

Closing : धूपसुगंध कृष्णामस्त्वदनोघी ।

कृत सुगंध कृतसारमनोहरानी ॥ तीर्थकराः ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

विशेष— एकीभाव के पहले भूगल चतुर्विंशति करीब १०-११ पत्र में हैं ।

## १४४९. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १४४२ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Closing : देखें, क्र० १४४२ ।

Colophon . इति वादिराजमुनिवृत्त एकीभावस्तोत्र समाप्तम् ।

११५०. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : विद्वान् अध्यात्मतापदस्वरत्नीन् नोपयता प्रपन्नानेन बालोपका-  
राय देवल मया रचिता न तु ज्ञानगर्भेण ।

Colophon : इति एकीभाव स्तोत्रा न पूर्णम् ।

१४५१. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : वादिराज मुनिराज कौ बढतो सुहिन उद्गार ।

स्वद्वय रूप अनुभी कथा, कहत मुपर हितकार ॥

Closing : वादिराज मुनिराज अनुष्णान्दिक तार्किक चोक्त ।

प्राव्यकार सहकार जग जीवन होर सुधोक ॥

Colophon : इति श्री एकीभाव भाषा जी समाप्तम् ।

१४५२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४५१ ।

Closing : देखें, क्र० १४५१ ।

Colophon इति श्री एकीभाव संपूर्णम् । श्री ।

## १४५३. गणधर-स्तुति

Opening : इति प्रमाणभूतेय वक्तृ श्रोतृ परपरा महाधियम् ।

Closing : स्वश्रुवद्भिरोवेन मुनिवृ दारकै रत्नदा ।  
प्रसादितो गणेशोभूद्वक्तृग्राह्या हि योगिन ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

## १४५४. गौतमस्वामी-स्तोत्र

Opening : ॐ नमस्त्रिजगन्नेतु वीरस्याग्रजमूनवे ।  
समग्रलब्धिमाणिष्य रौहणायैवभूतये ॥१॥

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रं तेस्मरतोन्वहम् ।  
श्री जिनप्रभसूरिस्त्व भवसर्वार्थसिद्धये ॥८॥

Colophon : इति श्री गौतमस्वामिस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

## १४५५. घंटाकर्ण-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १२९६ ।

Closing : देखे क्र० १२९६ ।

Colophon : इति घंटाकर्ण स्तोत्रम् ।

संदर्भ के लिए भी देखें, क्र० १२९६ ।

## १४५६. गुरुभक्ति

Opening : वदौ दिगंबर गुरु चरन जग तरन तारन जानी :



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

जे भरम भारी रोग की हे राजवैद्य समान ॥  
जिनके अनुग्रह बिन कहूं नहीं कटै करम जजीर ।  
ते गाधु मेरे उर बनी भेरी हरी पातक पीर ॥

Closing • करजोरी भूधर बिनवै कब मीलेवै मुनीराज ।  
आन मन की तब पुरै मेरे मरे-मगने काज ॥  
नगार विषम विदेह मैं बिना कारन वीर ।  
ते गाधु मेरे मन बनी भेरी हरी पातक पीर ॥८॥

Colophon इति गुरु भगती संपूर्णम् ।

१४५७. गुरुभक्ति

Opening : ते गुरु मेरे उर बगै ते भव जलधि जिहाजु ।  
आप तिरै पर तारहि, अँमे श्री ऋषिराज । ते गुरु ॥

Closing : देखै, क्र० १४५६ ।

Colophon : इति गुरुस्तुति संपूर्णम् ।

१४५८. गुरुविनती

Opening : देखै, क्र० १४५७ ।

Closing : वे गुरु चरन जहाँ धरै जग मैं तीरथ होय ।  
सो रज मम माथे लगे भूधर मार्ग एह ॥१४॥

Colophon : इति विनती संपूर्णम् ।

## १४५६ गुणावलि

Opening	श्री अरिहत अणत गुण, सेवइ सुरनर इव । पाय कमल जसु प्रणमता, लहीयै परमाणद ॥१॥
Closing	श्रीखेम साखै सोभता वा शाति हरष मुणिद, तसु सीस कहे जिन हर्ष मुनि गुरु नामै हो दिन-२ आणद ॥
Colophon	इति श्री गुणावली चौपई सम्पूर्णम् ।

## १४६०. गुणाष्टक

Opening	गुणाधीश योगी मुनि ... सकल जन के काम शरते ॥
Closing	सुनो गामै धाते ..... आदि परमा ॥
Colophon	इति परमानन्द कृत गुणाष्टक सम्पूर्णम् ।
विशेष—	गुणाष्टक के बाद कुछ फुटकर श्लोक सकलित हैं ।

## १४६१. जैनपदसग्रह

Opening	णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण । णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ॥ एसो पच्च णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसि पढम हवइ मगलम् ॥
Closing	ये रे सावलिया तेरा नाम जप छुट जात भव भावरिया । — — जो भवसागर से तरिया । येरे ॥
Colophon	नही है ।

## १४६२. जिनचैत्य-नमस्कार

Opening	सद्भक्त्या देवलोके रत्निशशिभुवने व्यतम्भानां निकाये,
---------	--

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ।  
पाताले पद्मगेन्द्रस्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसाद्राधकारे,  
श्रीमतत्तीर्थं कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वदे ॥१॥

Closing . इन्द्र श्री जैन चैत्य स्तवमिदमनिश ॥ ॥ प्रणमता चित्त-  
मानदकारी ॥

Colophon इति श्री जिनचैत्यनमस्कार समाप्त ।  
देखे, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १३२ ।

१४६३. जिनदेव स्तुति

Opening जिनराजदेव कीजिये मुक्त दीन पै कहना ।  
भविवृ द को अव दीजिये यह शील का शरना ॥ टंक ॥  
सुचिशील के धारा मे जो स्नान करे है ।  
मन कर्म को सो धोय के सिवनार वरे है ॥ टंक ॥  
व्रतराज सो वेताल व्याल काल डरे है,  
उपसर्ग वर्ग घोर कोट कष्ट टरे है ॥ जिनराज ॥१॥

Closing जस सील का कहने मे थका महस वदन है ॥  
इस सील से भव पाय भगाकर मदन है ।  
यह सील ही भविवृ द को कल्याण प्रदन है  
दस पैड ही इस पैड से निर्वान सदन है ॥१४॥ टंक ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४६४. जिनपजर-स्तोत्र

Opening . ॐ ह्रीं श्री अहं अर्हद्भ्यो नमो नम । ॐ ह्रीं श्री अहं  
सिद्धेपोयो नमो नम । ॐ ह्रीं श्री अहं आचार्य्येभ्यो नमो

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

नमः । ॐ ह्री श्री अर्ह उपाध्यायेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्री  
श्री अर्ह श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नमः ॥१॥

**Closing :** श्री रुद्रपत्नीय वरेण्य गच्छे देवप्रभाचार्यपदाब्जहस ।  
वादीन्द्रचूडामणिरेव जैन जीयादसौ श्रीकमल प्रभाख्य ॥

**Colophon :** इति जिनपजर स्तोत्र समाप्तम् ।  
देखें, जे० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७६ ।

### १४६५. जिनपंजर-स्तोत्र

**Opening :** देखे, क्र० १४६४ ।

**Closing :** वात सवुच्छ य ... मनोव छिनपूर्णिय ॥२४॥

**Colophon :** इति जिनपजरस्तोत्र सम्पूर्णम् । पडित अजयचन्द्र ।

### १४६६. जिनपजर-स्तोत्र

**Opening :** देखे, क्र० १४६४ ।

**Closing :** अस्पष्ट ।

**Colophon :** इति वज्रपिजरस्तोत्र समाप्तम् ।

### १४६७ जिनरक्षा-स्तवन

**Opening :** श्रीजिन भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याह्लाददायकम् ।  
जैनरक्षामह वक्ष्ये देहिना देहरक्षकम् ॥१॥

**Closing :** राकाया ? तु विधातव्यामुद्यापनमहोत्सवम् ।  
पूजाविधि समायुक्त कर्त्तव्य सज्जनैर्जनैः ॥२१॥

**Colophon :** इति जिनरक्षा स्तवनम् ।

१०७

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१४६८. जिनसहस्रनाम

- Opening : पच परम गुरु को नमो उरघरि परम सु प्रीति ।  
तीरघराज जिनंद जी चौबीसो घरि चित ।
- Closing : सिखिरचंद कृत पाठ यह, वन्यी अनुपम रास ।  
जो पढसी मन लायके, पासी सौख्य सुवास ॥
- Colophon : इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा पाठ भाषा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु ।  
मकरमासे शुक्लपक्षे तिथी-२ चद्रवासरे ... .. ।  
सूवा औधदेश मुन्क हिन्दुस्तान मे प्रसिद्ध जिला है नवावगज  
वारावकी नाम है ।  
टिकइत नगर सुथाना डाकखाना जानो तासु डिग पूरब सरैया-  
भलो ग्राम है ।  
वास स्थान लेखक सु भगवान दीन नाम अन्नजल के स्ववम  
आयो यहि ठाम है ।  
भोज नृप देश जिले शाहाबाद आरा नग्र राय जी बुलाकचद-  
मदिर मुकाम है ॥१॥  
श्री सहस्रनाम पाठ जी को चढाया श्री चद्रप्रभु स्वामी जी के  
मदिल मे व्रत उद्यापन का मुसम्मात ..... कुँअर भाय्या  
चादू रामा प्रमाद अग्रवाल श्रावक दिगम्बर आन्नाय धारक  
आरामपुर नग्रनिवासी मिति भादौ सुदी ८ सवत् १९५९ ।

१४६९. जिनेन्द्रदर्शन स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १४४० ।
- Closing : जन्मजन्मकृत पाप जन्मकोटिसमर्जितम् ।  
जन्ममृत्युजरान्तक हन्यते जिनदर्शनात् ॥१४॥

Colophon . इति जिनदर्शन सस्कृत सम्पूर्णम् ।

### १४७०. जिनदर्शन

Opening प्रभु पतितपावन मे अपावन चरन आयो शरण जी,  
यो विरद आप निहार स्वामी भेट जामन मरण जी ।

Closing . या श्रद्धा मोही उर भई, कीजे तुम पद सेव ।  
नवल नवल गुण गाय कै जै जै जै जिनदेव ॥

Colophon : इति श्री नवलकृत जिनस्तुति भाषा सम्पूर्णम् ।  
विशेष— प्रारम्भिक स्तुति कविवर ब्रुघजन कृत है ।

### १४७१. जिनदर्शन

Opening : देखे, क्र० १४७० ।

Closing . जाँचो नही सुरवास . दीजीए शिवनाथ जी ॥

Colophon : इति श्री भाषा जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

### १४७२ ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening . ॐ नमोभगवते चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशाकशखगोक्षीरह्वारधवल ।  
गौत्राय घातिकर्मनिर्मलोद्धेदनाय जाति जरामरणविनाश-  
नाय ।

Closing . आँ क्रों क्षू क्षू क्षौ क्ष ज्वालामालिनी ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभतीर्थ कर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल  
दुःखहरन मंगलकर विजयकर स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

विशेष— इसके आगे एक मंत्र भी दिया गया है ।

देखे, जै सि० भ० ग्र० I क्र० ६७६ ।

२१० सू ॥१, पृ० २३६ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१४७३. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : भृंगारतागेलवरदर्पणं चामराणी श्रकचदनादिनवरत्नविभूषितागे  
दैत्यास्तितापरिजनै करकजयुग्मे ॥६॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४७४. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : दहेदह पच पच छिद छिद भिद भिद हा ही हूँ हूँ  
फुट स्वाहा । अनेन मन्त्रेण होम कुर्यात् सहस्र १२००० -  
अनेन मन्त्रेण गजेन्द्र नरेन्द्र सर्वशत्रू वशीकरण पूर्वमन्त्र स्मरणोति

Colophon : इति श्री ज्वालामालिनी स्तोत्रमन्त्रविधि कल्प सम्पूर्णम् ।

१४७५ ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : चद्रहास्य खड्गेन छेदय छेदय, भेदय भेदय डर डर  
छर छर स्फुट घ्र द्र आ क्रो क्षी क्षू क्षौ ज्वालामालिनि ज्ञाप-  
यते स्वाहा ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४७६. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

विशेष— पूर्णत जीर्ण-क्षीर्ण ।

## १४७७. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७२ ।

Closing : ... तस्याभरण पीतवर्णं खड्गत्रिशुलपाससरामनायुध  
उत्तमासनेन स्थापित तस्याग्रे जाप्य रक्तपीतउज्ज्वलफलानि  
मध्यरात्रे - - ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

## १४७८. ज्वालामालिनी

Opening : स्नेहाच्छरण प्रयाति भगवन् पादद्वय ते प्रजा,  
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचय ससारघोरार्णव ।

छायानुरागं रवि ॥१॥

Closing : छेदय छेदय भेदय भेदय डरु डरु छरु छरु  
हरु हरु स्फुट स्फुट घे घे .. ..  
- .. ज्वालामालिन्या ज्ञापयते स्तोत्र ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।  
विशेष— इममे शान्त्याष्टक भी गर्भित है ।

## १४७९. कल्याणमदिर-स्तोत्र

Opening : कल्याणमदिरमुदारमवद्यभेदि, भीतामयप्रदमर्निदितमडिघ्नपद्मम् ।  
ससारसागरनिमज्जदशेषजन्तु पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य १॥

Closing : जननयनकमुद्रचन्द्र प्रभासुरा, स्वर्गसपदो भुक्त्वा ।  
ते विगलितमलनिचया अचिरात्मोक्ष प्रपद्यन्ते ॥

Colophon : इति श्री कल्याणमदिर सस्कृत समाप्तम् ।

देखे जै० मि० भ० ग्र० I, ६७२ ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhram̐'a & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१४८०. कल्याणमदिर-स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १४७९ ।  
 Closing : देखे, क्र० १४७९ ।  
 Colophon : इति श्री कल्याणमदिर जो सस्कृत समाप्तम् ।

१४८१. कल्याणमदिर-स्तोत्र

- Opening : देखे क्र० १४७९ ।  
 Closing : देखे, क्र० १४७९ ।  
 Colophon : इति श्री कल्याणमदिर स्तोत्र जी सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१४८२. कल्याणमदिर-स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १४७९ ।  
 Closing : देखे, क्र० १४७९ ।  
 Colophon : इति श्री कल्याणमदिर सम्पूर्णम् ।

१४८३. कल्याणमदिर-स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १४७९ ।  
 Closing : देखे, क्र० १४७९ ।  
 Colophon : इति कल्याणमदिर सम्पूर्णम् ।

१४८४. कल्याणमदिर-स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १४७९ ।  
 Closing : देखे, क्र० १४७९ ।

Col phon : इति श्री कुमुदचद्राचार्य्यविरचित श्री कल्याणमदिरस्तोत्र  
समाप्तम् ।

### १४८५. कल्याणमदिर-स्तोत्र (सटीक)

Opening : देखे, क्र० १४७६ ।

Closing : अस्मिन् श्लोके स्तोत्रकर्ता कुमुदचद्राचार्य्यस्य नामोऽपि  
प्रकटो जात ।

Colophon इति कुमुदचद्राचार्य्यकृत कल्याणमदिरस्य अर्थावबोध टीका पंडित  
शिवचंद्र निम्मापिता अलमगमत् ।

### १४८६ कल्याणमदिर-स्तोत्र

Opening : परमजोति परमातमा परमज्ञान परवीन ।  
वदो परमानन्द मै सो घट-घट अतरलीन ॥

Closing : यह कल्याणमदिर कियो, कुमुदचद्र की बुद्धि ।  
भापा कियो बनारसी, कारण समांकित शुद्ध ॥

Colophon इति कल्याणमदिर पूरन ।  
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६१ ।

### १४८७. कल्याणमदिर-स्तोत्र

Opening . श्री नवकार जपौ मन रगै श्री जिनशासन सार री माई ।  
सर्व मंगल मै पहिली मंगल जपतां जय जयकार री माई ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमदिर भाषा सपूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१४८८ कल्याणमन्दिर-स्तोत्र

Opening	देखे, क्र० १४८६ ।
Closing	देखे, क्र० १४८६ ।
Colophon :	इति श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्रभाषा मपूर्णम् ।

१४८९. कल्याणमन्दिर

Opening :	देखे, क्र० १४८६ ।
Closing :	देखे, क्र० १४८६ ।
Co'ophon	इति श्री भाषा कल्याणमन्दिर जी समाप्तम् ।

१४९० कल्याणमन्दिर

Opening .	देखे, क्र० १४८६ ।
Closing :	देखे, क्र० १४८६ ।
Colophon :	इति श्री कल्याण मन्दिर की भाषा मपूर्णम् ।

१४९१. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening :	श्रीमत्सर्वज्ञदेवि त्रिमुकुटतटाभ्यतरे सदधानम्, चचच्चामीकगम् खचितमणिगतै भूषणैर्भूषितागम् । स्फुर्जत्काम्याभिलानप्रदममलतर वेत्रयष्टिदधानम् स्तोष्ये श्री क्षेत्रपाल जिननिलगगत विघ्नविध्वंसदधम् ॥
Closing :	ॐ वा को ह्रीं प्रणस्तवर्णमर्वलक्षणमपूर्णम्वायुधवाहनवधू चिह्न- सपरिवारमहितमो क्षेत्रपाल येहि तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ मम नन्नि- हिनी भव भव दधद् स्याहा, इति ठः ठ न्वन्गान गच्छतु न्वाहा॥

Colophon : सपूर्णम् ।

### १४६२. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६१ ।

Closing : इम स्तव यो मतिमानधीते श्रीक्षेत्रपालस्य गरिष्टमूर्ते,  
भक्त्यातिकाल सतत पवित्र भवत्यसौ सारदचन्द्रकीर्तिः ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

### १४६३ क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १४०८ ।

Closing : भैरवाष्टकमिद - - - भैरवाष्टककीर्तिनात् ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

### १४६४. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री नमो भगवति पद्मावती हा हा कात्यायनी हू हू योगिनी

नवकुलनागवधिनी अवतर-२ आगच्छ-२ - ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् बद्धो मुञ्चति बधनात् ।  
त्रिसध्य पठते यस्तु सर्वसिद्धिभवाप्नुयाद् ॥१६॥

Colophon : इति श्री क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

### १४६५. लघुसहस्रनाम

Opening : स्वयम्भुवे नम. तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।  
स्वात्मनैव तथोद्भूत वृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

- Closing : नामाष्टकसहस्राणा ये पठति पुन पुन ।  
ते निर्व्वणिपद यान्ति निश्चयेननात्रमसय ॥  
Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी सम्पूर्णम् ।

१४६६ लघुसहस्रनाम

- Opening : देखे, क्र० १४६५ ।  
Closing : देखे, क्र० १४६५ ।  
Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१४६७. लघुसहस्रनाम

- Opening : देखे, क्र० १४६८ ।  
Closing : देखे, क्र० १४६५ ।  
Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम स्तोत्र सपूर्णम् ।  
संवत् १८४२ वर्षे शा० १७ ७ प्रवर्त्तमाने श्रावण वदि ३० गुरी ।

१४६८. लघुसहस्रनाम

- Opening : नम त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञायमात्मने ।  
वक्ष्ये तस्यैव नामानि मोक्षमौर्याभिलाषया ॥१॥  
Closing : देखे क्र० १५६५ ।  
Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७ ० ।

१४६९. लक्ष्मीस्तोत्र

- Opening : लक्ष्मीमहस्तुल्य सती सती सती ।  
प्रवृद्धकालो विरतो रतो रतो ।

जरारुजा जन्महता हता हता ।

पार्श्वे फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ॥१॥

**Closing :** तर्के व्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौमले,  
विख्यातो भुवि पद्मनदिमुधियस्तत्त्वस्य कोश निधिः ।  
गभीरं यमकाष्टकं भणति यः संभूयसा लभ्यते ।  
श्री पद्मप्रभुदेवनिर्मितामिदं स्तोत्रं जगन्मङ्गलम् ॥

**Colophon :** इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० , क्र० ७३७ ।

दि० जि० ग्र० २०, पृ० १४०-१४१ ।

जि० २० को०, पृ० ३३४ ।

### १५००. लक्ष्मीस्तोत्र

**Opening :** देखे, क्र० १४६६ ।

**Closing :** देखे, क्र० १४६६ ।

**Colophon :** इति लक्ष्मीस्तोत्रम् ।

### १५०१ लक्ष्मीस्तोत्र

**Opening :** देखे, क्र० १४६६ ।

**Closing :** देखे, क्र० १४६६ ।

**Colophon :** इति श्री लक्ष्मीपार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

### १५०२ महावीर आरती

**Opening :** आगती करी जिनवीर की, सुन पिया मेनिकराय ।

जन्म-जन्म सुख पाईए, दूरित सकल मिटि जाय ॥१॥

**Closing :** जिन आरती कीजै सुख लहीजे छीजै कर्म कलंक ।

सीवपुर पार्श्व जै सो नर पूजि जै भक्ति महित निकलक ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१५०३. मङलोद्धार-स्तोत्र

Opening : सपूर्वसूरिभिराम्नात क्षेत्रपालसपर्य ण ।  
तथाह मडन वक्ष्ये सर्वविघ्नोपशान्तये ॥१॥

Closing : यथापूर्वं मया श्रुत्वा तथा एव मया कृतम् ।  
क्षेत्रपालविधिं दिव्या विघ्नदुःखप्रणशकम् ।

Colophon : इति मङलोद्धार स्तोत्रम् ।

१५०४ मङल आरती

Opening : मङल आरती कीजे भोर विघ्न हरन सुभ करन किशोर । टेक ।  
अरहत सिद्ध सूर उवझाय साधु नाम जपिये सुखदाय ॥१॥

Closing : कहे कहाँ लो तुम सब जानो, दानत की अभिलाप प्रमानो ।  
करो आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण स्थान की ॥करो ॥

Colophon : इति आरती महावीर जी की सम्पूर्णम् ।

१५०५. मणिभद्र-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४०८ ।

Closing : जाप एक लाख पचीस हजार करे १२५००० दिन तीन मे जव  
उपवास के सने चरमो बनाये या लाल वस्त्र जाप माला कनेर  
फूल ।

Colophon : नही है ।

## १५०६ मगलाष्टक

Opening : श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट ' ' कुर्वं तु ते मगलम् ॥१॥

Closing : इत्थ श्रीजिनमगलाष्टकमिद ' ' कुर्वं तु मगलम् ॥१०॥

Colophon : इति मगलाष्टक सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० य० I, ऋ० ७०५ ।

## १५०७. मगलजिन-दर्शन

Opening : जै जै जिनदेव के देवा, सुरनर सकल करै तुम सेवा ।  
अद्भुत हैं प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलपमति मेरी ॥

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी बड़े भागन पाइए ।  
रूपचंद चिता कहा जिन चरण सरणनि आइए ॥

Colophon : इति रूपचंद कृत जिनगुण विनती सम्पूर्णम् ।

## १५०८. मुनीश्वर विनती

Opening : वदौ दिगम्बर गुरु चरण जग तरण तारण जाल,  
जे भरम भारा रोग को है राजवैद्य महान ।  
जिनके अनुग्रह विन कवि नहि करे कर्म जजीर,  
ते साधु मेरे उर बसे मेरी हरो पातक पोर ॥१॥

Closing : कर जोड़ मूधर वीनमैं वे मिलै कव मुनि राय ।  
इह आस मन की कव फलैं मेरे सरे सगले काज ।  
समार विषम विदस मे जे विना कार वीस ॥ ते साधु० ॥६॥

Colophon : इति साधु विनती सम्पूर्णम् ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१५०६. नमस्कार

- Opening : देखें, क्र० ११६३ ।  
Closing : देखे, क्र० ११६३ ।  
Colophon : इति श्रीपाल का नमस्कार समाप्तम् ।

१५१०. नमस्कार

- Opening देखे, क्र० १२८७ ।  
Closing देखे, क्र० १५०६ ।  
Colophon इति श्रीपालजी कृत नमस्कार समाप्तम् ।

१५११ नदीश्वर-भक्ति

- Opening : त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणि विरहित-निलयान् ॥१॥  
Closing : अन्यद्य स्वपन् जाग्रन् तिष्ठन्नपि पथि चलन् ~ स्तोत्र  
सुकृती ॥११॥  
Colophon : इति सपूर्ण ।

देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७०८ ।

१५१२ नदीश्वर-भक्ति

- Opening : देखे, क्र० १५११ ।  
Closing : दुःखखओ कम्मखओ बोहिलाओ सुगइ गमण समाहि-  
मरण जिणगुणसपत्ति होउ मज्झ ।  
Colophon : इति नदीश्वरभक्ति समाप्ता । इति सप्तभवतय समाप्ता ।

## १५१३. नरक-विनती

- Opening : आदि जिनद जु हारीयै मन धरि अधिक उल्हासो जी ।  
मन वत्र काया गुद्ध सुकीजै निज अरदासो प्रभु नरकतना  
दुःख दोहिल ॥१॥
- Closing प्रभु पतितपावन करण भावन श्री गुणसागर भाइयै ।  
इह लोक सुख परलोक शिवपद स्वामि सुमिरण पाइयै ॥
- Colophon : इति श्री नरक विनति स्तवन सम्पूर्णम् ।

## १५१४. नारायणलक्ष्मी-स्तोत्र

- Opening : ॐ अस्य श्री नारायणहृदयस्तोत्रमत्रस्य भार्गवऋषि अनुष्टुप् छन्द  
श्रीमन्नारायणो देवता श्रीमन्नारायण प्रसादसिद्धयर्थे जपे  
विनियोगः ।
- Closing : श्रीध्यायेत्वा प्रहसितमुखो कोटिवालार्कभामम्,  
विद्युद्वर्णा वरवरधरा भूषणाढ्या मुशोभाम् ।  
बीजापुर सरसिजयुग विभ्र ती स्वर्णपात्रम्,  
भर्त्रावृक्ता मुहुरभयदा महामय्यच्युतश्री, ॥१०४॥
- Colophon इति श्री अथर्वणा रहस्ये उत्तरभागे श्री महालक्ष्मीहृदय सपूर्णम् ।

## १५१५ नवग्रह-स्तोत्र

- Opening : जगद्गुरु नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।  
ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे ॥
- Closing भद्रवाहु महाश्चैव पञ्चमश्रुतकेवली ।  
तेन विद्यानवादाच्च ग्रहशांतिरुदीर्यते ॥२१॥
- Colophon : इति नवग्रह स्तोत्रम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१५१६. नवग्रह-स्तोत्र

Opening : अर्कचन्द्रकुजसौम्य — — — जिनपूजनात् ॥१॥

Closing भद्रबाहुरूवाचं पञ्चमश्रुतकेवली ।

विद्याप्रवादत पूर्वद्ग्रहणाति विधि श्रुता ॥११॥

Colophon इति नवग्रहं शाति स्तोत्रम् ।

१५१७ नवकारदाल

Opening . पहिलो लोक अनोक ए ढाग छै समरौ श्री नवकार

मार पूरय तणो नव निध सिद्ध आन सदा ए ।

महिमा मोयी जास सकट सवि टलै मिलय मनोरथ मपदा ए ॥

Closing : दिन-२ अधिकी संपदा ए मनवटित सुखथाय । नमु न० ।

दया कुशल वाचक बढै धर्ममदिर गुण गाय ॥२३॥ नमु न० ॥

Colophon : इति श्री नवकार चउढालीयो सम्पूर्णम् ।

१५१८ नवकार-स्तोत्र

Opening : हस्तावल वोर्हता पापाद्वा मचराचरस्य जगत ।

मजीवन मत्रराट् ..... ॥१॥

Closing . अन्यच्च ... सुकृति ॥१२॥

Colophon : इति पत्र नमस्कार स्तोत्रम् ।

१५१९ नवकारमत्र-स्तोत्र

Opening . ॐ परमेष्ठी नमस्कार सार नवपदात्मकम् ।

आत्मरक्षाकर वज्र पजराभि स्मराम्यहम् ॥१॥

Closing : यश्चैना कुरुते रक्षा परमेष्ठिपदै. सदा ।  
तस्य न स्याद्भूव व्याधिरधिश्चापि कदाचन ॥८॥

Colophon : इति नवकार मत्र स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७ ६ ।

### १५२० नेमिनाथ आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिन्द की ।  
सब सुखदायक आनन्द कद की ॥ आरती० ॥१॥

Closing : भैरी सरन चरन तुम आयौ ।  
भव भव मै प्रभु होइ साहायो ॥ आरती ॥६॥

Colophon : इति भैरीजी कृत आरती ।

### १५२१ नेमिनाथ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णतया जीर्ण है ।

### १५२२. निजामणि

Opening : सकल जिनेश्वर देव हूमत पाये करिने सेव ।  
निजामणि कहु सार जिन क्षपक तरे ससार ॥१॥

Closing : श्री सकलकीर्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्ति गुणगाउ ।  
ब्रह्म जिनदास भणे सार एनिजामणी भवतार ॥५४॥

Colophon : इति श्री ब्रह्मचारी जिनदास विरचिते क्षपक निजामणि सपूर्णम् ।

### १५२३. निर्वाण-भक्ति

Opening : विबुधपतिखगपनरपति धनदोरगभूत यक्षपतिमहितम् ।  
अतुलसुखविमलनिरूपमशिवमचलमनामय प्राप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Closing . देखे, क्र० १५१२ ।

Colophon : इति निर्वाणभक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१७ ।

जि० २० को०, पृ० २१४ ।

१५२४. निर्वाणकाण्ड

Opening : वीतराग वदौ मदा, भाव सहित सिरनाई ।

कहूँ कांड निर्वाण की भाषा विविध बनाई ।

Closing : सवत् मत्रहमै इक तान आश्विन मुदि दणमी सुविशाल ।

भैया वदन करै त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड समाप्ता ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१५ ।

१५२५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४ ।

Closing : देखे, क्र० १५२४ ।

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड भाषा संपूर्णम् ।

१५२६ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४ ।

Closing : देखे, क्र० १५२४ ।

Colophon : इति श्री भाषा निर्वाणकाण्ड सम्पूर्णम् ।

## १५२७. निर्वणिक्काण्ड

- Opening : देखे, क्र० १५२४ ।  
 Closing : देखे, क्र० १५२४ ।  
 Colophon : इति श्री निर्वणिक्काण्ड भाषा सम्पूर्णम् ।

## १५२८. निर्वणिक्काण्ड

- Opening : देखे, क्र० १५२४ ।  
 Closing : देखे, क्र० १५२४ ।  
 Colophon : इति श्री निर्वणिक्काण्ड भाषा समाप्तम् ।

## १५२९. निर्वणिक्काण्ड

- Opening : देखे क्र० १५२४ ।  
 Closing : देखे, क्र० १५२४ ।  
 Colophon : इति श्री निर्वणिक्काण्ड समाप्तम् ।

## १५३०. निर्वणिक्काण्ड

- Opening : देखे क्र० १५२४ ।  
 Closing : तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वदन कीजै तहाँ ।  
 मन वच काय भाव सिरनाई वदन करो भविक सिरनाई ॥  
 Colophon : इति श्री निर्वणिक्काण्ड भाषा सम्पूर्णम् ।

## १५३१. निर्वणिक्काण्ड

- Opening : अट्टावयम्मि उसहो चपाएवासुपुज्ज जिण-णाहो ।  
 उज्जते णेमिजिणो पावाए णिबुदो महावीरो । १॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotia )

- Closing . जो पट्ट तियाल णिव्वुइ कडपि भाव सुद्धीए ।  
भु जदि णरसुरसुख पच्छा नो लइइ णिव्वाण ॥
- Colophon . इति निर्वाणिकाड समाप्तम् ।  
देखें, जै० मि० भ० प्र० I, क्र० ७१४ ।

१५३२. निर्वाणिकाण्ड

- Opening : देखे क्र० १५३१ ।
- Closing : देखे, क्र० १५३१ ।
- Colophon : इति श्री णिव्वाणिकाड की गाथा सपूर्णम् ।

१५३३. निर्वाणिकाण्ड

- Opening : देखे, क्र० १५३१ ।
- Closing : देखे, क्र० १५३१ ।
- Colophon : इति श्री निर्वाणिकाड समाप्तम् ।

१५३४. निर्वाणिकाण्ड

- Opening . देखे, क्र० १५३१ ।
- Closing . देखे, क्र० १५३१ ।
- Colophon : इति निर्वाणिकाड सपूर्णम् ।

१५३५. निर्वाणिकाण्ड

- Opening . देखे, क्र० १५३१ ।
- Closing . देखे, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणिकाड सम्पूर्णम् ।

१५३६. निर्वाणिकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।

Closing : देखे क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्व्वर्णिकाड प्राकृत मपूर्णम् ।

२५३७ निर्वाणिकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।

Closing देखे क्र० १५३१ ।

Colophon . इति निर्वाणिकाण्ड गाथा समाप्ता ।

१५३८. निर्वाणिकाण्ड

Opening श्री अर्हं त अनंत गुण मिट्ट सूर उवझाय ।

सर्वसाधु के चरण जुग वदो मन वचकाय ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १५२४ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणिकाड भाषा समाप्तम् ।

१५३९ निर्वाणिकाण्ड

Opening . रावण के सुत आदिकुमार,

मुक्त गये रेवा तट सार ।

कोडि पाच अरु लाख पचास,

ते वदी ' ' ॥

Closing . देखे, क्र० १५२४ ।

Colophon : इति निर्व्वर्णिकाड सम्पूर्ण ।





## १५४३. पद

Opening : आज गई थी ममवसरण मा जिनवचनामृत पीवा रे ।  
आवा श्री परमेश्वर वदन कमल छवि हरषे निरपेवा रे  
॥आवा ॥१॥

Closing : परम दयान कृपाल कृपानिधि इतनी अरज सुणीजै  
परम भगति जिनराज तुहारौ अपणौ कर जाणीजै ।३॥ कु० ।

Colophon इति श्री जिन कुसलसूरि जी गीतम् ।

## १५४४. पद

Opening : मिल जाओ . . . गुरु के वचन मोती कान में ।

Closing : सात तिसन आगे आवागवन निवारो ॥ वृ० ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

## १५४५ पद

Opening विना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेकरारी है ॥ विना ॥  
चौरामिलाप मे भटको बहुत मी देहधारी है ।  
मुसीबत जो पड़ी मुझपै प्रभु को खुद निहारी है ॥ विना ॥ ॥१॥

Closing देव त्वदीय . . . तव दिव्यघोषम् ॥४॥

Colophon : इति काव्य संपूर्णम् ।

## १५४६. पद

Opening . देखो मतलब का ससारा, देखो मतलब का ससारा ॥ टेक ॥

Closing : भाग चदमा चद या प्रकार जीव लहै सुख अपार याकौ निहार  
स्याद्वाद की उचरनी  
परनति सब जीवन की तीन भात बरनी ॥ परनति० ॥४॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Colophon : एति पद मरदाटी । भिति भादव घटी : ३४ ननिचरवार  
मरदा १६८८ का । निजन अमोचद आचक पालमग्राम  
मः ।

१५४७ पद

Opening : पुन नजो निरजन नाव मुक्ति पद पाई ।  
दे नवल अग्रजिन जोति मरा नृपमई ॥ देव ॥

Closing : एत नै नई दिनवार मरा नै चार ।  
अर नय पीनमी माहि केरि नटी पाई ॥  
जोई जिनई पू निजमान भावनी पाई ॥ नृम मजी ॥

Colophon : एति पद मरदाटी मगप्लम् । पुन भूमात् भिति भादव नृपे  
११ बार मोमवार नवत १६८८ निरगत अमोचद आचक पाल-  
मग्राम का वासी ।

१५४८ पद

Opening : दिन वारन बोल दुनिया मीनप जमारोपाय जी ॥

Closing : पतरी मान्य जावतार साम मिल गया चोर,  
पतरी बाण भया " ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१५४९ पद

Opening : नेमि सावरो मे गृहारि प्रीत लगी हो ।  
सतु खग दिवारि सील जो न किया जोर जुगती भो तारी लगीहो ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : ... नेम सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।

Colophon : पद सपूर्णम् । सवत् १९१६ मिनि चैत्र वदी १५ । बाबू  
हरलाल जी अग्रवाल गागिलगोत्रस्य पुत्र बाबू बघनलाल जी  
तस्य पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायण जी भार्या मधुवन जीवी पुस्तक  
लिखापित आरे मध्ये सपूर्णम् ।

१५५०. पद

Opening : मुझे है चाव दर्शन का ..... उबारोगे तो क्या होगा ॥

Closing : अधम उ द्वार पूरन के . नीकारोगे तो क्या होगा ॥

Colophon : इति पूर्णम् ।

१५५१. पद

Opening : शरण प्रिया जैओ होसी रघुवीर ॥

Closing : .. मेरी वार क्यो बिलम्ब करो रे ॥

Colophon : नहीं है ।

१५५२ पद

Opening : तारण वाला न कोई ए जी का ।

आप तरे आप ही ए तोरे देखो चित मे जोई ।

लाख बात की बात है चेत न जाने सवसुख होइ ॥ ए जी का ॥१॥

Closing : वादि न क्यो न विचारी चेतन अवहु होहु खरे ।

जव सुघ आवे चेतन प्यारे की तव सव काज सरे ॥ ए चेतन ॥

Colophon : नहीं है ।

१५५३ पद

Opening : किये आराधना तेरी हिये आनद व्यापत है ।

तिहारे दर्शन देखे मकल ही पाप नाशत है ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Slotra )

Closing : दुम्नं हे नर अवतार नहि बार बार धावत — ...  
— ... सब साधुन ने भारी ॥१२॥

Colophon : इति ह्यादयानुप्रेक्षा सम्प्लुताम् ।

विशेष— पद के साथ ही ह्यादयानुप्रेक्षा भी नकलित है ।

१५५८ पद

Opening : जाके वदन पर्यत ही मुक्ति मयानुग्रह गानि ॥ माधुरी ॥

Closing : सबही बाटे भोग नजोग, तैं मिल तैं तजि लीनों जोग ।  
नील वनन निस्त मैं दृढ़ राखि, लग भाषी तेरी उत्तम साखि ।

Colophon : इति ।

१५५५. पद

Opening : कर जोड़ी माय नाए नमो, बेरी बेरी ।  
हे बीर पीठ हरिये मितानी मे अर मेरी ॥ टंक ॥

Closing : प्रभ जी तुम तीन जानघारी,  
मरचे हीने प्रह्लादारी,  
तजी तुम नगुल ली नारी,  
भगे हो गिर के तनधारी,  
धर्मचदनी रामचद गावै जिन शरण लिया,  
हम को छाडि चले सखी री साजना ॥५॥

Colophon . इति सम्पूर्णम् ।

१५५६. पद

Opening : प्रात भयो सुमिरि सुमिरि देव पुण्यकाल जातरे  
चूकत जे औसर ते पीछै पछितात रे ॥ प्रा० ॥

Closing : माधुरी जिनवानि चली री सुनिह,  
विपुलाचल परि वाजै वाजैत भुनक परी मेरे कान ।  
वद्धमान तीर्थङ्कर आयेरी, वदे निज गुर जानि ॥

Colophon : नहीं है ।

१५५७. पद

Opening : सिद्धचक्र की मेवा कीजे, नवपद महीमा धारी है ।  
अरीहत म्बिद्ध श्री उवझाया सकल साधु गुन भारी है ॥

Closing अरज सुना वेहरमान वदो नितमेव रे  
चैनन को तार लेव मत बीसारी टेव रे ॥ प्र० ॥

Colophon : इति पद सम्पूर्णम् ।

१५५८ पद

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतनं दुखहरण तुम्हारावाना है ।  
मत मेरी वार अवार करो मोही देहु विमल कल्याणा है ॥ टैक ॥

Closing हो दीनानाथ अनाथ हित जन दीन अनाथ पुकारी है,  
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोही विथा विस्तारी है,  
ज्यो आप खवर भवि जीवन की तत्काल विथा निरवारी है,  
त्यो वृदावन कर जोर कहैं पशु आज हमारी ही वारी है ॥ टैक ॥

Colophon . इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१५५९. पद

Opening : मोह नीद मेरी डर भ है, भोत दीन न जाया । जीन ॥१॥

Closing अस्पष्ट ।

Colophon : नहीं है ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१५६०. पदसंग्रह

- Opening . किये आराधना तेरी, हिये आनंद वियापत है ।  
तिहारे दरस के देखे सकल ही पाप नासत है ॥१॥
- Closing . केवल मैं सुकल मैं अचल सो मैं अचल मैं हू ।  
जिनद वनस रिधि सिधि मैं मिलि अटल रहूँ ।
- Colophon : इति पदसम्पूर्णम् । मितिमाघ वदी १ ।

१५६१. पदसंग्रह

- Opening . भजन तो बनता नहीं, ध्यान तो लगता नहीं मन तो सैलानी ॥  
खाने को तो अच्छा चाहिये, और ठंडा पानी  
चावने को पान बीडा और पीकदानी  
ऊँचे नीचे महल चाहिये तावु आसमानी ॥
- Closing . तीन खड के नाथ धनी तुम हरि ल्याये जो परनारी ।  
यह कैसे छूटे लगा कलक कुल मे भारी ॥
- Colophon . अनुपलब्ध ।

१५६२ पद-विनती

- Opening : सुमरण ही मैं तारे प्रभु ती ॥ सु० ॥
- Closing : जिनराज छवि मनमोह लियी  
महाराज सबी मन मोह लियी ॥ टेक ॥
- Colophon : अनुपलब्ध ।

१५६३ पद-हजुरी

- Opening धनी धन आज की आई सरे सग काज मो मन के

**Closing :** तीन लोक को रावन अधिपति लक्ष्मण हाथ मरौ ।  
द्यानत की अर्ज वीनती जामन मरन हरी ॥

**Colophon :** पद संपूर्णम् ।

### १५६४. पद होली

**Opening :** सम्मेद शिखर सुखदाई री मोको सम्मेद शिखर सुखदाई ॥ टंक ॥  
वीसतीर्थकर वीस कूट मे कर्म काटि सिद्ध पाई ।  
तिनके चरण कमल नित वदौ मन वच तन लवलाई,  
पाप सब जाई पलाई ॥ १ ॥

**Closing :** चेत चेतन वेचेत तुम्हे ब्रार बार समझाई ।  
बहत शिखर मन वच तन सेती भज ले श्री जिनराई ।  
याहि ते शिव सुख पाई ।  
ऐ चेतन तुम्हे चेत न आई ॥ ६ ॥

**Colophon** इति सम्पूर्णम् ।

### १५६५ पद्मावती अष्टोत्तर शतनाम

**Opening :** नमोनेकातदुर्ध्वामारष्टतदृशभानुवे ।  
जिनाय सकलामीष्ट ध्यायनिःकामधेनवे ।

**Closing :** दिव्य स्तोत्रमिद महासुखकर आरोग्यसप्तकरम्,  
भूतप्रेतपिशाचगक्षसभय विध्वसनिर्णशिनम् ।  
आनरसते ? वाक्षित सुनिलय सर्वेपि मृत्युजय,  
दिव्य व्याप्तकर कवि च जनक स्तोत्र जगन्मगलम् ।

**Colophon** इति पद्मावती अष्टोत्तरशतनामावली संपूर्णम् ।

### १५६६ पद्मावती स्तोत्र

**Opening :** श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटमुकुटताटीदिव्यमाणिक्यमाला,  
ज्योतिर्ज्वालाकराला स्फुरति मुकुटिकाघृष्टपादरविदे ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

व्याघ्रोस्तका सहस्रज्वलदलनशिखा-लोलपाशाकुशासम्,  
आ क्रो ह्री मन्त्ररूपे क्षयितदलमरे रक्ष मा देवि पद्मे ॥१॥

Closing

आर्ह्वान न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।  
पूजा अर्चाम् न जानामि मम क्षमस्व परमेश्वरी ॥३३॥

Colophon .

इति श्री पद्मावती स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२२ ।

जि० २० को०, पृ० २३५ ।

Catg of Skt & Pkt Ms , P. 655

१५६७ पद्मावती-स्तोत्र

Opening

देखे, क्र० १५६६ ।

Closing :

त्व न मम्मरणाद् व्रजति नितरा दुःख भिक्षदावानलम् ॥

Colophon :

इति श्री पद्मावती स्तोत्र संपूर्णम् ।

१५६८ पद्मावती-स्तोत्र

Opening

देखे, क्र० १५६६ ।

Closing

आयुर्वृद्धिकरी जयामयकरी सर्वार्थसिद्धिप्रदा,  
सद्य प्रत्ययकारिणी भगवती पद्मावती ता स्तुवे ॥३६॥

Colophon

इति पद्मावतीस्तोत्र समाप्तम् ।

१५६९ पद्मावती-स्तोत्र

Opening :

देखे, क्र० १५६६ ।

Closing .

पठित भणित गुणित जयविजयरम-निबन्धन परमम्,  
सर्वव्याधिहरस्तोत्र त्रिजगत पद्मावतीस्तोत्रम् ॥३३॥

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्रम् ।  
सन्दर्भ के लिए देखे, क्र० १५६६ ।

### १५७०. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : चचच्चारुणशक्रपूर्णवदना ... सयोज्य हस्तद्वयम् ॥१॥  
Closing : लक्ष्मीवृद्धिकरा जगत्मुखकरा ... पद्मावती पातु व ॥  
Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

### १५७१ पद्मावती-स्तोत्र

Opening : ॐ जयतीभद्रमाताङ्गी सर्वपापप्रणाशनी ।  
सर्वदुःखक्षयकारी महापद्मे नमोनम ॥१॥  
Closing : अपुत्रो लभते पुत्र धनार्थं लभते धनम् ।  
विद्यार्थी लभते विद्या सुखार्थी लभते सुखम् ।  
Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

### १५७२ पद्मावती -स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।  
Closing : भव्या कुर्वन्ति मा पूजा सद्भक्त्याभीष्टनिद्वये ।  
एव पूजाविधिर्लोके जीयादाऽऽचरन्तारकम् ॥  
Colophon : इति इष्टप्रार्थना पुष्पाञ्जलि इति पद्मावतीपूजा समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Stotia )

१५७३. पद्मावती-स्तोत्र

Opening

जिनसासनी हसासनी पदमासनी माता ।  
भुजचारते फलचारदे पद्मावती माता ॥

Closing

जिनधर्म से डिगने का कही आपरे कारन  
तौ लीजियौ उवार मुझे भक्ति उदारन ।  
न कर्म के सजोग सो जिस जोनि मे जावो ।  
तहा दीजयो सम्यक जो शिवधाम को पावो ॥

Colophon .

इति पद्मावती-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२१ ।

१५७४ पद्मावती सहस्रनाम

Opening

प्रणम्य परमा भक्त्या देव्या पादावृज्जम्बिता ।  
नामान्यष्टसहस्राणि वक्षे तद्भक्तिमिद्वये ॥१॥

Closing .

भो ? देवि । भो मात सक्षम्यति प्रीतिफलान्नोति ॥१३५॥

Colophon :

इति पद्मावतीस्तोत्र सहस्रनामस्तवन सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ७२७ ।

दि० जि० ग्र० २०, पृ० १४२ ।

१५७५ पद्मावती-सहस्रनाम

Opening :

देखे, क्र० १५७४ ।

Closing

भो देवी भीमा न क्षम्यति प्रीतिपलायने किम् ।

Colophon

इति श्री पद्मावती सहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

## १५७६. पद्मावती सहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १५७४ ।

Closing : देखे, क्र० १५७४ ।

Colophon . नहीं है ।

## १५७७. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : श्रीमत्पार्श्वेशमानम्य पद्मावत्यामहाश्रिया ।  
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये भक्त्या मनोमुदा ॥१॥

Closing : भक्त्या पठत्विद स्तोत्र हितोपकृतमुत्तमम्,  
आचन्द्रता क जीयात्सद्भुव्यसुखहेतवे ॥३॥

Colophon : इति पद्मावती सहस्रनाम समाप्तः ।

## १५७८. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १५७४ ।

Closing : जयना पूजिता पूज्या पद्मावतीसमन्विता ।  
ते जना सुखमाप्नोति यावत्मेरुजिनालय ॥१४॥

Colophon : इति पद्मावती उद्यापन पचाग पूजा समाप्तम् ।  
लिखित पडित सेवाराम, सवत् १८२७ कुवार कृष्णपक्षे नौमि  
शुक्रदिने लक्ष्मणपुरनगरे कौशलदेशे ।

## १५७९. पद्मावती-विनती

Opening : देखे, क्र० १५७३ ।

Closing : देखें, क्र० १५७३ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Colophon : इति श्री पद्मावती जी की विनती संपूर्णम् ।

१५८०. पद्मावती-विनती

Opening : देखे, क्र० १५७३ ।

Closing : देखे, क्र० १५७३ ।

Colophon : इति पद्मावती जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१५८१. पद्मनदिपचाविशितिका

Opening : हृदय भुवि - " मुषत्यम् ॥

Closing : ताते धर्मकु धारगकर पुण्य का नचय करो ।

Colophon : नहीं हैं ।

१५८२. पंचनमस्कार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७८ ।

Closing : देखें, क्र० १५१८ ।

Colophon : इति पंचनमस्कार-स्तोत्रम् ।

१५८३ पंचनमस्कार

Opening : ॐ नमः सिद्धेश्वर्य । अथ कतिपय पंचपरमेष्ठिना संप्रदाया-  
" " लिख्यते पंचनामादि पदाना पंचपरमेष्ठ " " ।

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : नहीं हैं ।

## १५८४. परमेष्ठीस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५१६ ।  
 Closing : देखे, क्र० १५१६ ।  
 Colophon : इति श्री परमेष्ठीस्तोत्रम् ।

## १५८५ परमानन्द-स्तोत्र

Opening : परमानन्दयुक्त निर्विकार निरःमयम् ।  
 ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितम् ।  
 Closing : काष्ठमध्ये यथा वह्नि शक्तिरूपेण तिष्ठति ।  
 अयमात्मा शरीरेषु यो जानाति स पण्डितः ।  
 Colophon : इति श्री परमाणन्द स्तोत्र समाप्त ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२६ ।

दि० जि० ग्र० २०, पृ० १४४ ।

Catg, of Skt, &amp; Pkt Ms P 665

## १५८६. परमानन्द-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५८५ ।  
 Closing : देखे, क्र० १५८५ ।  
 Colophon : इति श्री परमानन्द स्तोत्र समाप्तम् ।

## १५८७. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३२२ ।  
 Closing : देखे, क्र० १३२२ ।  
 Colophon : इति पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१५८८. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

- Opening . अजरअमरपार वारदुर्वारिवार गलितवहलस्वेद सर्वतत्त्वानुवेदम् ।  
कमठमदविदार भूरीसिद्धान्तसार विगतवृजनयूथ नौमि य  
पार्श्वनाथम् ॥१॥
- Closing . तीरंथपति पारसनाथतिलो भणता यसवासरवासभलो  
मनमित्र सुकोमल होइ मिलो अमची प्रमुपारस आसफलो ॥१॥
- Colophon : इति पार्श्वनाथ चितामणि स्तोत्रम् ।

१५८९. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण है ।

१५९०. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

- Opening : श्यामो वर्णविराजतेतिविमले श्यामोपिसर्पोऽस्मृत ,  
श्यामो मेघ निर्घरोपि च घटाश्याम चरान्निखिलम् ।  
वर्षामूसलधार-वीरमखिल कायोत्सर्गे नता,  
धरणेद्रो पद्मावती युगस्वर श्री पार्श्वनाथ नम ॥१॥
- Closing : इदं स्तोत्र पठेन्नित्यं त्रिसध्य च विशेषतः,  
ग्रहे भवति कल्याण पार्श्वतीर्थं स्तवेन च ॥८॥
- Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५९१. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

- Opening : देखे, न० १३२२ ।
- Closing . देखे न० १३२२ ।

**Colophon :** इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

### १५६२. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

**Opening :** नरेन्द्र फगीन्द्र सुरेन्द्र अधीस सतेन्द्र सुपूज्य नमो नायशीशम् ।  
मुनीन्द्र गणेन्द्र नमो जोरि हाथ नमो देवचिन्तामणि पार्श्व-  
नाथम् ॥

**Closing :** गणधर इद्र न कर सकै तुम विनती भगवान ।  
द्यानत प्रीत निहारिकै कीजै आप समान ॥१०॥

**Colophon** इति पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

### १५६३. पार्श्वनाथ-स्तुति

**Opening :** जाकी देह मरकतमनि सो उद्योत अति आनन पे कोटि काम-  
देव छवि हटकी ।  
अबुज के पत्र सो विशाल दृग लाज भरे मीस पे सरफन मोभा  
हे मुकुट की ॥

**Closing :** तुम तो करना निधि नायक हो मेरी पीर हरो दुखददन की,  
कर जोरि के लालविनोदी कहे वलि जाऊँ मे वामा के  
नदन की ॥

**Colophon :** इति श्री पार्श्वनाथ जी की स्तुति समाप्तम् ।

### १५६४. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

**Opening :** ॐ ह्री मात श्री पद्मावते नमः, ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वना-  
थाय ह्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय - ।

**Closing :** जो निय कठे धारइ कम्पमिम कप्परुछु मारित्य ।  
अविकल्प सोकामिय कप्पण कप्पट्टुमो सुट्ठई ॥२३॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Colophon : इति पार्श्वनाथ मत्र सहित स्तोत्रम् ।

१५६५. थार्श्वनाथाष्टक

Opening . क्षीरजलनिधिनीरनिर्मलमिश्रदिमकरवासयम्,  
धारात्रय भृ गारभरिकरीजन्ममरणविनासनम् ।  
पूज्यभवजीवमौल्यदायक दुरितकल्मषपडनम्,  
श्रीपार्श्वनाथ सुदेवजिनवर मूलनायक वदनम् ।

Closing : नीरचन्दन मूलनायकवदनम् ।

Colophon : इति पार्श्वनाथाष्टकम् समाप्तम् ।

२५६६ पार्श्वनाथाष्टक

Opening : क्षीर पयोनिधि को जल उज्ज्वल निर्मल सीतल सू भरिडारी ।  
पाप मिटे जिन मत्रह के सुधि जिनाम्र पदाबुजधारकरी ॥  
अति सु दर देउ लगाव मनोहर श्रीमूलनायक पार्श्वभरम् ।  
शत इद्र समर्चित पादयुग सुभवाबुधि तारन पापहरम् ॥

Closing दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपागना सेवित पादपद्मम् ।  
श्रीपार्श्वनाथो पुरुषोत्तमो य ददातु सर्वं समीहितानि ॥१६॥

Colophon इत्याष्टक जयमाला समाप्त ।

१५६७. पार्श्वजिन आरती

Opening : स्वामी पार्श्वकुमार हूँ कर वीनती आपीए ।  
तुम त्रिभुवन पतिधार मैं तुम सरन चरन गहिए ॥१॥

Closing : श्री जिनधर्म प्रभाव मनवञ्छित फल पावई ए ।  
मैरो पर होय सहाय अपनी उँड ? निवाहगयै ए ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वजिन आरती ।

### १५६८. प्रत्यगिरा सिद्धि-मंत्र-स्तोत्र

Opening . ॐ ह्रीं या कल्पयतिनो अवध . ब्रह्मणा अपिनिर्णय . ।

Closing , यस्य देवे च मन्त्रे च गुरौ च त्रिषु निर्मला,  
न व्यवच्छिद्य ते भक्तिरतस्य सिद्धिरद्वयतः ॥

Colophon : इति श्री हृद्रजामले पार्वती स्वरसवादे छराजोगमूलपाणि तत्र  
विनिगते प्रत्यगिरा सिद्धमन्त्रस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

### १५६९ ऋषिमण्डल-स्तोत्र

Opening अद्य ताक्षरसतक्षमश्वर व्याप्य यत् त्रिगुणम् ।  
अग्निज्वालासमताद् विन्दुरेखासमन्वितम् ॥१॥

Closing इति स्तोत्र महस्तोत्र स्तुनी तामुतम पदम्,  
पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभते पदमव्ययम् ॥६३॥

Colophon . इति ऋषिमण्डल स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७४६ ।

दि० जि० ग्र० २०, पृ० १४७ ।

Cagt. of Skt & Pkt Ms P 629

### १६००. ऋषिमण्डल-स्तोत्र

Opening ; देखे, क्र० १५६९ ।

Closing देखे, क्र० १५६९ ।

Colophon इति ऋषिमण्डलस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hind. Manuscripts  
( Stotra )

१६०१. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening	देखे, क्र० १५६६ ।
Closing	देखे, क्र० १५६६ ।
Colophon	इति श्री ऋषिमंडलस्तोत्र समाप्तम् ।

१६०२. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening .	देखे क्र० १५६६ ।
Closing	दृष्टेशामर्हतेविवे भवेत्सप्तमके ध्रुव । पदमाप्नोति विश्रस्त परमानन्दसपदा ॥
Colophon .	इति रिपीमंडल स्तोत्र संपूर्णम् ।
विशेष—	इसके साथ एक मंत्र भी लिखा है ।

१६०३. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening .	आद्य पद शिरोरक्षेत्पर रक्षतु मस्तकम् । तृतीय रक्षेन्नेत्रे चतुर्थ रक्षेच्च नासिकाम् ॥६॥
Closing	यावच्चद्रार्यमा च - सद्धिमानाकुलागा ॥
Colophon	अनुपलब्ध ।

१६०४ साधु वदना

Opening :	श्री जिन भाषित भारती सुमिरि आनि मुषराग । कहो मूलगुन साधु के परमिति विशति आठ ॥
Closing :	अट्ठाईस मूलगुन जो पाले निरदोष । सो मुनि कहत बनारसि पावै अविचल मोक्ष ॥
Colophon	इति साधु वदना समाप्ता ।

## १६०५ सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing वागटी जिनसेनेन जिननामानि सार्थकम्,

अष्टाधिकसहस्राणि सर्वाभीष्टकराणि च ॥११॥

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिवाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र समाप्तम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १३८ ।

## १६०६ सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : देखे, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् । सवत् १६८६ का मिति कुवार सुदी लिपीकृत बुज्जीरामेण आरा मध्ये । श्रीरस्तु ।

## १६०७ सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening देखे, क्र० १४६५ ।

Closing देखे, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् ।

## १६०८ सहस्रनाम-स्तवन

Opening : प्रभो भवागभोगेषु ..... शरण्य करुणार्णवम् ।

Closing : एतेषामेकमप्यर्हन्नाम्नामुच्चा • • • जिनायात ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Colophon : इत्याशाधरसूरिकृत जिनसहस्रनामस्तवन समाप्तम् ।

१६०९. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : श्रीमान् स्वयम्भूवृषभ शम्भव शशुरात्मभू ।  
स्वयप्रभ प्रभुर्भोजितविश्वभूरिपुनर्भव ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १६०५ ।  
Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यप्रणीत जिनसहस्रनामस्तवन सम्पूर्णम् ।  
संवत् १८०२ वर्षे मीति आमाढ सुदी ४ मधेनभाउ परताप-  
गढ मध्ये लिखितम् ।

१६१० सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : परम देव परनाम करि, गुरुकौ करौ प्रणाम ।  
वृद्धि बल वरनी ब्रह्म के गहस अठोत्तरनाम ॥  
Closing : सगुन जिभूति वैभवी सेसुखी समबुद्ध ।  
मकल विश्वकर्मा ..... विश्वलोचन शुद्ध ॥  
Colophon : इति श्री दुरनिदलन नाम नवम सतक सपूर्णम् ।

१६११ सहस्रनाम

Opening : त्वम स्वयम् अनादि मित्र अजन्मा सो तिहारे ताई नमस्कार  
होहु । त्वम आपकू आप करि आप विवै उपजाय प्रगट भये  
हो । उपजी है आत्मवृत्ति जिनक अर अचित्य है वृत्ति जिनकी ।  
Closing : भगवान् स्वयम्भू समन्त नरानि के ग्याना जगतपति विहार  
करै ही निनकू चन्द्र के मुख ते ग प्रार्थना के वचन नीमरे ते  
पुनरुक्त समान होते भये । २६ ।  
Colophon : इति श्री भाषा सहस्रनाम सपूर्णम् ।

## १६१२ समन्तभद्र-स्तोत्र

- Opening : नताखडलमौलीना यत्पादनखमडलम ।  
खडेन्दुशेखरीभूत नमस्तस्मै स्वयम्भुवे ॥
- Closing : अहं मिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधूनिह ।  
पचनमस्कारो भवभवे मम सुह धंतु ॥ ॥
- Colophon : इति समन्तभद्रस्तोत्र सपूर्णम् ।

## १६१३ सम्मेदशिखर-स्तुति

- Opening : मै आयो सरणते तेरे ।
- Closing : सो करणी पे नजर न कीजे छीमा करो प्रभु मेरे ।  
दीनबन्धु तुम पतित उवारण सेवक चरण गहो रे । मै आयो ० ॥
- Colophon : इति सम्मेदशिखर की पद सपूर्णम् ।

## १६१४ सम्मेदाचल-स्तोत्र

- Opening : सम्मेदशैल भक्तिभरेण नौमि ॥१॥
- Closing : तीर्थान्गमुत्तम तीर्थ निव्वणिपदमग्रिमम् ।  
स्थानानामुत्तम स्थान सम्मेताद्रे सम नहि ॥२२॥
- Colophon : इति सम्मेदाचलमहात्मस्तोत्र समाप्तम् । श्रीरस्तु सवत् १८२८ वर्षे  
आषाढ द्वितीय वदि अष्टम्या आदित्यवारे लिखत लक्ष्मणपुर-  
मध्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये । शुभ भवतु ।

## १६१५ सन्ध्या

- Opening : वामे बहुत कुशान् प्रणव गायक्या रात्रा कुर्यात् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Closing : — ततः प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।

Colophon : इति सव्या समाप्ता ।

१६१६. शातिजिन-आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी शात जिनद की ।

सत्र सुखदायक आनंद कद की ॥

विश्वसेन राजा जी के नदन ।

दरसन करत मिटै भवफदन ॥

Closing : भैरी जे नर आरती गावै ।

मन वच्छित फल मोई पावै ॥ आरती० ॥

Colophon : इति श्री शाति जिन आरती समाप्तम् ।

१६१७. शाति-स्तुति

Opening : जय जिनवर गुन रतन निधाना, परमपूज ससै तम भाना ।

मोह महागिर वज्र सुयेवा, सुर नर असुर करै तुम सेवा ॥

Closing : हे जिनवर मे जायो ये ही होहु सकल कल्याण अछेही ।

मै निज आतर्माक गुन पावो सिधालै मे सिध सु जावे ॥

Colophon : इति शाति जी पूर्ण भई ।

१६१८. शातिनाथाष्टक

Opening : मरुतगुणनिगान नर्वमन्त्रे समान मदनमद्विगाश मुद्रितकान्त निगस

मरुजकमलमित्र सर्वविधपवित्र अनुपमसुख लक्ष्मी वर्द्धता

शातिनाथ. ॥१॥

Closing . शात्याष्टक सुरनरेण सेव्यमानम्,  
भव्येषु ये परिपठन्ति समस्तनीयम् ।  
ते स्वर्गसौख्यमनुभूय मनुष्यलोके,  
धर्मार्थकाम-ममना-द्यहीयात्तिमान् ॥

Colophon : इति शातिनाथाष्टकम् ।

### १६१९ शारदाष्टक

Opening . ॐकार धुनि सुनि सुनि अरथ गनधर विचारै ।  
रचि आगम उपदिसे भविक अव ससै निवारै ॥  
मो सत्यारथ सारदा तासु भगति उर आनि ।  
छद भुजग प्रयातमै अष्ट कहौ वखानि ॥१॥

Closing . जे हित हेतु बनारसी देहि धर्म उपदेश ।  
ते सब पावहि परम सुख तजि मसार कलेस ॥२॥

Colophon . इति श्री शारदाष्टक समाप्त ।

### १६२० शारदा-स्तुति

Opening . देवी श्रीश्रुतदेवने भगवति त्वत्पादपकेरूहा सपूजयामीधुना ॥

Closing . अरिहत भासिय णमहोनिह सिरसा ॥

Colophon . इति शारदा-मृनि अष्टक-जयमाल समाप्तम् ।

### १६२१. सरस्वती स्तुति

Opening : जन्ममृत्युजराक्षयकारण समयसाग्मह परिपूजये ॥१॥

Closing : मन्त्रकीर्तितानि सस्तुति पठति य मन्त्र मनिमान्नर ।  
विजयकीर्तिपुरो कृतमादरात्सुमतिवत्पलता कलमश्नुते ॥६॥

Colophon : इति सरस्वती-स्तुति ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts  
( Setra )

१६२२. सरस्वती-स्तोत्र

Opening	नमस्ते नारदा देवी जितान्याहुजवातिनीम् । स्वामह प्रादये नाये विद्यादान प्रदति मे ॥१॥
Closing	नमस्वती मया दृष्टे देवी तमनवीचना । तम रक्षत नमामडा योगापुस्तकधारणी ॥१२॥
Colophon	इति नमस्वति-स्तोत्रम् । देवि जी० मि० ८० प० १, पृ० ७६८ ।

१६२३. सरस्वती-स्तोत्र

Opening	जयस्वतीमर्यातिनातिन सरस्वतिस्त्वदागतम् । तद्विहित यज्जनगात्रनामन रजो त्रिपुरा श्रवतीत्यपूर्वनाम् ॥
Closing	कुठाम्नेपि वृहस्पतिप्रभृतयो यस्मिन् भवति भूवम्, तस्मिन् देवि तव स्तुतिव्यतिकरे मदानराके वयम् । तद्वाङ्-चापने मे तदा श्रुतवनामम्माकमेव त्वया, छानव्य मुखरत्नकायम् ही येनाति भक्तियह ॥३१॥
Colophon :	इति श्री मपूर्णम् ।

१६२४ शास्त्र-वनती

Opening	वदो त् शास्त्र जिनेम भाषित महासुर्ग निधान । जा सुनत सब अज्ञान भाजत होत ज्ञान महान ॥
Closing	ते शास्त्र जी मेरे मन वसो, मेरी हरी भी भव भीर ॥६॥
Colophon :	इति शास्त्र की विनती मपूर्णम् ।

## १६२५. सिद्धि-भक्ति

Opening :	सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृति-ममुदयान साधितात्मस्त्रभावान् वदे सिद्धिप्रसिद्धं तदनुपमगुणप्रगटाकृतितुष्ट । सिद्धि, स्वात्मोपलब्धि, प्रगुणगुणगणो छादिदोषापहाराद्योग्यो- पादान् युवत्या दृपद इह यथा हेमभावोपलब्धि ॥१॥
Closing	सुगङ्गमण समाहिमरण जिनगुणसम्पत्ति होउ मज्झ ॥
Colophon .	इति सिद्धभक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७७० ।

जि० २० को०, पृ० ४३८ ।

## १६२६. सीता-विनती

Opening :	प्राणी डारे अरहत का गुणगाय अरे प्राणी, जब लग सास शरीर मे जी ॥१॥
Closing .	रामचन्द्र मुक्ति पद्यास्यातौ सीता सुरपति थाय जी जो नरनारी ए गुण गावै तौ देव ब्रह्म पदपाय जी ।
Colophon :	इति सीता जी की विनती सम्पूर्णम् ।

## १६२७ श्रीपाल-विनती

Opening :	देखे, क्र० ११६३ ।
Closing :	देखे, क्र० ११६३ ।
Colophon .	इति श्रीपालविनती सम्पूर्णम् ।

## १६२८ श्रीपाल-विनती

Opening :	देखें, क्र० ११६३ ।
Closing .	देखें, क्र० ११६३ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Colophon . इति श्रीपाल राजा की विनती सम्पूर्ण ।

१६२६ श्रुतभक्ति

Opening स्तोत्रे सजानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदमिदानी ।  
लोकालोकविलोकन लोलिनमल्लनोकधनानि सदा ॥१॥

Closing : सुगङ्गा गमन समाहिमरण जिगृगुसपत्ति होउ मञ्ज ॥

Colophon : इति श्रुतज्ञान भक्ति ।

देखे, जै० नि० भ० प्र० I, क्र० ७७३ ।

१६३०. स्तोत्र

Opening : प्रभुमन्त्रराजी ... चन्द्रप्रभ देवदेवम् ॥

Closing : सर्वपापविनिर्मुक्ति सुभगोलोकविश्रुतः ।  
वाञ्छित फलमाप्नोति लोकेस्मिन्नात्र सशय ॥

Colophon : इति श्री शारदायास्तोत्रम् ।

१६३१. स्थापना आरती

Opening सुखयस्यलमष्टि त्रिमजिणवर मुरणरफणपति सेविय ।  
तिम चारित्रमयलधम्मदपर सामय पदवरसेविय ॥१॥

Closing इह भविय णमावहो शिवमुद्दयावहो चारित्रहजयमालवरा,  
इह भवि उहहरहो परभवमुलहो नासय कम्मठ्ठ नियरा

॥२५॥

Colophon इति श्री तेरह प्रकार आरती समाप्तम् ।

## १६३२. स्तुति

- Opening :** हरु प्रभात सुणे नित उठत हे, दर्शन प्रभु चरनन चित चहत हे ।  
वारवकि भई छार रहेप के चाव दर्शन प्रचिभूत मे घरे ॥१॥
- Closing :** यह भजन भये सपूर्ण सीता के वनवास की ।  
हरि कही धरी प्रीत प्रभुचरन ए चित लार्ड के ॥
- Colophon** इति श्रावण शुक्ल स० १९६५ शनिवार हरीदास ने आरा मे  
लिखे है ।

## १६३३. सुप्रभात-स्तोत्र

- Opening :** श्री नाभिनदन जिनोजितसभवेस देवोभिनदन जिनो सुमति।  
जिनेन्द्र ।  
पद्मप्रभो प्रणतदेव-सुपाश्वर्चनाथ चद्रप्रभोस्तु सतत मम सुप्रभातम्  
॥१॥
- Closing :** श्रीपाश्वर्नाथपरमार्थविदाम्वरेण .... कव्य वस्तुविशदं  
जिन सुप्रभातम् ॥४॥
- Colophon .** इति सुप्रभातस्तोत्रम् ।

## १६३४. सूर्यसहस्रनाम

- Opening .** तुहिण किरण विष पोसयत्यसुमाली,  
जयति कमललक्ष्मी भाषयत्यसुमाली ।  
रजतविरद भीतिमोदयन् कोकवृ दम्,  
मुखरनरनागे सर्वदा वदनीये ॥
- Closing :** तेजोनिधिवृहतेहा वृहत्कीर्तिवृहस्पति ।  
अहिमान् श्रीमान् श्री सूर्यदेव नमोस्तुते ॥
- Colophon :** इति श्री सूर्यसहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

देखें, दि० जि० ग० २०, पृ० १५२ ।

जि० २० को, पृ० ४५२ ।

१६३५. स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : येन स्वयमोद्यमेन लोता आन्वागिता केचन वित्तकार्ये ।  
पद्मोद्धिता केचन मोक्षमार्गे तमादिनाय प्रणमामि नित्यम् ॥१॥

Closing : वो धर्मं दशधा करोति पूरुष स्त्रीवाकृतपरस्मृतम्,  
नर्तनं ध्वनिनभनं श्रिकरणं व्यापागुध्यानिषम् ।  
भव्यानां जयमानया विमलया पुष्पाजनिदण्डयन्,  
नित्यं नश्रियमातनीमि मकलं स्वर्गापवर्गस्थिते ॥

Colophon : इति श्री स्वयम्भू गमाप्तम् ।

देखें, जै० नि० ग० २०, क्र० ७८३ ।

१६३६. स्वम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३५ ।

Closing : देखें, क्र० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयम्भू गमाप्तम् ।

१६३७. स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३५ ।

Closing : देखें, क्र० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयम्भू ससृष्टत सम्पूर्णम् ।

## १६३८. स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening :	मानस्तम्भासरासि	पीठिकाग्रे स्वयम्भू ॥
Closing .	ये सस्तुता विविधभक्तिः	विमला कमला जिनेन्द्रा ॥
Colophon :	अनुपलब्ध ।	

देखे, जे० सि० भ० प० I क्र० ७८४ ।

## १६३९. विनती

Opening :	करुना ले जिनराज हमारी करुना ले महाराज । टेक ॥
Closing :	इति जितमाला अमल रसाला जो भव्य जन कठ घरइ । .. सुर शिव मुन्दर बरइ ॥
Colophon :	इति पूजन समाप्ता ।
विशेष —	ग्रन्थ मे पूजा भी सकलित है ।

## १६४०. विनती

Opening .	हो दीन बधु श्रीपति करुनानिधान जी । यह मेरी विथा क्यों न हरौ बार क्या लगी ॥१॥
Closing :	करुना निधानवान को अब क्यों न निहारे । दानी अनतदान के दाता हौ सम्हारो ॥ वृषचदनदवृ द को उपसर्ग निवारो । ससार विषममार से अवपार उतागो ॥
Colophon :	इति विनती सम्पूर्णम् ।

## १६४१. विनती

Opening :	देखे, क्र० १६४० ।
-----------	-------------------

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Closing : देछे, न० १६४० ।  
Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१६४२. विनती

Opening : त्रिभुवनपति स्वामी जी कल्पनिधानामी जी,  
सुनो अनरजामी मेरी विनती जी ॥१॥

Closing : दृष्टन देहु निकास नाधन को रख लीजै ।  
बिनवै भूदरदाग ए प्रभु टोल न कीजै ॥१२॥

Colophon : इति संपूर्णम् ।

१६४३. विनती

Opening : तारि तारि जिनराज मनवच तन विनती करो ।  
मैं जग बहू दु ख पाय मुख ते किम वरनन करो ॥१॥

Closing : ज्यो जानै त्यो तारि विरद आपनो जान कै ।  
हम कितना हि निहार टेक पकर तारो सही ॥१०॥

Colophon : इति विनती सोरठा सम्पूर्णम् ।

१६४४. विनती

Opening : भवविघन विनाशनो दुरीय नरासनो अवसानै सरण तु ही ।  
जिन मासन जा-यो इन्द्रज मान्यो पहिलै पूज तुमरि करौ ॥

Closing : सदा जिनविव धरै निज भाल सदा जिन सेणैकतरिर्महात्मा ।  
नज्ञानमागर त्रिवद्धनचन्द्रमूर्ति जीमाञ्जिनेद्रवरक प्रविराजमान ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

## १६४५. विनती

Opening . श्रीपतिजिनवर करुणायतन दु खहरण तुम्हारा बाना है ।  
मत मेरी बार अवार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है ॥

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हि -- - प्रभु आज हमारी बारी है ।  
॥ टेक ॥

Colophon . इति विनती सम्पूर्णम् ।

## १६४६. विनती

Opening : चलो रे मनवा मागीतु गी दर्शनकरस्या प्रभु जी का ।  
सिद्धक्षेत्र की करो वदना दुख टलि जावै दुरगति का ॥  
विषम घाट पहाड विच परवत ऊँचा माँगीतु गी का ।  
इस पर मुनिवर मुक्ति गया है कोड निन्यानव गिनती का  
॥ चलो रे ॥

Closing : उगणीसै की साल जैठ सुदि करी जातरा पचसका ।  
हरषकीर्ति कहै सुद्ध भाव सो मेरो चरण जिनेश्वर का । चलो ।  
॥१३॥

Colophon : इति मागीतु गी की विनती सपूर्णम् ।

## १६४७. विनती

Opening : तुम तरणतारण भवनिवारण भविक मेन आनन्दनम् ।  
श्री नाभिनन्दन जगत बंदन आदिनाथ निरेजनम् ॥

Closing : मैं अधीन परवस पर विक्के तुम्हारे हाथ ।  
दतनो करिको जानियै लाख बात की बात ॥

Colophon : इति श्री विनती सपूर्णम् ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१६४८ विनती

Opening : देखे, क्र० १६४२ ।

Closing : भव भव सुख पावै जी, प्रभु हो हूँ सहाइ जी ।  
पार उतारी वो जी ॥

Colodhon : विनती सम्पूर्णम् ।

१६४९ विनती

Opening : हो दीनवन्द्यु श्रीपती करुना निधान जी  
यह मेरी बोधा क्यो न हरो ..... ॥ टेक ॥

Closing : करुनानिधानवान को — अब पार उतारो ॥ टेक ॥

Colophon : इति विनती सपूर्णम् ।

१६५०. विनती

Opening देखे, क्र० १६४२ ।

Closing देखे, क्र० १६४२ ।

Colophon इति भूदरदास कृत विनती समाप्तम् ।

१६५१ विनती

Opening : देखे, क्र० १६४० ।

Closing : तेरे दास निहारै नीरमै कीजिए जी नर नारी गावै जी ।  
भव-भव सुख पावै जी, प्रभु होउ सहाई पार उतारीए जी ।

Colophon ; इति विनती सपूर्णम् ।

## १६५२. विनती त्रिभुवन स्वामी

Opening : देखे, क्र० १६४२ ।

Closing : नर नारी गावै जी, भव भव सुखपावे जी ।  
प्रभु होहु सहाई जी, पार उतारिए जी ॥ १६ ॥

Colophon : इति विनती संपूर्णम् ।

## १६५३. विषापहार-स्तोत्र

Opening : स्वामिस्थित सर्वगत ममम्न व्यापारवेदीत्रिनिवृत्तग ।  
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्य पायादपायात्पुरुष पुराण, ॥

Closing : वितरति विहितार्था सुखानियगो धनजय च ॥

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

देखे, जै. सि० भ० ग्र० I. क्र० ७८५ ।

## १६५४ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनजयविरचिते श्री विषापहारस्तोत्र समाप्त ।

## १६५५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

१६५६. विषापहार-स्तोत्र

- Opening देखे, क्र० १६५३ ।
- Closing : नि शेषत्रिदशेन्द्रशेखरशिखा रत्नप्रदीपावली,  
साद्रीभूतमृगेन्द्रविष्टरतटी माणिक्य दीपावली ।  
क्वेय श्री क्वचनिस्पृहत्वमिदमिखानि यशो धनजय च ॥४०
- Colophon इति श्री धनजयकृत विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

१६५७ विषापहार-स्तोत्र

- Opening . देखे, क्र० १६५३ ।
- Closing : — येन तेन प्रकारेण विहित। पुन. त्वयि विषये  
नुति विषया नमस्कारपूर्वकस्तुति युक्ता. च भक्ति विद्यते ॥४०॥
- Colophon . इति श्री विषापहार स्तोत्रस्य बालावबोध टीका सपूर्णम् ।

१६५८. विषापहार-स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १६५३ ।
- Closing : देखे, क्र० १६५३ ।
- Colophon : इति श्री धनजयसूरि विरचित विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५९. विषापहार-स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १६५३ ।
- Closing : देखे, क्र० १६५३
- Colophon . इति विषापहार. ।

## १६६० विषापहार स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १६५३ ।  
 Closing : देखे, क्र० १६५३ ।  
 Colophon : इति विषापहार स्तवन समाप्तम् ।

## १६६१ विषापहार-स्तोत्र

- Opening : विश्वनाथ विमल गुन विरहमान वदौ गुनवीस ।  
 ब्रह्मा विस्तु गनपति सुन्दरी वरु दानी देहू मोहि वागेसुरी ॥  
 Closing : भय मजन रजन जगत विषापहार अभिराम ।  
 ससै तजि सुमिरौ सदा सासी जिनेश्वर नाम ॥  
 Colophon : इति विषापहार सपूर्णम् ।

## १६६२. विषापहार-स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १६६१ ।  
 Closing : देखे, क्र० १६६१ ।  
 Colophon : इति श्री विषापहार भाषा समाप्तम् ।

## १६६३. विषापहार-स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १६६१ ।  
 Closing : देखे, क्र० १६६१ ।  
 Colophon : इति श्री विषापहार स्तुति सपूर्णम् ।

## १६६४. विषापहार-स्तोत्र

- Opening : देखे, क्र० १६६१ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Stotra )

Closing : देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र भाषा सम्पूर्णम् ।

१६६५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६६१ ।

Closing : देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति विषापहार स्तोत्र भाषा सम्पूर्णम् ।

१६६६. विषापहार-स्तोत्र

Opening : आतमलीन अनत गुन, स्वामी परमानन्द ॥

सुर नर पूजित तासु पद वदो ऋषभजिनद ॥

Closing : भयभजन गजन दुरित विषापहार सुभाव ।

वैरिन मे सुमिरौ सदा श्री जिनवर के नाम ॥

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६७ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६६६ ।

Closing : देखे, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६८. रुहत्सहस्रनाम

Opening : स्वयंभुवे नमः ..... चित्तवृत्तये ॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

**Closing :** इतिप्रबुद्धतत्त्वस्य स्वयमर्तुजिगीयत ।  
पुनरुत्तरावाच प्रादुरासन जितक्रमो ॥

**Colophon :** इति श्री बृहत् सहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१६६९ बृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

**Opening :** देखे, क्र० १६३८ ।

**Closing .** अनादि के कर्म कलक पक धाई चिद्विलायकी  
अपुनर्भव की लक्ष्मी देह इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

**Colophon** इति श्री स्वामी समत भद्र पर्माहिताचार्य विरचित बृहत् स्वयम्भू  
सम्पूर्णम् ।

१६७०. बृहत्स्वयम्भू-स्तोत्र

**Opening :** देखे, क्र० १६३८ ।

**Closing :** देखे, क्र० १६६९ ।

**Colophon :** इति श्री स्वामी समतभद्र पर्माहिताचार्य विरचित बृहत्स्वयम्भूस्तोत्र  
सम्पूर्णम् ।

१६७१. बृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

**Opening :** देखे, क्र० १६३८ ।

**Closing :** ये समुताविविधभक्तिसमतभद्रै रिरा त्रिमिविनतमौलि मणिप्रभाभिः ।  
उद्योतिताघ्नियुगल सकलप्रबोधास्तेनोदशतु विमला कमला-  
जिनेन्द्राः ॥

**Colophon :** इति स्वयम्भू वडा समतभद्र कृत समाप्ता ।

देखें, जैन सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८४ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramṣa & Hindi Manuscripts  
( Pujā-Pāṭha-Vidhāna )

१६७२. योग-भक्ति

- Opening : योसामि गणधरराण अणयोगाण गुणेहि तच्चेहि ।  
अजलि मउ निय हथो अभिवदतो सविभवेण ॥१॥
- Closing : इछामि भते जोगभक्ति फाउ सगो . . सम्पत्ति होउ मज्झ ।
- Colophon : इति योग-भक्ति ।  
देव्रे, जै० सि० भ० म० I, क्र० ८०० ।

१६७३ अभिषेक विधि

- Opening : श्रीमन् मदिरमुन्दरे शुचिजलैर्दौते च दक्षिणै ,  
पीठे मुक्तियरं निधाय रत्नितत्वत्पादपुष्पमञ्जा ।  
इन्द्रोह निजभूषणार्थममल यज्ञोपवीत दधे,  
मुद्राककणसेपगयपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥
- Closing : वरुनदेवमाह्वानयामहे स्वाहा ॥५॥ पवन .. ।
- Colophon : अनुपलब्ध ।

१६७४. आदिनाथ-पूजा

- Opening : परमपूज्यवृषभेस स्वयभूदेवजू,  
पिता नाभि मरुदेवि करै सुर सेवजू ।  
कनक वरन तन तु ग धनुष पन सत तनो,  
वृषा सिंधु त आइ तिष्ठ मम दुख हनो ।
- Closing : इत्थ श्री जिनराजकर्ममहिमास्तोत्र पठेद्य पुमान्,  
प्रात प्रातरुदानभावसहित सम्पक्वतशुध्याश्रितः ।  
योगीदैश्वरकाल तस्सतपसा यत्प्राप्यते तत्सुखम्,

तत्प्राप्नोति पर पद स्मृतिमानानन्दमुद्राकित् ॥

Colophon : इति चमत्कार आदिनाथ स्वामी पूजा सम्पूर्णम् ।

### १६७५ आदिनाथ-पूजा

Opening : सुपद्मदुपमतिथि भेटि कर्म प्रभु थापहि, नृप पद तजि वैराग्य  
भये प्रभु आपही ।

ऐसो आदि जिनेश आदि तीर्थ करा, आह्वाहन विधि कर  
त्रिविध नमके परा ॥

Closing यह निज सार अपार जो भविजन कठघरिई ।  
तेनिजर मरणावलि नासि भवावलि रामचद्र सिव तियपाई ॥

Colophon : इति श्री आदिनाथ जी की पूजा समाप्तम् ।

### १६७६. आदित्यवार-पूजा

Opening : इक्ष्वाकुवमकुल मङ्गणअश्वसेनो तद्बल्लभ, प्रतिवताजिनवामदेवी ।  
तस्या जिन विमलभूति सुरेन्द्रवद्य त्रैलोक्यनाथ जिनपार्श्वपद  
नमामि ॥१॥

Closing : इति रवि व्रत पूजा सुरपद पूजा जे करते नव वर्ष सही ।  
मनवचक्रमघावहि सो सुरपद पावही पार्श्वनाथ 'फल' देतसही ॥

Colophon : इति रविव्रत पूजा समाप्तम् ।

### १६७७. आदित्यवार-उद्घाटन

Opening : श्री गार्वनाथ प्रणमामि नित्य, सुरसुरै पूजितपीठवद्यम् ।  
रविव्रतोद्घाटनक प्रवक्ष्ये भव्याय नून महतादरेण ॥१॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramṣa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

» Closing : रविन्नतमहापूजाश्लोकपिडीकृताधुना ।  
पचात्माविने मया विप्र लेपकं चित्ततर्पका ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषणविरचिते । आदित्यवार-व्रत  
उद्यापन विधि पूजा समाप्ता ।

१६७८. अकृत्रिम-चैत्यायल आरती

Opening : नरुल सुहकारण दुगऽवारण . . . सुरमुन्दरम् ।

Closing : इह णदीमर भावऊ- पूज्य गुहावऊ ~ . चद्रकीर्ति सुहावऊ ॥

Co'ophon . इति अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल समाप्तम् ।

१६७९. अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य

Opening : वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नदीश्वरे यानि च मदिरेषु ।  
यावन्ति चैत्याययतनानिलोके, सर्वानि वदे जिनपु गवानाम् ।  
अवनितलगताना कृत्तिमाकृत्तिमाना,वनभवनगताना दिव्यवैमानिकानण  
इहमनुजकृताना देवाराजाचिताना जिनवरमिलयाना भावतोह  
स्मरामि ॥१॥

Closing : द्यौ कुन्देन्दु ~ ~ ~ प्रयच्छतुन ॥५॥

Colophon : इति अकृत्तिमचैत्यालय जयमाल सम्पूर्णम् ॥

१६८०. अकृत्रिम-चैत्यालय-पूजा

Opening . देखे, क्र० १६७९ ।

Closing . भव णालय चालीसा वतरदेवाणहुति वत्तीसा ।  
कप्पामरचउवीसा चन्दो सूरु णरो तिरिओ ॥

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालये जिनविंशेभ्यो नम ।

## १६८१. अनन्तजिन-पूजा

Opening :	क्षेत्रपालाय यज्ञस्मिन् ..... विघ्नविनाशनम् ॥
Closing :	भगतन की प्रणिपात करै सर्वजीवन काँ काज सरैया । नरनारी पूजित क्षेत्रपाल मदा मनवाछित आस भरैया ॥
Colophon :	इति कवित ।

## १६८२ अनन्तपूजा-विधि

Opening :	एकादशी कै दिन पूजन कर व्रत थापन करै तथा आचमन करै तथा द्वादशी के दिन ऐसे ही करै ।
Closing	जीव समाप्ता ॥१४॥ अजीव ॥१४॥ गुणस्थान ॥१४॥ मार्ग ॥१४॥ भूत ॥१४॥ रज्जू ॥१४॥ पूर्व ॥१४॥ प्रकीर्णक ॥१४॥ मल ॥१४॥ ग्रथ ॥१४॥ कुलकर ॥१४॥ नदी ॥१४॥ प्रकृत ॥१४॥ रत्न ॥१४॥ चतुर्थदश पदार्थ चितन व्योरा ।
Colophon :	इति अनन्तपूजन विधि ।

देखै, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८०४ ।

## १६८३. अनन्त पूजा विधि

Opening :	भाद्रपद शुद्ध त्रयोदशी से रात्रि अनन्तव्रतद्धौइजे, मायास्तान करावे, शुभ्रवस्त्रनेसावे अष्टदलकमलकरावे ।
Closing :	ॐ ह्री श्री यसमस्मैददत्तानतफल नित्य वेषाचे मन्त्र ।
Colophon :	इति अनन्तपूजनविधि सम्पूर्णम् ।
विशेष—	५१।२३ मे यज्ञोपवीत मन्त्र हैं, जो इसीका अंग है ।

## १६८४. अरिहत-दक्षिणी

Opening :	गंगा सिन्धु के निर्मल नीरा स्वर्णभृगार बरविहीरा । जन्म मृत्यु जराकृत द्वार ॥
-----------	---

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing : अस्पष्ट—( जीर्ण )

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६८५. अष्टवीजाक्षर-पूजा

Opening : पूर्वपत्रे ऐं दक्षिणपत्रे श्री पश्चिमपत्रे ह्री उत्तरपत्रे वली  
ईशानपत्रे क्री अग्नियपत्रे ड्री नैऋत्यपत्रे क्री पवनपत्रे  
जौं कुबेरपत्रे यं इत्यादि अष्टवीजाक्षरस्थापनम् ।

Closing : विद्यादेव्या इमा ... कामान् कुरुष्व परान् ॥१०॥

Colophon : इति पूर्णार्घं बृहत् द्रव्येन अर्घं ददात् ।  
इति षोडशविद्यादेवता पूजनविधानम् ।

१६८६. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : सवीपडाहूय ... प्रतिमा समस्ता ॥

Closing : यावति जिनचैत्यानि विद्य ते भुवनत्रये ।  
तावति सतत भक्त्या त्रि. परीत्य न माम्यहम् ॥१८॥

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा समाप्ता ।

देखें, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १६० ।

जि० २० को०, पृ० २० ।

१६८७. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६८६ ।

Closing : देखें, क्र० १६८६ ।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा सपूर्णम् ।

## १६८८. अष्टान्हिका-पूजा

- Opening : आहूय सवौषडिति प्रणीत्वा ताम्यां प्रतिष्ठाप्य सुनिष्ठितार्थान् ।  
वषट् पदेनैव च सन्निधाय नदीश्वरद्वीपजिनान्समच्चै ॥१॥
- Closing : आरतिय जोवइ कम्मइ धोवइ सग्गाववग्गह लहु लहइ ।  
ज जमण भावइ त सुह पावइ दीणु विकासुण भासुइ ॥१८॥
- Colophon : इति अष्टान्हिकाया पूजा समाप्ता ।  
देखे दि० जि० ग्र० २०, पृ० १६१ ।

## १६८९. अष्टान्हिका-पूजा

- Opening : मध्ये मडपमालिख्येद्वरतरे — • तदच्चर्चा ततः ॥१॥
- Closing : आयुर्दैर्घ्यकरीवपूर्व ... - भवता देषाईतामर्हता ॥
- Colophon : इति श्री नदीश्वर पक्तिवध पूजा समाप्ता ।

## १६९०. अष्टान्हिका-पूजा

- Opening : तीर्थोदकं भणिसुवर्णघटोष्पिनीतैः,  
पीठं पवित्रवपुषै प्रविकल्पितैर्ह्यै ।  
लक्ष्मीसुता गहनबीजविदपंगभैः,  
सरथापयामि भुवनाधिपतिं जिनेन्द्रम् ॥
- Closing : नदीश्वर जिन घास प्रतिमा महिमा को कहै ।  
द्यानत लीन्हो नाम यहीभक्ति शिव सुख करै ॥१०॥
- Colophon : इति नदीश्वर द्वीप अष्टान्हिका जी की पूजा जययाला भाषा  
मस्कृत सहित सम्पूर्णम् ।

## १६९१. अठ्ठाईपूजा

- Opening : सरव पख मैं बडो अठ्ठाई परव है, १

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

नदीश्वर सुर जाहि लेयबहु दरव हैं ।  
हमै सकति सो नाहि इहा कर थापना ।  
पूजै जिण ग्रह प्रतिमा है हित आपना ॥

Closing : नदीश्वरजिनघाम प्रतिमा महिमा को कहै ।  
द्यानत लीनौ नाम यही भगत सब सुख कर्त ॥१९॥

Colophon : इति श्री अढाई पूजा जी समाप्तम् ।  
१६९२. बाहुबलि-पूजा

Opening : बाहुमान जो षडवली चक्रेन की,  
लखी अनित समार सवे विच्छेद की ।  
धरो दिगवर भेष शान्तमुद्रा वरी,  
घातअघात जेहान ठय थिर लक्ष्मीवरी ॥

Closing : पूजन पचकुमार तणी जे नरकरै,  
हरमत हरवलचक्रसकपद ते धरे ।  
सुरगादिक सुखभोग तिरथपद पायही,  
धर्म अर्थलहिकाम मोक्ष सुरपायही ॥

Colophon : इति श्री पचकुमार की पूजन सम्पन्नम् ।  
विशेष— इसमे बाहुबलि पूजन और पचकुमार पूजन दोनो हैं ।

१६९३. बाहुबलि-मुनि-पूजा

Opennig देखें, क्र० १६९२ ।

Closing : जे नर पढ़े विसाल मनोरत सुद्धसो ।  
ते पावै थिर वास छूटै ससार सो ॥  
ऐसो जान महान जैन जिन धर्म की ।  
देय अक्षै भडार ध्याऊ अलख ध्यान को ॥२४॥

Colophon : इति श्री बाहुबल मुनी की पूजा सम्पूर्णम् ।

## १६६४. भैरो-राग

- Opening :** भली कीनी भौर भयै ।  
आए हो भवन हमारै, भली कीनी ये ॥
- Closing :** आस करै उरगदास, नाथ चरण तुम्हारे ॥ भली० ॥
- Colophon :** इति भैरौ ।

## १६६५. बीस-तीर्थ कर-अध्यै

- Opening :** श्री मंदिर आदि जिनद बीसो मुखकारी ।  
सुविदेह माँहि अभिनद पूजत नरनारी ॥  
थिति सभवसरन के माँहि त्रिभुवन जन तारक ।  
हम पूज अर्ध चढाय आनन्द के कारक ॥
- Closing :** इह वर्त्तमान सुखकर दक्षिण देस महा,  
तह श्री गुर सुगुन भडार राजन हे सुमहा ।  
वसुदेव जथो चितल्याय हे त्रिभुवन स्वामी,  
हय पूजन पद सिरनाय कीजे सिवगामी ॥१॥
- Colophon :** इति ।

## १६६६. बीस-विरहमान-पूजा

- Opening :** पूर्वापर विदेहेषु विद्यमानजिनेश्वरा ।  
स्थापयामि अहमत्र सुद्ध सम्पत्तहेतवे ॥१॥
- Closing :** श्रीमदिरा दिप देवमजितवीर्यमुत्तमम् ।  
भूयात् भव्यमता सौख्य स्वर्गमुन्नितसुखप्रदम् ॥
- Colophon :** इति श्री बीसविरहमान पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६९७. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६९६ ।

Closing : देखें, क्र० १६९६ ।

Colophon : इति श्री वीरहमान पूजा समाप्तम् ।

१६९८. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे क्र० १६९६ ।

Closing : ये बीस तीर्थ करन की सेव तुम्हारी कीजिये ।  
कर जोरि सेवक विनवै मुक्ति श्रीफल लीजिए ॥

Colophon : इति श्री बीस विरहमान पूजा समाप्ता ।

१६९९ बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें क्र० १६९६ ।

Closing : देखे, क्र० १६९६ ।

Colophon : इति श्री बीस विरहमान पूजा सपूर्णम् ।

१७००. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६९६ ।

Closing : तुमकी पूजा वदना करै घन्य नर सोय ।  
सारदा हिरदै जो घरै सो भी घरमी होय ॥६॥

Colophon : इति श्रीबीसविरहमान पूजा जी समाप्तम् ।

## १७०१. बीस-विद्यमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६६ ।

Closing : देखें, क्र० १६७६ ।

Colophon : इति श्री बीसविरहमान पूजा समाप्तम् ।

## १७०२. बीस-तीर्थंकर-जकड़ी

Opening : श्री मंदरजिण वदस्पा जग सारहो, पुंडरीकजिणराय ।  
जवूदीप विदेह मै जगनार हो मेरि पूरवदिसिभाय ॥

Closing : सातमा जिन समयगामी मोरिव जेसु दिगवरा ।  
भावना भावै हरष सेती होइ मुक्ति स्वयवरा ॥

Colophon : इति बीस विरहमान की जकड़ी सम्पूर्णम् ।

## १७०३. बीस-विरहमान-आरती

Opening : प्रथम श्रीमदर स्वामी जुगमघर त्रिभुवण धारिए ॥१॥

Closing : हम बीस जिनवर सघ सुखकर सेव तुम्हारी कीजिये ।  
करि जोर सेवक वीनर्वै प्रभु मणवच्छित फल दीजिये ॥

Colophon : इति बीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

## १७०४. बीसतीर्थंकर-जयमाला

Opening : देखे, क्र० १७०३ ।

Closing : प्रभुजी आनद सदेस घ्यावो शिव सुख पाइये ।  
एबीस जिने सुर सग जिनकी सेव नित प्रति कीजिये ॥१॥  
करि जोर शक्ती करे विनती मुक्तिफल पाइरे ॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Colophon : इति बीस तीर्थङ्कर की जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७०५. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : सुभ अतिसय चउतीस प्रतिहारज अधिकाही ।  
अनतचतुष्टययुक्त दोष अष्टादस नाही ॥  
अह्वानन विधि कहूँ नाय सिध सुध करि मनही ।  
लोक मोह तम हरत दीप अद्भुत ससि जिनही ॥

Closing : वसुद्रव्य लै सुधभावतै जजूँ तिहारे पाय ।  
देह देव शिव मुझ अवै अही चददुतिराय ॥१४॥

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभु जी की पूजा सम्पूर्णम् ।

१७०६. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : वरचरित चार गुन अकलघार भवपार वसे हैं ॥  
हे त्रिजगतार सहज ही उदार शिवनार रसै है ॥

Closing : चद जिनन्द जजन्त तन्त सुख सेवति होई ।  
चद जिनन्द जजन्त निराकुल दद न कोई ॥  
चद जिनन्द जजन्त चहन्त सबै मिलि जावै ।  
चद जिनन्द जजन्त अजित नित हर्ष बढ़ावै ॥

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभोजिनदेव की पूजा सम्पूर्णम् ।

१७०७ चारित्रपूजा

Opening : देवश्रुतगुरुनत्वा कृत्वा शुद्धिमहात्मनः ।  
सम्यक्-चारित्र-रत्नम्य वध्ये सक्षेपतोर्चनम् ॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah

**Closing :** अधउ आलस्सउ पगुल वि जिणवर भासियय ।

तिण तई विणु मुत्ति ण भणइ जणिपु ॥

**Colophon :** इति चारित्रपूजा ।

देखे, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १६३ ।

### १७०८ चारित्रपूजा

**Opening .** देखे, क्र० १७०७ ।

**Closing :** विरम-विरम मगान्मुं च मु च प्रपचम ।  
विसृजमोहसृजब विद्धि विद्धि स्वतत्त्वम् ।

कलय कलय वृत्त पश्य पश्य स्वरूपम्,  
कुरु कुरु पुरुषार्थ निवृत्तानदहेतु ॥१४॥

**Colophon :** इति पडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते चारित्रपूजा समाप्ता ।

### १७०९. चारित्रपूजा

**Opening .** देखे, क्र० १७०७ ।

**Closing** देखे, क्र० १७०७ ।

**Colophon :** इति श्री पडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते । रत्नत्रयपूजा जी  
समाप्तम् ।

### १७१०. चतुर्विंशति-यक्षिणी-पूजा

**Opening :** चतुर्विंशतियक्षेशान् पूज्यामि सदादरात् ।  
आह्वानयामि तिष्ठेत्र जिनयज्ञे स्थिरा भवेत् ॥१॥

**Closing :** ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिकुलदेव्याय जिनसासने सर्वविघ्नोपशान्त्यर्थं  
जिनयज्ञविधाने पूर्णार्घं दद्यात् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhana )

Colophon इति चतुर्विंशतियक्षिणी पूजा ।

१७११. चतुर्विंशति मातृका पूजा

Opening : आद्य तीर्थं कृता सर्वा सर्वविधप्रशातये,  
प्रणम्य शिरसा जैन स्थापना प्रवदाम्यहम् ॥१॥

Closing . दिव्यै नीरैश्चदनैरक्षतैस्तैः कृतोय सुभोगैः ॥

Colophon . इति चतुर्विंशतिजिनमातृका पूजनविधानम् ।

१७१२. चतुर्विंशति-तीर्थ कर-पूजा

Opening : सुभिरमत्र भवे भवतः पदाब्जनाजनाजनाम्पति ।  
इति नतोस्मि भवत्यहमन्वहः दिने ॥

Closing ॐ ह्रीं अहं श्री चिन्तामणिपाश्वर्नाथाय धरनेन्द्रपद्मावती  
सहितअतुलबलवीर्यपराक्रमाय दुष्टोपसर्गविनाशनाय इदं  
जलं गन्धं पुष्पं अक्षतं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं अर्घं महाअर्घं  
निर्घ्नयामि ।

Colophon : अनुपलब्धः ।

१७१३. चतुर्विंशति-तीर्थ कर-पूजा

Opening : वृषभ आदि अतवीर चतुर्विंशति जिना,  
ध्यान षडङ्ग गही हने कर्म वसु दुर्जना ।  
वसुगुण जुत तसुधराव ये नव छारिकै,  
अह्वानन विधि करूँ गुणीष उचारिकै ॥१॥

Closing . जो को इह व्रत भावी करी, ते नर मुक्त पथह वरो ।  
श्री भूपन पद प्रनमी सहो, कथा ग्यानसागर मुनी कही ॥

**Colophon :** इति श्री अनन्तव्रत कथा समाप्तो । रामचन्द्रेण लिपि कृत  
आरामध्ये लाला विजन लाल जी लिखापितम् । लेखकपाठकयो  
शुभ भवतु ।

**विशेष —** इसमे कई पूजाएँ संग्रहीत है ।

### १७१४ चतुर्विंशतितीर्थंकर-पूजा

**Opening :** रीषभ अजित सभव --- पूज्य पूजत सुरराय ॥

**Closing :** भुक्ति-मुक्ति दातार चौबीसो जिनराजवर ।  
तिन पद मन वच धार जो पूजे सो शिव लहै ॥

**Colophon :** इत्माशीर्वाद. इति श्री समुच्चय चतुर्विंशति पूजा सम्पूर्णम्  
स० १६५० ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८१६ ।

### १७१५ चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

**Opening :** देखे, क्र० १७१४ ।

**Closing :** देखे, क्र० १७१४ ।

**Colophon :** इति श्री समुच्चय चतुर्विंशति पूजा समाप्तम् ।

### १७१६. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

**Opening :** देशकालादिभावज्ञो निर्ममं शुद्धिमान्वर ।

साच्दारायादिगुणोपेत, पूजकः सोत्रशस्यते ॥

**Closing :** यावच्चन्द्रदिवाकर --- कल्याणकोटिप्रदम् ॥

**Colophon :** इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां संस्कृत पूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जि० २० को०, पृ० ११६ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vīdhāna )

१७१७. चतुर्विंशतिजिन जयमाला

- Opening : वदितानमर ॥ — . . पूरा इव ॥१॥  
 Closing : भनणुगुणनिवद्धा . . . लक्ष्मीवधूनाम् ॥  
 Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिन जयमाला समाप्ता । सवत् १६३२ वर्षे  
 चैत्र शुदि ११ शनी ।

१७१८. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

- Opening : देखें, क्र० १७१३ ।  
 Closing : ए नाम जिनेश्वर दुरितक्षयकरि जो भविजनक वि धरई ।  
 हुये दिव्य अमरेश्वर पुहिमे नरेश्वर रामचन्द्र शिवतिय वरई ॥२५॥  
 Colophon : इति श्री चौबीसतीर्थंकर पूजा समाप्तम् ।

१७१९. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

- Opening : श्री वृषभादि विरातिमा चौबीसह जिनराय ।  
 आह्वानन ठांडै करू, तिन घेर गुणगाय ॥१॥  
 Closing : जे जिव कुट्टक पट्ट तजि सुभभावन तै जिन पूज्य रच्चावै ।  
 ते जिव ह्वै धरणेन्द्र खगेन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र तणो पद पावै ॥  
 Colophon : समाप्तः ।

१७२०. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

- Opening : सिद्ध बुद्धि दायक — . पदकज ॥  
 Closing : वृषभ आदि चौबीस जिनेश्वर ध्यावही ॥  
 ३५ करै गुणगाय सुर बजावही ॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा सम्पूर्णम् ॥

### १७२१. चौबीस-तीर्थकर-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७२० ।

Closing : देखे, क्र० १७२० ।

Colophon : इति श्री चउबीस तीर्थङ्कर जी की पूजा संपूर्णम् । चौधरी रामचंद्र जी कृत । सवत् १८३१ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्ष तिथी पचम्या । शुभम् ।

### १७२२. चौबीसी-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७१४ ।

Closing : देखे, क्र० १७१४ ।

Colophon : इति श्री समुच्चय पूजा सम्पूर्णम् ।

इह पुजन जी की पोथी श्री व्रतजी के उद्यापन मे बाबू परमेशरी सहाय जी की भार्या वनसी कुँअर ने चढाया गागील गोन मीति फाल्गुन वदी १२ सन् २२८३ साल?

### १७२३. चतुर्विंशति तीर्थकर पद

Opening : आदिदेव रिपम जीनराज ..... त्याची सेव ॥

Closing : चौबीसवा श्रीमहावीर — गीतम शीर ॥

Colophon : इति चतुर्विंशति पद संपूर्णम् ।

### १७२४ चिन्तामणि-पूजा

Opening : जगद्गुरु जगद्दय जगदानददायकम् ।

जगद्गुरु जगद्दय श्री गुरुं ममगुरुं जिनम् ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

**Closing :** दीर्घायु सुभपुत्रवनिता आरोग्यसत्सपदम्,  
प्राज्यक्षमा पतिसज्यभोगसुरता. सद्गेहभूषादयः ।  
भूयासुर्भवता गजाश्वानगर ग्रामप्रभुत्वादयः,  
श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथवररतो मागत्यमोक्षोद्यता ॥

**Colophon :** इति इति श्री चिन्तामणि पूजाव्रत समाप्तम् । लिखित सभू-  
नाथ अयोध्यामध्ये सहादति ग्वा० सूबाके लसगरमध्ये स० १७६३  
मगसिर सुदि १३, शनिवार ।

देखें, जे० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८२७ ।

जि० २० को०, पृ० १२३ ।

१७२५. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

**Op.ning :** देखें, क्र० १७२४ ।

**Closing :** देखें, क्र० १७२४ ।

**Colophon :** इति श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ वृहत्पूजा विधान विधि समाप्ता ।  
संवत् १८१६ माघमासे कृष्णपक्षे तिथी पचम्या बुधवासरे  
लिखित ज्ञानसागर पठनार्थ फकीरचदजी । पोथी लीखी  
सहजादपुर मध्ये लिषीतोय शुभ भूयात् । श्रीरस्तु ।

१७२६. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

**Opening :** देखें, क्र० १७२४ ।

**Closing :** कल्याणोदयपुष्पवल्लि . . श्रीपार्श्वचिन्तामणि ॥

**Colophon :** इति श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा सम्पूर्णम् ।

१७२७. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

**Opening :** देखें, १७२४ ।

**Closing :** इति जिनपतिदिव्यः स्तोत्रलक्षातरेण . . . सर्व्वदान्वेपनीयम् ॥

**Colophon :** इति श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजनविधाने पीठिका स्तवन समाप्तम् ।

### १७२८. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

**Opening :** शान्त विदूधर्व्वरेफ " सजायते पूजयेद्यः ॥१॥

**Closing :** इह वर जयमाला पास-जिन-गुण-विशाला — वच्छिद्य  
बहुपषारम् ॥१२॥

**Colophon :** इति चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा ।

### १७२९. चिन्तामणि-जयमाल

**Opening :** तिहुयण चूडामणे भविय कमल दिनेस ..... जिणेसरहम् ।

**Closing** अस्याग्रे पुण्याहवाचना वाचनीय पुनर्शान्तिजिन ससिनिर्मलवक्त्र-  
मित्यादिपठनीयम् ।

**Colophon :** इति बृहद् चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा समाप्ता । सवत् १८२५,  
पुषमासे शुक्लपक्षे तिथि त्रयोदश्या शुक्रदिने लिखित पङ्क्ति  
सेवाराम कौशलदेशे तिलोकपुरनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये ।  
श्रीपार्श्वनाथ के भडार की पोथी परसौ लिखी निज पठनार्थ  
वा भव्य जीवस्य वाचनार्थ वर्धिता जिनशासन शुभ भूयात्  
लेखकपाठकयो ।

अनित्य जीवित लोके अनित्य धनयौवनम् ।

अनित्य पुत्रदाराश्च धर्मकीर्तियसस्थिरः ॥

### १७३०. दर्शनपाठ

**Opening :** दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पापनाशनम्,

दर्शनं रवर्गसोपान दर्शनं मोक्ष-प्राप्तनम् ॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhana )

Closing : जन्म-जन्मकृत पाप, जन्म कोटिमुपार्जितम् ।  
जन्ममृत्युजरातका, हन्यते जिन दर्शनात् ॥१२॥

Colophon : इति श्री दर्शन सम्पूर्णम् ।

१७३१. दर्शनपाठ

Opening : देखे, क्र० ७१३० ।  
Closing : देखे, क्र० १७३० ।  
Colophon : इति दर्शनस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१७३२ दर्शनपाठ

Opening : देखे, क्र० १७३० ।  
Closing : देखें, क्र० १७३० ।  
Colophon : इति जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१७३३. दर्शनपूजा

Openign : चहु गति फन विषहर नमन, दुख पावक जलधार ।  
शिव सुख सदा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ॥१॥  
Closing : सम्यक् दरसन रतन गहीजै । इहा फेरि न आवना ॥२॥  
Colophon : इति दरसन पूजा ।

१७३४. दर्शनपूजा

Opening : परस्याभिमुखीश्रद्धा सुद्धचैतन्यरूपत ।  
दर्शन व्यवहारेण निश्चयेनात्मन पुन ॥

**Closing :** अतुलसुखनिधान सर्वकल्याणबीजम्,  
जननजलधिपोत भव्यसत्त्वैकपात्रम् ।  
दुरिततरुकुठार पुण्यतीर्थ प्रधानम् ।  
पिवतु जितुविपक्ष दर्शनाख्य सुधाशु ॥

**Colophon :** दर्शनपूजा ।

### १७३५. दर्शनपूजा

**Opening :** देखे. क्र० १७३४ ।

**Closing :** देखे, क्र० १७३४ ।

**Colophon :** इति पडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

### १७३६. दसलाक्षणी-पूजा

**Opening :** उत्तमक्षान्तिमाद्यन्त ब्रह्मचर्यसुलक्षणम् ।  
स्थापयेत्तदशधर्ममुत्तम जिनभाषितम् ॥

**Closing .** करै कर्म की निर्जरा भव पीजरा विनास ।  
अजर अमर पद को लहै दानत सुख की रास ॥

**Colophon :** इति श्री दसलाक्षणी जी की भाषा जयमाल सम्पूर्णम् ।

### १७३७. दशलाक्षणी-पूजा

**Opening :** देखे, क्र० १७३६ ।

**Closing :** देखे, क्र० १७३६ ।

**Celophon :** इति श्री दसलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

### १७३८. दशलाक्षणी-पूजा

**Opening :** देखें, क्र० १७३६ ।



Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

**Closing :** कोहाणलु चुक्कउ होऊ गुरुक्कउ जाइ रिसिर्दाहि सिट्ठइ ।

जगताइ सुहकर धम्ममहातर देइ फलाइ सुमिट्ठइ ॥

**Colophon :** इति दसलाक्षणी पूजा ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ८३३ ।

दि० जि० ग्र० २०, पृ० १६५ ।

### १७४२. दशलाक्षणी-पूजा

**Opening :** देखे, क्र० १७३६ ।

**Closing :** देखे, क्र० १७४१ । ।

**Colophon :** इति दसलाक्षण पूजा संपूर्णम् ।

### १७४३. दशलाक्षणी जयमाला

**Opening :** पयकमलजिणदहि तिहूवणचदह पणवमि भावे गणद्वरह ।

पुण सरसइ वाणी धम्मपहाणी धम्मकहमि जह मुणिवरह ॥

**Closing :** मूलसधपद्वधरो धम्मचन्दगुरो सातिदासुब्रह्म भणइ णिस ।

जिणदास हणदणु दहलक्षणगुणु सूरदास तुम करहु थिस ॥

**Colophon :** इति दसलाक्षणीक गुण जैमाल समाप्त. ।

### १७४४. दशलाक्षणी व्रतोद्यापन

**Opening :** विमलगुणसमृद्धं ज्ञानविज्ञानशुद्ध,

अभयवनसमुद्र चिन्मयूख-प्रचडम् ।

इत दम विधिसार सजजे श्रीविपार,

प्रथम जिन विदक्ष्यं शुद्धतादय जिनेसम् ॥

Catalogue of Sanskrit, Prākrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pāñj-Pāñha-Vidhāna )

Closing . श्री ह्रीं नमो नमः ॥ १०० ॥ ..... मित्र देव मा निधिहरि  
कल्याणकारी नमः ॥ ॥ ॥

Colophon : ह्रीं श्रीं नमो नमः ॥ १०० ॥ ..... श्रीं नमो नमः  
नमः ॥ १०० ॥

मित्र देव मा निधिहरि कल्याणकारी नमः ॥ १०० ॥  
देवें, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १६६ ।

दि० २० को, पृ० १६६ ।

ग० म० ॥, पृ० ६० ।

ग० म० ॥, पृ० ५४ ।

ग० म० ॥, ६६५ ।

ग० म० ॥, पृ० ८७ ।

### १७४५. दिग्गान्धर्वन

Opening . दिग्गान्धर्वन ..... प्रहोफमादरात् ॥ १॥

Closing . ॐ नमो नमः दिग्गान्धर्वन पण्डित ।

Colophon : ॐ दिग्गान्धर्वन विधान नमो नमः ।

### १७४६. देवपूजा

Opening : ॐ जय जय जय नमो नमः नमो नमः नमो नमः ।

..... नमो नमः सव्यसाहन ।

Closing : ॐ जाणिय नामहि दुस्सिय विरामहि पणहविणामिय सुरावलिहि ।  
जे अणिहूऊणाहि ममप्रकुवाहि पणविवि अरहतावलिहि ।

Colophon : इति देवपूजाष्टकम् ।

देवें, दि० जि० ग्र० २० पृ० १६७ ।

## १७४७. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : .... ।

यतीन्द्रसामान्यतपोधराणा भगवान् जितेन्द्र ॥

Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

## १७४८ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : कीर्ति सकल समान त्रिन सकते सरधा धरो ।

द्यानत सरधावान् अजर अमर सुख भोगव ।

Colophon : इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३७ ।

## १७४९. देवपूजा

Opening जय ।३। जयवत प्रवर्त्तो ॥३॥ नमोस्तु ।३। नमस्कार होऊ ।३।  
णमो अरहताण । अरहतनि के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो  
सिद्धाण । सिद्धन के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो आयरिआण।  
आचार्य्यणि के अर्थि नमस्कार होऊ । ~ ~ ~ ।

Closing : मेरे अँमै प्रभात समय मध्यान्ह समय सध्या समये विपे पूजा करए ।  
सकल कम्म का छय निमित्त भावपूजा वदना स्तुत अहँन भक्ति  
प्रतमा भक्ति पंचमहागुर भक्ति करिये कायोत्सर्ग किवीये उवे  
पाप है तिनकू त्यागिए ।

Colophon इति श्री देवपूजा अर्थ मयुक्त सम्पूर्णम् ।



**Closing :** गुरोभक्ति गुरोभक्ति. गुरोभक्ति सदास्तु मे ।  
चारित्र्यमेव समारवारण मोक्षकारणम् ॥२५॥

**Colophon :** नहीं है ।

### १७५४ देवपूजा

**Opening :** देखे, क्र० १७४६ ।

**Closing :** ॐ ह्री नैर्मल्यमतिज्ञानप्राप्तेभ्यो अर्घम् ॥

**Colophon** अनुपलब्ध ।

**विशेष—** इसमें चन्द्रप्रभु पूजा मतिज्ञान पूजा के अछूरे पत्र भी है ।

### १७५५ देवपूजा

**Opening :** देखे, क्र० १७४६ ।

**Closing :** मिथ्यात तपन निवारण (न) चद समान हो ।  
अज्ञान तिमिर कारण भान हो ।  
काल कषायन मिटावन मेघ मुनीस हो ।  
द्यानत सम्यक् रतन त्रैगुन ईश हो ॥१४॥

**Colophon :** इति वियालीस बोल आरती समाप्तम् ।

### १७५६ देवपूजा

**Opening :** देखे, क्र० १७४६ ।

**Closing** अणादि काल के जे कुवादि तिन के मिथ्यात कू दूरि करने वाले  
चउबीस तीर्थ कर हैं तिनहि पूज हू ।

**Colophon :** इति श्री चतुर्विंशति तीर्थ कर जयमाल । ॐ ह्रीं श्री ऋषि-  
भादि वर्द्धमाने नमः ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṣa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१५७. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७५८. देवपूजा

Opening ॐ ह्रीं क्षत्री स्नानस्थानभू, शुध्यतु स्वाहा इति स्नानस्थान शुचि-  
जलेन सिचेत् ।

Closing . श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवद्य विशुद्धहस्त ईर्यापथस्य परिशुद्धविधि  
विधाय ।

स वज्रपजरगताकृतसिद्धभक्ति - - - ॥

Colophon . अनुपलब्ध ।

१७५९ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति देवपूजा समाप्तम् ।

१७६०. देवपूजा

Opening : सर्वारिष्टप्रणासाय सर्वमिष्टार्थदायिने ।  
सर्वलब्धिविधानाय श्री गौतमस्वामिने ॥

Closing : देखे, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवपूजा समाप्तम् ।

## १७६१. देवपूजा

Opening :	देखे, क्र० १७४६ ।
Closing	देखे, क्र० १७४६ ।
Colophon :	इति श्री जयमाल सम्पूर्णम् ।

## १७६२ देवपूजा

Opening :	देखे, क्र० १६४६ ।
Closing .	देखे, क्र० १७४६ ।
Colophon :	इति श्री जयमाल सम्पूर्णम् ।

## १७६३ देवपूजा

Opening :	देखे, क्र० १७४६ ।
Closing :	देखे, क्र० १७४६ ।
Colophon :	इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

## १७६४ देवपूजा

Opening :	देखें, क्र० १७४६ ।
Closing :	देखे, क्र० १७५० ।
Colophon	इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

## १७६५. देवपूजा

Opening :	देखें, क्र० १७४६ ।
-----------	--------------------

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

- Closing : जे तपमूरा नजमधीरा मिद्धवधू क्षणूरईया ।  
रयणत्तय रजिय कम्मह गजिय ते रितिवर मइ झईया ॥
- Colophon : इति देवपूजा ।
- देखे जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८४१ ।  
दि० जि० ग्र० २०, पृ० १६६ ।

१७६६. देवजयमाला

- Opening . वत्ताणुठ्ठाणे ' ... परमपउ ॥
- Closing : देखें, क्र० १७४६ ।
- Colophon : इति चतुर्विंशति तीर्थङ्कर जयमान सपूर्णम् ।

१७६७. देवप्रतिष्ठा विधि

- Opening : प्रतिमावीजमन प्रसिद्ध नदुमिसुरामकृतहरिने रूप ..... ।
- Closing : ... सुरमत्रजिनप्रभा ।
- Colophon : इति सुरमत्र समाप्तः ।

१७६८. धरणेन्द्रपूजा

- Opening . पातालवास वरनीलवर्ण फणासहस्रान्वितनागराजम् ।  
तमाह्वये सत्कमठासन च सस्थापये भूमिधर सुभक्त्या ॥
- विशेष— गथ इतना पुराना है कि सभी पत्र आपस में सटे हुए हैं । अलग करने पर फट जाते हैं, जिससे Closing और Colophon का पता नहीं चलता ।

१७६९. धरणेन्द्रपूजा

- Opening : देखें, क्र० १७७० ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : भक्तिजिनश्वरे यस्य -- तस्यैतत्सकल भवेत् ॥३३॥

Colophon इति नागेन्द्र स्तौत्रम् ।

१७७०. धरणेन्द्रपूजा

Opening : धरणयक्षविलक्षणसहस्रै रितिधरोन्नतकच्छप्रवाहनं ।  
त्रिदशवदितपार्श्वजिनक्रम प्रणितमौलिमणीसदल श्रियै, ॥१॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपकजसेव्यमान पद्मावतीभजतिवाङ्मनवामभागम् ।  
घोपरोपमर्गहनन निजमाणदक्ष त देवशुद्धिमतिग प्रभजामि नित्यम्

Colophon : इति पुष्पाजली धरणेन्द्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१७७१ गर्भ कल्याणक

Opening : पणविवि पञ्च परमगुरु गुरु जिनश्रामन,  
सकल मिद्ध दातार सुविघन विनासन ।  
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनं ॥  
मगल करि चौसवह पाप प्रनासन ।

Closing : भासियो सुफल सुणि चित्त दपति परम आनदित भएँ,  
छह मास परि नवमास वीते रयण दिन सुखसो गए ।  
गर्भवितार महत महिमा सुनत सब सुख पाईये,  
भणि रुमचद मुदेव जिनवर जगत मगल गाईये ॥८॥

Colophon : इति श्री गर्भकल्याणक भाषा समाप्तम् ।

१७७२ गिरनारपूजा

Opening : श्री गिरनार सिपर परवत पर दक्षिणा दिम मे सोहै  
नेमनाथ जिन मुक्तधाम सब जन मोहै  
बोड बहतर सात सतक मुनि शिव पद पायो  
ता थल पूजन काज भव्य मत्र अति हरपायो  
तिम तीरथ राज सुक्षेत्र को आह्वान विधि ठानि कर  
पूजा त्रिजोग मन बच तन मुश्रावक जन गुण जानकर ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

**Closing** तिहु जग भीतर श्री जिन मंदिर वनै अकीर्तम महासुखदाय,  
नर सुर खग कर वदनीक जे तिनकी भवि जन पाठ कराय ।  
धन धन्यादिक सपति तिनकै पुत्र पौत्र सुसोहत भलाय  
चक्री सुरषग इन्द्र होय कै करमना स सिवपुर सुषथाय ।

**Colophon** • इति श्री तीन लोक सबधी पूजा सपूर्णम् ।  
विशेष—इसमे सेठसुदर्शन पूजा तथा तीन लोक सबधी पूजा भी सक-  
लित है ।

१७७३. गिरनारपूजा

**Opening** : देखे, क्र० १७७२ ।  
**Closing** • जैसवाल वर नित नैन सुख श्रावग ग्यानी ।  
रामरतन सुपुत्र भयो घर्मामृत पानी ॥

**Colophon** इति श्री गिरनार जी की पूजा सपूर्णम् । मीति फाल्गुन सुदी  
३ । मदवासरे । लीखित जूनागढ श्री मंदिर जी कापेया  
आनद जी ।

१७७४. गिरनारपूजा

**Opening** : देखे, क्र० १७७२ ।  
**Closing** : • जे नर वंदत भाव घर सिद्धक्षेत्र गिरनार ।  
पुत्र पौत्र सपति लहि पूरन पुण्य भंडार ॥

**Colophon** : इति श्री गिरनार जी की पूजा सम्पूर्णम् । मिति आषाढ सुदी  
७ चित्रा नक्षत्र पहला पहर रात्रि विद्यै ५३३ ॥ मुनि के साथ  
श्री नेमनाथ जी उर्जयत टोक से जा जूनागढ गिरनार परबत  
पर है, सोरठ देश गुजरात मे मुक्त पधारे । नेमपुराण से  
देखना ।

विशेष — इसमे नीचे चार-पाँच सोरठे भी लिखे गये हैं ।

## १७७५. गुरुजयमाला

Opening : भवियभवतारण ... पंचमहाव्यह ॥१॥

Closing : ॐ ह्रीं पुलाकवकुसकुमीलनिर्गं धस्नातकेभ्यो नमः ।

Colophon : इति गुरुजयमाल संपूर्णम् ।

## १७७६ गुरुपूजा

Opening : सपूजयामि पूजस्य पादपद्म युग गुरौ ।

तप प्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मने ॥

Closing : तेजस्तिर्ब्रजमस्तिचदमचमत्कारैकसवारिकम्  
कित्सारदशुभ्रमानधवलां निरसेषदिभ्यापिनी ।

आयुदीर्घतर निरामधवपु लीलाधमणीकृतः,

श्रीद श्रीनिकर करोतु भवतामाचार्यभविता सताम् ॥१०॥

Colophon : इति श्री गुरुपूजा संपूर्णम् ।

देखे, दि० जि० श्र० २०, पृ० १७२ ।

## १७७७. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।

Closing : पार्वी अमरपद होइ चक्री कामदेव समानिया,

इन्द्र चन्द्र धरनेन्द्र चक्री मन प्रतीत जू आनिया ॥

जै सकल पद सीव सीख्यदाता इनहि छिन न भुलाइये,

कहत तालविनोदी मन वच मनहि बछित पाईया ॥

Colophon : इति श्री जिनगुन जयमाल सम्पूर्णम् ।

## १७७८. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramṣa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing : देखे, क्र० १५६५ ।

Colophon : इति गुरुपूजा समाप्ता ।

१७७६. गुरुपूजा

Opening : देखे क्र० १७७६ ।

Closing : देखे, क्र० १७६५ ।

Colophon : सपूर्णम् ।

१७८० गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।

Closing : देखे, क्र० १७६५ ।

Colophon : इति गुरुपूजा ।

१७८१. गुरुपूजा

Opening : दिव्यमङ्गलके रम्य चतुष्टुनोपसोभीते ।

स्थापयामि गुरो पादौ स्व स्व स्थान सिद्धये ॥१॥

Closing : निसर्गविरागाय .. .. प्रणमाम्यहम् ॥

Colophon : गुरुपूजा सपूर्णम् ।

१७८२. गुरुपूजा

Opening : , काव्यं सकलगुण - . सूरौ स्थापयाम्यत्रपीठे ॥१॥

Closing : भाव सुद्ध पूजा करौ सेवी गुरुचित्त लाय ।

तीन काल आरति करौ रिद्धि सिद्धि सुखथाय ॥१७॥

Colophon : इति दादा श्री जिनसकलसूरि जी की पूजा सम्पूर्णत् ।

## १७८३ गुरुपूजा

- Opening सिद्धान्तसूत्रमकीर्णश्रुतस्कधवने यने ।  
आचार्य्यता प्रपन्नस्य पादावभ्यर्चयेन्मुने ॥
- Closing : मुनिवर स्वामीनमू सिरनामी दोए करजोडी विनय करू ।  
दीक्षा अति निर्मली द्योमुझउज्वली, ब्रह्मजिणदास भणि कृपाकरे ।
- Colophon : इति गुरुपूजाजयमाल सम्पूर्णम् ।

## १७८४. गुरुपूजा

- Opening : देखे, क्र० १७८३ ।
- Closing : कहो कहाँ लो भेद मैं बुध थोरी गुनभूर ।  
हेमराज सेवक हिये भक्ति भरो भरपूर ॥११॥
- Colophon : इति श्री गुरुमहाराज की भाषा आरती सम्पूर्णम् ।

## १७८५. होमविधि

- Opening . तच्चथा ॐ ह्रीं क्ष्वीं भू स्वाहा । पुं पाजली ।  
ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥ क्षेत्रपाल विधि ॥
- Closing : इति होमविधि ज्ञात्वा तत्रस्था जिन प्रतिमा सिद्धायतन यत्रानि  
पूर्वनिर्मापितजिनग्रहाभ्यतरे सस्थाप्य पुन पुन. नमस्कार कृत्वा  
नित्यव्रत गृहीत्वा देवान् विसर्जयेत् ।
- Colophon : इति होम सपूर्णम् ।

## १७८६. जलयाना विधि

- Opening : प्रथमतडागे गत्वा जलसमीपे ~ ~ ~ पाछे पूजा कीजइ ॥१॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing . पश्चात् स्त्रीनि की दोडसाभर्ण दीजै पाछै घट दीजै पाडे छपैया  
पटत ईसान वेदी मध्य फलण थापी जइ तिसकी विधि आगे  
गिजेय है ।

Colophon : इति जलज द्वा विधि संपूर्णम् । सवोत्तर जलइ सद्विधि पूर्व  
नादयै । धीरस्तु । शुभमस्तु ।

१७८३. जिनयजविधान

Opening नमो अरुताण, नमो निद्राण नमो आयरियाण, नमो उवझायाण  
नमो लोए नव्वमाहूण — .. ।

Closing . ॐ ह्रीं सुद्वष्ट्ये नम । ॐ ह्रीं सुधावलोकिते नम ।

Colophon अनुपलब्ध ।

१७८८ जिनवर विनती

Opening : श्रीपति जिनवर करुणायतन दुखहरन तुमारा ... — ... ।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हितजन दीन अनाथ पुकारी है ।  
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोहि विथा विस्नारी है ॥

Colophon विनती सम्पूर्णम् ।

१७८९ जिनगुण-सम्पत्तिपूजा

Opening : वदे श्रीवृषभ देव वृषाक वृषदायकम् ।  
षट्धर्मप्रणेतार कर्मभूतवज्रकम् ॥

Closing : ये हस्तिनागे पुरिकौरवशो यश्चक्रिणायस्य स्तुतिं चकार ।  
दानेशरत्न जिनपु गवाय पुन स्तुव श्रेयगगाजिनानाम् ॥

Colophon . इति जिन गुण-संपत्ति-पूजा सम्पूर्णम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

देख, जि० २० को०, पृ० १३५ ।

रा० सू० ॥१, पृ० २०५ ३०६ ।

### १७६०. जिनवाणी-पूजा

**Opening :** प्रकटति परमार्थे सूत्रसिद्धान्तसारे,  
जिनपतिसमयेऽस्मिन् सारदासदधानम् ।  
जगति समयसार कीर्तितः श्रीमुनिद्रैः,  
स वसतु मम चित्ते सश्रुतज्ञानरूपः ।  
जगति समयमार ते पर ज्योतिरूपै ,  
सुवृतमति विद्यते ज्ञानरूप स्वरूपम् । १॥

**Closing :** अग्याननिमिरहर ज्ञानदिवाकर पढै गुनै जो ग्यानधनी ।  
ब्रह्म जिनदास भामै विबुध प्रकासै मनवाछित फल बुध धनी ॥

**Colophon :** इति श्री शास्त्रजिनवाणी जी की पूजा जयमाल भाषा सस्कृत  
सम्पूर्णम् ।

### १७६१. जंबूस्वामी-पूजा

**Opening :** चौबीसो जिनपाय पच परमगुरु वदिके ।  
पूज रचो सुखदाय विघ्न हरो मगल करो ॥

**Closing :** ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् श्रीमज्जबूस्वामिन् सकलगुण-  
विराजमान् जल चदन अक्षत पुष्प नैवेद्य दीप धूप फल अर्घ  
महार्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

**Colophon :** इति श्री इति श्री जंबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

### १७६२. जम्बूस्वामी-पूजा

**Opening :** देखे, क्र० १७६१ ।

**Closing :** देखे, क्र० १७६१ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Colophon इति श्री जन्मस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६३ जयमालिकापूजा

Opening . उच्चलिया सुरसल्लिया पुणभक्तिय कुसुमजलि  
अमरिदह सुरिदह णिहय दुरिय ज्वाला  
पद्मविय सुरायण भुवणसामिणा भोमहि पत्ता,  
— — — ॥

Closing : तिण्यरह सुहसुयरह पय पकयाणि खत्तिए ।  
निरुभतिए विहिज्वातीए चउवीसह सुपवित्तिए ॥

Colophon : इति जयमालिका पूजा समाप्ता ।

१७६४ ज्ञानपूजा

Opening : प्रणम्य श्रीजिनाधीशमधीश सर्वसपदाम् ।  
सम्यग् ज्ञानमहारत्नपूजा वक्षे विधानतः ॥१॥

Closing दुरिततिमिरहस मोक्षलक्ष्मीसरोजम्,  
व्यसनघनसमीर विश्वतत्त्वप्रदीपम् ।  
मदनभुजगमंत्र चित्तमात्तगसिंहम्,  
विषयसफरजाल ज्ञानमाराधयत्वम् ॥

Colophon : इति श्री ज्ञानपूजा जी समाप्तम् ।

१७६५. ज्ञानपूजा

Opening : देखें, क्र० १७६४ ।

Closing : देखें, क्र० १७६४ ।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्रीनरेन्द्रसेन विरचिता सम्यग्ज्ञान पूजा समाप्ता ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library Jain Siddhant Bhavan, Arrah

### १७६६. ज्ञानपूजा

Opening : देखे, क्र० १७६४ ।

Closing : देखे, क्र० १७६४<sup>१</sup> ।

Colophon : इति ज्ञानपूजा ।

### १७६७. ज्वालामालिनी-पूजा

Opennig

जय ! ज्वाला जगज्योति होति आनन्द विधाई ।

जय ! ज्वाला हर त्रिधा विघन मोद मगल दाई ॥

जय ज्वाला वर अमित शक्ति श्रुति सारद गावे ।

जय ज्वाला पद सुर मुनिन्द्र मति चिन्तित पावे ॥

Closing : पूजन सख्या छन्द की ..... — ।

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभु जिनदेव वा श्यामल यक्ष तथा ज्वालामालिनी  
महादेवी जी की पूजन स्तुति समाप्तम् ।

### १७६८. ज्वालामालिनीपूजा

Opening :

श्रीग्लौ प्रमेशजिनपकजसेवकिन्या,

श्यामाख्या यक्षिसुवद्योपादपक्षयुग्मम् ।

चक्राधिपादिमनुर्ज खलवद्यमाना,

माह्या नानादिविधिनात्रसमर्थयेऽहम् ॥

Closing : वरमहिपत्राहिनि शनचुटगे ॥ जय०।४५ ।

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

### १७६९. ज्वालामालिनी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७६८ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing : नमोऽविम्वन्विमोमितदोऽन्यान्ने नजीवपनिभपादसुराग ॥  
Colophon : अनुपलब्ध ।

१८००. ज्येष्ठजिनवरपूजा

Opening : नाभिनामकृतमडन धीर नमुद्र भणो ॥१॥  
Closing : सायनि जिन चरयानि विष ते मुवनप्रये,  
सायनि नतन भगव्या निपरीत्य नमाम्यहम् ॥३०॥  
Colophon : इति ज्येष्ठ जिनवर पूजा ।

१८०१. कलशाभिषेक

Opening : नोगद्यमननमपुत्रतदकृतेन ..... जिनोत्तमानाम् ॥१॥  
Closing : मुनि श्री वनिताकरोदकमिद पुन्यकरोत्पादकम् ।  
जिन गघोदक यदे स्रष्टकर्म निवारणम् ॥  
Colophon : इति लघु जिन कलशाभिषेक सपूर्णम् ।

१८०२. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : चद्रावदाते सरलसुगर्धरनिष्पपार्त्रवरमालिपु जै ॥ दुष्टो ॥  
Closing : वरखगिन्दु उवसगुतिह ।  
Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा समाप्तम् ।

१८०३ कलिकुण्ड-पूजा

Opening : ह्रूकार ब्रह्मरुद्र सुरपरिकलित विनाश प्रयुक्तम् ॥  
Closing : देखे, क्र० १८०२ ।

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पूजा जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६१ ।

दि० जि० ४० २०, पृ० १७५ ।

जि० २० को०, पृ० ७४ ।

### १८०४. कलिकुण्ड-पूजा

Opening . देखें, क्र० १८०३ ।

Closing . देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon . इति कलिकुण्ड पूजा ।

### १८०५ कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening . देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : सर्पत्सर्पेशदर्पि - राजहसोवनाह ॥१३॥

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा जयमाल समाप्त ।

### १८०६ कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्रू कार ब्रह्मरुद्र ... विद्याविनाशनम् ।

Closing : एव विघ्नविनाशन भयहृत् सव्व भयान्निवर्त्तम् ।

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पूजा समाप्ता । श्री रस्तु ।

### १८०७. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening . देखें, क्र० १८०६ ।

Closing देखें, क्र० १८०६ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Colophon . इति कलिकुण्ड पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८०८. कंजिका-व्रतोद्यापन

Opening : चिद्रूप चिदानन्द अपर निर्जर परम् ।  
शान्त कर्मातिग पूत पुराण पुरुषोत्तमम् ॥

Closing : अतुलगुणसमग्र स्वर्गमोक्षापवर्गम्,  
त्रिभुवनपरिरिद्धि. प्राप्तसर्वे प्रसिद्धिः ।  
नमति सुजमकीर्ति कोमलाकीर्त्य-कीर्ति ,  
रतनविबुधसातै पातु व मुक्तिकारै ॥७७॥

Colophon : इति कजिकाव्रतोद्यापन समाप्ता श्रीरस्तु । शुभ अस्तु ।

विशेष— इसके आगे पूजा सामग्री विवरणिका भी है ।

१८०९. कर्मदहनपूजा

Opening . लोक सिखर तनछाडि अमूरत ह्वे रहे,  
चेतन ग्यान सुभाव गेयते भिन महे ।  
लोकालोक सो काल तीन सबविधिःधी ,  
जानि सो सिद्ध देव जजौ -हुथुति वनी ॥

Closing : पुत्र प्राप्त करि भवद्विमुक्तरी रोगाग्निधाराधरी,  
पापातापहरि प्रदोष सुचरी वक्त्रीन्द्रभूषोदनी ।  
आनन्दाद्भुत धन्य धाम नगरा मायामय मा री,  
चर्च्यमाभवतो शिवस्य भवतु श्रेयस्करी शकरी ॥

Colophon : इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्तम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

### १८१० क्षमावणी पूजा

- Opening :** देवश्रुतगुरुत्वा स्नापयित्वा महोत्सवे ।  
ततश्चाष्टविधापूजा कुर्याद्भ्रतविधायक ॥
- Closign :** यश्चैतन्यमचित्यमद्भुतगुणा श्रद्धानमत स्फुरन्,  
ज्ञान पचसमस्ततत्त्वविषय स्वात्मावबोधद्युति ।  
तच्चारित्रमनतरगत व्यापारपारगता ,  
वदे तत्रितय त्रिधापतिणत यन्निश्चयान्निश्चितम् ॥१२॥
- Colophon .** इति क्षमावणी अर्घ सम्पूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग० २०' पृ० १७७ ।

### १८११. क्षेत्रपाल पूजा-

- Opening .** युगादिदेव प्रयजे स्वहव्यं इक्ष्वाकुवशोधरधर्मवेदी ।  
चामीकराभाद्युतिकोटिभानु प्रहा कृता घातकनुर्यभागम् ॥१॥
- Closing :** श्रीमच्छ्रीकाष्ठासवे यतिपति तिलके ... .. क्षेत्रपाना शिवाय  
॥२७॥
- Colophon :** इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सपूर्णम् । कार्तिक-  
मासे शुक्लपक्षे तिथी पौर्णमास्या भृगुवासरे । श्रीसंवत्-१९५३

### १८१२. क्षेत्रपाल-पूजा

- Opening :** क्षेत्रपालाय यज्ञस्मिन्नक्षेत्राधिरक्षणे ।  
बलिं ददामि दिश्यग्ने वेद्या विघ्नविनाशने ॥१॥
- Closing .** आठो छद गानु मै तो रज्यो क्षेत्र की ।  
मुनिमुभचद्र गावो छद भैरु लाल की ॥  
जैन को उद्योत भैरु समकित धारी ॥१२॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Colophon : अनुपलब्ध है ।

१८१३. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening . देखे, क्र० १८१० ।

Closing . अपुत्रो न तते पुत्रान् . . . न त्रिमिदमवाप्नुयात् ॥

Colophon : इति क्षेत्रपाल पूजनविधानम् ।

१८१४ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening . वन्दे मन्मति देव मन्मति मनिदायकम् ।

क्षेत्रपाला विधि यद्ये भव्याना विघ्नहानये ॥१॥

Closing . नवविनहरायक्षा दक्षा न भगुणान्विता ।

एते पिष्टीकृता यक्षा मारप्रमिता माता ॥२६॥

Colophon . इति क्षेत्रपालानां नामाङ्कित स्तोत्र संपूर्णम् ।

देखे, जि० २० को०, पृ० ६८ ।

१८१५. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें क्र० १८१४ ।

Closing . शातिधारानय . . . क्षेत्रपाला शिवाय ॥२७॥

Colophon . इति श्री विश्वसेनकृता पणवति क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१६ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२ ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

**Closing :** अवसाने राखहु पाप नासहु पहिली पूजा तुम्हरी कही ।  
करि पूजा जिनद ही, कमलानद ही विजैपाल बहु सिरनवै ॥

**Celophon :** इति श्री क्षेत्रपाल पूजा संपूर्णम् ।

### १८१७. क्षेत्रपाल-पूजा

**Opening :** देखे, ऋ० १८१२ ।

**Closing :** इति प्रबुद्धातत्त्वस्य स्वयं प्रादुरासनजितक्री ।

**Colophon :** इति श्री बृहत् सहस्रनाम समाप्तम् ।

**विशेष—** इसमे क्षेत्रपालपूजा और बृहत्सहस्रनाम दोनो है । बीच के बहुत से पत्र नहीं है ।

### १८१८ क्षेत्रपाल-पूजा

**Opening :** प्रणम्य श्री जिनेशाना वर्द्धमान जिनेश्वरम् ।  
पूजा श्रीक्षेत्रपालाना वक्ष्ये विघ्नविहानये ॥१॥

**Closing :** लक्ष्मीप्राप्तकरी कलत्रसुखकरी चौरादि शत्रूहरि,  
शाकिन्यादिहरी प्रशर्मसुचरी राज्यादिनिवर्द्धनी ।  
विद्यानदघनौघनामनगरी विघ्नौघनिर्णशिनी,  
पूजा श्री जिनक्षेत्रस्य भवतु सप्तकरी चित्करी ॥

**Colophon :** इति श्री क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

### १८१९. लब्धिविधान-पूजा

**Opening :** श्रीवर्द्धसानजिनचन्द्र .. .. सतत शुभकृत्या ॥१॥

**Closing :** जिणगुणरयणयरु हियै देवायरु केवलाणलहैवि चिरु ।  
हुय सिद्ध निरजणु भवभयवचणु अगिणिय रिसिपु गमुजिचिरु ॥८॥

**Colophon :** इति लब्धविधान पूजा ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१८२० लघुकर्मदहन-पूजा

- Opening . तीर्थ कर जिनकी नमत मुर नर सत ।  
जे बदी बरती नवा येमे सिद्ध महत् ॥
- Closing मै मत हीन विवेक नही अर प्रसाद मै लीन ।  
श्रित्ता लघु जग जानककर लघु मत स्व नवीन ॥
- Colophon : इति लघु कर्महन विधान सम्पूर्णम् । मिति अधन सुदी २  
संवत् १८८१ अठार्वीस दमकत परमानन्द के मुकाम जवलपुर ।  
ठीकाना हनुमान तलाव श्री मदर वटे दिवाने के पक्षवाडे मुना-  
लाल ।
- विशेष — इसके बाद कुछ भजन भी हैं ।

१८२१. लघुपञ्चकल्याणक विधान

- Opening : वदी श्री अरहत पद मन वच तन चितधार ।  
मगनमय जग मै प्रगट पार उतारनहार ॥
- Closing . तुम दयाल जगनपति सिवदरमी भगवान ।  
मिव सेवा फल दीजिये तारापति नित जान ।  
सवत् येक पदार्थ ससगत मिलाय कर ठीक ।  
पूरन पाठ भयो सो तव भद्र कृष्ण नवमीस ॥
- Colophon : इति लघु पञ्चकल्याणक विधान सम्पूर्णम् ।

१८२२. महावीर अर्घ्य

- Opening : दिन दिन गुनकर करी सदा बढत जगन जिनचन्द ।  
वर्द्धमान कही हरी जय्यौ मै पूजो सुचकद ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

**Closing :** ॐ ह्री अतिवीरनामैभ्यो अर्घम् ।

**Colophon :** सम्पूर्णम् ।

१८२३. मगल

**Opening :** पणविवि पच ... जगत मगल गावई ॥१॥

**Closing :** वदन उदर अवगाह कलस गति जानिए ... जगत मगल  
गाईए ॥

**Colophon :** इति दुतीय मगल सम्पूर्ण ।

१८२४ मन्त्रविधि

**Opening** ते चतुर्दशी पुष्पार्क होवै तयारितादिने उपवाम कृत्वा जाप्य  
१२००० त्रिसध्य अर्द्धरात्रौ एव ४८००० ।

**Closing ,** अनेन मन्त्रेण होम कुर्यात् सहस्र १२००० । शत्रुनाश भवति ।  
अनेन मन्त्रेण गजेन्द्रनरेन्द्र सर्वशत्रुवशीकरण पूर्वमन्त्रस्मरणीयम् ।

**Colophon :** इति विधि सम्पूर्णम् ।

१८२५. मोक्षपैडी

**Opening :** इक्क समै रुचिवत नौ गुरुवरकौ सुनु मल्ल ।  
जो उफ अदर चेतना वहै उसाडी अल्ल ॥

**Closing :** भव थिति जिन्ह की छूटि गई तिन्ह कौ यह उपदेश ।  
कहत बनारसीदास यौ मूढ न समुझै लेस ॥

**Colophon :** इति मोक्षपैडी समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१८२६ नदीश्वर-पूजा

- Opening : नदीश्वर पूरव दिसा तेरह श्री जिन गेह ।  
आह्वानन तिनका करूँ मन वच तन घरि नेह ॥१॥
- Closing : मध्यलोक जिन भवन अकिर्त्तम ताके पाठपढे मनलाई ।  
जाके पुण्य तनी अति महिमा वरनन को करि सकै बनाई ॥  
ताके पुत्र पौत्र अरु सपति वाढै अधिक सरस सुखदाई ।  
इह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ॥
- Colophon . इति नदीश्वर पूजा सम्पूर्णम् ।  
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८७६ ।

१८२७. नदीश्वर-पूजा

- Opening मध्येमडपमालिखेद्वर्त्तरे नदीश्वर मण्डलम् ।  
वर्णे पञ्चभिरातत गुणगुरु शक्र सता सम्मत ।  
तन्मध्ये चतुरानन जिनवर विम्बस्य सातास्पद ।  
दिव्यैऽष्टभिरिष्ट-सौख्य-जननै कुर्यात्तदच्चा तत ॥ १॥
- Closing आयु .. देवार्हतामर्हणा ॥११॥
- Colophon : इति श्री नदीश्वरपूजा समाप्त ॥

१८२८ नदीश्वरद्वीप-पूजा

- Opening . कर्पूरपूरपरिपूरितभूरिनीर. धाराभिराभिराभित. श्रीतहारिणीभि  
नदीश्वरेष्टदिवसानि जिनाधिपाना आनदतः प्रतिकृति,  
परिपूजयामि ॥
- Closing इयथुणि वि जिणेसरु महिपरमेसरु सुख सो पावई ॥
- Colophon : इति श्री नदीश्वर द्वीप पूजा जयमाल समाप्त. । लेखकपाठक-  
वाचमश्रोतृणा समस्तु शुभ भवतु ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

### १८२६. नवग्रहपूजा

**Opening :** अर्कश्चन्द्रकुजसौम्यगुस्तुक्रशनिश्चरः ।

राहुकेतुग्रहारिष्टनाशन जिनपूजनात् ॥१॥

**Closing :** कन वलित दाईक सेव महायक जो सर निज मन ध्यान धरै ।

ग्रह दुख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौबीसी पूजन करै ॥

**Colophon :** इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० मि० भ० ग्र० I, क्र० ८८१ ।

### १८३० नवग्रह-पूजा

**Opening :** देखे क्र० १८२६ ।

**Closing** देखे, क्र० १८२६ ।

**Colophon .** इति श्री केतुअरिष्ट तिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मंगलमस्तु । श्री वीतराग जी सदा सहाय । इति नवग्रहारिष्टनिवारक चतुर्विंशति जिनपूजा सम्पूर्णम् । नवग्रहशान्ति हेतु चतुर्विंशति जिवेन्द्र पूजन मन शुद्ध सागर जी कृत श्री । शुभ सम्बत् १९१३ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे सोमवारे ।

### १८३१. नवग्रह-पूजा

**Opening :** देखे, क्र० १८२६ ।

**Closing :** देखे, क्र० १८२६ ।

**Colophon .** इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṣa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१८३२ नवग्रह-पूजा

- Opening : श्रीनाभिसूनो पदपद्मयुग्म नरवासुखाणि ? प्रथम तु तेव,  
समन्नमन्नाकिशिरः किरीट सघच्छविश्चस्तमनीयत वै ॥१॥
- Closing : आदित्यादिग्रहामर्वे नक्षत्रासुरासया ।  
कुर्वन्तु मंगल तरय पूजा कर्तृणस्य वा ॥
- Colophon : इति नवग्रहपूजा जिनसागरकृत सम्पूर्णम् ।

१८३३. नवग्रह-पूजा

- Opening : प्रणम्याद्य ततीर्थेश धर्म तीर्थपवर्त्तकम् ।  
भव्यविध्नोपशात्पर्यं ग्रहाचविर्ण्यते मया ॥१॥
- Closing : देखे, अ० १८२६ ।
- Colophon : इति श्री केतु अग्निष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा  
सम्पूर्णम् । इति नवग्रह पूजा जी सम्पूर्णम् । शुभं अस्तु मंगलम्  
अस्तु ।

१८३४. नवग्रह-पूजा

- Opening : ग्रहाम शब्दये युष्मानयात सपरिक्षदा ।  
अत्रोपवसता तावो जये प्रत्येकमादरात् ॥१॥
- Closing : ॐ ह्री नवग्रहेभ्य दक्षिणा प्रदानम् ।
- Colophon : इति नवग्रह पूजाविधानम् ।

१८३५. नवकार-पञ्च त्रिशत्पूजा

- Opening : श्रीमज्जिनेन्द्रवरसाधनमारभूत पूज्य नरामरमुखेचरनायकेश्व ।  
ध्येय मुनीन्द्रगणनायकवीतरागै सस्थापयामि नवकारसुमत्रराजम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

**Closing :** જય પરમણિ રજણ દુરિય વિહ્વળ વરદિતુ સુહા ॥  
**Colophon :** ઇતિ શ્રી નવકાર પૈતીસી પૂજા જયમાલા સમ્પૂર્ણમ્ ।

### ૧૮૩૬. નવપદ-કલશ-પૂજા

**Opening :** — જોયન ત્રી જે અરે પહિલો તીરથરાય ।  
 સોલ જોજન ઊચો સહી ધ્યાનઘરુ ચિત્ત લાય ॥  
**Closing :** વાળી વાચક જસ તળી કોઈ ન થઈ અધૂરી રે ॥૨૨॥  
**Colophon :** ઇતિ ઇતિ નવપદ કલશ પૂજા સમાપ્તમ્ ।

### ૧૮૩૭. નેમિનાથ જયમાલા

**Opening :** નેમિજી તુમ્હારી હઠ માની ॥  
**Closing :** જો એતના કરી “ ... વાવૈ ।  
**Colophon :** ઇતિ નેમિજયમાલ સમાપ્તમ્ ।

### ૧૮૩૮. ન્હવળ-પૂજા

**Opening :** મૌઘસગતમધુવ્રતજ્ઞકૃતેન સર્વર્ણમાનમિવ ગંધર્વિન્દ્યમાઘૌ ।  
 આરોપયામિ વિવુદ્ધેશ્વરવૃદવલ્લ પાદારવિદમભિવંદ્યજિનોત-  
 માનામ્ ॥૧॥

**Closing :** ... જન્મજરામરણ ... ॥  
**Colophon :** અનુપલબ્ધ ।

### ૧૮૩૯. ન્હવળ-પૂજા

**Opening :** દેહે, ક્ર૦ ૧૮૩૮ ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vīdhāna )

Closing : अल्हा सिद्धा आइरिया उवज्झाया साहु परमेट्टी ।  
एदे पच णमोयारा भवे भवे मम सुह दिनु ॥१॥

Colophon : इति न्हवणपूजा ।

१८४०. न्हवणकाव्य

Opening : दूरावनम्रमुरनाथकिरीट कोटि सलग्लरत्नकिरणच्छविधू-  
सराग्निरिति ॥ ॥  
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टै भक्त्या जल जिनपते बहुधाभि-  
सिचेत् ॥१॥

Closing य पाङ्कुक . -- . ल त्वदीय त्रिवम् ॥

Colophon : इति त्रिव स्थापण मत्र ।

१८४१ निर्वाण-पूजा जयमाला

Opening : कमलणवेष्पिणु हिये धरेष्पिणु वाएसरेगुणगणहरह ।  
णिव्वाणई ठाणइ तित्थसमाणइ पयडमि भत्ति जिनेस ह ॥१॥

Closing इय तित्थकर तित्थइ पुण्णवित्तइ पठइ वियाणइ विमलयरे ।  
तह पावपणासइ दुरिय विणासइ मगल सयल पट्ट तिघरे ॥१७॥

Colophon : इति निर्वाण पूजा की प्राकृत आरती सपूर्णम् ।

१८४२. निर्वाण-पूजा

Opening : अपवित्रपवित्रो वा सर्वविस्थागतोपि वा ।  
य स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचि ॥५॥

Closing देखें, क्र० १८४१ ।

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon : इति निर्वर्ण पूजा समाप्तम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १८२ ।

१८४३. निर्वर्ण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय . . . . . सव्वसाहूण ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निर्वर्ण पूजा जी समाप्तम् ।

१८४४ निर्वर्ण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय । णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।

. . . . . णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

Closing : कहे कहाली तुम सब जानो, दानव की अभिलाष प्रमानो ।  
करो आरता बद्धमान की पावापुर निर्वर्ण थान की ॥७॥

Colophon : इति आरती सपूर्णम् ।

१८४५. निर्वर्ण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निर्वर्ण पूजा ।

१८४६. निर्वर्ण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : सवत् सत्रह सै इकताल, आसिन सुदि दसमी सुविशान ।  
भैया वदन करै त्रिकाल, जय निर्वान काण्ड गुनमाल ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts

( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Colophon इति निर्वाण काण्ड सम्पूर्णम् ।

१८४७ निर्वाण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon इति श्री निर्वाण पूजा समाप्ता ।

१८४८ निर्वाण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४४ ।

Colophon इति निर्वाण पूजा सम्पूर्णम् ।

१८४९ निर्वाण-पूजा

Opening : वदौ श्री भगवान् को भावभगत सिरनाय ।

पूजा श्री निर्वाण की सिद्धक्षेत्र सुब्रदाय ॥१॥

Closing : श्री तीर्थङ्कर चतुर वीस भगवान् है ।

गर्म जन्म तपज्ञान भए निरवान है ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५०. निर्वाण-क्षेत्र-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४९ ।

Closing : संवत् अष्टादस सही सत्तर एक महांत ।

भादौ कृष्ण जू सत्तमी पूरण भयो सुजान ॥२४॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

### १८५१. निर्वाण क्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज चौबीस जहाँ जहाँ शिवथानक भयो ।  
सिद्धभूम दशदीश मन वच तन पूजा करो ॥१॥

Closing : ए थल जावै पाप मिटावै गावै धावे भक्ति बढावै ।  
जो पुजे सो शिव लहै ॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्रकी पूजा सम्पूर्णम् ।

### १८५२. निर्वाणकल्याणक-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकल्याणक जी की पूजा भाषा सस्कृत जयलाल  
सहित सम्पूर्णम् ।

### १८५३ निर्वाणकल्याणक

Opening केवल दृष्टि चराचर देख्यौ जारिसो,  
भविजन प्रति उपदेश्यौ जिनवर तारिसो ।  
भव भयभीत महाजन सरन जे आईया,  
रतनय सुम लछन शिव पय भाईया ॥१॥

Closing रचि अग रचदन प्रमुव परिमल द्रव्य जिनजयकारियो ।  
पद पतन अग्निकुमार मुकुटानल सुविधि सस्कारियो ।  
निर्वाण कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पाईये ।  
भणि रूपचंद सुदेव जिन वर जगत मंगल गाईये ॥६॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Colophon : इति निर्वाण कल्याणक भाषा सम्पूर्णम् ।

१८५४. नित्यनियम-पूजा

Opening सौगन्धसगतमधुव्रत ।  
पादारविदमभिवद्यजिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : सुखदेवी दुखमेटिबी एहि तुमारीवानी,  
मो अधीर की वीनती सुन लीजै भगवान ।  
दरसन कीजै देव कौ आदि मध्य अवसान,  
सुरगन के सुखभोगके पावै पदनिरवान ॥

Colophon . इति सम्पूर्णम् ।

१८५५ पदलावनी

Opening शिखर गिर के ऊपर तिर्यङ्कर विराजे ।  
आग्रि रात मे याने देव दुंदुभिवाजे ॥

Closing : समेद शिखर पर्वत केऊपर वीसतीर्यङ्कर मुक्ति गए ।  
ककर ककर सिद्ध विराजे असख्यात मुनि मुक्ति गए ॥

Colophon . इति सम्पूर्णम् ।

१८५६. पद्मावती-पूजाविधान

Opening : देखे, क्र० १८५७ ।

Closing : पापोभिदिव्यगद्यै, --- - पूजयामोष्टनिष्टै ॥१३॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

## १८५७. पद्मावती-पूजा

- Opening :** श्रीपार्श्वनाथ-जिननायकरत्नचूडा-,  
पाशांकुसौरभफलाकितदो चतुष्काः ।  
पद्मावती त्रिनयना त्रिफणावतस-,  
पद्मावती जयतु शामनपुण्यलक्ष्मी ॥
- Closing :** या देवी रिपचोरवन्हिजमहा सकष्ट संहारिणी,  
या रात्रिचरभूतखेचरमहावेतालनिर्णाशिनी,  
रकाना धनदायिनी सुखकरा इष्टार्थ संपादिनी,  
सा मा पातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ॥
- Colophon :** इति पद्मावीपूजा चारुकीर्तिकृत सम्पूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १८२ ।

## १८५८. पद्मावती-पूजा

- Opening :** देखे, क्र० १८५७ ।
- Closing :** श्रीमत्पन्नगराजाग्रे वाराधारां करोम्यह  
सर्वशोकस्य शांत्यर्थं भृ गारनालनिर्गता ॥१०॥
- Colophon :** नहीं है ।
- विशेष—** इसमे पार्श्वनाथपूजा तथा धरणे-द्रूपूजा भी सकलित है ।

## १८५९. पद्मावती-पूजा

- Opening :** श्रीमच्चतुर्द्विदशशोभितदीर्घवाहिनी वज्रादिकायुधधरामहमा  
ह्वयामि ॥  
सस्थापयामि सुजनैरभिपूज्यमाना पद्मावतीक्षितेनुता फणिराज-  
काता ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

**Closing :** नाहकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलम्,  
नैरात्म्य प्रतिपद्य नश्यति जना कारुण्य बुध्या मया ।  
राज्ञ श्री हिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदिग्धात्मना,  
बौद्धोद्यान् सकलान् विजित्य सुगत पादेन विस्फालित ॥१६॥

**Colophon :** इति अकलकाण्टकम् ।

१८६०. पद्मावती-पूजा

**Opening :** नम श्रीपार्श्वनाथाय चतुर्विंशति मंगलम् ॥  
**Closing :** श्रीपार्श्वनाथपदपकज-सेव्यमान - प्रभजामि नित्यम् ॥  
**Colophon :** अनुपलब्ध ।

१८६१. पद्मावती-पूजा

**Opening :** जय कुसुमकुङ्कुमाखणशरीर - पद्मावती ॥  
**Closing :** गभीर मधुर मनोहरतर सद्बोषरत्नाकरम्,  
वक्र पूर्णकर सुधाहितकर भक्तावुज भास्करम् ।  
नानावर्णसुरत्नभूषितकर ससारसीख्याकरम् ।  
श्रीपद्मावती देविमूर्तिसुभद कुर्वन्तु वो मंगलम् ।  
**Colophon** इति श्री पद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम् ।  
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३२ ।

१८६२ पद्मावती-पूजा

**Opening :** देखे, १८६१ ।  
**Closing :** देखे, क्र० १८६१ ।  
**Colodhon :** इति श्री पद्मावती पूजा समाप्तम् ।

### १८६५. पञ्चकल्याणकपाठ

- Opening . श्री नमो भगवते वासुदेवाय ।  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥१॥
- Closing मात सुकुल नर नर नमो भगवते वासुदेवाय ।  
शुभकल्याणकपाठ ॥१॥
- Colophon : इति श्री चण्डिकाजी जिन पञ्चकल्याणकपाठ समाप्तः

### १८६६. पञ्चकल्याणकपाठ

- Openign । पणविविधचरमगुरुजिनशान्त ... — पापप्रणा-  
शनम् ॥१॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃsa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

- Closing : पावए अष्टौ सिद्ध चउसघहि गए ॥२५॥  
Colophon : इति श्री पच कल्याणक जी समाप्तम् ।  
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८६ ।

१८६७. पंचकल्याणकपाठ

- Opening . देखे, क्र० १८६६ ।  
Closing : फुनि हरै पातक टरै विघन जे होय मगल नित नए ।  
भनि रूपचद त्रिलोकपति जिनदेव चउ सघहिगए ॥२६॥  
Colophon . इति श्री पचकल्याणक सपूर्णम् ।

१८६८. पंचकल्याणकपूजा

- Opening : मिद्ध कल्याण तीज कलिमलहरण पंचकल्याणयुतम्,  
स्फूर्णदेवेन्द्रवर्ये मुकुटमणिगर्णर्क्षोत्पादारविन्दम् ।  
भवत्या नत्वा जिनेन्द्रसकलसुषकर कर्मवल्लीकुठारम्,  
कुर्वेह पूजन वैः प्रवलभवभय शान्तये श्री जिनानाम् ॥१॥  
Closing इति शान्तिधारा त्रय —  
ये कल्याणकभूषिताः सुरनुता सत्य च बोधान्विता ।  
भव्यै सद्विधिनाविधानसमये सपूजिता, सस्तुता ॥  
त्रैलोक्येशमहोदरोभ्येव सुख समारक चाप्नुतम्,  
मोक्ष चापि दिशतु वै जिनवराः सर्वात्मना सर्वदा ॥६॥  
Col phon : इति श्री पचकल्याणकपूजा समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८७ ।

दि० जि० ग्र० २०, पृ० १८४ ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### १८६६. पञ्चकल्याणक-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८६८ ।

Closing : अनेकतर्कमकर्षहर्पातितबुधोत्तमा ।

स्वर्द्धिनी च वयस्फूर्तिजीवात् श्री प्रतिवर्द्धनम् ॥

Colophon : इति श्री पञ्चकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम् । लाला सकरलाल  
रतनचंद के माथे को पुस्तक ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२ ।

### १८७०. पञ्चकल्याणक-दोहा

Opening : कल्याणक नायकनमू, कलपकुरूह कुलकद ।  
कल्मष दुर कल्याणकर, बुधकुलकमलदिनद ॥१॥

Closing : तीन तीन वसु चंद ये सवत्सर के अक ।  
जेष्ट शुक्ल दशमी दिवस पूरन पढठो निसक ।

Colophon : इति पञ्चकल्याणक के सागीत कवित सम्पूर्णम् ।

### १८७१ पञ्चकल्याणक-पूजा

Opening : परमब्रह्मेभ्यस्तेभ्यो नमो निर्वाणमिद्धये ।

येषा नामान्यनतानि कातिभिरपि सस्तुवे ॥१॥

Closing : देह दीप्तप्रकारौ सुनाप्तसुकरी चक्रेन्द्रसप्तकरी जन्मादिसुतरी ।  
गुणाकरकरी स्वमोक्षधाम्नीकरी रोगाद्यनासकरी ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशतितीर्थङ्कर पूजा पञ्चकल्याणक समाप्तम् ।

### १८७२. पञ्चकल्याणक-पूजा

Opening : पञ्च परमगुरु वदि करि पञ्चकुमार मनाय ।

मदन ब्याधि मेरी हरो जगत करो सुखदाय ॥

Opening : निवागतवाग्निदेवधनरापयन् मुरदरा मुरजैमूग्नि ।  
जवागमो मुरदमधमगोमपुत्रे मभायवामि पुत्र एव तदीय  
विषम् ॥

Closing : मे मति हीन भगति यमभायन ।  
— — जिन देव यो नषति जयो ॥१५॥

Colophon : अति श्री पञ्चकण्ठाणक गीतम् ।

१८७५. पञ्च-मगलपाठ

Opening : देव्यै, क्र० १८६६ ।

Closing : देव्यै, क्र० १८६७ ।

Colophon : अति श्री ह्यचद कृत पञ्च मगल समाप्तम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

### १८७६. पंचमंगलपाठ

- Opening : देखे क्र० १८६६ ।  
 Closing : देखे, क्र० १८६६ ।  
 Colophon : इति पंचमंगल सम्पूर्णम् ।

### १८७७. पंचमेरु-पूजा

- Opening : देखे, क्र० १८७८ ।  
 Closing : ॐ नंदीश्वरद्वीपवावनजिनालयस्थ जिनेभ्यो नम ।  
 Colophon : नहीं है ।

### १८७८. पंचमेरु-पूजा

- Opening : सवौषडाहूयनिवेश्य ताभ्या सानिध्यमानीयपङ्कजेन,  
 श्रीपंचमेरुस्थ जिनालयाना यजाम्यशीति प्रतिमासमस्ता ॥१॥  
 Closing : पंचमेरु की आरती पढ़े सुनै जो कोय ।  
 दानत फल जानै प्रभु तुरत महा सुख होय ॥  
 Colophon : इति श्री पंचमेरु जी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।  
 देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८९१ ।

### १८७९. पंचमेरु-पूजा

- Opening : देखे, क्र० १८७८ ।  
 Closing : देखे, क्र० १८७८ ।  
 Colophon : इति पंचमेरु की आरती समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Patha-Vidhāna )

१८८० पचमेरु-पूजा

- Opening : देखे, क्र० १८७८ ।  
गन्धपुष्पअक्षतदीपधूपै नैवेद्य दुर्वाफलवह्निरघै ।  
श्री पचमेरोस्तु जिनालयाना यजाम्यशीति प्रतिमा समस्तम् ।
- Colophon : इति श्री पचमेरु पूजाष्टक समाप्त ।

१८८१ पंचमेरु-पूजा

- Opening : देखे, १८७८ ।
- Closing : भूधर प्रति जेहा कर्म न एहा, भक्ति विपै दिठ भव्य जनी ।  
कर पूजा सारी अष्टप्रकारी, पचमेरु जयमाल भणी ॥५॥
- Colophon : इति पचमेरु पूजा ।  
देखे, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १८५ ।

१८८२ पंचमेरु-पूजा

- Opening : जिनान् मस्थापयाम्याह्वानादि विधानत ।  
सुदर्शनाख्यमेरुस्थान् पुष्पाजलि विशुद्धये ॥
- Closing : सुदर्शनादिमेरुणा पूजाकारिसुभावहा ।  
रत्न-रत्नाकरेणासौ पुष्पाजलि विशुद्धये ॥
- Colophon : इति श्री पुष्पाजलि पूजा समाप्तम् ।

१८८३ पचमेरु-पूजा

- Opening : तीर्थ कर के न्हौन जलतै भए तीरथ सर्वदा,  
तातै प्रदच्छन देत सुरगन पचमेरुनि की सदा ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah,

दो जलधि ढाई दीप मैं सब गनत मूल विराजही,  
पूजो असी जिनधाम प्रतिमा होहि सुख दुख भाजही ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १८७८ । ।

Colophon : इति पंचमेरु पूजा

### १८८४ पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

Opening : श्रीमन्त्रिनोके निलकायमान मानुन्ननोमव्यमरोजमान् ।  
देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवद्यो वदे जिनेन्द्रोविश्रुत विधाता ॥

Closing : ॐ ह्रीं समोदरणादिश्वराय अष्टाविमतिगुण विराजमानाय  
श्री मोक्षलक्ष्मीनिवासाय श्री सर्वसाधुपरमेष्ठिणो मम सुप्रसन्नवर-  
दा भवतु ॥

Colophon : इति पंचपरमेष्ठी अर्घं सम्पूर्णम् ।

### १८८५. पंच-परमेष्ठी जयमाला

Opening : मणुयण इद ..... अट्टावर मगल ।

Closing : अल्हा सिद्धा आयरिया उवझाया साहुचपमेढी ।  
एदे पच नमोयारो भवे भवे मम सुटु दिनु ॥७॥

Co'ophon : इति श्री पंचपरमेष्ठी जयमाल सम्पूर्णम् ।

### १८८६ पंच-परमेष्ठी पाठ

Opening : प्रथम पचपद को नमो गुरुपद सीम नवाय ।  
तुच्छ बुद्धि रचना रचौ सारद सरन मनाय ॥१॥

Closing : जै जै श्री आचार्य नमस्ते, गुन छतीम वपुधार्ज्य नमस्ते ।  
तिन पदनमिघरि ध्यान नमस्ते, होतआतमाज्ञान नमस्ते ॥३॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

जै जै श्री उपलाय नमस्ते, गुन पचीम सुखदाय नमस्ते,  
वदय जे घरि भक्ति नमस्ते, " " " " ॥४॥

Colophon : गनुपलब्ध ।

१८८७. पंच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीमत त्रिजगदेव त्रैलोक्यानन्ददायकम् ।  
चन्द्राक चन्द्रभ वदे स्वस्थप्रारब्धसिद्धये ॥

Closing : धर्माधर्मप्रकाशनैकनिपुणस्त्रैलोक्यविन्माधरो,  
मोहे भेषमृगेश्वरे गतरिपुर्दे वाधिदेवो जिन ।  
गसाराणवतारकोहतमलो धर्मादिभूषो मुनि,  
श्रीदेवेन्द्रसुकीर्त्तिपादनमित कुर्यात्सदा व सुखम् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री धम्मभूषण विरचित परमेष्ठिपूजा  
समाप्ता । शुभमस्तु ।

१८८८ पंच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीघर श्रीकर श्रीपते भव्यन श्री दातार ।  
श्री सरवज्ञ नमो सदा पार उतारन हार ॥

Closing : सप्त एक महर्ष नव सतक सो सताईस ।  
भादो कृस्न त्रयोदसी बुद्धवार सो गनीस ॥

Colophon : इति पंच परमेष्ठी विधान सम्पूर्णम् ।

१८८९ पंचपरमेष्ठी-पूजा

Opening : ॐ अहंतिद्धाचार्योपाध्याय साधुभ्यो नम ,  
ॐ अथ अरहतदेव के ४६ गुण ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशत् गुण सहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः ।  
 Closing : ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः ।  
 Colophon : नहीं है ।

### १८६०. पंच परमेष्ठी-पूजा

Opening : कल्याणकीर्तिकमलाकर सच्च चिद्बलमह प्रवटीकृतार्थम् ।  
 उच्चैर्निधाय हृदिवीर-जिन विशुद्ध शिष्टेष्टपच परमेष्ठीमह  
 प्रवक्ष्ये ॥

Closing : स्फुजंत् प्रतापतपनप्रकटीकृताशाः  
 श्री धर्मभूषणपदावुजचुम्नावनि ।  
 कर्त्तव्यमित्युदयत सुयसोभिनदिसूरे  
 सदतरुदपीकरणैकहेतुः ॥ ४ ॥

Colophon : इति यशोनदिविरचिता पचपरमेष्ठी पूजा सम्पूर्णम् ।  
 देखे, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १८७ ।

### १८६१ पार्वनाथ कवित्त

Opening प्रभु पारसनाथ अनाथ के नाथ कि जाप जपी जगवदन की ।  
 तिहुँलोक के लायक लायक ही सुखदायक आनि निकदन की ॥

Closing : जग सौ भै भीत तेरे पथसो परम प्रीति ।  
 ऐसी जाकी रीति ताको वदना हमारी है ।

Colophon : नहीं ।

### १८६२ पार्वनाथ-पूजा

Opening : नमः ल चारुचतुर्विंशति कोष्टकम् ।  
 महारम्य पचवण रत्नप्रकरसभृतम् ॥ २ ॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing श्रीमज्जिनेन्द्रपादाग्रे समस्तलोकशातये ।  
भृगारनालनिर्वाति शातिधारा करोभ्यहम् ।

Colophon : नही है ।

१८६३. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening . प्रानत देवलोक ते आये वामादेवी उर जगदाधार ।  
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि अक हरित तन सुख दातार ॥  
जरत नाग जुग बोधि दियो तिहि सुरपद परम उदार ।  
ऐसे पारम को तजि आरस थापि सुधारस हेत विचार ॥

Closing . पारमनाथ अनाथन के हित दारिद गिरि को वज्र समान ।  
सुखसागर वर धन को शमि सम सब कपाय को मेघ महान ॥  
तिन को पूजै जो भवि प्रानी पाठ पढ़ै अति आनद आन ।  
मो पावै मन वदित सुख सब और लहै अनुन्नम निरवान ॥

Colophon . इति श्री पार्श्वनाथ पूजा समाप्तम् ।

१८६४ पार्श्वनाथ-पूजा

Opening . ह्री देव पार्श्वनाथ धरणिपतिनुत देवदेवेन्द्रवद्यम्,  
ह्रीकार बीजमत्र जगदकलिमत्र सर्वोद्भवहारी ।  
ॐ ह्रा ह्री हूकारनार अधहरनमहामक्तिरूप जनानाम्,  
व्यालीढ पादपीठ शठकमठमति माह्वय पार्श्वनाथम् ।

Closing . कल्याणोदयपुष्पवल्लभदय ससार सतापभृत्,  
तु गौतु गभुजगमगलफणा माणिक्यमालायते ।  
पायात्म्यज्जनभृ गभृ गसहितो नागेन्द्र पद्मावती,  
सेव्यसेवक वाञ्छितार्थफलद श्रीपार्श्वकल्पद्रुम ॥

Colophon . इति पार्श्वनाथ पूजा ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

### १८६५. पार्श्वनाथ-पूज-।

Opening : सुद्ध तीर्थ पवित्र निर्मल पुण्य हिमकर शीतले ।  
मिलि सुगंध जगत पावन जन्म दाघ विनासने ॥  
परम श्री जिनपाद पद्मज विगत कल्मषदूषणम् ।  
श्री पार्श्वनाथमह यजेवर फणि लाक्षण भूषणम् ।

Closing : जलादिगघाक्षतचारुपुष्पै, नैवेद्यसद्दीपकधूपफलार्घदानै ।  
श्री लक्ष्मिसेनादिसुरासुरेश, श्री पार्श्वनाथ परिचर्यमामि ॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा सपूर्णम् ।

### १८६६ प्रभाती मंगल

Opening : जै जै जिन देवन के देवा, सुरनर सकल करै तुम सेवा ।  
अद्भुत है प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलप मत मेरी ॥

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी, बडे भागनि पाइयै ।  
जन रूपचंद चिंता कहा जब सरण चरण न आइयै ॥

Colophon : इति श्री मंगल जीत समाप्तम् ।

### १८६७. प्रतिष्ठा-तिलक

Opening : अथ बिंबजिनेन्द्रस्य कर्तव्य लक्षणान्वितम् ।  
ऋज्यावत सुसस्थान तरुणाग दिगम्बरम् ॥१॥

Closing : ये केचिज्जिन ..... नरेन्द्राच्चितान् ॥१०॥

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचित प्रतिष्ठतिलक  
समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१८६८ पूजामाहात्म्य

Opening : नीर के चढाये वीर भवदग्नि पारहूजे चदन चढाये दाह दुरित  
मिटार्हिये ।  
पुष्प के चढाये पूजनीक हूजे जगत मे अक्षत चढाऐ ते अभय  
पद पाईये ।

Closing पाप न कर पावै जाके जिय दया आवै धर्म को वढावे दया  
कहीं आचरन को ।  
साते भव्य दया कीजे तिहुलोक सुख लीजै कहत विनोदीलाल  
जी तहु मरन को ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८६९ पूजासग्रह

यह पूरा ग्रन्थ अस्पष्ट है । इसे पढा नहीं जा सकता ।

१९००. पूजासग्रह

Opening : प्रणमि सकल सिद्धनिकू प्रणमि सकल जिनराय ।  
प्रणमि सकल सिद्धान्तकृ नमि गणधर के पाय ॥

Closing . मनवञ्छित दायक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरे ।  
यह दु ख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौबीसी पूज करै ।

Colophon : इति केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् ।  
इति श्री नवग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिनपूजा सम्पूर्णम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan Arrah.

### १६०१ पूजा-विधान

**Opening :** चितवत वदन अमल चद्रोपम तांज चिता चित होय अकामी ।  
त्रिभुवन चद्र पाप तम चदन नमत चरन चद्रादिक नामी ॥  
तिहु जग छाई चद्रिका कीरत चिह्न चाद चित्तत शिदगामी ।  
वदो चतुर चकोर चद्रमा चद्रवरन चद्रप्रभु स्वामी ॥

**Closing :** राखो सभार उर कोस मे, नहि विसरो पल रकधन ।  
परमाद चोर टारन निमित्त करो पास जिर गुण कथन ॥

**Colophon** नही है ।

विशेष— इसमें कई पूजाएँ संकलित हैं ।

### १६०२ पुण्याहवाचन

**Opening .** श्री शातिनाथममरासुरभूतिनाथ,  
भास्वत्किरीटमणिदीधितिपादपद्मम् ।  
त्रैलोक्यशातिकरणं प्रणव प्रणम्य,  
होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुत्क्षिपामि ॥

**Closing** श्री शातिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव पुष्टि  
समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु अभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्र-  
धन तथास्तु ।

**Colophon :** इति पुण्याहवाचन संपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६१६ ।

### १६०३ पुण्याहवाचन

**Opening** श्रीनिर्जरेणाधिपचक्रिपूर्वं, श्रीपादपकेरुहयुग्ममीशम् ।

श्रीवर्द्धमान प्रणिपत्य भक्त्या सकल्यरीतिकथयामि सिद्धं ॥१॥



Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

**Closing :** स्वस्तिभद्र चास्तु ३ न स्वी क्ष्वी हम् स्वस्ति स्वस्ति  
स्वस्ति भवतु मे स्वाहा।

**Colophon :** इति पुण्याहवाचन ।

### १६०८. पुष्पाजलि पूजा

**Opening :** वीरदेव को प्रनमि करि अर्चा करौ त्रिकाल ।  
पुष्पाजलिव्रत कथा को सुनौ भविक अघटाल ।.१॥

**Closing :** घाति कर्म निरमूलन करौ निर्वाणपद तव अनुसरै ।  
जा विधि व्रत प्रभाव तित लह्यौ, ललितकीर्ति कवि इस विधि  
बहु ॥

**Colophon :** पुष्पाजलिव्रत कथा समाप्तम् ।

### १६०९. रत्नत्रयपूजा

**Opening :** विदगतिफणविष हरन मन, दुख पावक जलधार ।  
शिवसुख सुधा सरोवरो सम्यक त्रयी निहार ॥

**Closing :** एक स्वरूप प्रकाश निज वचन कह्यो न जाय ।  
तीन भेद व्यौहार सब ग्यानत को सुखदाय ॥

**Colophon :** इति रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम् ।

### १६१०. रत्नत्रयपूजा

**Opening :** पंचभेद जाकै प्रगट गेय प्रकासन भान ।  
मौह तपन हर चद्रमा, मोई सम्यक् ज्ञान ॥

**Closing :** देखे, क्र० १६०९ ।

**Colophon :** इति रत्नत्रय पूजा ।

**विशेष—** इसी से ग्यानपूजा, समुच्चय आरती भी अन्तर्भूत है ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६११ रत्नत्रयपूजा

Opening : देखे, क्र० १६१२ ।

Closing : मोक्षदिग्गज इति दिग्गजपराय नवदिने : रत्नमयहितकणाय ।  
रत्नत्रयाय पुनरेति मन्त्रभाष्यं पुनर्जाति प्रविमनं हि अवतारस्यागि ॥

Colophon : अमुपनमः ।

१६१२. रत्नत्रय-पूजा

Opening : श्रीमानमृत नरेश श्रीमन् मुद्रयनि ।

श्रीमदात्मन् श्रीमान् पश्य रत्नत्रयास्तंभम् ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १६०६ ।

Colophon : इति रत्नत्रय जीर्ण भाषा यावत्ता सम्पूर्णम् ।

देखे, क्र० १६०६ ।, क्र० ६२३ ।

१६१३. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखे, क्र० १६१२ ।

Closing : इति रत्नत्रयपूजा मुक्ति ॥६॥

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

१६१४ रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६१२ ।

Closing : मध्यक दशम ज्ञान अतः शिवमग तीनों मई ।

पार उतारण ज्ञान दानत पूजा इति सहित ॥१०॥

Colophon : इति समुच्चय पूजा जी समाप्तम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library Jain Siddhant Bhavan, Arrah

### १९१५. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखे,, क्र० १९१२ ।

Closing : अतुलसुखनिधान ... .. दर्शनाख्य सुधावु ॥३॥

Colophon : इति पडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

### १९१६. रत्नत्रय-जयमाला

Opening : जय जय पद्मर्शन मवमव निरमन मोह महातरु वारण ।  
उपमम कमल दिवाकर सकल गुणाकर परम मुक्ति सुखकारण ॥

Closing : मदरागकषायरज समन भवदुर्जयदानवमदमनम् ।  
परम शिवमौख्यनिवासकर चरग प्रणमामि विशुद्धितरम् ॥

Colophon : नही है ।

देखे, जै० मि० भ० ग्र० I, क्र० ९३२ ।

### १९१७. रविव्रत उद्यापन

Opening : पार्श्वनाथमह वदे सर्वविघ्ननिवारकम् ।  
कमठोपसर्गहरन जोगीकल्पतरु परम् ॥

Closing : रविव्रतमहापूजा श्लोकपिण्डीकृताधुना ।  
पचात्माविने विप्र लेखक चित्ततप्पका ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते आदित्यवार व्रत  
उद्यापन विधि पूजा समाप्तम् ।

### १९१८. रविव्रत-पूजा

Opening : इशवाकुवशकुलमडनअश्वसेनो तद्वल्लभ प्रतिवसाजिनवामदेवि ।



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā Pāṭha-Vidhāra )

तस्या जिन विमलमूर्तिसुरेन्द्रवद्य त्रैलोक्यनाथजिनपार्श्वपर  
नमामि ॥

**Closing :** इति रविव्रत पूजा सुगति पद द्वजा जे करत नव व्रत सही ।  
मन वचकाय धावही ओ सुगद पावही पार्श्वनाथ फल देत  
सही ॥१२॥

**Colophon .** इति रविव्रत पूजा सम्पूर्णम् ।

१६१६. रविव्रत-पूजा

**Opening .** देखे, क्र० १६१८ ।

**Closing** इशवाकीरवशभूषननृपो श्रीअश्वसेनोनुज ,  
चामानदनइन्द्रचन्द्रधरनी ससेध्यमान रुदा ।  
प्रत्याहाय विभूषित वसुवृधि कल्याणकारी सदा,  
ते तुभ्य विदधातु वाञ्छितफल श्रीपार्श्वकल्पद्रुम ॥१२॥

**Colophon .** इति रविव्रत पूजा ।

१६२०. ऋषिमडल-पूजा

**Opening** प्रणम्य श्री जिनाधीश — वक्षे पूजादिमल्पश ॥

**Closing** श्रीमच्चारुचरित्र ~ ~ ~ नदीगुणादिमुनिः ॥

**Colophon .** इति ऋषिमडल पूजा समाप्ता । गतत्रयाशीभिः श्लोकैः ग्रथाग्रथ  
। ३८० । सवत् १८१८ कार्तिक शुक्ले १४ बुद्धे लि० पडित  
श्री हेमराजेन हुकुमचद गहोई श्रावकस्य पठनार्थम् ।

१६२१. ऋषिमडल-पूजा

**Opening :** देखे, क्र० १६२० ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : देखे, क्र० १६२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभिः श्लोक ग्रन्था-  
ग्रयः । सवत् १६५६, वैशाख कृष्ण ८ मंगलवारे लि० ।

### १६२२ ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६२० ।

Closing : देखे, क्र० १६२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडलपूजा विधि समाप्तम् ।

### १६२३. ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६२० ।

Closing : देखे, क्र० १६२० ।

Colophon : इति श्री ऋषिमंडलपूजा समाप्तम् ।

### १६२४ सहस्रनाम-पूजा

Opening : पञ्चपरमगुरु कोनमो उर धरि परम सुप्रीति ।

तीरथराज जिनन्द जी, चोबीसो धरि चीत ॥१॥

Closing : सम्बत् विक्रम भूप के जुग गतिग्रह समि जान ।

यह रचना पूरी भई मंगल मुह सुखथान ॥

शिखिरचद कृत पाठ यह वन्यो अनुपम रास,

जो पढसी मन लाय के पासो मुख्य सुवास ॥

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मिति

पौषशुद्ध ८ वार सुभ बुध समत् १६४२ । को पूर्ण हुई सो

जयवत प्रवर्त्तो । श्रीकल्याणमस्तु । शिखिरचद अग्रवाल गोइल

गोती कवि श्री वृ दावन के लघु सुअन कृत जयवती ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६२५ सकलीकरण

Opening	इन्द्रश्चैत्यालय गत्वा वीक्ष्य यज्ञागसज्जिनान् । यागमगलपूजार्थं परिक्रमन्निरेदिदम् ॥१॥
Closing	सिद्धार्थान् अभिमन्त्र्य परमन्त्रेण सर्वविघ्नोप समर्थान् सर्वदिक्षु क्षिपेत् ॥
Colophon :	इति सकलीकरण संपूर्णम् । देखे, दि० जि० ग्र० २० पृ० १६४ ।

१६२६ सकलीकरण विधि

Opening :	धृत्वाशेषरपः सहारपटकं श्रेयिका लम्बक , केयूरागदमद्विधुरकटी सूत्रा च मुद्राकितम् । चक्रत्कुडलकर्णप्रममल पाणिद्वय ककणम्, मजीर कटकपते जिनपते श्रीगघमुद्राकिते ॥
Closing	सर्वराजभय छि० सर्वचोभय छि० सर्वदृष्टिभय छि० सर्व- दृष्टिमृगभय छि० सर्वसर्पभय छि० सर्ववृच्चिकभय छि० सर्व- ग्रहभय चि० सर्वदोषभय छि० सर्वव्या -- -- ।
Colophon	अनुपलब्ध ।

१६२७. सकलीकरण विधि

Opening	वासपूज्य जगत्पूज्य लोकालोकप्रकाशकम् । नत्वा वक्ष्येन्न पूजाना मन्त्रान्पूर्वपुराणत ॥
Closing :	लोक्याचोक्त श्री सोमसेनमुनिभि शुभमन्त्रपूर्वम् ।
Colophon :	इति श्री सकलीकरण विधि सम्पूर्णम् स० १६२१ ।

१६२८. सकलीकरण विधि

Opening :	देखे, क्र० १६२५ ।
-----------	-------------------

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : देखे, क्र० १६२५ ।

Colophon : इति सकलीकरण सम्पूर्णम् । ऋ० पंडित परमानदेन बाबू धर्म-  
कुमारस्य पठनार्थं मिति आषाढ शुक्लपक्षे शनिवासरे सवत्  
१६५५ का । शुभ भूयात् ।

### १६२६. समाधिमरण

Opening : गौतम स्वामी ऋदु सिरनामी मरण समाधि भना है ।  
मोक्ष पाऊ नीस दिन ध्याउ गाउ वचन कलायै ॥१॥

Closing : हास आवे शीव पद पावे बील सुख अनन्ता ।  
द्यानत सोगत होय हमारी जैनधर्म जइवत ॥२०॥

Colophon : इति श्री समाधिमरण समाप्त. ॥

### १६३०. सामायिकपाठ

Opening : आदि ऋषम सनमति चरम तीर्थ कर चउबीस ।  
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि नमो धारि कर सीस ॥

Closing : अँसे सामायिक पढौ सार जान मुनिवृ द ।  
धर्मराग मति अल्प फुनि भाषामय जयचद ॥

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् ।

### १६३१. सामायिक वचनिका

Opening : देखे, क्र० १६३० ।

Closing : देखे, क्र० १६३० ।

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramṣa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६३२ समवशरण

- Opening :** आज गई थी समोसरण मैं कहाँ कहूँ हीत हेत री ।  
बार बार दरवाजे चहुँदिस परखा कोट समेत री ॥१॥
- Closing :** परम सरस्वती सिव - - गहे निज ग्याने तीन जु वरी ।  
कहे दीप याते तुम सेवा भजै भावकर उरसो री ॥
- Colophon :** अनुपलब्ध ।

१६३३. समवशरण

- Opening :** धूल साल देखे मूल साल नरहत,  
डर मानषल देखे जो ईमान महामानी कौ ।  
वेदी के विलोकै आप वेदी पर वेदी होत,  
निरवेद पद पावै याते है कहानी कौ ।
- Closing :** धरि लई सुध अनुभूत की ज्ञानलोग भोगी लयो ।  
अनुभाग वध स्थिति भागते, भागरागदारिद गयला ॥
- Colophon :** इति श्री मोक्षमार्ग सम्पूर्णम् । सवत् १७७४ वर्षे पोसमासे  
शुक्लपक्षे सप्तमी शनिवासरे लिखितम् । शुभमस्तु ।

१६३४ सम्मेदाचल-पूजा

- Opening :** मुक्तिकान्ता प्रदातारं स्थानेषु स्थानमुत्तमम् ।  
मुक्ति तीर्थ कर प्राप्य वदे शैलेन्द्रसिद्धिदम् ॥१॥
- Closing :** वज्रीचद्रप्रतेन्द्रपेद्रतरणी - प्राप्नुवन्ति शिवम् ॥१३॥
- Colophon :** इति सम्मेदाचल पूजनविधान समाप्तम् । सवत् १८२६ भाद्र  
पदि १२ भाँम दिने लिखि ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah

### १६३५ सम्मेदशिखर-पूजा -

Opening • गिरसम्मेदतै श्री जिनेश्वर सिव गए,  
अवर असपित मुनि तहा तै सिद्ध भए ।  
वदौ मन वच काय नमी सिर नायकै,  
तिष्ठौ श्री महाराज सबै इति आयकै ॥

Closing • ए वीस जिनेश्वर नमित सुरेश्वर नित मधवा पूजन आवै ।  
नर नारी ध्यावै सो सुख पावै रामचन्द्र जिन सिर नावै ॥११॥

Colophon • इति सम्मेदशिखर पूजा सम्पूर्णम् ।

### १६३६. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : परमपूज्य जिन वीम जहाँ ते शिव लये,  
ओरहु बहुत मुनीश शिवालै सुखमये ।  
अैसे श्री सम्मेद शिखर नमिहू मुदा,  
दरव साजि शुचि रुचि युत पूज रचो सदा ॥

Closing • जय एक बार वदे जु कोय  
तसु नर्क तिर्यं च कुगत न होय ।  
इत्यादि घनी महिमा अपार  
प्रणमो मनवचकर सीसधार ॥

Cclop' on • ' इति ' ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४३ ।

### १६३७ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्टसुखदान ।  
शिखर समेद मदानमो होई पाप की हान ॥

Catalogue of Sanskrit Prakrit Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

- Closing :** नेमीनाथ श्री अरहनाथ श्री मल्लाना के पूजे पाये,  
श्रीगसनाथ श्री सुविधपद्म श्री मुनिसुव्रत को निचै जाये ।  
श्रीचन्द्रप्रभु कोस एक पर लौट फेर मुनिसुव्रत आये ।  
शीतल अनत सभव अभिनदन चित्त भाये वदो सुख पाये ।  
**Colophon :** इति कवित्त सपूर्णम् ।  
मती भादो, वदी ५, चारगुरु सम्बत् १९२९ ।  
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४२ ।

१९३८. सम्मेदशिखरपूजा-विधान

- Opennig :** प्रणम्य सर्वज्ञमनतवोद्यामाप्तप्रद सद्गुणरत्नसिद्धम् ।  
बुद्ध्वेत्त्रिचुध्या सुध्रता हि तीर्थ सम्मेदशैलस्थजिनेन्द्रपूजाम् ॥  
**Closing** चतु० मुनीन्द्रभिर्भिण्लोकैमानृच्छदोवचोमये ।  
ज्ञातव्या ग्रथसख्या नृगणकै लेखकोत्तमै । ५॥  
**Colophon :** इति भट्टारक श्री धर्मचद्र विनुचर पंडित गगादास कृत सम्मेदा-  
चलपूजा समाप्तम् ।

१९३९. सम्मेदशिखर-पूजा

- Opening :** पच परमगुरु - सारदा सीम ॥१॥  
**Closing :** मिखरसम्मेद . . . भानिये ॥  
**Colophon :** इति सर्वैया सपूर्णम् ।

१९४०. सम्मेदशिखर-पूजा

- Opening :** देखे क्र० १९३७ ।  
**Closing :** तुच्छ बुद्ध मोरी सही पडीत करी निचार ।  
भूल चूक अब होई जहा लीजौ चतुर सुधार ॥६॥

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon : इति श्री सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

### १६४१. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : अमल गग सुवारिणा भरि झारिणा सुखकारिणा ,  
भवतापनिवारिणा मलहारिणा कर्मवारिणा ।  
सम्मेदाचलपर्वत अपवर्गत सुखअपितम्,  
वीसतीर्थसुपूजित भववार्जित मुवितसर्जितम् ॥

Closing : यः यात्राकरि भावसुद्धमनसा ते रवर्गमुक्तिप्रदा  
ते नारकतिर्य चगतिविमुखा सद्भावनाभावता ।  
तेषा पुत्रकलत्रमित्रभवता सल्लक्ष्मी लीलाकरा  
सत्सम्मेदगिरिसु धर्ममत कुर्वन्तु वो मगलम् ॥

Colophon : इति श्री सम्मेद जी की पूजा सलाप्ताः ।

### १६४२. समुच्चय चौवीसी पूजा

Opening : रिषभ अजित " " पूजत सुरराय ॥  
Closing : मुक्ति मुक्ति दातार " सिव लहे ॥  
Colophon : इति श्री समुच्चय पूजा सपूर्णम् ।

### १६४३. शातिनाथ-पूजा

Opening : शाति जिनेश्वर नमू तीर्थ वसु दुगुनही ।  
पचमचक्री अनता दुविधि षट्गुनीही ॥  
तृणवत् रिधि सव छारि धरि तप मिववरी ।  
आह्वानन विधि कळ वार त्रय उच्चरी ॥  
Closing : प्रभु कै चैय प्रमाण सुरतन धरि मेवा करत मोहयो ।  
देवी वृंद जिनवर को जनम कल्याणक गायो ॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vīdhāna )

Colophon इति श्री सपूर्णम् ।

१९४४. शातिनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९४३ ।

Closing : इति जिनमाला अमल रसाला ॥ सु दर ततषिन वरई ॥

Colophon . इति श्री शातिनाथ जी की पूजा सपूर्णम् ।

१९४५ शातिपाठ

Opening : शातिजिनशशिनिर्मलवक्त्र सीलगुणव्रतसयमपात्रम् ।  
अष्टमहस्रसुलक्षगगात्र नौमि जिनोत्तममबुजनेत्रम् ।

Closing : क्षेम सर्वप्रजाना प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,  
काले काले च सम्यक् वर्षन्तु मधवान व्याधयो यातु नाशम् ।  
दुर्भिक्ष चौरमारिक्षणमपि जगत मास्मभूज्जीवलोके,  
जैनेन्द्र धर्मचक्र प्रभवतु सतत सर्व शीख्यप्रदायि ॥

Colophon इति श्री शातिजिनस्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ९५६ ।

१९४६. शांतिपाठ

Opening : देखे, १९४५ ।

Closing : मत्रहीन क्रियाहीन श्रद्धाहीन तथैव च ।  
स्तवनभक्तिः न जानामि क्षमस्व परमेश्वर; ॥

Colodhon : इति विसर्जन मत्र सम्पूर्णम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

### १९४७. शातिपाठ

Opening : देखे, क्र० १९४५ ।

Closing : आह्वानाय पुरादेव लब्धभागा यथाक्रमम् ।  
मयाभ्यर्चिता भक्ता सर्वे यातु यथा स्थितिम् ।

Colophon : इति श्री शाति सम्पूर्णम् ।

### १९४८ शातिपाठ

Opening : देखे, क्र० १९४५ ।

Closing : आह्वानन नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् ।  
विमुर्जन नैव जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।  
सत्त्व स्थान गच्छतु स्वाहा ।

Colophon : इति शाति पाठ ।

### १९४९. शातिचक्र-पूजा

Opening : अर्हन्दीजमनाहत च हृदये ... यद्वाञ्छितम् ॥

Closing निशेषश्रुतबोधवृत्तमतिभिः प्राज्ञैरुदारैरपि  
स्तोत्रैर्यस्य गुणार्णवस्य हरिभिः ... ।  
... श्री शातिनाथ सदा ॥

Colophon : इति श्री शातिचक्र पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

देखे, जि० २० को०, पृ० ३७६ ।

दि० जि० ग्र० २०, पृ० १९६ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६५०. शातिधारा

Opening

श्री खडोद्वकदर्दमेसु रुचिरै कर्पूरचूर्णे मितैः  
समिश्रैरुतिगन्धिलै नदनदिकयारकूपादिभिः ।  
... देवा जिनस्थापये ॥१॥

Closing :

सर्वदेशमारी छिद-२ भिद-२ सर्वविषभयं छिद-२ भिद-२  
सर्वक्रूररोगवैतालशाकिनी डाकिनी भय छिद-२ भिद-२ सर्व-  
वेदनी छिद-२ भिद-२ सर्वमोहनी ... ।

Colophon :

अनुपलब्ध ।

१६५१ शातिधारा

Opening :

सिद्धावन श्री ललनाललाम मही महीयो महिमाभिरामम् ।  
आसार ससार यथोपपराम नमामिनाभेय जिन निकामम् ॥१॥

Closing :

नेत्रे दद्वरूजाविनाशनकर ... स्नानस्य गघोदिकम् ॥

Colophon :

इति शातिधारा ।

१६५२ शातिधारा

Opening :

ॐ ह्री श्री कजी रो हं व भ ह स त प व व म म ह ह स स  
त त प प ... ।

Closing :

देखे, क्र० १६५१ ।

Colophon :

इति शातिधारा सम्पूर्णम् । इति विहावन प्रतिष्ठा सङ्गम् ।  
शुभमस्तु ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

### १६५३. सप्तर्षि-पूजा

Opening : श्रीमद्गणीन्द्र-हिमवन्मुब्रकदराया. त्राग नीमप्तसुनरितिचारु  
विनिर्गतायाम् ।

स्नाताननेकविधधर्मतरंगिकाया योगीश्वरानघरत्नधरान् समर्च्ये ।

Closing ; असमसुखसार तीक्ष्णदण्डाकराल स्वकरकरजटिल दीर्घजिह्वा-  
करालम् ।

सुघटविकृतचक्र शांतिदासप्रसस्य भजतु नमतु जैन भैरव  
क्षेत्रपालम् ॥१॥

Colophon . अनुपलब्ध है ।

### १६५४. सप्तर्षि-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : ए रिसि व्रत — ..... वसुरिद्धिहं ॥

Colophon : इति सप्तर्षि पूजा समाप्तम् ।

### १६५५. सप्तर्षि-पूजा

Opening : वदेह विश्वसेवेश — ... ज्ञानरूप निरजनम् ॥१॥

Closing . मानव विकृति येषा ... तत्त्व तत्त्वार्थवेदिन. ॥१४॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६५६. सरस्वती-पूजा

- Opening : ॐ नमः प्रगटित-परमाणंशुद्धमिद्वैतगारे,  
जिनपतिनगयेडिगन् नारता मदधान ।  
जगति समयमारकीर्त्ततः नन्मुनिन्दै.  
न घन्तु मम चित्ते नच्छ्रुतज्ञानरूप ।
- Closing : ज्ञान तिमिरहर ज्ञान दिवाकर, पढे सुणे जे भाव घनी ।  
ब्रह्म जिनदाय भासि विविध प्रकारि मनचछित फल बुद्धिघणी ॥
- Colophon : इति सरस्वति जयमाना सपूर्णम् ।

१६५७. शास्त्र-पूजा

- Opening : पयः पयोधेन्द्रिन्द्रदशापगाया पयः पयः पेयतयोपयोग्यम् ।  
समतमद्वा श्रुतदेवतार्थैः भक्त्या परार्थः परया ददामि ॥१॥
- Closing : जिनवाणी के ज्ञान तै सुखे लोक अलोक ।  
छागत जग जैवत को सदा देत है धोक ॥११॥
- Colophon : इति शास्त्र पूजा ।

१६५८ शास्त्र-पूजा

- Opening : जननमृत्युजराक्षयकारण " " " अह परिपूजये ॥१॥
- Closing : भक्त्यकीर्ति कृतामपि सन्तुति पठति यः सतत मतिमान्नरः ।  
विजयकीर्तिगुरुकृतमादरात् सुमतिकल्पलताफलमस्तुति ॥१०॥
- Colophon : इति सरस्वति स्तुति विधानम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० २०, पृ० १६८ ।

१६५९. शास्त्र-पूजा

- Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah

**Closing :** दुरिततिमिरहस मोक्षलक्ष्मी सरोजम्,  
मदन भुजगमत्र चितमातर्गसिंहम् ।  
विसनघनसमीर विश्वतत्त्वैकदीपम्,  
विषयरसकरीजाल ज्ञानमाराधीयत्वम् ॥

**Colophon :** इति शास्त्रपूजा समाप्तम् ।

१९६०. शास्त्रपूजा

**Opening :** देखे, क्र० १९५८ ।

**Closing :** देखे, क्र० १९५७ ।

**Colophon :** इति श्री शास्त्रपूजा जी समाप्तम् ।

१९६१. शास्त्रपूजा

**Opening :** देखे, क्र० १९५८ ।

**Closing :** स्तुत्वेति ..... समुद्धरेत् ॥३॥

**Colophon :** इति शास्त्रपूजा समाप्ता ।

१९६२. शास्त्रपूजा

**Opening :** देखे, क्र० १९५८ ।

**Closing :** देखे, क्र० १९५८ ।

**Colophon :** इति श्री शास्त्रपूजा सम्पूर्णम् ।

१९६३. शास्त्र जयमाला

**Opening :** सपयसुहकारण ... सगमकरण ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vichāna )

Closing : इयं जिनचरवाणी ..... णवि उत्तरई ॥१३॥  
Colophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी की जयमाल सम्पूर्णम् ।

१६६४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा

Opening : सिद्ध सिद्धार्थद सुद्धं निद्रात्मन स्ववर्गम् ।  
धोव्योत्पादगुणे युक्तं षडे त जणहेतवे ॥  
Closing : विश्वभूषण तस्य पट्टे प्रसिद्ध कविनायकः ।  
तेनेद रचितः पाठः शत्रु जयाद्यानिधानकः ॥  
Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मजो श्री भट्टारक श्री दिश्वभूषण विर-  
चिते ऐतु ८८ नि १५८। स्मृतिम् सद्यत् सै १० ? वर्षे अश्विनी  
शुक्ल द्वितीया पटनामनगरे श्रीमूलसधे अवावती गच्छ  
भट्टारकाधिराज श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी तच्छिष्येण विनय ताविद  
तेजपालेनेय पूजा लिखिता । शत्रु जय पूजाया कमलानि प्रथम  
वलये ॥१॥ द्वितीय वलये ॥८॥ तृतीये ॥१२॥ चतुर्थे ॥१३॥  
पचमे ॥१६॥ एव ६६॥ कन्याणमस्तु । इति सम्पूर्णम् ।

१६६५ सिद्धपूजा

Opening : उर्ध्वाधोर्युत सदिदुसपर ब्रह्मासुरावेष्टितम्,  
वर्गापूरितदिग्गतावुजदल तत्सधितत्वान्वितम् ।  
अतः पत्रतटेष्वनाहतयुत ह्रीकार सवेष्टितम् ,  
देव ध्यायति सुमुक्ति सुभगो वैरीभकठीरव ॥१॥  
Closing : असममयसार चारुचैतन्यचिन्हम्,  
परपरणनिमुक्त पद्मनदीन्द्रवद्यम् ।  
निखिलगुणनिकेत सिद्धचक्र विशुद्धम्,  
स्मरति नमति यो वा स्तोति सोभ्येति मुक्तिम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्रं० २०, पृ० २००

जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६० ।

### १६६६. सिद्धपूजा

Opening : देखे, क्र० १६६५ ।

Closing : आवृष्ट सुरसपद विदधति ' ' साराधनादेवता ॥

Colophon ; इति सिद्धपूजा जयमाला समाप्ता ।

### १६६७. सिद्धपूजा

Opening : देखे, क्र० १६६५ ।

Closing : देखें, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा जयमाला समाप्तम् ।

### १६६८. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing : देखें, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा समाप्ता ।

### १६६९ सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing : देखे, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा समाप्ता ।



Catalogue of Sanskrit, Prakṛit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६७०. सिद्धपूजा

- Opening : देखें, क्र० १६६५ ।  
 Closing : जो पूजै गावै थुत चढावै मन लगावै प्रीति सी ।  
 षुस्याल चन्द कहैं कहा लीं जस जिनी का रीतमों ।  
 जे नाम अक्षर जपै हरषै घन्य ते नरनारि हैं ।  
 प्रभु पतित तारन दु ख निवारन भगत कौ निरतार हैं ।  
 Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी समाप्तम् ।

१६७१. सिद्धपूजा

- Opening : देखें, क्र० १६६५ ।  
 Closing : देखें, क्र० १६६५ ।  
 Colophon : इति सिद्धपूजन प्रतिज्ञा सम्पूर्णम् ।

१६७२. सिद्धपूजा

- Opening : देखें, क्र० १६७० ।  
 Closing : देखें, क्र० १६७० ।  
 Colophon : इति श्री सिद्धमहाराज की पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७३. सिद्धपूजा

- Opening : देखें, क्र० १६६५ ।  
 Closing : सिद्ध वरै ससार, सिद्धन की पूजा करो ।  
 आवागमन निवार, मन वच तन पूजा करो ॥  
 Colophon : इति सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

## १६७४. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing : दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुतीतिरस्तु सुदृष्टिरस्तु धनधान्य समृद्धि-  
रस्तु आरोग्यमस्तु विजयोरस्तु भयोरस्तु पुत्रपौत्रोद्भवोरस्तु तव  
सिद्धप्रसादात् ॥१॥

Colophon : इति सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

## १६७५. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing कृत्याकृत्तिमवाहचैत्यनिलयान् दुष्कर्मणा शानये ॥

Colophon : नहीं है ।

## १६७६ सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing : देखें, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा ।

## १६७७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing : देखें, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा माला सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६७८. सिद्धपूजा

- Opening : परम ब्रह्म परमात्मा परम जोत परमीस ।  
परम निरजन परम सिव नमो सिद्ध जगदीस ॥१॥
- Closing : सुद्ध विसुद्ध सदा अविनासी ..... जाने सो दीवाना आत्म  
को यह ॥

- Colophon : सम्पूर्ण ।  
१६७९. सिद्धपूजा

- Opening : इत्य चक्रमुपास्य दिव्य ध्यान फल न्यस्तुते ॥
- Closing : आकृष्ट सुरनगदा विदधति मुवितश्रियोवश्यताम् ..... पायात्प-  
चनम कृपाक्षरमयी साराधनादेवता ॥१॥
- Colophon : नहीं है ।

१६८०. सिद्धक्षेत्र-पूजा

- Opening : परम पूज्य चौबीस जिह जिह थानक सिव गये ।  
मिद्ध भूमि निम दीम मन वच तन पूजा करो ॥१॥
- Closing : जो तीरथ जावै पाप मिटावै ध्यावै गावै भक्ति करै ।  
ताके जस कहिए सपति लहिए गिर के गुन को बुद्ध उचरै  
॥१०॥

- Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१६८१. सिद्धचक्र-पूजा

- Opening : जिनाधीस सिवईस नमि सहस गुणित विस्तार ।  
सिद्ध चक्र पूजा रचो शुद्ध त्रियोग सभार ॥

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

**Closign :** जिन गुण करण आरभ हास्य कोधाम है ।  
वायस का नहि सिधु तारण को काम है ॥

**Colophon** इति श्री सिद्धचक्रपाठभाषा समाप्तम् ।  
संवत् १९६४ फाल्गुन शुक्ल ६ लिखितम् ॥

### १९८२. सिद्धचक्र-पूजा

**Opening :** अरिहत पद ध्यातो थको दव्वह गुण परजाय रे ।  
भेद छेद करि आत्मा अरिहतरूपी थाय रे ॥

**Closing :** योग असख्य ते जिण कहा नव पद मोक्ष ते जाणो रे ।  
एह तणँ अविलवनेँ आतमँ ध्यान प्रमाणो रे । २१ वी० ॥

**Colophon :** अनुपलब्ध ।

### १९८३. सिद्धक्षेत्र-पूजा

**Opening :** वदौ श्री भगवान्कू भावभगत सिरनाय ।  
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ॥

**Closing :** संवत् अष्टादश सही सत्तर एक महान ।  
भादौ कृष्ण जु सप्तमी पूरन भयो सुजान ॥

**Colophon :** इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

### १९८४. सिद्धक्षेत्र-पूजा

**Opening** श्री आदीश्वर वदौ महान, किलास सिखर तँ मोक्ष जान ।  
चपापुर तँ श्री वासपूज, तिन मुकति लही अति हरपि हूँ  
॥१॥

**Closing :** देखेँ, क्र० १९८३ ।

**Colophon :** इति सिद्धक्षेत्र पूजा ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६८५. शिखर-विलास-पूजा

- Opening : जेठ शुक्ल चतुर्थ दिवस ..... करिकें बहुत उछाह ॥
- Closing : . . . . . ध्यावै मो सुख पावै रामचन्द्र निति सिरनावै ॥
- Colophon : इति श्री शिखर विलाम जी की पूजा सम्पूर्णम् । लिखते सीकर-  
मध्ये — मिति फाल्गुन सुदि अठाई सवत् १६४२ । का लिखते  
वेठराज दिवाण जी सुखलाल जी का पोता भूल चूक सुद्ध करो ।  
विशेष—इसके Closing के पहले का बहुत से पत्र गायब है ।

१६८६. सील-वत्तीसी

- Opening : सीलवतीसीवर्णवज .. .... सदा सुमरी रिसहेश्वर । १॥
- Closing : हरिहर डद नरिद नरसुर जप हिए कान्ताजेन नारी ।  
सजम घरम सुगण अकू जपहि जसु ते हरि ॥
- Colophon : इति सीलवतीसी ममाप्तम् ।

१६८७. सिंहासन-प्रतिष्ठा

- Opening : श्रीमद्वीरजिनेशाना प्रणिपत्य महोदयम् ।  
नव्याशनस्य सूत्रेण शुद्धि वक्षे यथागम् ॥
- Closing : नेत्रे द्व द्वरुजाविनाशनकर गात्र पवित्रीकरम्  
घात पित्तकफादिदोषरहित सूत्र च सूत्र भवेत् ।  
पाप कर्म कुरोगनाशनमर राहुक्षय कुर्वते,  
श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगल स्नानस्य गंधोदकम् ।
- Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । पीपमासे शुक्लपक्षे  
तिथी ६ सवत् १६५५ । श्री ६६ पुस्तक लिखावा भगवानदीन  
पंडित ।

देखें, जै. सि. भ. ग्र., क्र. ६६४ ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### १६८८. शीतलनाथ पूजा

**Opening :** शीतल जुगपद नमू धर्मदसधा इम भाष्यौ,  
उत्तमषिमा सु आदि अत ब्रह्मचर्यं सन्ध्यायौ ।  
सुनि प्रतिबोध हूयो भवि मोक्ष मारग कौ लागै,  
आह्वानन विधि करुं चलण जुग करि अनुरागै ॥१॥

**Closing :** पूर्वाषाढ़ नक्षत्र माघ वदि द्वादशी,  
जनमै श्री जिननाथ निबोगे सब हमी ।

**Colophon :** अनुपलब्ध ।

विशेष— इसके बाद अनन्तनाथ, पार्श्वनाथपूजा, शान्तिनाथ पूजा तथा पद्मावती पूजा अधूरी-अधूरी लिखी गई है ।

### १६८९. स्नानपूजा-विधि

**Opening :** प्रथम हूँ निस्सही पूर्वक देह रै जी आवी अग,  
सुद्ध करी नवा वस्त्र पहरी स्वभाल तिलक करिनै

**Closing :** देवचन्द्र जिन पूजता करता भवपार ।  
जिन प्रतिमा जिन सारणी कही सूत्र मझार ॥

**Colophon :** इति स्नानपूजा विधि सपूर्णम् ।

### १६९०. सोलहकारण-पूजा

**Opening :** एन्द्रं पद प्राप्य पर प्रमोद धन्यात्मनामान्मनिमन्यमान ।  
दृक्-शुद्धिमुख्यादि जिनेन्द्रलक्ष्मी महामोह षोडशकारणानि ॥

**Closing :** भक्ति प्रदा सुरेन्द्रमस्तुतमिद तीर्थंकराणा पदम्,  
लब्धुं वाछति योनि (पि) वा चतुर ससारभीताशयै ॥  
श्रीमद्दर्शनशुद्धिभूरिविनय ज्ञान तदा तत्फलम् ।  
भवह्या षोडशकारणानि सततं संपूज्य वाराधयेत् ॥

**Colophon .** नही है ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१६६१. सोलहकारण-पूजा

- Opening : देखें, क्र० १६६० ।  
 Closing : इय सोलाकारण ~ ~ ~ सिद्धवर गणहियइ हरा ।  
 Colophon : इति सोलाकारण पूजा जयमाल सपूर्णम् ।

१६६२. सोलहकारण-पूजा

- Opening : देखें, क्र० १६६० ।  
 Closing : इय बहु भविय ~ ~ ~ संकम्पवि ~ ~ ~ ।  
 Colophon : अनुपलब्ध ।

१६६३. सोलहकारण-पूजा

- Opening : देखें, क्र० १६६० ।  
 Closing : देखें, क्र० १६६१ ।  
 Colophon : इति श्री सोलहकारण पूजा सम्पूर्णम् ।

१६६४. सोलहकारण-पूजा

- Opening : देखें, क्र० १६६० ।  
 Closing : देखें, क्र० १६६१ ।  
 Colophon : इति षोडसकारण अग पूजा समाप्ताः ।

१६६५. सोलहकारण-पूजा

- Opening : देखें, क्र० १६६० ।

Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arra

**Closing :** एई सोले-भावना सहित धरै व्रत जोइ ।  
देव इन्द्र नरविंद पद दानत शिव पद होइ ॥

**Colophon :** इति श्री सोलै कारण पूजा जी समाप्तम् ।

### १६६६. सोलहकारण-पूजा

**Opening :** देखे, क्र० १६६० ॥

**Closing :** एते षोडशभावना - मोक्ष च सौख्यास्पदम् ॥

**Colophon :** इति श्री षोडशकारण जयमाला भाषा संस्कृत पूजा समाप्तम् ।

### १६६७. सोलहकारण-पूजा

**Opening :** देखे, क्र० १६६० ।

**Closing :** देखे, क्र० १६६१ ।

**Colophon :** इति षोडशकारण पूजा ।

### १६६८. सोलहकारण-पूजा

**Opening :** देखे, क्र० १६६० ।

**Closing :** भविभविगणिवारण सोलहकारण पयडमिगुण-गण-सायरः ।  
पणविवि तित्थकर - ... ॥

**Colophon :** अनुपलब्ध ।

### १६६९. सोलहकारण-पूजा

**Openign :** सरव परव मैं वडा अढाई परव है,  
नदीश्वर स्वर जाहि लिए बहु दरव है ।  
हमे सकति सो नाहि इहाँ करि थापना,  
पूजै जिनग्रह प्रतिमा है हित आपना ॥



Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing : देखें, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सोलैकारण पूजा ।

२०००. सोलहकारण-पूजा

Opening : मैया मेरी कूरिया हसुन ?

भावे मेरी कूरिया हसुन ।

लै घोज मेरी हम वहहमको न विसरो ये कहमा ।

कर हे सीता बीसेर हम ॥१॥

Closing : सास सुवेरा बेर न जाने न जाने धूप अब बरखा जी ॥

Colophon : नहीं है ।

२००१. सोलहकारण-पूजा

Opening : सोलैकारन भाय तीर्थकर जे भये,

हयें इन्द्र अपार मेरु पै ले गए ।

पूजा करि निज धन्य लख्यौ बहु चावसी.

हमहैं पोडस भावन भावै भाव सी ॥

Closing : देखें, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सोलह कारन पूजा सपूर्णम् । भाद्र शुक्ल १० गुरु स०  
१६६५ आरा मे बाबू हरिदास ने लिखा बाबू अनंतकुमार के  
पढने हेतु । शुभम् ।

२००२. सोनागिरि-पूजा

Opening : जवूद्वीप मझार भरत क्षेत्र कहाँ,

आरज पड सुजान बद्र देस लह्यौ ॥

सोनागिर अभिराम सुपर्वत है तहाँ ।

पच कोडि अर अरघ मुक्ति पहुचै तहाँ ॥

Closing : सोनागिर जैमाल का लघुमति कहि बनाय ।

पढै गुनै जो प्रेम सो तिनको पातक जाय ॥१७॥

Colophon . इति सोनागिरि पूजा सपूर्णम् ।

२००३. स्तवन जयमाल

Opening : श्रीमन् श्रीजिनराजजन्मसमये इन्द्रादिहर्षयमान् ।

हस्तारूढविराजमानत्रिपुरीपुष्पाजलि दापयन् ।

इन्द्राणीपरिवारभृत्यसहिताः देवागनावृत्यवान्,

नानागीतविनोदमगलविधौ पूजार्थमादसौ ॥१॥

Closing : जिनवर वरमातामाननीय समर्थो स जयति जिनराज लालचद्र  
विनोदी ।

जिनवरपदपूज्य भावनेद्रसुपूज्य सकलमलविमुक्त ते लभते  
विमुक्तिम् ।

Colophon : इति श्री स्तवन जयमाल सम्पूर्णम् ।

२००४. स्वाध्याय पाठ

Opening : बुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे ।

नमः श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान-जिनेशने ॥१॥

Closing : उज्जोवण मुज्जोवण णिव्वाहण . - . . भणिया ॥३॥

Colophon : इति स्वाध्याय पाठः ।

२००५. श्यामलयक्ष पूजा

Opening : महिषासीनकराष्ठासित नख-शिखसुन्दररूप ।

स्थापित यक्ष अष्टमजिना श्यामलरूप अनूप ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing : श्यामल यक्ष नमस् अचं पूजे जो प्राणी ।  
तनमन कर बाह्लाद प्रगति रुचि हृदि हरपानि ॥  
तेह जघन धन नौभाग्य अष्टगत पद मिलि जावै ।  
अजितदास मन आस पूज एहि गहि सुख पावै ॥

Colophon : इति श्री श्यामल-यक्ष पूजा सम्पूर्णम् ।

२००६. तत्त्वार्थसूत्राष्टक-जयमाला

Opening : उदधिधीरमुनीरनुनिम्भंलै कलपाकांचनपूरितशीतलैः ।  
पवनपावनधौघ्रुतपूजनैः जिनजूहं जिनमूममह भजे ॥१॥

Closing : इति जिनमतसूत्रे — — — मोक्षमार्गस्य भानुः ॥

Colophon : इति तत्त्वार्थसूत्राष्टक जयमालासहित समाप्ता ।

२००७. तैरहद्वीप-पूजा

Opening : श्री अरिहंत प्रमाण करि पंच परमगुरु ध्याइ ।  
तितये गुन धरनम करौ, मन वच तीस नवाइ ॥

Closing : अचल मेर पश्चिम सुषकार कुमुद देश वसै निरधार ।  
जिन मंदिर तहाँ पूजो जाइ, रूपाचल पर अरघ चढ़ाइ ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

२००८. तीनलोक-सवधी-पूजा

Opening : यह विधि ठाढी होय कै प्रथम पढ़ै जो पाठ ।  
घन्य जिनेश्वर देव तुम नासै कर्म जु आठ ॥

Closing : निद्र जग भीतर श्री गान्धर्व मंदिर बने अकिर्तम महामुबदाय ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah

नर सुर खग कर वदनीक जे तिनको भविजन पाठ कराय ॥  
 धन धान्यादिक सपति तिनकै पुत्र पौत्र सुख होउ भलाय ।  
 चक्रिपद सुरपद खग इंद्र होय कै करम नास शिवपुर सुबथाय ॥

Colophon : इति श्री तीनलोक-सवधी पूजा संपूर्णम् ।

### २००६. तीसचौबीसी पूजा

२००६

Opening : सवौपडाह्वानम् मयुक्तान् ठः ठ स्थापन-निष्ठितार्थात् " ॥

Closing : सकलसुखधामात्रिकालस्य ..... शिवकान्ति ॥

Colophon : इति चौबीसी पूजा समाप्तम् ।

### २०१०. तीसचौबीसी-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ... सव्वसाहूण ॥

Closing : जम्बूघातकपुष्कण्डेषु ... नित्यमाप्नुते ॥

Colophon : इति मधुकरत्रिनिर्गोपात् सत्रणविभावशर्मणाविहिता सुहितकरो-  
 भव्याना नद्यादचद्र ताराकनि इति पडित श्री भावशर्मकृत मधु-  
 करकारित त्रिशतचतुर्विंशतिकर्चन समाप्तम् ।

### २०११. उद्यापन

Opening : भवाभोधिमिमग्नाना जन्तुनां तारणे क्षम ।

मस्थापयामि दशधा धर्मशर्मैरुकारणम् ॥

Closing : श्रीनामीजिनीदो परमानदो परमसुखकरकारम् ।

भवसागरपार दुरघनिवार परम ... सुखकारम् ॥

Colophon : इति ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

२०१२. वर्द्धमान-पूजा

Opening : श्रीमत्वीर हरै भवपीर भरै सुख सीर अनाकुल ताई ।  
केहरि अफ अरी करि दफ नये शिव पकज मोलि सुआई ॥  
मैं तुमको इत थापत हो प्रभु भवत समेत हिये हरिपाई ।  
हे कछना धन धारक देव इहाँ अब तिण्डहु शीघ्रहि आई ।

Closing : श्री सनमति के जुगल पद जो पूजै घरि प्रीत ।  
वृ दावन सो चतुर नर लहे मुवत नवनीत ॥

Colophon : इति श्री वीर वर्द्धमान पूजा समाप्तम् ।

२०१३. वर्तमानचौबीसी-पाठ

Opening : वंदो पाँचो परमगुरु नुरगुरवदत जाम ।  
विघन हरन मगल करन पूजत परम प्रकाश ॥

Closing : रिषभ देव को आदि अंत श्री वर्द्धमान जिनवर सुखकार ।  
तिनये चरन कमल को पूजै जो प्राणी गुनमाल उचार ॥  
ताके पुत्र मित्र धन जीवन सुख समाज गुन मिले अपार ।  
सुरपद भोग भोगि चक्री हूँ अनुक्रम लहे मोक्ष पदसार ॥

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीस तीर्थंकर जिन पूजापाठ वृ दावन कृत  
सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे तिथी १५, श्रृगुवासरे सवत्  
१९५२ ।

विशेष—इसके नीचे कवि नाम वर्णन भी दिया गया है ।

२०१४. वर्तमानचौबीसी-पूजा

Opening : श्री आदीश्वर आदि जिन अतनाम महावीर ।  
वन्दी मन वच काय सी मेटी भव भय भीर ॥१॥

Shri Deyakumār Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

**Closing** : चौबीसो जिनराज की महिमा कही बताई ।

पढ़ै सुनै नरनारी सब सुर शिव पहुँचे जाई ॥४३॥

**Colophon** : इति श्री वर्तमान चौबीसी वास ठिठाने ? की पूजा सम्पूर्णम् ।  
शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु शुभ सम्बत् १८६० । मासो-  
त्तमे मासे अग्रहने मासे शुक्लपक्षे द्वादश्या चन्द्रवासरे पुस्तक-  
मिदं रघुनाथ सर्माने लेखि पठनपुरमध्ये आलमगज निवसतु ।  
लेखक पाठकयो मंगलमस्तु ॥ शुभ भूयात् ।

### २०१५. वर्तमानजिननाम

**Opening** : नत्वा सिद्धसमूहं च ज्ञानमूर्तिजिनप्रभम् ।

भरतैरावतास्थाना निनैः साकं विदेहजै ॥

**Closing** भूतानागतवतर्मानजिन ... - सद्भव्यसप्रार्थनात् ॥३०॥

**Colophon** : इति श्री अतीतवर्तमानागतपञ्चभरतैरावतत्रिंशच्चतुर्विंशतिका  
लौकिकाव्यवस्थाया वीक्ष्य कृता शुभचन्द्रेण जिनभक्तिरागा-  
त्तिर नन्दतु । इति त्रिंशच्चतुर्विंशतिका पूजा समाप्ता ।

### २०१६. विद्यमान-बीसतीर्थं कर-पूजा

**Opening** : पूर्वापरविदेहेषु विद्यमान-जिनेश्वर ।

स्थापयामि अहम् अत्र शुद्धमम्यक्तहेतवे ॥१॥

**Closing** : श्री मदिरादियुगं देवमजित वीर्यमुत्तमम् ।

भूयात् भव्य सता सौख्यं स्वर्ग-मुक्ति-सुखप्रदं ॥

**Colophon** : इति श्री बीस विद्यमान पूजा सपूर्णम् ।

### २०१७. विद्यमान बीस पूजा

**Opening** देखें, न० २०१६ ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscript  
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

- Closing :** ए वीम जिनेमर षमिष सुरागुर,  
दिहुरमाण मय सद्गुणिमा ।  
जे भगई भणावइ छर मणम सग ,  
ते पावइ निय परमपय ॥
- Colophon :** इति वीम बहुरमाण वी पुषा समाप्तम् ।  
२०१८. विद्यमान वीम तीर्थ कर पूजा विधान
- Opening :** वदो श्री जिनवीमको दि ह्मान सुखगान ।  
दीप अराई क्षेत्र मे श्री विदेह शुभ घान ॥१॥
- Closing :** सम्बत्सर विक्रम विगत वगु भूमयहमनि कर ।  
ज्येष्ठ पुन प्रनिपद सुनि । पुन भयो सुछन्व ॥
- Colophon :** इति श्री सीमन्धरादि वीम तीर्थकर पूषा समाप्तम् । शुभमस्तु ।  
तिथ्या तिथिरचन्द भ त्रपद कृष्ण ग्यारह (एकादशी) वार  
पुत्रको शुभ वेला पूर्ण करी । गो जयवन्त प्रयत्तो ।  
२०१९. विद्यमान वीम तीर्थ कर-पूजा
- Opening :** श्रीमज्जबुद्धात्तुकीपूष्कगदं दीपेष्वर्चयेदिद्वा शर स्यु ।  
वेदा वेदा विद्यमानाजिनेद्रा प्रत्येक सास्तेषु नित्य यजामि ॥१॥
- Closing :** एते विंशति तीर्थया अधहरा, कर्मागिविध्यसका,  
ससारार्णय तारणैकचतुरा इन्द्रादिदेवीस्थि ।  
अतातितगुणाकरा मुघकरा मोहाघकारापहा,  
मुत्रित श्रीललनाविलास ललिता रक्षतु वो भाक्तिकान् ॥१२॥
- Colophon :** इति विंशतिविद्यमान तीर्थकर पूजा समाप्ता ।  
२०२० व्रत-विधान
- Opening :** चोदाशि ग्यारस ११ आर्च ८ तीज ३ चौथ ४ एव उपवास ४५  
भावनापचीसी व्रत दसे १० पून्यो १५ एव उपवास २५ भावना  
वत्तीसी व्रत ।
- Closing :** आश्विनन्या पूर्वमुपवास एक पूर्ण सप्तविंशति,  
नक्षत्रव्रते द्वितीयमुपवाश्वन्या क्रियते ॥
- Colophon :** इति व्रत विधानम् ।









